

श्री सरस्वतीजीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

AMARASINHAWIRACHITA

AMARAKOSTA

WITH A
HINDI EXPLANATION

PANDIT RAVIDATT SHASTRI

श्री सरस्वतीजीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर
CORRECTED AND ENLARGED

BY

PT, RAMESHWAR BHATT

HEAD PANDIT AGRA COLLEGE

PRINTED AND PUBLISHED

BY

GANGAVISHNU SHRIKRISHNADASS

PROPRIETOR " LAXMI VENKATESHWAR " PRESS

KALYAN-BOMBAY.

1905

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

महाकव्यमरसिंहेन विरचितः

अमरकोशः । *८५२*

रोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-पाण्डित
रविदत्तशास्त्रिकृतभाषाटीकासहितः ।

स च

आगगनगरस्थमुख्यपाठशालीयप्रथमसंस्कृताध्यापक
पाण्डितरामेश्वरभट्टेन संशोधितः ।

स च

श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णुना
स्वकीये 'लक्ष्मीविकटेश्वर' मुद्रणालये
मुद्रित प्रकाशितश्च ।

तृतीयावृत्तिः ।

शके १८२९, सवत १९६४

कल्याण-मुंबई.

रजिस्ट्री एवं हस्त यन्त्राधिकारीने मध्ये स्थापितं स्थला दे

भूमिका.



विदित हो कि आज दिन अमरकोश छोटे और बड़े सब पण्डितोंके हाथका आभूषण हो रहा है। व्याकरण पढ़कर इसके बिना क्षणमात्र कार्य नहीं चल सकता। मेदिनी आदि अन्य कोशोंके होनेपरभी इसहीकी मायता क्यों ? कारण जो सूक्ष्म और सरल रीति पाणि यादि व्याकरणसे सिद्ध शब्दोंकी इसमें है सो अन्यत्र नहीं इसी हेतु इसकी मायता सर्वोपरि हो रही है।

इस कोशके कर्ता कवि अमरसिंहजी है। अत एव यह अमरकोशके नामसे प्रसिद्ध है और इसमें तीन काण्ड हैं। कवि अमरसिंहका होना विक्रमादित्यके समयमें सिद्ध होता है क्योंकि वे उक्त महाराजकी समाके नगरमें गिने जाते थे। यह बात कवि क्षीरोमणि कालिदासकृत ज्योतिर्विदाभरणके श्लोकसे प्रमाणित होती है। यथा,—

“ धन्वन्तरि क्षपणकोऽमरसिंहशकुवेतालमघटकर्परकालिदासा ॥

रयातो वराहमिहिरो नृपते सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥ १ ॥

अथाह—धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शकु, वेतालम, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि ये विक्रमादित्यकी समाके नव रत्न हैं ॥ १ ॥ ”

श्रोत्रपरपरासे यहभा सुना जाता है कि अमरसिंह बौद्धमतवलम्बी थे। उन्होंने अपने कोशमें भगवाचरणको एक नवीन रीतिपर लिखकर और स्वर्ग आदिके २४ भूय श्लोक लिखकर अन्य देवताओंके होतेभी इन्होंने बुद्धके नामकीही अग्रणी किया है इससे उनका बौद्ध होना स्पष्ट दीखता है। और कोई कोई यहभी निश्चित करते हैं कि इनके बौद्ध होनेका घणन शकरदिग्विजयमें है।

सरलतमे जो वाचस्पत्यादि बड़े २ कोश हैं वे केवल पण्डित होनेपर काममें आते हैं। विद्यार्थीकी दशमें उपयोगी नहीं। उस अस्थानमें तो अमरकोशही अधिक लाभदायक है। क्यों कि श्लोकबद्ध होनेसे जितना और जो कुछ वे अपनी बाल्या गण्यमान बण्ठ कर लेते हैं और फिर गुरुमुखसे अर्थ समझ लेते हैं तो उनके ज्ञान पर्यन्त फटामही रहता है। जहाँ जहाँ पण्डितयोग विद्यमान है वहाँ विद्यार्थीका पाठ सुगम रीतिसे हो सक्त है परन्तु ग्रामोंमें कि जहाँ पण्डितोंका अभाव है वहाँ विद्यार्थीको अर्थ समझनेके लिये बड़ा क्लेश उठाना पड़ता है।

अमरकोशकी पादचन्द्रिका, रामाश्रमी, वाचस्पत्या, सासुन्दरी आदि अनेक टीका हैं परन्तु वे सरलतमे होनेसे पण्डितोंकेही काममें आ सक्ती हैं उनसे विद्यार्थीको लाभ नहीं पहुँच सक्ता, अत एव ऐसे अभावको दूर करनेके लिये श्रीयुक्त गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी जो परोपकारके लिये दत्तचित्त और कटिबद्ध हैं। उन्होंने इस कोशकी भाषाटीका बेरीप्रामाणिका १० खण्डित शास्त्रीजीसे करवाकर छापनेका उपाय किया। उक्त शास्त्रीजीने जो सरलता इसमें अनुवादमें कर दी सो सब स्पष्ट है कि आज दिन अनेक भाषाटीका जाने प्रसृत होनेपरभी ऐसी सरल दूसरी भाषाटीका नहीं है।

जब इस टीकाका छापनेका समय आया तो सेठजी गदाशयने इसके विषयमें

मुझसेभी सम्मति ली और मेरे अवलोकनार्थ वा संशोधनार्थ भेज दी । इसकी उत्तमता देखनेपरभी मुझको इसमें कुछ अधिक तारतम्य दीख पड़ा और कहीं अर्थांशमें ऐसे संस्कृत शब्द दीख पड़े कि जिनका अर्थ बालकोंकी समझमें आना कठिन था अत एव मैंने उक्त सेठजीकी अनुमतिसे इसके विस्तारको कुछ न्यून किया । और इसके बदले लिंगसकेत बड़ा दिया और आखिरमें गुणेश काशीनाथ काळे इनकी बनाई हुई अमरकोशस्थ-शब्दानुक्रमणिका जोड़ दी है । इससे पुस्तकमें विषयभी अधिक हो गया और मौल्यभी अन्य छापेकी पुस्तकीसे इतना अधिक नहीं हुआ कि विद्यार्थियोंको लेनेमें कुछ कष्टकल्पना करनी पड़े ।

- यदि यथार्थमें देखा जाय तो पण्डितके लिये लिंगज्ञानही अधिक कठिन है सो वह अमरकोश पढ़ते समय या तो गुरुमुखसे अर्थ सुननेपर समझमें बैठ जाता है और या लोग व्याकरणका बोध होनेपर कोशनियमके अनुसार स्वयं जान लेते हैं परन्तु साधारण देखनेमें बहुतसे लोगोंको सदेहमें पडना पडता है । कारण अमरसिंहजीन जो लिंगव्यवहार जताया है सो बड़ी चतुरता की है । थोड़ेसे लेखमेंही बहुतसा काम सिद्ध कर दिया है । ज । जिसके मध्यमें वा अन्तमें “ अस्त्री, त्रिषु वा पुत्र-पुंसकम् ” आदि लिख दिया है वहाँ तो स्पष्टही है । परन्तु अभी यह बात इस योग्य न हुई कि विद्यार्थियोंको बाल्यावस्थासेही नामके ज्ञान होनेके साथही सब शब्दोंका लिंगव्यवहारभी चित्तमें बैठता हुआ चला जाय कि जिससे बड़े होनेपर उनको लिंगज्ञानके लिये बारंबार कोश नहीं खखोलने पड़े । यदि टीकामें संस्कृतके शब्द विभक्त्यनुसार धरे जाय तो व्याकरणके बोधसे शब्दमें प्रत्येक लिंगकी कल्पना हो सकती है । परन्तु भाषामें विभक्तिहीन शब्दोंसे कदापि यह ज्ञान नहीं हो सक्ता कि अमुक शब्द अमुक लिंग है अत एव मैंने विद्यार्थियोंके उपकारार्थ और उक्त सेठजीकी गुणग्राहकतासे यहभी भार अपने ऊपर लिया कि कोई शब्द ऐसा न छोड़ा कि जिसका लिंगज्ञान इस भाषाटीकासे न हो । कुछ यह बात नहीं है कि अमरसिंहजीने लिंगज्ञानका नियम न लिखा हो । उन्होंने कोशके आरभमें लिखकर तृतीयकौंडके पंचम वर्गमेंभी स्पष्ट किया है परंतु जो कुछ है सब उनहीके लिये है कि जिनको व्याकरणके प्रकृतिप्रत्ययका यथार्थ ज्ञान है । अत एव भाषामें प्रत्येक शब्दका लिंग आगेके नियमोंके अनुसार पाठकोको मिलेगा और इतने लिखनेपरभी जिनको अधिक शंका हो वे समय पाकर किसी विद्वान्से पूछकर अपनी शंका दूर करें । जहाँतक हुआ है कोई बात उठा तो धरी नहीं है ।

अंतमें पाठकोंसे सविनय निवेदन है कि जिन शब्दोंका लिंग अधिक बढ़ाया है वह सब बड़े २ वाचस्पत्यादि कोशोंकी सहायतासे सावधानतापूर्वक लिखा है । इस-परभी जहाँ कहीं भ्रमादिदोषसे रह गया हो अथवा यंत्रदोषसे कुछका कुछ छप गया हो तो सज्जनजन उसको शोधकर मुझे कृतार्थ करें ।

लिङ्गादिज्ञानके लिये आवश्यकीय नियमः



१ प्रत्येक नामको जुदा २ दिखलानेके लिये नामोंके बीचमें ऐसा (,) चिह्न जर दिया है ।

२ जहाँ वहाँ अर्थाशमे एक शब्दका पर्याय शब्द दिया है अथवा इतन्त नान्त शब्दोंका भेद लिखा है वा मूलके अतिरिक्त लिङ्गव्यवहार स्पष्ट किया है अथवा कहा कुछ अधिक विशेषता दिखाई है वह सब () इस प्रकारके कोष्ठक्रमे लिखा है ।

३ जहाँ मूलमे लिंगका विषय आया है जैसे " पुत्रपुत्रम् " आदि वहाँ ती भाषामे स्पष्टरीतिसे लिख दिया है कि अमुक शब्द अमुक लिंगी है परन्तु मूलसे अधिक जो लिखा है वहाँ पुँल्लिङ्गके लिये (पु०), खालि गके लिये (खी०) नपुमकालिङ्गके लिये (न०) और त्रिलिङ्गोंके लिये (त्रि०) ऐसे सकेत कर दिये हैं ।

४ जहाँ देखा है कि बहुतसे शब्द एकही लिंगके चले गये हैं वह प्रथम शब्दके आरम्भमे ऐसा लिख दिया है कि आगेके शब्द अमुक लिंगी हैं और अमुक शब्दतक हैं अथवा शब्दोंके अतमें दे दिया है कि यहाँतक अमुक लिंगी शब्द हुए और जहाँ कइ शब्द एकही अर्थके हैं और उनके लिंगमें भेद है ती उन शब्दोंके पासही लिंगसकेत जर दिय गये हैं ।

५ नानाथर्गम इतना ध्यान रहे कि एक - शब्द अनेक शब्दोंका वाचो है किन्तु वे शब्द पीछेके काण्डोंमें हो गये हैं और स्थल ५ पर उनका लिंगभी जताया गया है अन एव उन्हींके अनुसार लगनिश्रय जानना । जहाँतक दुआ है लिखभी दिया गया है ।

रामश्वरभट्ट,
हेड पण्डित आगगावलिज,
पश्चिमोत्तर देग.

अमरकोशस्य वर्गानुक्रमणिका.

वर्गाङ्काः	वर्गनाम.	पृष्ठाङ्काः	मूलश्लो०	प्र० श्लो०
	प्रथमकाण्डम्.	१	२८०॥	१९
०	मङ्गलाचरणम्	१	१	०
०	प्रस्तावना	१	१	०
०	परिभाषा	२	३	०
१	स्थगवर्गः	४	६९॥	६॥
२	व्योमवर्गः	१५	२	॥
३	दिग्वर्गः	१६	३५	४
४	कालवर्गः	२२	३१	१॥
५	धीवर्गः	२९	१७	१
६	शब्दादिवर्गः	३२	२५॥	२
७	नाटयवर्गः	३७	३८	१॥
८	पातालभोगिवर्गः	४५	११	१॥
९	नरकवर्गः	४७	३॥	०
१०	वारिवर्गः	४८	४३	॥
	द्वितीयकाण्डम्.	५७	७३३॥	११॥
१	भूमिवर्गः	५७	१८	२
२	पुत्रवर्गः	६०	२०	॥
३	शैलवर्गः	६४	८	॥
४	वनोपविर्गः	६६	१६९॥	०
५	सिंहादिवर्गः	९४	४३	२॥
६	मनुष्यवर्गः	१०२	१३९॥	१
७	नक्षत्रवर्गः	१२९	५८	४
८	क्षत्रियवर्गः	१४०	११९॥	०
९	पैश्यवर्गः	१६२	१११	१
१०	शूद्रवर्गः	१८३	४७	०
	तृतीयकाण्डम्.	१९२	४८१	८
१	विशेष्यनिघ्नवर्गः	१९२	११२॥	०
२	संकीर्णवर्गः	२११	४२॥	०
३	नानार्थवर्गः	२२०	२५७	८
४	अव्ययवर्गः	२७०	२३	०
५	लिगादिसंग्रहवर्गः	२७४	४६	०
२५			६४९८	३८॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

अर्थप्रकाशिकया भाषाटीकया समन्वित-

अमरकोशः ।

प्रथमकाण्डम् ।

श्रीअमरसिंह निवित्रपूर्वक इस् ग्रन्थकी समाप्ति और शिष्योंकी शिक्षाके लिये ग्रन्थके आदिमें प्रथम मंगलाचरण करते हैं -

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानया गुणा ।

सेव्यतामक्षयो धीरा स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

अन्वय - भो धीरा । यस्य अगाधस्य ज्ञानदयासिन्धो अनया गुणा (सन्ति), स अक्षय श्रिये अमृताय च (भवद्भि) सेव्यताम् ॥ १ ॥

श्रीमद्गुरुभक्तमस्तुत्य रविदत्तेन धामता ।

नूनममरकोशस्य भाषाटीका विरच्यते ॥

भाषार्थ - हे धीरपुरुषो । जिस अत्यन्त गम्भीर ज्ञान और दयाके समुद्रके क्षांति आदि निमल गुण हैं उस अभिनाशीकी सम्पत्ति और मोक्षके लिये आप आराधना करो ॥ १ ॥

प्रस्तावना ।

समाहृत्यान्यतन्त्राणि सक्षिप्तैः प्रतिमस्कृतैः ।

संपूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वय - अन्यतन्त्राणि समाहृता सक्षिप्तैः प्रतिमस्कृतैः वग सम्पूर्ण नामलिङ्गानुशासनम् (मया) उच्यते ॥ २ ॥

भाषार्थ - नाम और लिङ्गके प्रतिपादन करनेवाले अन्य ग्रन्थोंको एकत्र करके अल्पाविस्तारक बहु अर्थवाले और प्रत्येक पदके प्रकृति प्रत्यय आदिके विचारमें जिनमें प्रत्येक पदका मन्त्राग किया गया है ऐसे वर्गोंके द्वारा सम्पूर्ण स्वर इत्यादि नाम और पुरुष आदि लिङ्ग इनके व्युत्पत्तिविधायक शास्त्रों में कहता हूँ ॥ २ ॥

परिभाषा ।

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।

स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः—प्रायशः रूपभेदेन, कुत्रचित् साहचर्यात्, क्वचित् तद्विशेष-विधेः स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः—इस ग्रन्थमें बहुधा करके रूपभेदसे अर्थात् आकारविशेष करके स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना चाहिये । जैसे—“ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा ” “ पिनाकोऽजगवं धनुः ” इन श्लोकोंमें रूपभेदसे लक्ष्मीसे पद्माशब्दतक स्त्रीलिंग है । पिनाकः यह पुँल्लिङ्ग है, अजगव यह नपुंसकलिंग है । तथा कहीं कहीं साहचर्यसे अर्थात् अन्यशब्दके समीप होनेसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना । जैसे—“ अश्वयुगध्विनी ” “ ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः ” “ वियद्विष्णुपदम् ” इन श्लोकोंमें अश्विनीको साहचर्यसे अश्वयुक् शब्द स्त्रीलिंग है । आत्मभू शब्दके साहचर्यसे ब्रह्मा पुँल्लिङ्ग है । विष्णुपदके साहचर्यसे वियतशब्द नपुंसकलिंग है और कहीं लिंगको विशेष उक्तिसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना । जैसे—“ भेरी स्त्री दुंदुभिः पुमान् ” “ छीवे त्रिविष्टपम् ” इन श्लोकोंमें स्त्रीपद कहनेसे भेरी स्त्रीलिंग है और पुमान् पद कहनेसे दुंदुभिश्च पुँल्लिङ्ग है । छीव पद कहनेसे त्रिविष्टप स्त्रीव अर्थात् नपुंसकलिंग है ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ।

कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादते ॥ ४ ॥

अन्वयः—अत्र अनुक्तानां भिन्नलिङ्गानां भेदाख्यानाय द्वन्द्वो न कृतः, (तथा) एकशेषः न कृतः, (तथा) क्रमात् ऋते संकरः अपि न कृतः ॥ ४ ॥

भाषार्थः—इस ग्रन्थमें अनुक्त अर्थात् अव्युत्पादित और भिन्नलिङ्गवाले नामोंका लिंगभेद कहनेके लिये द्वन्द्वसमास नहीं किया गया । जैसे—“ कुलिशं भिदुरं पविः ” इस श्लोकमें ‘ कुलिशभिदुरपवयः ’ ऐसा होता सो नहीं किया । तथा एकशेषभी नहीं किया क्योंकि एकशेषमें जो शेष रहता उसीके लिंगका बोध होता । जैसे—नमः खं श्रावणो नभाः ” इसको जगह ‘ स्वश्रवणौ तु नमसी ’ ऐसा नहीं किया । तथा क्रमके विना भिन्न लिङ्गोंका संकर अर्थात् मेलभी नहीं किया; क्योंकि साहचर्यसे लिंगके निश्चयका अभाव हो जाता, किन्तु स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग, नपुंसकलिंग ये क्रमसे

पडे । जैसे “ स्तव स्तोत्र स्तुतिर्नुति ” इसकी जगह ‘ स्तुति स्तोत्र स्तवो नुति ’ ऐसा नहीं किया । यहाँ बहुधा रूपभेद करके जिन्होंका लिंग कहा, उन भिन्नलिङ्गवालोंका द्वन्द्व आदि किया है । जैसे—“अप्स रोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नरा ” “ मातापितरो पितरो ” इन श्लोकोंमें द्वन्द्वमास और एकशेष किया है ॥ ४ ॥

त्रिलिङ्गया त्रिष्विति पद मियुने तु द्वयोरिति ।

निपिद्दलिङ्ग शेषार्थ त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

अन्वय — त्रिपु इति पद त्रिलिङ्गा (त्रैयम्), मियुने तु द्वयो इति पद (त्रैयम्), निशिद्दलिङ्ग शेषार्थ (त्रैयम्), त्वन्तायादि पूर्वभाक् न (भवति) ॥ ५ ॥

भाषाये — तीनों लिंगोंके कहनेमें त्रिपु यह पद कहा । जैसे—“ त्रिपु स्फुलिङ्गोऽग्निरुण ” यहाँ त्रिपु कहनेसे स्फुलिङ्गशब्द तीनों लिंगवाची है । तथा स्त्रीलिङ्ग पुंलिङ्गके कहनेमें द्वयो यह पद कहा है । जैसे—“यद्देवे योज्ज्वलक्रीलो ” यहाँ द्वयो कहनेमें ज्वालक्रील शब्द पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग हैं तथा निपिद्द लिङ्ग शेषके लिये जानना । जैसे—“व्योम यान विमानोऽधो ” यहाँ स्त्रीलिङ्गके निषेधमें विमानशब्द पुंलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग है । तथा तु जिनके अन्तमें हो वह त्वत् और अथ जिनके आदिमें हो वह अयादि ये दोनों पूर्वपदके साथ सम्बन्ध करनेगले नहीं होते । जैसे—“ पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती । ” यहाँ नगरी यह त्वत् पद इन्द्राणीमें सम्बन्ध नहीं गगता किंतु अमरावतीमें सम्बन्ध गगता है । तथा “ नित्या नक्षराज्यमप्ययातिशयो भव । ” यहाँ अयादिपद अतिशय पूर्वापरा नहीं कहता किन्तु भवका प्रभाव है ॥ ५ ॥



स्वर्गवर्गः १ ।

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः ।

सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदश विबुधाः सुराः ।

सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥

आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।

आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।

वृन्दारका देवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताऽभास्वरानित्याः ।

महाराजिकराध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

विद्याधगेप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ।

पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥

अथ स्वर्गवर्गः । स्वर, स्वर्ग, नाक, त्रिदिव, त्रिदशालय, सुरलोक, द्यौ, दिव्, त्रिविष्टप ये नव नाम स्वर्गके हे । तहां स्वर अव्यय है । द्यौ, दिव् (स्त्रीः) हैं । त्रिविष्टप (न०) है । शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ६ ॥ अमर, निर्जर, देव, त्रिदश, विबुध, सुर, सुपर्वा (नान्त), सुमनस् (सान्त), त्रिदिवेश, दिवौकस् (सान्त) ॥ ७ ॥ आदितेय, दिविषद्, लेख, अदितिनन्दन, आदित्य, ऋभु, अस्वप्न, अमर्त्य, अमृतांधस् (सान्त) ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुख, क्रतुभुज् (जान्त); गीर्वाण, दानवारि, वृन्दारक, देवत, देवता ये छव्हीस नाम देवताओंके हैं । देवत पुँल्लिङ्ग नपुंसक लिङ्ग है । देवता स्त्रीलिङ्ग है । शेष (पु०) है ॥ ९ ॥ आदित्य १२, विश्व १०, वसु ८, तुषित ३३, आभास्वर ६४, अनिल ४९, महाराजिक २२०, राध्य १२, रुद्र ११ ये सब (पु०) नाम गणदेवताके हैं । यहां तुषित आदि गण बौद्ध, पतञ्जलि आदिमें देखने उचित हैं ॥ १० ॥ विद्याधर (पु० जी-मृतवाहन आदि), अप्सरस् (सान्त देवताआंकी स्त्रियां), यक्ष (पु० कृत्वर आदि), रक्षस् (सान्त रक्षादिके वासी), गन्धर्व (तुवरू आदि), किन्नर (अश्वदि मुखवाले मनुष्याकृति), पिशाच (भूतविशेष), गुह्यक (मणिमद्र आदि), सिद्ध (विश्वावसु आदि), भूत (बालग्रह आदि)

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ।

शुक्रशिष्या दितिसुता पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।

समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥

पडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ।

मुनीन्द्रः श्रीधनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥

स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ।

गौतमश्चार्कवन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेश्वरी पितामहः ।

हिरण्यगर्भो लोकेश स्वयम्भूश्चतुराननः ॥ १६ ॥

वाताञ्जयोनिर्दुहिणो विरिञ्चि कमलासनः ।

स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृष्टिधिः ॥ १७ ॥

“नामिजन्माण्डज पूर्वो निधनः कमलोद्भवः ।

सदानन्दो रजोमूर्ति सत्यको हसवाहनः ॥”

ये देवयोनिस्तज्ञः हे । अप्सरस्शब्द स्त्रीलिंग, रक्षस् शब्द (न०) और शेष (पु०) हे ॥ ११ ॥ असुर, दैत्य, दैतेय, दनुज, इन्द्रारि, दानव, शुक्रशिष्य, दितिसुत, पूर्वदेव, सुरद्विष, (पान्त) ये दश प्रालग नाम दैत्या के ह ॥ १२ ॥ सर्वज्ञ, सुगत, बुद्ध, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवत् (मत्तन्त), मारजित, लोकजित, जिन ॥ १३ ॥ पडभिज्ञ, दशबल, अद्वयवादिन् (इन्द्रन्त), विनायक, मुनीन्द्र, श्रीधन, शास्ता (ऋत्तारान्त), मुनि ये अठारह पुंल्लिङ्ग नाम बुद्धके ह । शाक्यमुनि ॥ १४ ॥ शाक्य सिंह, सर्वार्थसिद्ध, शौद्धोदनि, गौतम, अर्कवन्धु, मायादेवीसुत ये सात नाम शाक्यमुनिके ह ॥ १५ ॥ ब्रह्मन् (नान्त), आत्मभू, सुरज्येष्ठ, परमेश्वर (इन्द्रन्त), पितामह, हिरण्यगर्भ, लोकेश, स्वयम्भू, चतुरानन ॥ १६ ॥ धातृ (ऋत्तारान्त), अञ्जयानि, दुहिण, विरिञ्चि, कमलासन, स्रष्टा (ऋत्तारान्त), प्रजापति, वेम् (सान्त), विधातृ (ऋत्तारान्त), विश्वसृष्ट (ज्ञान्), विधि ये वाँस और “नामिजन्मन् (नात्त), अण्डज, पूर्व, निधा, कमलोट्टन, सदानन्द, रजोमूर्ति, सत्यक, हसवाहन ” ये नन कुल

विष्णुनारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।

दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥

दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।

पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गो विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥

उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।

पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥

देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।

वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥

विश्वम्भरः कैटभाजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।

पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः ॥ २२ ॥

जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः ।

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २३ ॥

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।

रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २४ ॥

नीलाम्बरो गौहिणेयस्तालाङ्गो मुसली हली ।

संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २५ ॥

उनतीस (पु०) नाम ब्रह्माके हैं ॥ १७ ॥ विष्णु, नारायण, कृष्ण, वैकुण्ठ, विष्टरश्रवस् (सान्त), दामोदर, हृषीकेश, केशव, माधव, स्वभू ॥ १८ ॥ दैत्यारि, पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, गरुडध्वज, पीताम्बर, अच्युत, शार्ङ्गिन् (इन्द्रन्त), विष्वक्सेन, जनार्दन ॥ १९ ॥ उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पद्मनाभ, मधुरिपु, वासुदेव, त्रिविक्रम ॥ २० ॥ देवकीनन्दन, शौरि, श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमालिन् (इन्द्रन्त), बलिध्वंसीन् (इन्द्रन्त), कंसाराति, अधोक्षज ॥ २१ ॥ विश्वम्भर, कैटभाजिन् (तान्त), विधु, श्रीवत्सलाञ्छन, पुराणपुरुष, यज्ञपुरुष, नरकान्तक ॥ २२ ॥ जलशायिन् (इन्द्रन्त), विश्वरूप, मुकुन्द, मुरमर्दन ये चवालीस (पु०) नाम विष्णुके हैं । वसुदेव यह एक (पु०) नाम कृष्णके पिता वसुदेवका है । वही आनकदुन्दुभि हैं । अर्थात् ये दोनों नाम कृष्णके पिताके हैं ॥ २३ ॥ बलभद्र, प्रलम्बघ्न, बलदेव, अच्युताग्रज, रेवतीरमण, राम, कामपाल, हलायुध ॥ २४ ॥ नीलाम्बर, गौहिणेय, तालाङ्क, मुसलिन् (इन्द्रन्त), हलिन् (इन्द्रन्त), संक-

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।
 कदर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २६ ॥
 शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेपुरनन्यजः ।
 पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २७ ॥
 ब्रह्मसूक्त्युप्यकेतुः स्यादनिरुद्ध उपापतिः ।
 लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २८ ॥
 इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा ।
 “ भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका । ”
 शंखो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्र सुदर्शनम् ॥ २९ ॥
 कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ।
 चापः शार्ङ्गं सुरोरेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनः स्मृतम् ॥ ३० ॥
 “ अश्वश्च शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ।
 साराथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवो वनजो गजः ॥ ”

र्षण, सीरपाणि, कालिन्दीभेदन, बल ये सत्रह (पु०) नाम बलदेवजीके है ॥ २५ ॥ मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, मीनकेतन, कन्दर्प, दर्पक, अनङ्ग, काम, पञ्चशर, स्मर ॥ २६ ॥ शम्बरारि, मनसिज, कुसुमेपु, अनन्यज, पुष्पधन्व (नान्त), रतिपति, मकरध्वज, आत्मभू ये उन्नीस (पु०) नाम कामदेवके है ॥ २७ ॥ ब्रह्मसू, ऋष्यकेतु, अनिरुद्ध, उपापति ये चार (पु०) नाम अनिरुद्धके है । लक्ष्मी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्री, हरि-प्रिया ॥ २८ ॥ इन्दिरा, लोकमातृ (ऋकारान्त), मा, क्षीरोदतनया, रमा ये ग्यारह और “ भार्गवी, लोकजननी, क्षीरसागरकन्यका ” ये तीन कुल चौदह (स्त्री०) नाम लक्ष्मीके है । पाञ्चजन्य यह एक (पु०) नाम विष्णुके शङ्खका है । सुदर्शन यह एक (पु० न०) नाम विष्णुके चक्रका है ॥ २९ ॥ कौमोदकी यह एक (स्त्री०) नाम विष्णुकी गदाका है । नन्दक यह एक (पु०) नाम विष्णुके खड्गका है । कौस्तुभ यह एक (पु०) नाम विष्णुकी मणिका है । शार्ङ्ग यह एक (न०) नाम विष्णुके धनुषका है । श्रीवत्स यह एक (पु०) नाम विष्णुकी छातीके लाञ्छनका है ॥ ३० ॥ “ शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, बलाहक ये चार (पु०) नाम विष्णुके घोड़ोंके है । दारुय यह एक (पु०) नाम विष्णुके साराथिका है । उद्धव यह एक

गरुत्मान्गरुडस्ताक्षर्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
 नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ ३१ ॥
 शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
 ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ३२ ॥
 भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
 मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३३ ॥
 उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
 वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३४ ॥
 कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
 हरः स्मरहरो भर्गरुयम्बकास्त्रिपुरान्तकः ॥ ३५ ॥
 गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः ऋतुध्वंसी वृषध्वजः ।
 व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३६ ॥
 “ अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः । ”
 कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवं धनुः ।
 प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३७ ॥

(पु०) नाम विष्णुके मंत्रीका है । वनज यह एक (पु०) नाम विष्णुके हाथीका है । ” गरुत्मान् (मत्त्वन्त), गरुड, ताक्षर्य, वैनतेय, खगेश्वर, नागान्तक, विष्णुरथ, सुपर्ण, पन्नगाशन ये नव (पु०) नाम गरुडके हैं ॥ ३१ ॥ शंभु, ईश, पशुपति, शिव, शूलिन् (इन्नन्त), महेश्वर, ईश्वर, शर्व, ईशान, शंकर, चन्द्रशेखर ॥ ३२ ॥ भूतेश, खण्डपरशु, गिरीश, गिरिश, मृड, मृत्युञ्जय, कृत्तिवासस् (सान्त), पिनाकिन् (इन्नन्त), प्रमथाधिप ॥ ३३ ॥ उग्र, कपर्दिन् (इन्नन्त), श्रीकण्ठ, शितिकण्ठ, कपालभृत् (तान्त), वामदेव, महादेव, विरूपाक्ष, त्रिलोचन ॥ ३४ ॥ कृशानुरेतस् (सान्त), सर्वज्ञ, धूर्जटि, नीललोहित, हर, स्मरहर, भर्ग, व्यम्बक, त्रिपुरान्तक ॥ ३५ ॥ गङ्गाधर, अन्धकरिपु, ऋतुध्वंसिन् (इन्नन्त), वृषध्वज, व्योमकेश, भव, भीम, स्थाणू, रुद्र, उमापति ये अडतालीस और “ अहिर्बुध्न्य, अष्टमूर्ति, गजारि, महानट ” ये चार कुल बावन (पु०) नाम शिवके हैं ॥ ३६ ॥ कपर्द यह एक (पु०) नाम शिवजीके जटाजूटका है । पिनाक (पु०), अजगव (न०) ये

“ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
 वाराही च त्र्येदानीं चामुण्डा सप्त मानरः ॥ ”
 विभूतिभूति ऐश्वर्यमणिमादिकमष्टया ।
 “ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ।
 प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥ ”
 उमा कत्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥ ३८ ॥
 शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमगला ।
 अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाभिका ॥ ३९ ॥
 आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।
 विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ॥ ४० ॥
 अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ।
 कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा पटाननः ॥ ४१ ॥
 पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरामिभूर्गुहः ।
 बाहुलेयस्तारकाजिद्विशालः शिखिवाहनः ॥ ४२ ॥

दो नाम शिवजीके धनुषके हे । शिवके पाण्डिपद (सभामें रहनेवाले) प्रमथ
 कहाते हैं । प्रमथ शब्द (पु०) है । “ ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्ण
 वी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा ” ये सात (स्त्री०) नाम मातृकावाची हैं
 ॥ ३७ ॥ विभूति (स्त्री०), भूति (स्त्री०), ऐश्वर्य (न०) ये तीन नाम ऐश्वर्य
 वा सिद्धिके ह । “ अणिमन्, महिमन्, गरिमन्, लघिमन् ये चार (नाम
 पु०) हैं । प्राप्ति (स्त्री०), प्राकाम्य, ईशित्व वशित्व ये तीन (न०) हैं
 इन भेदोंसे आठ प्रकारकी सिद्धियाँ ह । उमा, कत्यायनी, गौरी, काली,
 हैमवती, ईश्वरी ॥ ३८ ॥ शिवा, भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमगला,
 अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका, अभिका ॥ ३९ ॥ आर्या, दाक्षा
 यणी, गिरिजा, मेनकात्मजा ये इक्कीस (स्त्री०) नाम पार्वतीके हैं । विना
 यक, विघ्नराज, द्वैमातुर, गणाधिप ॥ ४० ॥ एकदन्त, हेरम्ब, लम्बोदर,
 गजानन ये आठ (पु०) नाम गणेशजीके ह । कार्तिकेय, महासेन, शर
 जन्मन् (नामन्), पटानन ॥ ४१ ॥ पार्वतीनन्दन, स्कन्द, सेनानी, अमिभू,
 गुह, बाहुलेय, तारकाजिद्व (नामन्), विशाल, शिखिवाहन ॥ ४२ ॥

षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः कौश्वदारणः ।

शृंगी भृंगी रिटिस्तुंटी नन्दिको नन्दिकेश्वरः ॥ ४३ ॥

“ कर्ममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चार्चिका । ”

इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः ।

वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः ॥ ४४ ॥

जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।

सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४५ ॥

वास्तोष्पतिः सुरपतिर्वलारातिः शचीपतिः ।

जम्भभेदी हरिहयः स्वाराणमुचिसूदनः ॥ ४६ ॥

संकन्दनो दुश्श्रयवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।

आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया ॥ ४७ ॥

पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती ।

इय उच्चैश्रवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४८ ॥

षाण्मातुर, शक्तिधर, कुमार, कौश्वदारण ये सत्रह (पु०) नाम स्वामि-
कार्तिकके हैं । शृङ्गिन्, भृङ्गिन् (इन्नन्त), रिटि, तुंङ्गिन् (इन्नन्त),
नन्दिक, नन्दिकेश्वर ये छः (पु०) नाम नन्दिगणके हैं ॥ ४३ ॥ “कर्म-
मोटी यह एक (स्त्री०) नाम चामुंडाका और चर्ममुंडा यह एक (स्त्री०)
नाम चार्चिकाका है । ” इन्द्र, मरुत्व (मत्त्वन्त), मघवत् (मत्त्वन्त),
विडौजस् (सान्त), पाकशासन, वृद्धश्रवम् (सान्त), सुनासीर, पुरुहूत,
पुरन्दर ॥ ४४ ॥ जिष्णु, लेखर्षभ, शक्र, शतमन्यु, दिवस्पति, सुत्रामन् (नान्त),
गोत्रभृत् (तान्त), वज्रिन् (इन्नन्त), वासव, वृत्रहन् (नान्त), वृषन्
(नान्त) ॥ ४५ ॥ वास्तोष्पति, सुरपति, वलाराति, शचीपति, जम्भभेदिन्
(इन्नन्त), हरिहय, स्वाराज् (जान्त), नमुचिसूदन ॥ ४६ ॥ संकन्दन,
दुश्श्रयवन, तुराषाह् (हान्त), मेघवाहन, आखण्डल, सहस्राक्ष, ऋभुक्षिन्
(नान्त), ये पैंतीस (पु०) नाम इन्द्रके हैं । इन्द्रकी-प्रियाके ॥ ४७ ॥
पुलोमजा, शची, इन्द्राणी ये तीन (स्त्री०) नाम हैं । अमरावती यह एक
(स्त्री०) नाम इन्द्रकी नगरीका है । उच्चैःश्रवस् (सान्त) यह एक
(पु०) नाम इन्द्रके घोड़ेका है । मातलि यह एक (पु०) नाम इन्द्रके सार-
थिक है । नन्दन यह एक (न०) नाम इन्द्रके बागका है ॥ ४८ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनि ।
 ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभा ॥ ४९ ॥
 हादिनी वज्रमखी स्यात्कुलिश भिदुर पवि ।
 शतकोटिः स्वरुः शम्भो दम्भोलिरशनिर्द्वयो ॥ ५० ॥
 व्योमयान विमानोऽष्टी नारदाद्याः सुरर्षय ।
 स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ५१ ॥
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।
 मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नमानुः सुरालयः ॥ ५२ ॥
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
 संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५३ ॥
 सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वद्यावन्निनीसुतौ ।
 नासत्यावन्निनी दत्तावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५४ ॥

वैजयन्त यह एक (पु०) नाम इन्द्रके महलका है । जयन्त और पाकशासनि ये दो (पु०) नाम इन्द्रके पुत्रके हैं । ऐरावत, अभ्रमानग, ऐरायण, अभ्र मुवल्लभ ये चार (पु०) नाम इन्द्रके हाथीके हैं ॥ ४९ ॥ हादिनी (स्त्री०), वज्र, कुलिश, भिदुर, पवि, शतकोटि, स्वरु, शम्भु, दम्भोलि, अशनि ये दश नाम वज्रके हैं । वज्रशब्द (पु० न०) है । अशनिशब्द (पु०) और (स्त्री०) है । कुलिश, भिदुर (न०), शेष (पु०) हैं ॥ ५० ॥ व्योमयान (न०), विमान ये दो नाम विमानके हैं । विमानशब्द (पु०) और (न०) है । नारद, देवल आदि देवताओंमें अपि हैं । सुधर्मा, देवसभा ये दो (स्त्री०) नाम देवताओंकी समाये हैं । पीयूष (न०), अमृत (न०), सुधा (स्त्री०) ये तीन नाम अमृतके हैं ॥ ५१ ॥ मन्दाकिनी, वियद्गङ्गा, स्वर्णदी, सुर दीर्घिका ये चार (स्त्री०) नाम आराधनागणके हैं । मेरु, सुमेरु, हेमाद्री, रत्नमानु, सुरालय ये पाँच (पु०) नाम सुमेरुपर्वतके हैं ॥ ५२ ॥ मन्दार, पारिजातक, संतान, कल्पवृक्ष, हरिचन्दन ये पाँच (पु०) नाम देवताओंके हैं । हरिचन्दनशब्द (पु० न०) है ॥ ५३ ॥ सनत्कुमार, वैधात्र ये दो (पु०) नाम मनसादिदेवता हैं । स्वर्ग, आश्विनीसुत, नाम त्त, अश्विन, दत्त, आश्विनेय ये छ (पु०) नाम आश्विनीकुमारोंके हैं । ये दमर अर्थात् दोनों एकमात्र उत्पन्न हुए हैं, इसलिये इन्द्र कीर्तिता शब्द

स्त्रियां बहुवृत्तस्य सर्वश्या उर्वशीमुखाः ।
 हाहा हूहृश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५५ ॥
 अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।
 कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५६ ॥
 बर्हिःशुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
 आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५७ ॥
 लोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षाणिः ।
 हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५८ ॥
 सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
 शुचिरपिप्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५९ ॥
 वह्नेर्द्रयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
 त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः संतापः संज्वरः समौ ॥ ६० ॥
 “ उलका स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भसितमस्मनी ।
 क्षारो रक्षा च दावस्तु दवो वनहुताशनः ॥ ”

सर्वदा द्विवचनांत होते हैं ॥ ५४ ॥ अप्सरस्, सर्वश्या ये दो (स्त्री०)
 नाम उर्वशी मेनका आदिके हैं । तहां अप्सरसशब्द (स्त्री०) बहुवच-
 नांत है । हाहा, हूह आदि (पु०) नाम देवताओंके गन्धर्व अर्थात् गा-
 नेवालोंके हैं ॥ ५५ ॥ अग्नि, वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपी-
 टयोनि, ज्वलन, जातवेदस् (सान्त), तनूनपात् (तान्त) ॥ ५६ ॥ बर्हिस्
 (सान्त), शुष्मन् (नान्त), कृष्णवर्त्मन् (नान्त), शोचिष्केश, उष-
 र्बुध, आश्रयाश, बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल ॥ ५७ ॥ रोहिताश्व,
 वायुसख, शिखावत् (मत्वन्त), आशुशुक्षाणि, हिरण्येतस् (सान्त),
 हुतभुज् (जान्त), दहन, हव्यवाहन ॥ ५८ ॥ सप्तार्चिस् (सान्त), दमु-
 नस् (सान्त), शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि (पु०), अपिप्त (न०)
 ये चांतीस नाम अग्निके हैं । और्व, वाडव, वडवानल ये तीन (पु०) नाम
 वडवाग्निके हैं ॥ ५९ ॥ ज्वाल, कील, अर्चिस्, हेति, शिखा ये पांच
 नाम अग्निकी शिखाके हैं । ज्वाल और कीलशब्द (पु० स्त्री०) हैं ।
 अर्चिस्शब्द (सान्त स्त्री० न०) है । हेति और शिखाशब्द स्त्रीलिंग हैं ।
 स्फुलिग, अग्निकण ये दो (पु०) नाम अग्निके कणके हैं । स्फुलिगशब्द

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराद् ।
 कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराडचमः ॥ ६१ ॥
 कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।
 राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽक्षप आशरः ॥ ६२ ॥
 रात्रिचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकपात्मजः ।
 यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६३ ॥
 प्रचेता वरुणः पाशी यादसापतिरप्पतिः ।
 श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६४ ॥
 पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।
 समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणः ॥ ६५ ॥
 नमस्वद्वातपवनपवमानप्रमञ्जनाः ।
 प्रकम्पनो महावातो जज्ञावातः सवृष्टिकः ॥ ६६ ॥

तीनों लिंगका वाची है । सताप, सज्जर ये दो (पु०) नाम अभिके मता पके है ॥ ६० ॥ “ उल्का यह एक (स्त्री०) नाम अगारेखा है । भूति (स्त्री०), भसित (न०), भस्मन् (नान्त न०), क्षार (पु०), रक्षा (स्त्री०) ये पाँच नाम रक्षाके है । दान, दध ये दो (पु०) नाम वनाग्रिके है । ” धर्मराज, पितृपति, समवर्तिन् (इन्नन्त), परेतराज् (जान्त), कृतान्त, यमुनाभ्रातृ (ऋकारान्त), शमन, यमराज् (जान्त), यम ॥ ६१ ॥ काल, दण्डधर, श्राद्धदेव, वैवस्वत, अन्तक ये चौदह (पु०) नाम यमके है । राक्षस, कौणप, क्रव्याद् (दान्त), क्रयाद, अक्षप, आशर ॥ ६२ ॥ रात्रिचर, रात्रिचर, कर्बुर, निकपात्मज, यातुधान, पुण्यजन, नैर्ऋत, यातु, रक्षस् (सान्त) ये पन्द्रह नाम राक्षसके ह । इनमें यातु और रक्षस् ये दो नाम (न०) शेष पुंल्लिङ्ग है ॥ ६३ ॥ प्रचेतस् (सान्त), वरुण, पा शिन् (इन्नन्त), यादसापति, अप्पति ये पाँच (पु०) नाम वरुणके ह । श्वसन, स्पर्शन, वायु, मातरिश्वा (नान्त), सदागति ॥ ६४ ॥ पृषदश्व, गन्धवह, गन्धवाह, अनिल, आशुग, समीर, मारुत, मस्त् (तान्त), जगत्प्राण, समीरण ॥ ६५ ॥ नमस्त् (मत्तन्त), वात, पवन, पवमान, प्रमञ्जन ये बीस (पु०) नाम वायुके है । प्रकम्पन, महावात ये दो (पु०) नाम महावायु अर्थात् आर्थाके ह । और जो वृष्टि करके महित हो तो

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ।
 शरीरस्था इमे रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥ ६७ ॥
 जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ।
 सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ॥ ६८ ॥
 सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम् ।
 नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः ॥ ६९ ॥
 अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ।
 तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढवाढदृढानि च ॥ ७० ॥
 क्लीवे शीघ्राद्यसत्त्वे स्थात्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ।
 कुबेरह्यम्बकसखो यक्षराज्ञ-गुह्यकेश्वरः ॥ ७१ ॥
 मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ।
 किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥ ७२ ॥

उसीको इंज्ञावात कहते हैं यह पुँल्लिग है ॥ ६६ ॥ प्राण, अपान, समान,
 उदान, व्यान ये पाँच (पु०) नाम शरीरमें स्थित वायुके हैं । हृदयमें प्राण
 है, गुदामें अपान है, नाभिमें समान है, कंठमें उदान और सम्पूर्ण शरीरमें
 व्यान है । रंहस् (सान्त न०), तरस् (सान्त न०), रय (पु०), स्यद
 (पु०) ॥ ६७ ॥ जव (पु०) ये पाँच नाम वेगके हैं । शीघ्र, त्वरित,
 लघु, क्षिप्र, अर, द्रुत, सत्वर, चपल, तूर्ण, अविलम्बित, आशु ये ग्यारह
 (न०) नाम शीघ्रताके हैं ॥ ६८ ॥ सतत, अनारत, अश्रान्त, संतत, अ-
 विरत, अनिश, नित्य, अनवरत, अजस्र ये नव (न०) नाम नित्यके हैं ।
 अतिशय (पु०), भर (पु०) ॥ ६९ ॥ अतिवेल, भृश, अत्यर्थ, अति-
 मात्र, उद्गाढ, निर्भर, तीव्र, एकांत, नितान्त, गाढ, वाढ, दृढ ये बारह
 (न०) कुल चौदह नाम अतिशयके हैं ॥ ७० ॥ शीघ्रसे आदि ले दृढपर्यंत
 शब्द असत्त्व विषे अर्थात् द्रव्यवृत्तिपनेके अभावमें नपुंसकालिग हैं । जैसे-
 ' शीघ्रं कृतवान्, भृशं मूर्खः, भृशं याति ' इन वचनोंमें नपुंसकालिग है और
 इन शीघ्र आदिकोंके मध्यमें जो सत्त्वगामी द्रव्यवृत्ति हैं वह तीनों लिग-
 वाची हैं । जैसे- ' शीघ्रा घेनुः, शीघ्रो वृषः, शीघ्र गमनम् ' इन वचनोंमें
 (स्त्री० पु० न०) है । कुबेर, न्यंबकसख, यक्षराज्ञ (जान्त), गुह्यकेश्वर
 ॥ ७१ ॥ मनुष्यधर्मन् (नान्त), धनद, राजराज, धनाधिप, किन्नरेश,

यक्षैकपिङ्गलविलश्रीदपुण्यजनेश्वरा ।

अस्योद्यानं चैत्ररथ पुत्रस्तु नलकूबरः ॥ ७३ ॥

कैलासः स्थानमलका पूर्वमानं तु पुष्पकम् ।

स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरगवदनो मयुः ॥ ७४ ॥

निधिर्वा शेवधिर्भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः २ ।

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्र व्योम पुष्करमम्बरम् ।

नमोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥

वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।

विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

“तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाविलम्” इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

चैश्रवण पौलस्त्य, नरवाहन ॥ ७२ ॥ यक्ष, एकपिंग, ऐलविल, श्रीद, पुण्यजनेश्वर ये सत्रह (पु०) नाम कुबेरके हैं । चैत्ररथ यह एक (न०), नाम कुबेरके बगीचेका है । नलकूबर यह एक (पु०) नाम कुबेरके पुत्रका है ॥ ७३ ॥ कैलास यह एक (पु०) नाम कुबेरके स्थानका है । अलका यह एक (स्त्री०) नाम कुबेरकी पुरीका है । पुष्पक, यह एक (पु० न०) नाम कुबेरके विमानका है । किन्नर, किंपुरुष, तुरगवदन, मयु ये चार (पु०) नाम किन्नरोंके हैं ॥ ७४ ॥ निधि, शेवधि ये दो (पु०) नाम खजानेके हैं । (यहां “ ना ” अर्थात् पुंल्लिंगका काककी आंखकी पुतलीके समान दोनोंमें सम्बन्ध है) पद्म (पु०), शङ्ख (पु०) आदि नाम निधि अर्थात् खजानेके भेदवाची हैं । “ महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दौ नीलश्च खर्वश्च निधयो नव ॥ ” महा पद्म, पद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ये नव (पु०) नाम निधि अर्थात् खजानेके भेद हैं ॥ इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः । द्यौ, दिव्, अभ्र, व्योमन् (नान्त), पुष्कर, अम्बर, नभस् (सान्त), अन्तरिक्ष, गगन, अनन्त, सुरवर्त्मन् (नान्त), ख ॥ १ ॥ वियत् (तान्त), विष्णुपद, आकाश, विहायस् (सान्त), विहायस, नाक, द्यु ये उन्नीस “ तारापथ (पु०), अन्तरिक्ष (न०), मेघाध्वन् (नान्त पु०), महाविल (न०) ये चार कुल तेईस नाम आकाशके हैं । द्यौ और

अथ दिग्बर्गः ३ ।

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।
 प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥
 उत्तरा दिगुदीची स्यात् दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।
 “ अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ।
 प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥ ”
 इन्द्रो वह्निः पितृपतिनैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥
 कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।
 “ रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्मानुर्भानुजो विधुः ।
 बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥ ”
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।
 करिण्योऽभ्रमुक्तापिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥

दिग् शब्द स्त्रीलिङ्ग है। आकाश और विहायस् शब्द (पु० न०) है।
 और द्युस् यह अव्यय है शेष (न०) है ॥ २ ॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥
 अथ दिग्बर्गः । दिग् (शान्त), ककुभ् (भान्त), काष्ठा, आशा,
 हरित (तांत) ये पांच (स्त्री०) नाम दिशाके हैं। वे पूर्व, दक्षिण, प-
 श्चिम इनके प्राची, अवाची, प्रतीची ये क्रमसे (स्त्री०) नाम हैं ॥ १ ॥
 उदीची यह एक (स्त्री०) नाम उत्तर दिशाका है। दिशामें होनेवालेको
 दिश्य कहते हैं और यह तीनों लिङ्गवाची है। जैसे—‘दिश्यो हस्ती, दिश्या
 हस्तिनी’ इन वचनोंमें हस्तीके साथ दिश्यशब्द पुँलिङ्ग है और हस्तिनीके
 साथ दिश्याशब्द स्त्रीलिङ्ग है। “ अवाचीन, उदीचीन, प्रतीचीन, प्राचीन
 ये तीनों लिङ्गवाची चार नाम दक्षिण, उत्तर, पश्चिम, पूर्व इन चार दिशा-
 ओमें होनेवाले पदार्थके यथाक्रम हैं। ” इन्द्र, वह्निः, पितृपति, नैर्ऋत, वरुण,
 मरुत् (तान्त) ॥ २ ॥ कुबेर, ईश ये आठों (पु०) नाम पूर्व आदि
 दिशाओंके क्रमसे स्वामियोंके हैं ॥ “ रवि, शुक्र, महीसूनु, स्वर्मानु, भानुज,
 विधु, बुध, बृहस्पति ये आठ ग्रहोंके (पु०) नाम क्रमसे पूर्व आदि दिशा-
 ओंके स्वामियोंके हैं। ” ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन ॥ ३ ॥
 पुष्पदन्त, सार्वभौम, सुप्रतीक ये आठ (पु०) नाम पूर्व आदि दिशाओंके

ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चागना चाञ्जनावती ।
 क्लीवाव्ययं त्वपादिश दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥
 अभ्यन्तर त्वन्तराल चक्रवाल तु मण्डलम् ।
 अभ्रं मेघो वारिवाह* स्तनयितुर्वलाहक ॥ ६ ॥
 धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ।
 घनजीमूतमुदिरजलमुग्धमयोनि* ॥ ७ ॥
 कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।
 स्तनितं गर्जित मेघनिर्गोपे रसितादि च ॥ ८ ॥
 शपाशतहृदाह्लादिन्यैरावत् क्षणप्रभा ।
 तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥
 स्फूर्जयुर्वज्रनिर्घापो मेघज्योतिरिरमद* ।
 इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥

क्रमसे दिग्गज अर्थात् दिशाओंको धारण करनेवाला एक है । अभ्रसु, क
 पिला, पिमला, अनुपमा ॥ ५ ॥ ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती अगना, अञ्जना
 वती ये आठ (स्त्री०) नाम दिग्गजोंकी हथिनियों हैं । अपदिश,
 विदिक् (ज्ञान्त) ये दो नाम दिशाओंके मध्यमाली दिशाये हैं । तहाँ
 अपदिशशब्द (न०) और अव्यय है और विदिक् शब्द (स्त्री०)
 है ॥ ५ ॥ अभ्यन्तर, अन्तराल ये दो (न०) नाम भीतर अन्तर्काशक हैं ।
 चक्रवाल, मण्डल ये दो (न०) नाम मण्डल अर्थात् घेरे हैं । अभ्र (न०)
 मेघ, वारिवाह, स्तनयितु, वलाहक ॥ ६ ॥ धाराधर, जलधर, तडित्स्व,
 (मतान्त), वारिद, अम्बुभृत् (तान्त), घन, जीमूत, मुदिर, जम्बु
 (चान्त), मयोनि ये पद हैं (पु०) नाम मेघके हैं ॥ ७ ॥ कादम्बिनी,
 मेघमाला ये दो (स्त्री०) नाम मेघकी पत्तिकाएँ हैं । मेघमें जो हो उसे
 अभ्रिय कहते हैं और वह तानों लिंगा है । जैसे— अभ्रिया नाप, अ
 भ्रिय आसार, अभ्रिय जम् ॥ इन वाक्योंमें स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, नपुमल्ल
 लिंग क्रममें हैं । स्तनित, गर्जित, रसित आदि ये तीन (स्त्री०) नाम मेघके
 गर्जनके हैं ॥ ८ ॥ शपा, शतहृदा, ह्लादिनी ऐरावती, क्षणप्रभा तडित्
 (तान्त), सौदामनी, विद्युत् (तान्त), चञ्चला, चपला ये द्वा (स्त्री०)
 नाम विज्जलके हैं ॥ ९ ॥ स्फुरन्, वज्रनिर्घाप ये दो (पु०) नाम त्रिद

वृष्टिर्वर्षं तद्विधातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।

धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुकण्ठाः स्मृताः ॥ ११ ॥

वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽग्नि दुर्दिनम् ।

अन्तर्धा व्यवधा पुंमे त्वन्तर्धिगपवारणम् ॥ १२ ॥

अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

हिमांशुश्चंद्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदवान्धवः ॥ १३ ॥

विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।

अञ्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगांकः कलानिधिः ॥ १४ ॥

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः श्रपाकरः ।

कला तु षोडशा भागो विम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

शब्दके हैं। मेघज्योतिस् (सान्त), इरमद ये दो (पु०) नाम मेघकी ज्योतिके हैं। इन्द्रायुध, शक्रधनुस् (सान्त), ऋजुरोहित ये तीन (न०) नाम इन्द्रके धनुषके हैं ॥ १० ॥ वृष्टि (स्त्री०), वर्ष (न०) ये दो नाम वर्षा-के हैं। अवग्राह, अवग्रह ये दो (पु०) नाम वर्षाके निरोधके हैं। धारा-संपात, आसार ये दो (पु०) नाम निरन्तर वर्षनेके हैं। शीकर यह एक (पु०) नाम जलके छोटे २ कणकोंका है ॥ ११ ॥ वर्षोपल (पु०), करका (स्त्री०) ये दो नाम ओलोंके हैं। दुर्दिन यह एक (न०) नाम मेघसे आच्छादित हुए दिनका है। अन्तर्धा (स्त्री०), व्यवधा (स्त्री०), अन्तर्धि (पु०), अपवारण (न०) ॥ १२ ॥ अपिधान (न०), तिरोधान (न०), पिधान (न०), आच्छादन (न०) ये आठ नाम आच्छादनके हैं। तहां अंतर्धिशब्द पुंल्लिङ्ग है। हिमांशु, चन्द्रमस् (सान्त), चन्द्र, इन्दु, कुमुद-वान्धव ॥ १३ ॥ विधु, सुधांशु, शुभ्रांशु, ओषधीश, निशापति, अञ्ज, जैवातृक, सोम, ग्लौ, मृगांक, कलानिधि ॥ १४ ॥ द्विजराज, शशधर, नक्ष-त्रेश, श्रपाकर ये बीस (पु०) नाम चन्द्रमाके हैं। कला यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमाके मण्डलके सोलहवें भागका है। विम्ब, मण्डल ये दो नाम विम्बके हैं। तहां विम्बशब्द (पु० न०) है और मण्डलशब्द त्रिलिङ्गी है ॥ १५ ॥ भित्त (न०), शकल, खण्ड, अर्ध ये चार नाम टुकड़ेके हैं।

कलङ्काङ्गौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।
 सुपमा परमा शोभा शोभा कान्तित्युतिश्छविः ॥ १७ ॥
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुपारस्तुदिनं हिमम् । ।
 प्रालेय मिहिका चाथ हिमानी हिमसहतिः ॥ १८ ॥
 शीत गुणे तद्वदर्याः सुपीम शिशिरो जड ।
 तुपारः शीतल शीतो हिम सप्तान्यलिङ्गकाः ॥ १९ ॥
 ध्रुव औत्तानपादि स्यादगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।
 मैत्रावरुणिरस्यैव लोषामुद्रा सधर्मिणी ॥ २० ॥
 नक्षत्रमृच भे तारा तारकाप्लुडु वा स्त्रियाम् ।
 टाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा अश्वयुगाश्विनी ॥ २१ ॥

तहाँ शकल और खण्डशब्द (पु० न०) है । अर्द्धशब्द पुल्लिङ्ग है । जैसे—
 ‘कवलस्यार्द्धं खण्ड’ इत्यर्थ । और वाच्यलिङ्गभी है । जैसे—‘अर्धा
 शाटी, अर्धं पट, अर्धं वस्त्रम्’ और समानभागमें अर्द्धशब्द नपुंसकलिङ्ग
 है । चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना ये तीन (स्त्री०) नाम चद्रमात्री चाँद
 नीके है । प्रसाद (पु०), प्रसन्नता (स्त्री०) ये दो नाम निर्मलताके है
 ॥ १६ ॥ कलक, अक, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्मर (नां) लक्षण ये छ नाम
 चिह्नके है । कलक, अक ये दो (पु०) है शेष (न०) लिङ्ग है । सु
 पमा यह एक (स्त्री०) नाम उत्तम शोभाका है । शोभा, कान्ति, व्युति,
 छवि ये चार (स्त्री०) नाम कान्तिके है ॥ १७ ॥ अवश्याय (पु०),
 नीहार (पु०), तुपार (पु०), तुहिन (न०), हिम (न०), प्रालेय
 (न०), मिहिका (स्त्री०) ये सात नाम हिम अर्थात् जाटेके है । हि
 मानी, हिमसहति ये दो (स्त्री०) नाम बहुत हिमके है ॥ १८ ॥ शीत
 शब्द गुण अर्थात् स्पर्शविशेषमेही (न०) है, गुणवालेमें नहीं है । सुपीम,
 शिशिर, जट, तुपार, शीतल, शीत, हिम ये सातों नाम शीतगुणवालेके है ।
 अन्यलिङ्ग अर्थात् त्रिलिङ्गी है । इनका लिङ्ग विशेष्यके अनुसार होना है
 ॥ १९ ॥ ध्रुव, औत्तानपादे ये दो (पु०) नाम उत्तानपादके पुत्रके है ।
 ‘अगस्त्य, कुम्भसम्भव, मैत्रावरुणि ये तीन (पु०) नाम अगस्त्यमुनिके है ।
 लोषामुद्रा यह एक (स्त्री०) नाम अगस्त्यकी समानधर्मवाली स्त्रीका है
 ॥ २० ॥ नक्षत्र (न०), ऋक्ष (न०), न (न०), तारा (स्त्री०), ता
 रका (स्त्री०), प्लुडु ये उ नाम नक्षत्रके है । तहाँ प्लुडुशब्द (स्त्री - न०)

राधा विशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ श्रविष्ठया ।
 समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २१ ॥
 मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।
 इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २२ ॥
 बृहस्पतिः सुराचार्यो गोष्पतिर्धिषणो गुरुः ।
 जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥ २४ ॥
 शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।
 अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥
 रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिजनैश्चरौ ।
 तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिकेयो विधुंतुदः ॥ २६ ॥
 सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।
 राजीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

हे । अश्विनीनक्षत्रसे आदि ले रेवतीपर्यंत दाक्षायणी नामसे प्रसिद्ध है ।
 अश्वयुज् (जान्त), अश्विनी ये दो (स्त्री०) नाम अश्विनीके हैं ॥ २१ ॥
 राधा, विशाखा ये दो (स्त्री०) नाम विशाखाके हैं । सिध्य, तिष्य, पुष्य
 ये तीन (पु०) नाम पुष्यके हैं । श्रविष्ठा, धनिष्ठा ये दो (स्त्री०) नाम
 धनिष्ठाके हैं । श्रविष्ठाके तुल्य हैं । प्रोष्ठपदा, भाद्रपदा ये दो (स्त्री०)
 नाम पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपदके हैं ॥ २२ ॥ मृगशीर्ष (न०), मृग
 शिरम् (सान्त न०), आग्रहायणी (स्त्री०) ये तीन नाम मृगशिरके हैं ।
 इल्वका एक (स्त्री०) नाम मृगशिरके शिरके देशमें रहनेवाले पांच तारोंका
 है ॥ २३ ॥ बृहस्पति, सुराचार्य, गोष्पति, धिषण, गुरु, जीव, आङ्गिरस,
 वाचस्पति, चित्रशिखण्डिज ये नव (पु०) नाम बृहस्पतिके हैं ॥ २४ ॥ शुक्र,
 दैत्यगुरु, काव्य, उशनस् (सान्त), भार्गव, कवि ये छः (पु०) नाम शुक्रके
 हैं । अङ्गारक, कुज, भौम, लोहिताङ्ग, महीसुत ये पांच (पु०) नाम मग-
 लके हैं ॥ २५ ॥ रौहिणेय, बुध, सौम्य ये तीन (पु०) नाम बुधके हैं ।
 सौरि, जनैश्चर ये दो (पु०) नाम शनिके हैं । तमस् (सान्त), राहु-स्व-
 भानु, सैहिकेय, विधुंतुद ये पांच नाम राहुके हैं । तहां तमस् शब्द (न०)
 है । शेष (पु०) है ॥ २६ ॥ चित्रशिखण्डिन यह एक (इन्नन्त पु०) नाम
 मरीचि, आङ्गिरस, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ इन सप्तऋषियोंका

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मादेवाकराः ।
 भास्कराहस्करग्रध्रप्रभाकरविमाकरा ॥ २८ ॥
 भास्वाद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मय ।
 विकर्त्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥
 द्युमणिस्तराणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।
 विभावसुर्ग्रहपतिस्त्रिपापतिरहर्षति ॥ ३० ॥
 भानुर्हसः सहस्राशुस्तपनः सविता रविः ।
 “ पद्माक्षस्तेजसाराशिश्छायाणाथस्तमिच्छहा ।
 कर्मसाक्षी जगच्चतुर्लोकन्युस्त्रयीतनु ॥
 प्रद्योतनो दिनमणिः सद्योतो लोकवान्धवः ।
 इतो भागो धामनिधिश्चाशुमाल्यब्जिनीपतिः ॥ ”
 माठर पिङ्गलो दण्डश्चण्डाशो पारिपार्श्वकाः ॥ ३१ ॥
 सूरसृतोऽरुणोऽनूरु काश्यपिर्गर्हडाग्रजः ।
 परिवेपस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

हे । लग्न यह एक (न०) नाम मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन इन राशियोंके उदयका हे ॥२७॥
 सूर, सूर्य, अर्यमन् (नान्त), आदित्य, द्वादशात्मन् (नान्त) दिवाकर, भास्कर, अहस्कर, ग्रह, प्रभाकर, विमाकर ॥ २८ ॥ भास्वत् (तात), विस्वत् (तात), सप्ताश्व, हरिदश्व, उष्णरश्मि, विकर्त्तन, अर्क, मार्त्तण्ड, मिहिर, अरुण, पूषन् (तात) ॥२९॥ द्युमणि, तराजि, मित्र, चित्रभानु, विरोचन, विभावसु, ग्रहपति, त्रिपापति, अहर्षति ॥३०॥ भानु, हस, सहस्राशु, तपन, सवितृ (ऋकारान्), रवि ये सप्तौस और “ पद्माक्ष, तजसांराशि, छायाणाथ, तमिच्छहन् (नान्त), कर्मसाक्षिन् (इजन्त), जगच्चतु, लोकन्यु, प्रद्योतनु, प्रद्योतन, दिनमणि, सद्योत, लोकवान्धव, इन, भाग, धामनिधि, अशुमालि, अग्निजनीपति ये सत्रह रूल चौवन (पु०) नाम सूर्यके हैं । माठर, पिङ्गल, दण्ड ये तीन (पु०) नाम सूर्यके पास रहनेवालोंके हैं ॥३१॥ सूरमत, अरुण, अनूरु, काश्यपि, गर्हडाग्रज ये पाँच (पु०) नाम सूर्यके सारथि हैं । परिवेप (पु०), परिधि (पु०), उपसूर्यक

किरणोत्स्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ।

भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभा रुचिस्त्विड् भा भाच्छविद्युतिदीप्तिभ्यः ।

रोचिः शोचिरुभे क्लीबे प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका ३५ इति दिग्वर्गः ३

अथ कालवर्गः ४ ।

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ पक्षतिः ।

प्रतिपद्मे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तितथयो द्वयोः ॥ १ ॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।

प्रत्युषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥

(न०), मण्डल (न०) ये चार नाम सूर्यके कुण्डलनाके हैं ॥ ३२ ॥

किरण, उत्स्र, मयूख, अंशु, गभस्ति, घृणि, रश्मि, भानु, कर, मरीचि, दीधिति ये ग्यारह नाम किरणके हैं । तहां मरीचिशब्द स्त्रीलिंग पुँल्लिंग, दीधितिशब्द स्त्रीलिंग और शेष पुँल्लिंग हैं ॥ ३३ ॥ प्रभा, रुच (चान्त), रुचि, त्विप् (सांत), भा, मास् (सांत), छावि, द्युति, दीप्ति, रोचिस् (सांत), शोचिस् (सांत) ये ग्यारह नाम प्रभाके हैं । इनमें प्रभासे दीप्तिशब्दतक स्त्रीलिंग हैं । रोचिप् और शोचिप् शब्द (न०) हैं । प्रकाश, द्योत, आतप ये तीन (पु०) नाम सूर्यकी घामके हैं ॥ ३४ ॥ कोष्ण, कवोष्ण, मन्दोष्ण, कदुष्ण ये चार नाम अल्पगर्मके हैं । ये धर्ममें रूपभेदसे (न०) हैं । धर्मी अर्थात् धर्मवालेमें त्रिलिङ्गी हैं । तिग्म, तीक्ष्ण, खर ये तीन नाम अत्यन्त गर्मके हैं । येभी धर्ममें रूपभेदसे नपुंसकलिंग हैं और धर्मी अर्थात् धर्मवालोंमें त्रिलिङ्गी हैं । मृगतृष्णा, मरीचिका ये दो (स्त्री०) नाम मृगजल अर्थात् मरुदेशमें फैली हुई रेतपर सूर्यकी किरणें पडनेसे जो भ्रमरूप जलका आभास होता है उसके हैं ॥ ३५ ॥ इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः । काल, दिष्ट, अनेहस् (सान्त), समय ये चार (पु०) नाम कालके हैं । पक्षति, प्रतिपद् (दांत) ये दो नाम पडवाके हैं । प्रतिपद्से आदि तिथि कहाती हैं । पक्षति और प्रतिपद्शब्द (स्त्री०) हैं । तिथिशब्द (स्त्री०) और (पु०) है ॥ १ ॥ घस्र (पु०), दिन (न०), अहर् (नांत न०), दिवस, वासर ये पांच नाम दिनके हैं । तहां दिवस,

“ व्युष्टं विभात द्वे क्लीबे पुंसि गोसर्ग इष्यते । ”

प्रभात च दिनान्ते तु साय सध्या पितृप्रसू ।

प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यमथ शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।

विभावरीतमस्विनी रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्योत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।

आगामिवर्तमानादर्युक्ताया निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥

गणरात्र निशा बह्वचः प्रदोषो रजनीमुखम् ।

अर्द्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

स पर्वसाधि प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥

वासर शब्द (पु० न०) है । प्रत्युष, अहर्मुख, कल्प, उपसू (सात), प्रत्युषसू (सात) ॥ २ ॥ प्रभात ये छ और “ व्युष्ट (न०), विभात (न०), गोसर्ग (पु०) ” ये तीन शब्द नौ नाम प्रभातके हैं । प्रत्युष (पु० न०) है । शेष (न०) है । दिनान्त (पु०), साय (अव्यय, न०) सध्या (स्त्री०), पितृप्रसू (स्त्री०) ये चार नाम सायकालके हैं । प्राह्ण, अपराह्ण, मध्याह्न इन तीनोंको त्रिसन्ध्य कहते हैं । प्राह्ण यह एक (पु०) नाम दिनके पूर्वभागका है । मध्याह्न यह एक (पु०) नाम दुपहरका है । अपराह्ण यह एक (पु०) नाम दुपहर पीछेका है । शर्वरी ॥ ३ ॥ निशा, निशीथिनी, रात्रि, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी, यामिनी, तमी ये बारह (स्त्री०) नाम रात्रिके हैं ॥ ४ ॥ तमिस्रा यह एक (स्त्री०) नाम अंधेरी रात्रिका है । ज्योत्स्नी यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमासे युक्त अर्थात् चाँदनीरात्रिका है । पक्षिणी यह एक (स्त्री०) नाम पहले पिछले दिनसे युक्त हुई रात्रिका है ॥ ५ ॥ गणरात्र यह एक (न०) नाम बहुतसी रात्रियोंके समूहका है । प्रदोष (पु०), रजनीमुख (न०) ये दो नाम रात्रिके पूर्वभागके हैं । अर्द्धरात्र, निशीथ ये दो (पु०) नाम आधी रातके हैं । याम, प्रहर ये दो (पु०) नाम प्रहरके हैं ॥ ६ ॥ पर्वसाधि यह एक (पु०) नाम प्रतिपदा और पचदशीके अन्तरका है । पक्षान्त (पु०), पञ्चदशी (स्त्री०) ये दो नाम

कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे ।

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः मिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥

सोपप्लवोपरक्तौ द्वावभ्युत्पात उपाहितः ।

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला ।

तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥

ते तु त्रिंशद्द्वोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च ।

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

पक्षके अन्तकी तिथिके है । पौर्णमासी, पूर्णिमा ये दो (स्त्री०) नाम पूर्णमासीके हैं ॥ ७ ॥ अनुमति यह एक (स्त्री०) नाम कलाहीन चंद्रमायुक्त पौर्णमासीका है । राका यह एक (स्त्री०) नाम पूर्णचंद्रमायुक्त पौर्णमासीका है । अमावास्या (स्त्री०), अमावस्या (स्त्री०) दर्श (पु०), सूर्येन्दुसंगम (पु०) ये चार नाम अमावसके हैं ॥ ८ ॥ सिनीवाली यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमा जिसमें दिखाई दे उस अमावसका है । और कुहू यह एक (स्त्री०) नाम जिसमें चंद्रमा नहीं दीखे उस अमावसका है । उपराग, ग्रह ये दो नाम राहुसे किये गये चंद्रमा और सूर्यके ग्रासके हैं ॥ ९ ॥ सोपप्लव, उपरक्त ये दो नाम राहुसे ग्रस्त हुए चंद्रमा और सूर्यके हैं । ये चारों (पु०) नाम हैं । अभ्युत्पात, उपाहित ये दो (पु०) नाम अग्रिकृत उत्पातके हैं । पुष्पवन्त यह एक (पु०) नाम एक युक्ति करके अर्थात् दोनोंको एक साथ कहनेसे सूर्य चंद्रमाका है ॥ १० ॥ निमेष (पु०) नाम आंखके मीचने और खोलनेका है । अठारह निमेषका नाम काष्ठा (स्त्री०) है । तीस काष्ठाओंका नाम एक कला (स्त्री०) है । तीस कलाओंका नाम एक क्षण (पु०) है । बारह क्षणोंका नाम मुहूर्त है । और मुहूर्तशब्द (पु० न०) है ॥ ११ ॥ तीस मुहूर्तोंका एक अहोरात्र (पु०) अर्थात् दिनरात्रि होती है । पंद्रह अहोरात्रका पक्ष (पु०) होता है । महीनेका पूर्वपक्ष शुक्ल (पु०) है और परपक्ष कृष्ण (पु०) है । और दोनों पक्षोंका मास (पु०) अर्थात् महीना होता है ॥ १२ ॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुस्त्वैरयन त्रिभिः ।

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सर ॥ १३ ॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुव च तत् ।

“ पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा ।

नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥ ”

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥

पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तर्पा माघेऽथ फाल्गुने ।

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिक स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधु ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ।

आषाढे श्रावणे तु स्यान्नमाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदमाद्रभाद्रपदा समा ।

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥

मगशिर आदि दो दो मासोंका ऋतु (पु०) होता है । (मूलमें जो माघसे दो दो मासोंकी गणना है वह केवल अयनारम्भके वशसे है) । तीन ऋतुओंका अयन (न०) होता है । अयन दो प्रकारका है । उत्तरायण और दक्षिणायन इन दोनों अयनोंका वत्सर (पु०) होता है ॥ १३ ॥ विषुव (तान्त), विषुव ये दो (न०) नाम समान रात्रिदिनवाले काल अर्थात् मेघतुलाक्री सत्रातिरेके कालके हैं । “ पुष्यनक्षत्रसे युक्त जी पौर्णमासी उसको पौषी ऐसी (स्त्री०) एक नाम है वह पौषी जिस मासमें हो उसको पौष ऐसा (पु०) एक नाम है । मघानक्षत्रयुक्त पौर्णमासी जिस मासमें हो उसको माघ ऐसा (पु०) एक नाम है इस प्रकार पौषसे लेके सब मास जानना । ” मार्गशीर्ष, सहस्र (सान्त), मार्ग, आग्रहायणिक ये चार (पु०) नाम मगशिरके हैं ॥ १४ ॥ पौष, तैष, सहस्य ये तीन (पु०) नाम पौषके हैं । तपस् (सान्त), माघ ये दो (पु०) नाम माघके हैं । फाल्गुन, तपस्य, फाल्गुनिक ये तीन (पु०) नाम फाल्गुनके हैं । चैत्र, चैत्रिक, मधु ये तीन (पु०) नाम चैत्रके हैं ॥ १५ ॥ वैशाख, माधव, राध ये तीन (पु०) नाम वैशाखके हैं । ज्येष्ठ, शुक्र ये दो (पु०) नाम जेठके हैं । शुचि, आषाढ ये दो (पु०) नाम आषाढके हैं । श्रावण, नभस् (सान्त), श्रावणिक ये तीन (पु०) नाम श्रावणके हैं ॥ १६ ॥ नभस्य,

बाहुलोजौ कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम् ।

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥

निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण देवतः ।

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

प्रीष्ठपद, भाद्र, भाद्रपद ये चार (पु०) नाम भाद्रोंके हैं । आश्विन, इष, आश्वयुज ये तीन (पु०) नाम आश्विनके हैं । कार्तिक ॥ १७ ॥ बाहुल, ऊर्ज, कार्तिक ये चार (पु०) नाम कार्तिकके हैं । हेमन्त यह एक ऋतु है । शिशिर यह एक ऋतु है । हेमन्त और शिशिरशब्द (पु० न०) हैं । वसन्त, पुष्पसमय, सुरभि ये तीन (पु०) नाम वसन्तऋतुके हैं । ग्रीष्म, ऊष्मक ॥ १८ ॥ निदाघ, उष्णोपगम, उष्ण, ऊष्मागम, तप ये सात (पु०) नाम ग्रीष्म ऋतुके हैं । प्रावृष्, वर्षा ये दो नाम वर्षाऋतुके हैं । तहां प्रावृट्शब्द षकारान्त (स्त्री०) है और वर्षाशब्द (स्त्री०) और नित्य बहुवचनांत है । शरत् (दान्त) यह एक नाम शरत् ऋतुका है और स्त्रीलिंग है ॥ १९ ॥ मगशिर आदि दो दो, महर्निके क्रमसे ये छः ऋतु हैं और ऋतुशब्द (पु०) है । संवत्सर, वत्सर, अब्द, हायन, शरत्, समा ये छः नाम वर्षके हैं । तहां हायनान्त शब्द (पु० न०) हैं । शरत् (स्त्री०) है । समाशब्द स्त्रीलिंग बहुवचनांत है । शेष पुँल्लिङ्ग है ॥ २० ॥ मनुष्योंके एक महर्निसे पितरोंका एक दिनरात्रि होता है । तहां कृष्णपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें दिनका आरम्भ होता है और शुक्लपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें रात्रिका आरम्भ होता है । मनुष्योंके एक वर्षमें देवताओंका दिनरात्रि होता है । उत्तरायण दिन है, दक्षिणायन रात्रि है और मनुष्योंके कृतयुग आदि चौकड़ी देवताओंका एक युग होता है । इस प्रकार देवताओंके दो हजार युगका ब्रह्माका एक दिनरात्रि होता है । ब्रह्माके दिनमें संसारकी स्थाति है और ब्रह्माजीकी रात्रिमें प्रलयकाल होता है । ऐसे देवताओंके दो हजार युगमें मनुष्योंकी स्थाति और प्रलय

मन्वन्तरं तु दिव्याना युगानामेकसप्ततिः ।
 संवत्सं प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥
 अस्त्री पङ्क पुमान् पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ।
 कलुषं वृजिनैनोघमहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥
 स्याद्धर्ममाश्रिया पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृष* ।
 सुप्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदा ॥ २४ ॥
 स्यादानन्दधुरानन्द* शर्मशातसुखानि च ।
 श्व.श्रेयस शिवं मद्रं कल्याणं मगल शुभम् ॥ २५ ॥
 भावुक भविक भव्य कुशल क्षेममाश्रियाम् ।
 शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥
 मतालिका मचार्चिका प्रकाण्डमुद्धतलजौ ।
 प्रशस्तवाचकान्यमून्यय. शुभावहो विधि* ॥ २७ ॥

होता है ॥ २१ ॥ देवताओंके ७१ युगोंका एक मन्वन्तर होता है । संवत्सं, प्रलय, कल्प, क्षय, कल्पान्त ये पाँच (पु०) नाम प्रलयके हैं ॥ २२ ॥ पङ्क, पाप्मन् (नान्त), पाप, किल्बिष, कल्मष, कलुष, वृजिन, एनस् (सात), अघ, अहस् (सात), दुरित, दुष्कृत ये बारह नाम पापके हैं । तहाँ पाप्मन्शब्द (पु०) है । पङ्क शब्द (पु० न०) है । और सब स्त्रीव है ॥ २३ ॥ धर्म, पुण्य, श्रेयस् (सात), सुकृत, वृष ये पाँच नाम धर्मके हैं । इनमें धर्मशब्द (पु० न०), वृष (पु०), शेष (न०) हैं । पुण्यशब्द जब विशेषण होता है तब इसका लिंग विशेष्यके समान होता है । सुद (दात), प्रीति, प्रमद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, समद ॥ २४ ॥ आनन्द, आनन्द, शर्मन् (नात), शात, सुख ये बारह नाम सुखके हैं । इनमें सुद और प्रीतिशब्द स्त्रीलिंग है । शर्मन्, शात, सुख (न०), शेष (पु०) हैं । श्व श्रेयस् (सान्त), शिव, मद्र, कल्याण, मगल, शुभ ॥ २५ ॥ भावुक, भविक, भव्य, कुशल, क्षेम, शस्त ये बारह नाम कल्याणमात्रके हैं । तहाँ क्षेम और शस्त शब्द (पु० न०) हैं । पाप-पुण्यशब्द और सुखादिशब्द (श्व श्रेयस्से लेंके शस्तपर्यन्त शब्द) विशेष्यके साथ आनेसे वाच्यलिंग अर्थात् तीनों लिंग है । जैसे—‘ पापा स्त्री, पाप पुमान्, पाप कुरुम् ’ इन वचनोंमें स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और नपुंसकलिंग है ॥ २६ ॥ मतालिका (स्त्री०)

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।

हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः ध्रियाम् ।

विशेषः कालिकोऽवस्था गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्त्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

मर्चाचिका (स्त्री०), प्रकांड (पु०), उद्घ (पु०), तल्लज (पु०) ये पांच नाम प्रशस्तवाचक हैं । जैसे—‘प्रशस्ता ब्राह्मणाः ब्राह्मणमतल्लिका’ आदि जानने । अथ यह एक (पु०) नाम शुभको उत्पन्न करनेवाले देव अर्थात् भाग्यका है ॥ २७ ॥ देव, दिष्ट, भागधेय, भाग्य, नियति, विधि ये छः नाम पूर्वजन्मके कर्मके हैं । यहां नियतिशब्द (स्त्री०) है । विधिशब्द (पु०) और शेष (न०) हैं । हेतु, कारण, बीज ये नाम कारणके हैं । इनमें हेतुशब्द (पु०), शेष (न०) हैं । निदान यह एक (न०) नाम आदिकारणका है ॥ २८ ॥ क्षेत्रज्ञ, आत्मन् (नान्त), पुरुष ये तीन (पु०) नाम शरीरके अधिदैवतके हैं । प्रधान (न०), प्रकृति ये दो नाम सत्त्वआदि गुणोंकी साम्यअवस्थाके हैं । प्रकृतिशब्द स्त्रीलिंग है । अवस्था यह एक (स्त्री०) नाम कालकृत यौवन आदि विशेषका है । सत्त्व, रजस् (सान्त), तमस् (सान्त) ये तीन (न०) नाम गुणोंके हैं ॥ २९ ॥ जनस् (सान्त न०), जनन (न०), जन्मन् (नान्त न०), जनि (स्त्री०) उत्पत्ति (स्त्री०), उद्भव (पु०) ये छः नाम जन्मके हैं । प्राणिन् (इन्नन्त), चेतन, जन्मिन् (इन्नन्त), जन्तु, जन्त्यु, शरीरिन् (इन्नन्त) ये छः नाम प्राणीके हैं ॥ ३० ॥ जाति (स्त्री०), जात (न०), सामान्य (न०) ये तीन नाम घट आदि जातिके हैं । व्यक्ति, पृथगात्मता ये दो (स्त्री०) नाम घट आदि व्यक्तिके हैं । चित्त, चेतस् (सान्त), हृदय, स्वान्त, हृद् (दान्त), मानस, मनस् (सान्त) ये सात (न०) नाम मनके हैं ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५ ।

बुद्धिर्मनीषा धिपणा धी' प्रज्ञा जेमुषी मतिः ।

प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिप्रज्ज्ञासिचेतना' ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा सङ्कल्पः कर्म मानमम् ।

“ अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च । ”

चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा सख्या विचारणा ॥ २ ॥

“ विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते । ”

अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु मशय ।

सन्देहद्वारौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रातिर्मिथ्यामतिभ्रम ॥ ४ ॥

संविदागू. प्रतिज्ञान नियमाश्रवसश्रवा' ।

अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधय ॥ ५ ॥

अथ धीवर्ग । बुद्धि, मनीषा, धिपणा, धी, प्रज्ञा, जेमुषी, मति, प्रेक्षा, उपलब्धि, चित् (तान्त), सविद् (दान्त), प्रतिपद् (दान्त), ज्ञप्ति, चेतना ये चौदह (स्त्री०) नाम बुद्धिके हे ॥ १ ॥ मेधा यह एक (स्त्री०) नाम धारणावाली बुद्धिका है । सङ्कल्प यह एक (पु०) नाम मनके व्यापारका है । “ अवधान, समाधान प्रणिधान ये तीन (न०) नाम समाधानके हैं । ” चित्ताभोग, मनस्कार ये दो (पु०) नाम सुख आदिमें तत्पर मनके हैं । चर्चा, मख्या, विचारणा ये तीन (स्त्री०) नाम प्रमाणोंकरके अर्थकी परीक्षाके हे ॥ २ ॥ “ विमर्श (पु०), भावना, वासना (दा स्त्री०) ये तीन नाम वासनाके हे । ” अध्याहार, तर्क, ऊह ये तीन (पु०) नाम तर्कके हे । विचिकित्सा (स्त्री०), सशय (पु०), सन्देह (पु०), द्वार (पु०) ये चार नाम सशयज्ञानके ह । निर्णय, निश्चय ये दो (पु०) नाम निर्णयके हे ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि, नास्तिकता ये दो (स्त्री०) नाम नास्तिकरूपनेके हे । व्यापाद (पु०), द्रोहचिन्तन (न०) ये दो नाम यद्रोहचिन्तनके ह । सिद्धान्त, राद्धान्त ये दो (पु०) नाम सिद्धान्तके ह । भ्रान्ति (स्त्री०), मिथ्यामति (स्त्री०), भ्रम (पु०) ये तीन नाम भ्रमके ह ॥ ४ ॥ सवित्, आगू, प्रतिज्ञान, नियम, आश्रव, सश्रव, अङ्गीकार, अभ्युपगम, प्रतिश्रव,

मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ।

रूपं शब्दो गंधरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

कर्मन्द्रियं तु पाय्वादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः ।

तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

आमोदः सोऽतिनिर्हारी वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥

समाधि ये दश नाम अगीकारके हैं । इनमें सवित और आगू (स्त्री०), प्रतिज्ञान (न०) और शेष (पु०) हैं ॥ ५ ॥ ज्ञान यह (न०) नाम मोक्षमें बुद्धिका है । विज्ञान यह (न०) नाम शिल्प और अन्यशास्त्रमें जो बुद्धि है उसका है । मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयस् (सान्त), निःश्रेयस् (सान्त) अमृत ॥ ६ ॥ मोक्ष, अपवर्ग ये आठ नाम मोक्षके हैं । तहां मुक्ति (स्त्री०), मोक्ष, अपवर्ग (पु०), शेष (न०) हैं । अज्ञान (न०), अविद्या, अहंमति ये तीन नाम अज्ञानके हैं । तहां अविद्या, अहंमति-शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं । रूप (न०), शब्द (पु०), गंध (पु०), रस (पु०), स्पर्श (पु०) ये पांच विषय हैं ॥ ७ ॥ गोचर (पु०), इन्द्रियार्थ (पु०) इन नामोंसे वे प्रसिद्ध हैं । हृषीक, विषयिन् (इत्रन्त), इन्द्रियार्थे तीन (न०) नाम चक्षुआदि इन्द्रियके हैं । तहां गुदा, लिङ्ग, हाथ, पैर, वाणी ये कर्मन्द्रिय हैं । मन और नेत्र आदि ज्ञानेन्द्रिय कहाते हैं ॥ ८ ॥ तुवर, कषाय, मधुर, लवण, कटु, तिक्त, अम्ल ये छः रसवाचक शब्द (पु०) हैं । कषायशब्द (पु० न०), शेष (पु०) हैं । ये शब्द रसवानोंमें वर्तमान हों तो त्रिलिङ्गी हैं । तहां तुवरशब्द, हिरड आदिमें प्रसिद्ध है । मधुर रस जल आदिमें प्रसिद्ध है । लवण रस सिंघा आदिमें प्रसिद्ध है । कटुरस मरीच आदिमें प्रसिद्ध है । तिक्त रस जीव आदिमें प्रसिद्ध है । अम्लरस अमली आदिमें प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥ परिमल यह (पु०) नाम सवर्षण आदिसे उत्पन्न और मनोहारी गंधका है । आमोद यह (पु०) नाम अ-

समाकर्षी तु निर्हारी सुरभिघ्राणतर्पणः ।

इष्टगन्धः सुगन्धिः त्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विम्र स्यादामगन्धि यत् ।

शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डरा* ॥ १२ ॥

अवदात* सितो गौरोऽवलक्षो धवलोऽर्जुन* ।

हरिणः पाण्डुर* पाण्डुरीपत्पाण्डुस्तु धूसरः । १३ ॥

कृष्णो नीलासितश्यामकालश्यामलमेचका* ।

पीतो गौरो हरिद्राम पालाशो हरितो हगित् ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्त* शोण कोकनदच्छविः ।

अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

त्यन्त समाकर्षणवाले गधका है । इससे आगे ' गुणे शुक्लादय ' इसपर्यंत वक्ष्यमाण (जो आगे कहे जायगे) शब्द त्रिलिङ्गी है । क्रसूरीमे आमोद गध है । कपूरमे मुखवासना गध है । बटुलमे परिमल गध है । चपा आ, दिमे सुरभिगध है ॥१०॥ समाकर्षिन् (इवन्त), निर्हारिन् (इवन्त) ये दो (पु-) नाम दूर जानेवाले गधके हैं । सुरभि, घ्राणतर्पण, इष्टगध, सुग, धि ये चार (पु०) नाम सुन्दर गधके हैं । आमोदिन् (इवन्त), मुखवा- सन ये दो (पु०) नाम ताम्बूल आदि गधके हैं ॥ ११ ॥ पूतिगध, दुर्गध ये दो (पु०) नाम दुष्टगधके हैं । विम्र, आमगधि ये दो (न०) नाम कच्ची गधिके हैं अर्थात् बिना पके हुए मांस आदिके हैं । शुक्ल, शुभ्र, शुचि, श्वेत, विशद, श्वेत, पाण्डर ॥ १२ ॥ अवदात, सित, गौर, अवलक्ष, धवल, अर्जुन ये तेरह नाम सुपेद रगके हैं । हरिण, पाण्डुर, पाण्डु ये तीन नाम पीलेसे मिले हुए सुपेद रगके हैं । ईपत्पाण्डु, धूसर ये दो नाम अल्पश्वेत रगके हैं ॥ १३ ॥ कृष्ण, नील, असित, श्याम, काल, श्यामल, मेचक ये सात नाम नीले आदि रगके हैं । पीत, गौर, हरिद्राम ये तीन नाम पीले रगके हैं । पालाश, हरित, हरित ये तीन नाम हरे रगके हैं ॥ १४ ॥ लोहि- त, रोहित, रक्त ये तीन नाम लाल रगके हैं । शोण यह एक नाम लाल फमलके समान रगका है । अरुण यह एक नाम थोड़े लाल रगका है । पाटल यह नाम सुपेद और लाल मिश्र हुए अर्थात् गुठबी रगका है ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

कडारः कपिलः पिंगपिशंगौ कटुपिंगलौ ॥ १६ ॥

चित्रं किर्मीरकल्माषशवलैताश्च कर्बुरे ।

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिगास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः ६ ।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वानी सरस्वती ।

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

तिङ्मुबन्तश्चयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्रायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः ।

स्त्रियासृक् सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

श्याव, कपिश ये दो नाम धूसर अरुण अर्थात् वानरकेसे रंगके हैं । धूम्र, धूमल, कृष्णलोहित ये तीन नाम कालेसहित लाल रंगके हैं । कडार, कपिल, पिंग, पिशग, कटु, पिंगल ये छः नाम पिंगल (पीले) वर्णके हैं ॥ १६ ॥ चित्र, किर्मीर, कल्माष, शवल, एत, कर्बुर ये छः नाम विचित्रवर्णके हैं । गुणमात्रमें शुक्ल आदि शब्द पुँल्लिग हैं और गुणवालोमें त्रिलिगी हैं । जैसे ' शुक्ला शायी, शुक्लः पटः, शुक्ल वस्त्रम् ' इन वचनोमें तीनों लिग हैं ॥ १७ ॥ इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः । ब्राह्मी, भारती, भाषा, गी (रान्त), वाच् (चान्त), वाणी, सरस्वती ये सात (स्त्री०) नाम सरस्वतीके हैं । व्याहार (पु०), उक्ति (स्त्री०) लपित (न०), भाषित (न०), वचन (न०), वचस् (सान्त न०) ये छः नाम वचनके हैं ॥ १ ॥ अपशब्द यह एक (पु०) नाम अपभ्रंशशब्दका है । व्याकरण आदिमें जो वाचक है वह शब्द कहाता है । तिङन्त लुबन्त पदोका समूह वाक्य कहाता है । जैसे—' पचाति भवति, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महारमनाम् ' यह वाक्य है । अथवा कारकोंकरके क्रिया वाक्य कहाती है । जैसे—' देवदत्त गामाभिरक्ष शुक्लदंडेन ' यह वाक्य है ॥ २ ॥ श्रुति, वेद (पु०), आम्राय (पु०) ये तीन नाम वेदके हैं । तहां श्रुतिशब्द स्त्रीलिग है । धर्म यह एक (पु०) नाम वैदिक विधि

शिक्षेत्यादि श्रुतेरंगमोकारप्रणवौ समौ ।

इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।

आख्यायिकोपलब्धार्थाः पुराण पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पना कथा प्रवहिका प्रहेलिका ।

स्मृतिस्तु धर्मसहिता समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्थां विवदन्ती जनश्रुतिः ।

वार्त्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥

आख्याहे अभिधान च नामधेय च नाम च ।

हृतिराकारणाह्वानं संहृतिर्वहुभिः कृता ॥ ८ ॥

यज्ञ आदिका है । ऋच् (चान्त), सामच् (नान्त न०), यजुष् (पान्त न०) इन तीन वेदोंके समूहको त्रयी कहते हैं । तर्हा ऋच्शब्द (स्त्री०) है ॥ ३ ॥ शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द ये सब वेदके अंग ह । अंगशब्द (न०) है । छ अंग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण ये चौदह विद्या ह । ओंकार, प्रणय ये दो (पु०) नाम ओंकारके ह । इतिहास (पु०), पुरावृत्त (न०) ये दो नाम भारत आदि पूर्वचरितके ह । उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ये तीन स्वर कहाते हैं ॥ ४ ॥ आन्वीक्षिकी (स्त्री०) यह एक नाम गौतमप्रणीत तर्कविद्याका है । दण्डनीति यह एक (स्त्री०) नाम बृहस्पति आदि प्रणीत अर्थनीति शास्त्रका है । आख्यायिका, उपलब्धार्था ये दो (स्त्री०) नाम वासवदत्ता आदि ग्रन्थके ह । पुराण यह एक (न०) नाम सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित इन पाँच लक्षणासे युक्तका है ॥ ५ ॥ कथा यह एक (स्त्री०) नाम वाग्यके विस्तारकी रचनाका है । प्रवहिका, प्रहेलिका ये दो (स्त्री०) नाम पहेलीके ह । स्मृति यह एक (स्त्री०) नाम धर्मके बोधके लिये रची हुई संहिताका है । समाहृति (स्त्री०), संग्रह (पु०) ये दो नाम संग्रह ग्रन्थके हैं ॥ ६ ॥ समस्या यह एक (स्त्री०) नाम कविकी शक्तिकी परीक्षाके अर्थ किसी श्लोक वा कवित्तके समेत देनेका है । विवदन्ती, जनश्रुति ये दो (स्त्री०) नाम लोकप्रवादके ह । वार्त्ता (स्त्री०), प्रवृत्ति (स्त्री०), वृत्तान्त (पु०), उदन्त (पु०) ये चार नाम लोकवृत्तान्त कथनके ह । आह्वय (पु०) ॥ ७ ॥ आख्या (स्त्री०), आह्वा (स्त्री०), अभिधान

विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।

उपोद्धात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥

प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे ।

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथ मिथ्याभिर्शंसनम् ॥ १० ॥

अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।

यशः कीर्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।

काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥

अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।

उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

(न०), नामधेय (न०), नामन् (नान्त न०) ये छः नाम नामके हैं ।
 ह्रूति (स्त्री०), आकारणा (स्त्री०), आह्वान (न०) ये तीन नाम आ-
 ह्वान अर्थात् बुलानेके हैं । संह्रूति यह एक (स्त्री०) नाम बहुतोंसे मिलके
 बुलानेका है ॥ ८ ॥ विवाद, व्यवहार ये दो (पु०) नाम कर्जा आदिके
 निमित्त अनेक प्रकारके विवादके हैं । उपन्यास (पु०), वाङ्मुख (न०)
 ये दो नाम वचनके आरंभके हैं । उपोद्धात, उदाहार ये दो (पु०) नाम
 प्रकृतसिद्धिके अर्थ किये हुए चिन्तवनके हैं । शपन (न०), शपथ (पु०)
 ये दो नाम कसमके हैं ॥ ९ ॥ प्रश्न (पु०), अनुयोग (पु०), पृच्छा
 (स्त्री०) ये तीन नाम प्रश्नके हैं । प्रतिवाक्य, उत्तर ये दो (न०) नाम
 उत्तरके हैं । मिथ्याभियोग (पु०), अभ्याख्यान (न०) ये दो नाम
 झूठे दोष लगानेके हैं । मिथ्याभिर्शंसन (न०) ॥ १० ॥ अभिशाप (पु०)
 ये दो नाम मदिरापान आदि मिथ्यापापके उद्घावनके हैं । प्रणाद यह एक
 (पु०) नाम अनुरागसे उत्पन्न शब्दका है । यशस् (न०), कीर्त्ति
 (स्त्री०), समज्ञा (स्त्री०) ये तीन नाम कीर्तिके हैं । स्तव (पु०), स्तोत्र
 (न०), स्तुति (स्त्री०), नुति (स्त्री०) ये चार नाम स्तुतिके हैं ॥ ११ ॥
 आम्नेडित यह एक (न०) नाम दो बार तीन बार कहेका है । उच्चैर्घुष्ट
 (न०), घोषणा (स्त्री०) ये दो नाम ऊंचे शब्दके हैं । काकु यह एक
 (स्त्री०) नाम शोक और भय आदिसे उत्पन्न ध्वनिविकारका है ॥ १२ ॥
 अवर्ण, आक्षेप, निर्वाद, परीवाद, अपवाद, उपक्रोश यहाँतक (पु०), जु-

पारुष्यमतिवादः स्याद्रत्सन त्वपकारगीः ।

य. सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।

विप्रलापो विरोधोक्तिः सलापो मापणं मिथः ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निद्वयः ।

“चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशो दुरेपणा ।

अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकृत्यनम् ॥ ”

सदेशवागवाचिक स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिप्रकृते ॥ १७ ॥

गुप्ता, कुप्ता, निन्दा ये (स्त्री०), गर्हेण (न०) ये दण्ड नाम निन्दाके हे ॥ १३ ॥ पारुष्य (न०), अतिवाद (पु०) ये दो नाम कठोर बोलनेके हैं । रत्सन यह एक (न०) नाम अपकारके लिये बोलने अर्थात् धमकानेका है । परिभाषण यह एक (न०) नाम त्रोधपूर्वक दोषके प्रति पादनका है ॥ १४ ॥ आक्षारणा यह एक (स्त्री०) नाम पत्नी पुरुषके संयोगनिमित्त निन्दाका है । आभाषण (न०), आलाप (पु०) ये दो नाम आपसमें सवोधनपूर्वक बोलनेके हैं । प्रलाप यह एक (पु०) नाम अनर्थक वचनका है ॥ १५ ॥ अनुगप (पु०), मुहुर्भाषा (स्त्री०) ये दो नाम बहुतवार बोलनेके हैं । विगप (पु०), परिदेवन (न०) ये दो नाम रुदनपूर्वक बोलनेके हैं । विप्रगप (पु०), विरोधोक्ति (स्त्री०) ये दो नाम आपसमें विरुद्ध बोलनेके हैं । संगप यह एक (पु०) नाम आपसमें बोलनेका है ॥ १६ ॥ सुप्रगप (पु०), सुवचन (न०) ये दो नाम सुंदर बोलनेके हैं । अपगप, निद्वय ये दो (पु०) नाम गुप्तवचनके हैं । “चोद्य (न०), आक्षेप (पु०), अभियोग (पु०) ये तीन नाम अद्वैत प्रश्नके हैं । शाप (पु०), आक्रोश (पु०), दुरेपणा (स्त्री०) ये तीन नाम श्लाघवचनके हैं । चाटु, चटु, श्लाघा (स्त्री०) ये तीन नाम प्रेमप्रत्यये मिथ्या बोलनेके हैं । तर्ही चाटु चटु शब्द (पु० न०) हैं । ‘सदेशवाग’ (वाग् न० स्त्री०), वाचिक (न०) ये दो नाम दूत आदिसे मुखसे कहे हुए वचनके हैं । इसमें दो वाग्भेदाः शरीर आदि वाक् संवत्सरी वचन आदि

रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।

अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥

निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूत्रतं प्रिये ।

सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ।

अम्बूकृतं सनिष्ठीवमवद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम् ।

“ सोलुण्ठनं तु सोत्प्रासं भणितं रतिकूजितम् ।

श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥ ”

अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ।

शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥

भेद त्रिलिङ्गी हैं ॥ १७ ॥ रुशती यह एक (स्त्री०) नाम अकल्याणी वाणीका है । कल्या यह एक (स्त्री०) नाम शुभवाणीका है । सान्त्वं यह एक (न०) नाम अत्यन्त मधुर बोलनेका है । संगत, हृदयंगम ये दो (न०) नाम संबद्ध वचनके हैं ॥ १८ ॥ निष्ठुर, परुष ये दो (न०) नाम कठोर वचनके हैं । ग्राम्य, अश्लील ये दो (न०) नाम शिथिल वचनके हैं । सूत्रत यह एक (न०) नाम प्रिय और सत्यवचनका है । संकुल, क्लिष्ट ये दो (न०) नाम आपसमें पूर्वापर विरुद्धके हैं । जैसे—‘ मेरी माता बंध्या है ’ ॥ १९ ॥ ग्रस्त यह एक (न०) नाम असंपूर्ण उच्चारित वचनका है । निरस्त यह एक (न०) नाम शीघ्र कहे हुए वचनका है । अंबूकृत यह एक (न०) नाम लार अर्थात् थूकसहित वचनका है । अवद्ध यह एक (न०) नाम अनर्थक वचनका है ॥ २० ॥ अनक्षर, अवाच्य ये दो (न०) नाम नहीं कहने योग्य वचनके हैं । आहत यह एक (न०) नाम मिथ्या और असंभावित अर्थवालेका है । जैसे—‘ यह बंध्याका पुत्र जाता है ’ । “ सोलुण्ठन, सोत्प्रास ये दो (न०) नाम उपहाससहित वचनके हैं । भणित, रतिकूजित ये दो (न०) नाम स्त्रीसंगके समय बोलनेके हैं । श्राव्य, हृद्य, मनोहारिन् (इन्नन्त), विस्पष्ट, प्रकटोदित ये पांच (न०) नाम प्रकट वचनके हैं ” । म्लिष्ट, अविस्पष्ट ये दो (न०) नाम स्पष्टवचनके हैं । वितथ यह एक (न०) नाम मिथ्यावचनका है ॥ २१ ॥ सत्य, तथ्य,

स्वाननिर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः ।

आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मरः ॥ २३ ॥

स्वनिते वस्त्रपर्णाना भूषणाना तु शिञ्जितम् ।

निकाणो निकणः क्काण. क्कणः क्कणनमित्यपि ॥ २४ ॥

वीणाया. कणिते प्रादेः प्रक्काणप्रक्कणादयः ।

कोलाहल* कलकलस्तिरश्चा वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे समे ।

इति शब्दादिवर्ग. ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७ ।

निपादर्पमगान्धारपङ्कजमध्यमधैवताः ।

पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

काक्ली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।

कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽन्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

ऋत, सम्यच् (चान्त) ये चार (न०) नाम सत्यपवनके हे । ये शब्द विशेषण होते हैं तय त्रिलिङ्गी ह । जैसे-‘ सत्या स्त्री, सत्य पुमान्, सत्य पुल्लिङ्गम् ’ इत्यादि । शब्द, निनाद, निनद, ध्वनि, ध्वान, रव, स्वन ॥ २२ ॥
स्वान, निर्घोष, निर्ह्राद, नाद, निस्वान, निस्वन, आरव, आराव, सराव, विराव ये सत्रह (पु०) नाम शब्दमात्रके हे । मर्मर ॥ २३ ॥ यह एक (पु०) नाम वस्त्र और पर्तोंके शब्दका हे । शिञ्जित यह एक (न०) नाम गहनोंके शब्दका हे । निकाण, निकण, क्काण, क्कण, क्कणन ये पाँच नाम वीणा आदिके शब्दके हैं । इनमें क्कणन (न०) शेष (पु०) है ॥ २४ ॥ प्रक्काण, प्रक्कण आदि (पु०) नामभी वीणाहीके शब्दमें हैं, अन्यके शब्दमें नहीं हैं । कोलाहल, कलकल ये दो (पु०) नाम बहुतोंसे मिलकर किये हुए शब्दके हैं । वाशित, रुत ये दो (न०) नाम पक्षियोंके शब्दके हैं ॥ २५ ॥
प्रतिश्रुत् (तान्त स्त्री०), प्रतिध्वान (पु०) ये दो नाम प्रतिशब्दके हे । गीत, गान ये दो (न०) नाम गानेके हैं । इति शब्दादिवर्ग ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्ग । स्वरके भेद कहते हैं-निपाट, ऋषभ, गान्धार, पङ्कज, मध्यम, धैवत, पञ्चम ये सात (पु०) नाम वीणा या कठसे लठे हुए स्वरोंके हे ॥ १ ॥ “ हस्ती निपाट स्वरसे चोलता है । गौ ऋषभ स्वरसे चोलती है ।

“ नृणामुरासि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ।
 स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥ ”
 समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी ।
 विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥
 ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं सुरजादिकम् ।
 वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥
 चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् ।
 मृदङ्गा सुरजा भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्गचोर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥
 स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।
 आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥

बकरी आदि गांधार स्वरसे बोलती है। मोर पड्ज स्वरसे बोलता है। कंज मध्यम स्वरसे बोलती है। घोडा धैवत स्वरसे बोलता है। कोयल पञ्चम स्वरसे बोलती है। ” काकली यह एक (स्त्री०) नाम सूक्ष्म कलका है। कल यह एक नाम मधुर और अस्पष्ट शब्दका है। मन्द्र यह एक नाम गंभीर ध्वनिका है। तार यह एक नाम अत्यन्त ऊँची ध्वनिका है। ये तीनों शब्द (त्रि०) हैं ॥२॥ “ मनुष्योंके हृदयसे बाईस प्रकारका ध्वनि गाया जाता है। कण्ठसे मन्द्र और मस्तकसे तार स्वर गाया जाता है। ” जिसमें अच्छी लय हो और गीतके तुल्य हो उसे एकताल कहते हैं यह (पु०) है। वीणा, वल्लकी, विपञ्ची ये तीन (स्त्री०) नाम वीणाके हैं। परिवादिनी यह एक (स्त्री०) नाम सात तानियोंकरके बन्धी हुई वीणाका है ॥३॥ तंतु यह (न०) नाम वीणा आदि बाजेका है। आनक यह एक (न०) नाम मृदंग आदि बाजेका है। सुषिर यह एक (न०) नाम वशी, अलंगोजा, शंख आदि बाजेका है। घन यह एक (न०) नाम कांसीका बाजा घंटा झालर आदिका है ॥४॥ वादित्र, आतोद्य ये दो (न०) नाम पूर्वोक्त तंतु आदि चार प्रकारके बाजेके हैं। मृदङ्ग, सुरज ये दो (पु०) नाम मृदङ्गके हैं। अंक्य, आलिंग्य, ऊर्ध्वक ये तीन (पु०) नाम भी मृदङ्गके ही भेदके हैं ॥५॥ यशःपटह (पु०); ढक्का (स्त्री०) ये दो नाम ढोलकके हैं। भेरी, दुन्दुभि ये दो नाम नकारके हैं। तहां भेरीशब्द (स्त्री०) और दुन्दुभिशब्द (पु०) है। आनक (पु०), पटह ये दो नाम बड़े नगाड़ेके हैं। तहां पटह-

वीणादण्डः प्रवाल स्यात्ककुभस्तु प्रसेवक* ।
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥
 वाद्यप्रभेदाः टमरुमड्डुडिण्डिमझरारा ।
 मर्दल* पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥
 विलम्बितं हुत मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
 तालः कालक्रियामान लय* साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥
 ताण्डव नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।
 तौर्यत्रिक नृत्यगीतवाद्य नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥
 भ्रुकुसश्च भ्रुकुसश्च भ्रुकुसश्चेति नर्तक ।
 स्त्रीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाञ्जुका ॥ ११ ॥

शब्द (पु० न०) है । कोण यह एक (पु०) नाम जिससे वीणादि बजाई जाती है उस धनुषाकार काष्ठका है ॥ ६ ॥ प्रवाल यह एक (पु०) नाम वीणाके ढङ्का है । ककुभ, प्रसेवक ये दो (पु०) नाम वीणाके प्रान्तमें स्थित चर्मसे मड़े हुए काष्ठनुचीके हैं । जो शब्दकी गभीरताके लिये रहते हैं । कोलम्बक यह एक (पु०) नाम वीणाके तंत्रीरहित दट आदिके समुदायका है । उपनाह यह एक (पु०) नाम जहां वीणाके प्रान्तमें तन्त्री बांधी जाती है उसका है ॥ ७ ॥ टमरुसे आदि लेकर ये वाजोंके मेदके नाम हैं । टमरु, मड्डु, टिटिम, झरार, मर्दल, पणव आदि । नर्तकी, लासिका ये दो (स्त्री०) नाम नाचनेवालीके हैं ॥ ८ ॥ तत्त्व यह एक (न०) नाम हाथ पर आदि करके देरमें नाचने आदिका है । ओघ यह एक (पु०) नाम शीघ्र नाचने आदिका है । घन यह एक (न०) नाम जो न देरसे और न शीघ्रता नाचना हो उसका है । ताल यह एक (पु०) नाम कालक्रियाके नियमके हेतुका है । लय यह एक (पु०) नाम गाना बजाना और पर आदिका धरना इहोकी क्रियाकालके साम्यका है । तहां ताल और लयशब्द (पु०) हैं ॥ ९ ॥ तांडव, नटन, नाट्य, लास्य, नृत्य, नर्तन ये छ (न०) नाम नाचनेके हैं । इनमें तांडवशब्द (पु०) भी है । नृत्य, गीत, वाद्य ये तीन मिलके तौर्यत्रिक और नाट्य कहते हैं । ये (न०) हैं ॥ १० ॥ भ्रुकुस, भ्रुकुस, भ्रुकुस ये तीन (पु०) नाम स्त्रीके मेषको धारण कर नाचनेवाले पुम्पके हैं । ' अगहार ' यहांनर्त नाट्यप्रकरणके शब्द कहते हैं । अञ्जुका यह एक (स्त्री०) नाम वेष्याका

मगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः ।

जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका ।

देवी कृताभिषेकायापितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजशालस्तु राष्ट्रियः ।

अम्बा माताऽथ वाला स्याद्वासूगार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्वहणे समे ।

हण्डे हंजे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिकमात्त्विके ॥ १६ ॥

हे ॥ ११ ॥ आवुत्त यह एक (पु०) नाम वहनके पतिका है । भाव यह एक (पु०) नाम विद्वानका है । आवुक यह एक (पु०) नाम पिताका है । कुमार, भर्तृदारक ये दो (पु०) नाम युवराज अर्थात् राजपुत्रके हैं ॥ १२ ॥ भट्टारक, देव ये दो (पु०) नाम राजाके हैं । भर्तृदारिका यह एक (स्त्री०) नाम राजाकी पुत्रीका है । देवी यह एक (स्त्री०) नाम अभिषेक हुई रानीका है । भट्टिनी यह एक (स्त्री०) नाम अन्यरानीका है ॥ १३ ॥ अब्रह्मण्य यह एक (न०) नाम अवध्य ब्राह्मण आदिके दोष प्रकाश करनेका है । राष्ट्रिय यह एक (पु०) नाम राजाके सालेका है । अम्बा, माता ये दो (स्त्री०) नाम माताके हैं । मातृशब्द ऋकारान्त है । वाला, वासू ये दो (स्त्री०) नाम कुमारीके हैं । आर्य्य, मारिष ये दो (पु०) नाम उत्तमके हैं ॥ १४ ॥ अत्तिका यह एक (स्त्री) नाम जेठी वहनका है । निष्ठा (स्त्री०), निर्वहण (न०) ये दो नाम नाटककी निर्वहण संधिके हैं । हंडे यह एक नाम नीच सहेलीके प्रति बुलानेका है । हंजे यह एक नाम चेटीको बुलानेका है । हला यह एक नाम सखीको बुलानेका है । तहां हंडे, हंजे, हला ये अव्यय हैं ॥ १५ ॥ अंगहार, अंगविक्षेप ये दो (पु०) नाम नृत्यविशेषके हैं । व्यञ्जक, अभिनय ये दो (पु०) नाम हाथ आदि करके मनोगत अर्थके प्रकाशके हैं । आंगिक यह नाम अंगकरके निष्पन्न कर्मका है । सात्त्विक यह एक नाम अंतःकरणकरके हुए कर्मका है । आंगिक, सात्त्विक ये दोनों त्रिलिङ्गी हैं । “ स्तंभ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, कप, वर्णका बदलना, अश्रु, प्रलय ये आठ सात्त्विक गुण हैं ” ॥ १६ ॥

शृंगारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।

वीरभत्सरौद्रौ च रसा. शृंगार. शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥

उत्साहवर्द्धनो वीर* कारुण्यं करुणा घृणा ।

कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥

हासो हास्यं च वीरभत्स विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥

दारुणं भीषणं भीष्म घोरं भीमं भयानकम् ।

भयंकरं प्रतिभयं रौद्र तूग्रमभी त्रिषु ॥ २० ॥

चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भी. साध्वसं भयम् ।

विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नति ।

" दर्पोऽखलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेक* स्मयो मदः । "

अनादरः परिभव. परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥

शृङ्गार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीरभत्स, रौद्र ये आठ (पु०) नाम नाट्यके रसके हैं । चकारसे नववां शान्तरस जानना । शृङ्गार, शुचि, उज्ज्वल ये तीन (पु०) नाम शृङ्गारके हैं ॥ १७ ॥ उत्साहवर्द्धन, वीर ये दो (पु०) नाम वीररसके हैं । कारुण्य, करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा, अनुक्रोश ये सात नाम दयाके हैं । यहाँ कारुण्य (न०), अनुक्रोश (पु०), शेष (स्त्री०) है । हस ॥ १८ ॥ हास, हास्य ये तीन नाम हांसीके हैं । हास्य (न०) शेष, (पु०) है । वीरभत्स, विकृत ये दो नाम वीरभत्सके हैं और ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं । विस्मय, अद्भुत, आश्चर्य, चित्र ये चार नाम अचरजके हैं । विस्मय (पु०) शेष (न०) है । भैरव ॥ १९ ॥ दारुण, भीषण, भीष्म, घोर, भीम, भयानक, भयंकर, प्रतिभय ये नव नाम भयानकके हैं । रौद्र, उग्र ये दो नाम उग्रके हैं । भैरवसे लेकर रौद्रपर्यंत चौदह शब्द तीनों लिङ्गवाची हैं ॥ २० ॥ दर (पु० न०), त्रास (पु०), भीति (स्त्री०), भी (स्त्री०), साध्वस (न०), भय (न०) ये छ नाम भयके हैं । भाव यह एक (पु०) नाम मनसबधी विकारका है । अनुभाव यह एक (पु०) नाम चित्तके विकारको प्रकाश करनेवाला है ॥ २१ ॥ गर्व, अभिमान, अहंकार ये

रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूक्ष्णम् ।

मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोपप्रतिघा रुद्रक्रुधौ स्त्रियौ ।

शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादाश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽय दोहदम् ।

इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृद्धाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥

तीन (पु०) नाम गर्वके हैं । मान यह एक (पु०) नाम चित्तकी बहुत उंचाई अर्थात् उन्नताका है । “ दर्प, अवलेप, अवष्टंभ, चित्तोद्रेक, स्मय, मद ये छः (पु०) नाम मदके हैं । ” अनादर, परिभव, परीभाव ये तीन (पु०), तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढा, अवमानना, अवज्ञा ये चार (स्त्री०), अवहेलन, असूक्ष्ण ये दो (न०) ये नव नाम अनादरके हैं । मन्दाक्ष, ह्री, त्रपा, व्रीडा, लज्जा ये पांच नाम लाजके हैं । यहाँ मन्दाक्ष (न०) शेष (स्त्री०) हैं । अपत्रपा यह एक (स्त्री०) नाम दूसरेसे लाजका है ॥ २३ ॥ क्षान्ति, तितिक्षा ये दो (स्त्री०) नाम अन्यके सुखको सहनेके हैं । अभिध्या यह एक (स्त्री०) नाम अन्यके धनके विषयमें इच्छाका है । अक्षान्ति, ईर्ष्या ये दो (स्त्री०) नाम ईर्ष्याके हैं । असूया यह एक (स्त्री०) नाम गुणोंमें दोष आरोपणका है ॥ २४ ॥ वैर, विरोध, विद्वेष ये तीन नाम वैरके हैं । वैरशब्द (न०) शेष (पु०) हैं । मन्यु, शोक, शुक् (चान्त) ये तीन नाम शोकके हैं । शुक्शब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । पश्चात्ताप, अनुताप, विप्रतीसार ये तीन (पु०) नाम पश्चात्तापके हैं ॥ २५ ॥ कोप, क्रोध, अमर्ष, रोष, प्रतिघ, रुध्र (षान्त), क्रुध, ये सात नाम क्रोधके हैं । तहाँ स्प और क्रुध ये दोनों शब्द (स्त्री०) हैं । शेष (पु०) हैं । शील यह एक (न०) नाम शुद्ध, चरितका है । उन्माद, चित्तविभ्रम ये दो (पु०) नाम चित्त बिगडनेके हैं ॥ २६ ॥ प्रेमन् (नान्त पु०), प्रियता (स्त्री०), हार्द (न०), प्रेमन् (नान्त न०), स्नेह (पु०) ये पांच नाम प्रेमके हैं । दोहद, इच्छा, कांक्षा, स्पृहा, ईहा, तृष्

कामोऽभिलाषस्तर्पश्च सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।
उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥
स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कालिके समे ।
उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिमाक् ॥ २९ ॥
कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छन्नकैतवे ।
कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥
कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।
स्त्रीणां विलासविव्वोकाविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥
हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृंगारभावजाः ।
द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ ३२ ॥

(घान्त), बाँछा, लिप्ता, मनोरथ ॥ २७ ॥ काम, अभिलाष, तर्प ये चारह नाम मनोरथके हैं । दोहदशब्द (पु० न०), इच्छासे लिप्तातरु (स्त्री०) और शेष (पु०) है । लालसा यह एक नाम अत्यन्त इच्छाका है और (स्त्री० पु०) है । उपाधि, धर्मचिन्ता (स्त्री०) ये दो नाम धर्मकी चिन्ताके हैं । तहाँ उपाधिशब्द (पु०) है । आधि, मानसीव्यथा ये दो नाम मनकी पीडाके हैं । तहाँ आधिशब्द (पु०) है दूसरा (स्त्री०) है ॥ २८ ॥ चिन्ता, स्मृति, आध्यान ये तीन नाम स्मरणके हैं । आध्यान (न०) शेष (स्त्री०) है । उत्कठा, उत्कलिका ये दो (स्त्री०) नाम उत्कठाके हैं । उत्साह, अध्यवसाय ये दो (पु०) नाम उत्साहके हैं । वीर्य (न०) यह एक नाम अत्यन्त उत्साहका है ॥ २९ ॥ कपट, व्याज (पु०), दम्भ (पु०), उपधि (पु०), छन्न (नान्त न०), कैतव (न०), कुसृति (स्त्री०), निकृति (स्त्री०), शाठ्य (न०) ये नव नाम शठपनेके हैं । तहाँ कपटशब्द (पु० न०) है ॥ ३० ॥ कौतूहल, कौतुक, कुतुक, कुतूहल ये चार (न०) नाम कौतुकके हैं । विलास (पु०), विव्वोक (पु०), विभ्रम (पु०), ललित (न०) ॥ ३१ ॥ हेला (स्त्री०), लीला (स्त्री०) ये सब छियोंके शृंगारसे उपजी छ' चेष्टा हाव नामसे प्राप्त हैं । द्रव (पु०),

१ नेत्र मुद्र भ्रुकुटी आदिसे जो रस उत्पन्न हो उसे विलास कहते हैं । २ गर्वसे उत्पन्न अनादरादिको विव्वोक कहते हैं । ३ वर आभूषणादिकसे उत्पन्न पुलटकी विभ्रम कहते हैं । ४ अगोके अच्छे विन्यासको ललित कहते हैं । ५ नृत्य आदिको हेला कहते हैं । ६ प्रिय भूषण और वचन आदिके अनुकरणको लीला कहते हैं ।

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।
 धर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥
 अवहित्थाकारगुप्तिः समौ संवेगसंभ्रमौ ।
 स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥
 मध्यमः स्याद्विहसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥
 विप्रलम्भो विसंवादो रिङ्गणं स्खलनं समे ।
 स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥
 तन्द्री प्रमीला भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः क्षियाम् ।
 अट्टष्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥

केलि (पु० स्त्री०), परीहास (पु०), क्रीडा (स्त्री०), लीला (स्त्री०),
 नर्मन् (न०) ये छः नाम क्रीडामात्रके हैं ॥ ३२ ॥ व्याज (पु०), अ-
 पदेश (पु०), लक्ष्य (न०) ये तीन नाम अपने रूपको छिपानेके हैं ।
 क्रीडा (स्त्री०), खेला (स्त्री०), कूर्दन (न०) ये तीन नाम बालली-
 लाके हैं । धर्म, निदाघ, स्वेद ये तीन (पु०) नाम पसीनेके हैं । प्रलय
 (पु०), नष्टचेष्टता (स्त्री०) ये दो नाम मूर्च्छा करके बेहोशपनेके हैं
 ॥ ३३ ॥ अवहित्था, आकारगुप्ति ये दो (स्त्री०) नाम शोक आदिसे
 उपजी मुखकी ग्लानिके वा गुप्त आकारके हैं । संवेग, संभ्रम ये दो (पु०)
 नाम आनन्दपूर्वक कर्मोंमें शीघ्रताके हैं । आच्छुरित यह एक (न०) नाम
 अभिप्रायसहित हँसनेका है अथवा शब्दसहित हँसनेका है । स्मित यह
 एक (न०) नाम मुसकुरानेका है ॥ ३४ ॥ विहसित यह एक (न०) नाम
 मध्यम हँसनेका है । रोमाञ्च (पु०), रोमहर्षण (न०) ये दो नाम रोमा-
 वली खड़ी होनेके हैं । क्रन्दित, रुदित, क्रुष्ट ये तीन (न०) नाम रोवनेके
 हैं । जृम्भ, जृम्भण (न०) ये दो नाम जंभाईके हैं । तहां जृम्भशब्द त्रिलिङ्गी
 है ॥ ३५ ॥ विप्रलम्भ, विसंवाद ये दो (पु०) नाम ठगार्ईसे मिले हुए
 बोलनेके हैं । रिङ्गण, स्खलन ये दो (न०) नाम अपने धर्म आदिसे उल्टे
 चलनेके हैं । निद्रा (स्त्री०), शयन (न०), स्वाप (पु०), स्वप्न (पु०),
 संवेश (पु०) ये पांच नाम नींदके हैं ॥ ३६ ॥ तन्द्री, प्रमीला ये दो
 (स्त्री०) नाम नींदके आदि और अन्त्यमें हुए आलस्यके हैं । भ्रुकुटि,

स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः ।

कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८ ।

अधोभुवनपातालं बलिसन्न रसातलम् ।

नागलोकोऽथ कुहरं सुपिरं विवरं विलम् ॥ १ ॥

छिद्रं निर्व्ययनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वषां शुषिः ।

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे सुपिरं त्रिषु ॥ २ ॥

अन्धकारोऽस्त्रिया ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥

विष्वक् सतमसं नागाः काटवेयास्तदीश्वरः ।

शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥

भ्रुटुटि, भ्रुटुटि ये तीन नाम भ्रुटुटी चढानेके हैं तहाँ भ्रुटुटि आदि तीनों शब्द (स्त्री०) हैं । अट्टि यह एक (स्त्री०) नाम रोपसहित टेढ़ी आँखसे देखनेका है । ससिद्धि (स्त्री०), प्रकृति (स्त्री०) ॥ ३७ ॥ स्वरूप (न०), स्वभाव (पु०), निसर्ग (पु०) ये पाँच नाम स्वभावके हैं । वेपथु, कप ये दो (पु०) नाम कपके हैं । क्षण, उद्धर्ष, मह, उद्धव, उत्सव ये पाँच (पु०) नाम उत्सवके हैं ॥ ३८ ॥ इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्ग । अधोभुवन, पाताल, बलिसन्न, रसातल, नागलोक ये पाँच नाम पातालके हैं । यहाँ नागलोक (पु०) शेष (न०) है । कुहर, सुपिर, विल ॥ १ ॥ छिद्र, निर्व्ययन, रोक, रन्ध्र, श्वभ्र, वषा, शुषि ये ग्यारह नाम छिद्रमात्रके हैं । तहाँ वषा और शुषि शब्द (स्त्री०) और शेष (न०) है । गर्त, अवट ये दो (पु०) नाम पृथ्वीछिद्रके हैं । सुपिर यह एक नाम छिद्रयुक्त वस्तुका है और तीनों लिङ्गाची है ॥ २ ॥ अन्धकार (पु० न०), ध्वान्त (न०) तमिस्र (न०), तिमिर (न०), तमस् (न०) ये पाँच नाम अन्धकारके हैं । अन्धतमस यह एक (न०) नाम अत्यन्त अंधेरेका है । अवतमस यह एक (न०) नाम विात अंधेरेका है ॥ ३ ॥ सतमस यह एक (न०) नाम सर्वव्यापी अंधेरेका है । नाग, काटवेय ये दो (पु०) नाम सर्पोंके हैं । शेष, अनन्त ये दो (पु०) नाम

तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।
 अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥
 मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।
 सर्पः पृदाकुर्भुजंगो भुजंगोऽहिर्भुजंगमः ॥ ६ ॥
 आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
 कुण्डली गूढपाचक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
 दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ।
 उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥
 “लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कंचुकी तथा ।
 कुम्भीनसः फणधरो हरिर्मोगधरस्तथा ॥
 अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदंष्ट्रिका ।”
 त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
 समौ कञ्चुकनिर्मोकौ क्ष्वेडस्तु गगलं विषम् ॥ ९ ॥

सर्पोंके पति शेषनागके हैं । वासुकि, सर्पराज ये दो (पु०) नाम सर्पोंके राजाके हैं । गोनस ॥ ४ ॥ तिलित्स ये दो (पु०) नाम पाणससर्पके हैं । अजगर, शयु, वाहस ये तीन (पु०) नाम अजगरके हैं । अलगर्द, जल-व्याल ये दो (पु०) नाम पानीके सर्पके हैं । राजिल, डुण्डुभ ये दो (पु०) नाम निर्विष और दो मुखवाले सर्पके हैं ॥ ५ ॥ मालूधान, मातुलाहि ये दो (पु०) नाम खट्वाके आकारवाले चित्रसर्पके हैं । निर्मुक्त, मुक्तकञ्चुक ये दो (पु०) नाम त्यागी हुई कांचलीवाले सर्पके हैं । सर्प, पृदाकु, भुजग, भुजंग, अहि, भुजंगम ॥ ६ ॥ आशीविष, विषधर, चक्रिन् (इन्नंत), व्याल, सरीसृप, कुण्डलिन् (इन्नंत), गूढपाद् (दान्त), चक्षुःश्रवस् (सान्त), काकोदर, फणिन् (इन्नंत) ॥ ७ ॥ दर्वीकर, दीर्घपृष्ठ, दंदशूक, विलेशय, उरग, पन्नग, भोगिन् (इन्नंत), जिह्मग, पवनाशन ये पच्चीस (पु०) नाम सर्पके हैं ॥ ८ ॥ “लेलिहान, द्विरसन, गोकर्ण, कंचुकिन् (इन्नंत), कुम्भीनस, फणधर, हरि, भोगधर ये आठ (पु०) नाम सर्पमात्रके हैं । भोग यह एक (पु०) नाम सांपके शरीरका है । आशिस् (सान्त), अहिदंष्ट्रिका ये दो (स्त्री०) नाम सांपकी डाढके हैं । ” आहेय यह एक नाम सर्पके विष और हड्डी आदिका है । तहां आहेयशब्द तीनों

पुसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ।

सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥

दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।

विषवैद्यो जाङ्गुलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः ॥ ९ ॥

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।

तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥

सघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्त्वास्तु नारकाः ।

प्रेता वैतरणी सिंधुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋति ॥ २ ॥

विष्टिराजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्य प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥

लिंगवाची है । स्फटा, फणा ये दो (पु० स्त्री०) नाम सर्पके फनके हैं । कचुक, निमोक ये दो (पु०) नाम साँपकी काँचलीके हैं । क्ष्वेड (पु०), गरल (न०), विष ये तीन नाम विषके हैं । तहाँ विषशब्द (पु० न०) है ॥ १० ॥ काकोल, कालकूट, हलाहल ये तीन (पु० न०) हैं और सौराष्ट्रिक, शौक्लिकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन ॥ १० ॥ दारद, वत्सनाभ ये छ नाम (पु०) हैं । इस प्रकार ये नव भेद विषके हैं । विषवैद्य, जाङ्गुलिक ये दो (पु०) नाम विषवैद्यके हैं । व्यालग्राह्य (इन्द्रन्त), अहितुण्डिक ये दो (पु०) नाम सर्प पकड़नेवालेके हैं ॥ ११ ॥ इति पातालभोगिवर्ग ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्ग । नारक, नरक, निरय, दुर्गति ये चार नाम नरकके हैं । तहाँ दुर्गतिशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) है । तपन (पु०), अवीचि (पु०), महारौरव (पु०), रौरव (पु०) ॥ १ ॥ सघात (पु०), कालसूत्र (न०) आदि नरकके भेद हैं । यहाँ आदिशब्दसे तामिस्र, जुभी पाक आदि लेने चाहिये । प्रेत यह एक (पु०) नाम नरकमें रहनेवाले जीवोंका है । वैतरणी यह एक (स्त्री०) नाम नरककी नदीका है । निर्ऋति यह एक (स्त्री०) नाम नरककी अशोभाका है ॥ २ ॥ विष्टि, आज ये दो (स्त्री०) नाम नरकमें हठसे मरनेके हैं । कारणा, यातना, तीव्रवेदना ये तीन (स्त्री०) नाम नरककी पीडाके हैं । पीडा (स्त्री०) बाधा

स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिव्वेषां भेद्यगामि यत् ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १० ।

समुद्रोऽब्धिः कूपारः पारावारः सरित्पतिः ।

उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥

रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपांपति ।

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥

कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।

अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशंवरम् ॥ ४ ॥

मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

भंगस्तरंग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु ॥ ५ ॥

(स्त्री०), व्यथा (स्त्री०), दुःख (न०), आमनस्य (न०), प्रसूतिज (न०) ॥ ३ ॥ कष्ट (न०), कृच्छ्र (न०), आभील (न०) ये नव नाम दुःखके हैं । इन्हींके मध्यमें जो दुःख आदि विशेष्यवृत्तिवाले हैं वे तीनों लिंगवाची हैं । जैसे—‘ सेयं सेवा दुःखा च बहुरूपा, सोयं दुःखसुतो गुणः, सर्वं दुःखं विवेकिनः ’ और भेद्यगामित्व (विशेष्यवृत्तित्व) का जहाँ अभाव है वहीं वेही लिंग हैं ॥ ४ ॥ इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः । समुद्र, अब्धि, अकूपार, पारावार, सरित्पति, उदन्वत् (मत्वन्त), उदधि, सिन्धु, सरस्वत् (मत्वन्त), सागर, अर्णव ॥ १ ॥ रत्नाकर, जलनिधि, यादःपति, अपांपति ये पन्द्रह (पु०) नाम समुद्रके हैं । क्षीरोद, लवणोद, दध्युद, वृतोद, सुरोद, इक्षुद, स्वादूद ये सात (पु०) शब्द समुद्रभेदके हैं ॥ २ ॥ अप् (स्त्री० बहुवचन), वार, वारि, सलिल, कमल, जल, पयस् (सान्त), कीलाल, अमृत, जीवन, भुवन, वन ॥ ३ ॥ कवन्ध, उदक, पाथस् (सान्त), पुष्कर, सर्वतोमुख, अंभस् (सान्त), अर्णस् (सान्त), तोय, पानीय, नीर, क्षीर, अंबु, शंवर ॥ ४ ॥ मेघपुष्प, घनरस (पु०) ये सत्ताईस (न०) नाम पानीके हैं । आप्य, अम्मय ये दो नाम पानीके विकारके हैं और त्रिलिगी हैं । भंग (पु०), तरंग (पु०), ऊर्मि,

महत्सल्लोलकल्लोलौ स्यादावर्त्तोऽम्भसा भ्रमः ।
 पृपन्ति विन्दुपृषता* पुमासो विप्रुष* स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
 चक्राणि पुटभेदा* स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।
 कूल रोऽश्च तीर च प्रतीर च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥
 पारावारे परार्वाची तीरे पात्र तदन्तरम् ।
 द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीप यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥
 तोयोत्थित तत्पुलिन सैकत सिकतामयम् ।
 निपद्मस्तु जम्बाल* पङ्कोऽस्त्री शादकदर्दमौ ॥ ९ ॥
 जलोच्छ्वासा* परीवाहाः कूपकास्तु विदारक* ।
 नाव्य त्रिलिङ्ग नौतार्य स्त्रिया नौस्तरणिस्तरि* ॥ १० ॥

वीचि ये चार नाम लहरके है । तहां आंमशब्द (स्त्री० पु०) है और वीचिशब्द (स्त्री०) है शेष (पु०) है ॥ ६ ॥ उल्लोल, कल्लोल ये दो (पु०) नाम बटी लहरके है । आवर्त यह एक (पु०) नाम मटलके आकारवाले भँवरका है । पृषत (तान्त न०), विन्दु (पु०), पृषत (पु०), विप्रुष ये चार नाम पानीकी बूंदोंके है । तहां विप्रुषशब्द पकारान्त (स्त्री०) है ॥ ६ ॥ चक्र (न०), पुटभेद (पु०) ये दो नाम चक्रके आकारकरके नीचे जाते हुए पानीके है । भ्रम, जलनिर्गम ये दो (पु०) नाम पानी निकसनेके जालके है । कूल, रोधम् (सान्त), तीर, प्रतीर, तट ये पाँच (न०) नाम तीरके है । तहां तटशब्द त्रिलिङ्गी है ॥ ७ ॥ पार यह (न०) नाम नदीके परले तीरका है । आवार यह (न०) नाम नदीके उरले तीरका है । पात्र यह (न०) नाम दोनों तीरोंके मध्यका है । द्वीप, अन्तरीप ये दो (पु० न०) नाम पानीके मध्यमे तट अर्थात् टापूके है ॥ ८ ॥ पुलिन यह एक (न०) नाम पानीके क्रमसे निकली हुई पृथ्वीका है । सैकत, सिकतामय ये दो (न०) नाम बहुत वालू रेतजाली जगहके है । निपद्म, जम्बाल, पङ्क, शाद, कर्दम ये पाँच (पु०) नाम कीचटके है । तहां पङ्कशब्द (पु० न०) है ॥ ९ ॥ जलोच्छ्वास, परीवाह ये दो (पु०) नाम निर्गम मार्गोंकरके बढे हुए और बहत हुए पानीके है । कूपक, विदारक ये दो (पु०) नाम सूखी नदी आदिमें पानीके लिये जो गढे किये जावें उनके है । नाव्य यह नाम नावकरके तारनेके योग्य पानी आदिका है और

उडुपं तु प्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।

आतरस्तरपण्यं स्याद् द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्कर्णधारस्तु नाविकः ।

नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।

अत्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

क्षीवेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।

त्रिष्वगाधात्प्रसन्नोऽच्छः कलुपोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥

निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ।

अगाधमतलस्पर्शं कैवर्त्तं दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

त्रिलिङ्गी है । नौ, तरणि, तरि ये तीन (स्त्री०) नाम नावके हैं ॥ १० ॥
उडुप, प्लव, कोल ये तीन (पु०) नाम डौंगीके हैं । उडुप (न०) भी
है । स्रोतस् यह एक (पु० न०) नाम आपहीसे पानी झिरे अर्थात्
झिरनेका है । आतर (पु०), तरपण्य (न०) ये दो नाम नदीकी उत-
राई देनेके हैं । द्रोणी (स्त्री०) यह नाम काठसे बनी हुई और पानीमें
बहनेवाली नावका है ॥ ११ ॥ सांयात्रिक, पोतवणिज् (जान्त) ये दो
(पु०) नाम नावके द्वारा व्यवहार करनेवालोंके हैं । कर्णधार, नाविक ये दो
(पु०) नाम मलाहके हैं । नियामक, पोतवाह ये दो (पु०) नाम जहाजके
खिंचेके हैं । कूपक, गुणवृक्षक ये दो (पु०) नाम रस्सी आदिके मध्य
आधारस्थित स्तंभ अर्थात् मस्तूलका है ॥ १२ ॥ नौकादण्ड (पु०),
क्षेपणी (स्त्री०) ये दो नाम नावको चला देनेवाली वल्लीके हैं । अरित्र
(न०), केनिपातक (पु०) ये दो नाम सुक्राण अर्थात् पतवारके हैं ।
अत्रि (स्त्री०), काष्ठकुद्दाल (पु०) ये दो नाम जहाज आदिके मलको
दूर करनेके लिये काठके कुद्दालके हैं । सेकपात्र, सेचन ये दो (न०) नाम
घमड़ेके जल फेंकनेके पात्रके हैं ॥ १३ ॥ अर्धनाव यह नाम नावके आधे
भागका है और (न०) है । अतिनु यह एक नाम नावको जीतकर
बड़े तेरनेवाले मनुष्य आदिका है और यह शब्द त्रिलिङ्गी है । यहांसे
अतलस्पर्शपर्यंत सब शब्द त्रिलिङ्गी हैं । प्रसन्न, अच्छ ये दो नाम निर्मलके
हैं । कलुप, अनच्छ, आविल ये तीन नाम गदलेके हैं ॥ १४ ॥ निम्न,

आनाय* पुसि जाल स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् ।
 मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥
 पृथुरोमा क्षपो मत्स्यो मीनो विसारिणोऽण्डज ।
 विसार शकुली चाथ गडक शकुलार्भक* ॥ १७ ॥
 सहस्रदंष्ट्र पाठीन उलूपी शिशुक* समी ।
 नलमीनाश्चिलिचिम प्रोष्ठी तु शफरी द्वयो* ॥ १८ ॥
 क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात* पोताधानमथो क्षपाः- ।
 रोहितो महूर* शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥
 तिमिगिलादयश्चाथ यादासि जलजन्तव ।
 तद्रेदाः शिशुमागेद्रशश्चो मक्कादय* ॥ २० ॥

गभीर, गभीर ये तीन नाम गभीर (गहरे) के हैं । उत्तान यह एक नाम गभीरसे विपरीतका है । अगाध, अतलस्पश ये दो नाम अत्यन्त गभीर अर्थात् अयाहके हैं । वैशर्त्त, दाश, धीवर ये तीन (पु०) नाम मलाहके हैं ॥ १६ ॥ आनाय (पु०), जाल (न०) ये दो नाम आ लके हैं, शणसूत्र, पवित्रय ये दो (न०) नाम शणसूत्र अर्थात् सुतरीके हैं । मत्स्याधानी, कुवेणी ये दो (स्त्री०) नाम मटली बांधनेकी करटिया अर्थात् टोकरीके हैं । बडिश, मत्स्यवेधन ये दो (न०) नाम मटलीवेधन अर्थात् घसीके हैं ॥ १६ ॥ पृथुरोमर (नान्तः), क्षप, मत्स्य, मीन, विसारिण, अण्डज, विसार, शकुलिन (इयन्त) ये आठ (पु०) नाम मटलीके हैं । गडक, शकुलार्भक ये दो (पु०) नाम गल्फडी मटरी वा बच्चेविशेष हैं ॥ १७ ॥ सहस्रदंष्ट्र, पाठीन ये दो (पु०) नाम बहुत दाँतवाली मटरीविशेष हैं । उलूपिन (इयन्त), शिशुर ये दो (पु०) नाम शिशु मारने आहारवागी मटरीके हैं । नलमीन, चिलिचिम ये दो (पु०) नाम पानी और छपमें विचरनेवाली मटरीके हैं । प्रोष्ठी (स्त्री०), शफरी (पु०) ये दो नाम सफरी मटरीके हैं ॥ १८ ॥ पोताधान यह एक (न०) नाम जोगी मटलियोंके समूहका है । अब मत्स्यविशेष कहते हैं । रोहित या एर (पु०) नाम रोहो मटरी का है । महूर यह एर (पु०) नाम मेगा मटरी का है । शाल यह (पु०) नाम शरभिन मटरीका है । राजीव यह (पु०) नाम राया मटरीका है । शकुल यह (पु०) नाम सौग मटरी का है । तिमि ॥ १९ ॥ तिमिगिला, नक्षत्रये ये तीन (पु०)

स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मं कमठकच्छणी ।
 ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥
 गण्डूपदः किंचुलको निहाका गोधिका समे ।
 रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भृम्नि जलौकम् ॥ २२ ॥
 मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शंखः स्यात्कम्बुश्लिणी ।
 क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥
 भेके मण्डूकवर्षाभृशालूरप्लवदुर्गुराः ।
 शिली गंडूपदी भेकी वर्षाभृषी कमठी डुलिः ॥ २४ ॥
 मट्टरस्य प्रिया शङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
 जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो हृदः ॥ २५ ॥

नाम तीन तरहकी मछलियोंके हैं । यादम् (सान्त न०), जलजन्तु, (पु०)
 ये दो नाम प्राणीमें रहनेवाले जीवके हैं । उनके भेद ये हैं । शिशुमार यह
 (पु०) नाम शिरस मछलीका है । यह उद्र (पु०) नाम हृद-मछलीका
 है । शंकु यह (पु०) नाम सफ़ू मच्छका है । मकर यह (पु०) नाम मगरम-
 च्छका है । आदिशब्दसे जलहस्ती आदि जानने । ये सब मच्छोंके भेद
 हैं ॥ २० ॥ कुलीर, कर्कटक ये दो (पु०), नाम कैंकडेके हैं । कूर्म, कमठ,
 कच्छप ये तीन (पु०) नाम कछुआके हैं । ग्राह, अवहार ये दो (पु०)
 नाम ग्राहके हैं । नक्र, कुम्भीर ये दो (पु०) नाम नावूके हैं । महीलता
 (स्त्री०) ॥ २१ ॥ गंडूपद (पु०), किंचुलक (पु०) ये तीन नाम केंचु-
 वाके हैं । निहाका, गोधिका ये दो (स्त्री०) नाम जलगोहके हैं । रक्तपा
 (स्त्री०), जलौका (स्त्री०), जलौकस् ये तीन नाम जोड़के कहे हैं ।
 तहां जलौकस् शब्द नित्य बहुवचनान्त सकारान्त स्त्रीलिंग है ॥ २२ ॥
 मुक्तास्फोट (पु०), शुक्ति (स्त्री०) ये दो नाम सीपीके हैं । शंख, कंडु ये
 दो (पु० न०) नाम शंखके हैं । क्षुद्रशंख, शंखनख ये (पु०) नाम छोटे
 शंखके हैं । शम्बूक यह (पु० स्त्री०) नाम घोंघेका है ॥ २३ ॥ भेक,
 मंडूक, वर्षाभृ, शालूर, प्लव, दुर्गर ये छः (पु०) नाम मेंढकके हैं । शिली,
 गंडूपदी ये दो (स्त्री०) नाम छोटे गिडोवा अर्थात् केंचुएके हैं । भेकी,
 वर्षाभृषी ये दो (स्त्री०) नाम छोटी मेंढकजातिके हैं । कमठी, डुलि ये
 दो (स्त्री०) नाम कछुवोंके हैं ॥ २४ ॥ शङ्गी (स्त्री०) यह एक नाम

आदावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।
 पुस्तेवान्धुः प्राहिं कूप उदपान तु पुसि वा ॥ २६ ॥
 नेमिस्त्रिकाऽस्य बीनाहो मुखवन्धनमस्य यत् ।
 वृष्करिण्या तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥
 पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
 वंशन्त पल्लव चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥
 खेय तु परिखाधारस्त्वम्भसा यत्र धारणम् ।
 स्यात्तालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ।
 स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

महुर नामवाले मच्छविशेषकी स्त्रीके है । दुर्नामन (पु०), दीर्घजोशिका (स्त्री०) ये दो नाम जोंकके आकारवाले जलचरविशेषके है । जलाशय, जलाधार ये दो (पु०) नाम तालाव आदिके है । हृद् यह (पु०) नाम अगाध पानीवाले जलस्थानका है ॥ २६ ॥ आहाव (पु०), निपान (न०) ये दो नाम कुएके पासके गढेके हैं । इसमें भरे पानीको पशु पीते ह । अधु, प्राहि, रूप, उदपान ये चार नाम कुएके है । उदपान शब्द (पु० न०) है शेष (पु०) है ॥ २६ ॥ नेमि, त्रिका ये दो (स्त्री०) नाम कुएके चार अर्थात् धित्रीके हैं । बीनाह (पु०) यह नाम कुएके पनघटेका है । वृष्करिणी (स्त्री०), खात (न०) ये दो नाम खोदी हुई छोटी तलैयाके है । अखात, देवखातक ये दो (न०) नाम बिना खोदे हुए सरोवर अर्थात् भुगने तीर्थके है ॥ २७ ॥ पद्माकर (पु०), तडाग (पु० न०), कासार (पु०), सरसी (स्त्री०), सरस् (सान्त न०) ये पांच नाम तलावके हैं । वंशन्त (पु०), पल्लव (पु० न०), अल्पसरस् (सान्त न०) ये तीन नाम छोटी तलाईके है । वापी, दीर्घिका ये दो (स्त्री०) नाम बावडीके हैं ॥ २८ ॥ खेय (न०), परिखा (स्त्री०) ये दो नाम खाईके हैं । आधार (पु०) यह नाम बांधका है । आलवाल (न०), आवाल (न०), आवाप (पु०) ये तीन नाम वृक्ष आदिके थापलेके हैं । नदी, सरित् (सान्त) ॥ २९ ॥ तरङ्गिणी, शैवलिनी, तटिनी, ह्लादिनी, धुनी, स्रोतस्विनी, द्वीप

“ कूलंकषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती । ”

गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुगनिम्रगा ।

भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसुरपि ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वमा ।

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ।

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाद् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्यात् कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् ।

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥

कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः ।

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

वती, स्ववती, निम्रगा, आपगा ये बारह (स्त्री०) नाम नदीके हैं ॥ ३० ॥
 “ कूलंकषा, निर्झरिणी, रोधोवक्रा, सरस्वती येभी चार (स्त्री०) नाम
 नदीकेही हैं । ” गंगा, विष्णुपदी, जह्नुतनया, सुगनिम्रगा, भागीरथी, त्रि-
 पथगा, त्रिस्रोतस् (सान्त), भीष्मसू ये आठ (स्त्री०) नाम गंगाजीके
 हैं ॥ ३१ ॥ कालिन्दी, सूर्यतनया, यमुना, शमनस्वमू (ऋकारान्त) ये चार
 (स्त्री०) नाम यमुनाजीके हैं । रेवा, नर्मदा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका ये
 चार (स्त्री०) नाम नर्मदाके हैं ॥ ३२ ॥ करतोया, सदानीरा ये दो (स्त्री०)
 नाम गौरिके विवाहमें कन्यादानके जलसे उपजी नदीके हैं । बाहुदा, सैत-
 वाहिनी ये दो (स्त्री०) नाम कार्तवीर्यार्जुनने उतारी नदीके हैं । शतद्रु,
 शुतुद्रि ये दो (स्त्री०) नाम सतलज नदीके हैं । विपाशा, विपाश्
 (शान्त) ये दो (स्त्री०) नाम व्यासनदीके हैं ॥ ३३ ॥ शोण, हिर-
 ण्यवाह ये दो (पु०) नाम नदविशेषके हैं अर्थात् शोणा नदीके हैं ।
 कुल्या यह एक (स्त्री०) नाम छोटी और बनाई हुई नहरका है ।
 शरावती, वेत्रवती, चन्द्रभागा, सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी ये पांच
 (स्त्री०) नाम पांच नदीविशेषके हैं । और कौशिकी, गंडकी, चम्मल,
 गोदावरी, वेणी आदि अन्यभी नदी हैं । संभेद, सिन्धुसंगम ये दो (पु०)
 नाम नदीसंगमके हैं । प्रणाली यह एक (स्त्री० पु०) नाम पानी निकसनेके

देविकाया सरखा च भवे दाविकसारवौ ।
 सौगन्धिकं तु कङ्कार हलकं रक्तमध्यकम् ॥ ३६ ॥
 स्यादुत्पल कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च ।
 इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्सिते कुमुदैकरवे ॥ ३७ ॥
 शालूकमेषा कंदः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।
 जलनीली तु शैवालं शैवलोऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥
 कुमुदिन्या नालिन्या तु विसिनीपाद्मिनीमुखा ।
 वा पुंसि पद्म नालिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
 सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
 पङ्केरुहं तामरस सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
 विसप्रसूनराजीवपुष्कराभोरुहाणि च ।
 पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥

मार्गमें मच्छके मुखके समान रूपवालेका है ॥ ३६ ॥ देविकानदीमें जो हो उसे दाविक, सरयूनदीमें हो उसे सारव कहते हैं । ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं । सौगधिक, कङ्कार ये दो (न०) नाम सायफालमें स्थितनेवाले कमलके हैं । इसीको कूर्शभी कहते हैं । हलक, रक्तमध्यक ये दो (न०) नाम लालरंगवाले पूर्वोक्त कमलके हैं ॥ ३६ ॥ उत्पल, कुवलय ये दो (न०) नाम कुमोदिनीके हैं अथवा साधारण कमलके हैं । नीलाम्बुजन्म (नान्त), इन्दीवर ये दो (न०) नाम नीले कमलके हैं । कुमुद, केरव ये दो (न०) नाम सुपेद कमलके हैं ॥ ३७ ॥ शालूक यह एव (न०) नाम कमलचन्दका है । वारिपर्णी, कुम्भिका ये दो (स्त्री०) नाम जलकुम्भीके हैं । जलनीली (स्त्री०), शैवाल (न०), शैवल (पु०) ये तीन नाम शिवालके हैं । कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी ये दो (स्त्री०) नाम कुमोदिनीके हैं । नालिनी, विसिनी, पाद्मिनी ये तीन (स्त्री०) नाम कमलिनीके हैं । यहाँ मुखशब्दसे सरोजिनी आदि नामभी कमलिनीके हैं । पद्म, नलिन, अरविन्द, महोत्पल ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पङ्केरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह ॥ ४० ॥ विसप्रसून, राजीव, पुष्कर, अभोरुह ये सोलह (न०) नाम कमलके हैं उनमें पद्मशब्द (पु० न०) है । पुण्डरीक, सिताम्भोज ये दो (न०) नाम सुपेद कमलके

रक्तोत्पलं कोकनदं नालो नालमथास्त्रियाम् ।

मृणालं विममज्जादिकदम्बे खण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

करहाटः शिफाकन्दः किंजल्कः केसरोगस्त्रियाम् ।

संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

उक्तं स्वर्ग्योमदिकालधीशब्दादि सनाद्यक्रमम् ।

पातालभोगि नरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने प्रथमं काण्डम् ॥ १ ॥

हैं । रक्तसरोरुह ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पल कोकनद ये तीन (न०) नाम लाल कमलके हैं । नाल (पु०), नाल (न०) ये दो नाम कमलकी दूडीके हैं । मृणाल, विसं ये दो (पु० न०) नाम कमलकी भेसाके हैं । खंड यह एक (पु० न०) नाम कमल आदिके समूहका है ॥ ४२ ॥ करहाट, शिफाकन्द ये दो (पु०) नाम कमलकी जड़के हैं । किंजल्क (पु०), केसर (पु० न०) ये दो नाम कमलकी केसरके हैं । संवर्तिका (स्त्री०), नवदल (न०) ये दो नाम कमल आदिके नये पत्तोंके हैं । बीजकोश, वराटक ये दो (पु०) नाम कमलगट्टोंके हैं ॥ ४३ ॥ इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

स्वर्गवर्ग, व्योमवर्ग, दिग्वर्ग, कालवर्ग, धीवर्ग, शब्दादिवर्ग, नाट्यवर्ग, पातालभोगिवर्ग, नरकवर्ग, वारिवर्ग ये दश वर्ग कहे ॥ १ ॥ इस प्रकार अमरसिंहकी कृति नाम लिङ्गानुशासनमें स्वरादि शब्दोंका अंग उपांग-सहित प्रथम कांड कहा ॥ २ ॥

इति श्रीविहीरौहटकप्रदेशान्तर्गतवेरीग्रामनिवासिगीडवंशावतंसविविधशास्त्रपरम-
पंडितश्रीशिवसहायपुत्रराजदत्तशास्त्रिराजवैद्यविगचितायामगरानगरवास्तव्य-
व्योतिर्दिवालयमुकुन्दभट्टसूरिसुनुपं०—रामेश्वरभट्टेन संशोधितायां अमरको-
शार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकाया प्रथमकांडः ॥ १ ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

अथ भूमिवर्ग - ॥ १ ॥

वर्गा पृथ्वीपुरश्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः ।

नृग्रहक्षत्रविद्भृद्भिः सागोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वमरा स्थिरा ।

धरा धरित्री धराणि क्षोणिज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥

सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुधरा ।

गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी श्मावनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

“ विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा ।

भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ॥ ”

मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्ता मृत्स्ना च मृत्तिका ।

उर्वरा सर्वसस्यादद्या स्यादृषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

ऊपवानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थल स्थली ।

समानौ मरुधन्वानौ द्वे स्थलाप्रवृत्ते समे ॥ ५ ॥

अथ भूमिवर्ग । पृथ्वीवर्ग, पुरवर्ग, शैलवर्ग, वनौषधिवर्ग, सिंहादिवर्ग, नृवर्ग, ग्रहवर्ग, क्षत्रिवर्ग, वैश्यवर्ग, शूद्रवर्ग ये वर्ग अग उपांगसहित इति दूसरे कांडमें कहे हैं ॥ १ ॥ भू, भूमि, अचला, अनन्ता, रसा, विश्वम्बरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धराणि, क्षोणि, ज्या, काश्यपी, क्षिति ॥ २ ॥ सर्व सहा, वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुधरा, गोत्रा, कु, पृथिवी, पृथ्वी, श्मा, अवनि, मेदिनी, मही ये सत्ताईम (छी०) नाम पृथिवीके हैं ॥ ३ ॥ “ विपुला, गह्वरी, धात्री, गो, इला, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा, जगती, सागराम्बरा ये ग्यारह नामभी पृथ्वीके हैं । ” मृद् (दांत), मृत्ति का ये दो (छी०) नाम माटीके हैं । मृत्ता, मृत्स्ना ये दो (छी०) नाम सुदूर माटीके हैं । उर्वरा (छी०) यह एक नाम सम्पूर्ण खेतियोंसे युक्त पृथिवीका है । ऊप (पु०), क्षारमृत्तिका (छी०) ये दो नाम खारी माटीके हैं ॥ ४ ॥ ऊपवन् (तीन), ऊपर ये दो नाम ग्यारी माटीसे मिले हुए हैं । ये दोनों अव्यय लिङ्गी हैं । स्थल (न), स्थली (छी०) ये दो नाम लहसिम स्थानों हैं । मरु, धन्वन् (तीन) ये दो

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।
 लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥
 देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।
 प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥
 आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ।
 नीवृजनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥
 त्रिष्वागोष्ठाब्जप्राये नड्वाब्जद्वल इत्यपि ।
 कुमुद्वान्कुमुदप्राये वेतस्वान्वहुवेतसे ॥ ९ ॥
 शाद्वलः शाद्वरिते सजम्बाले तु पङ्क्तिः ।
 जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

(पु०) नाम बागड (मारवाड) देशके हैं । खिल, अप्रहत ये दो नाम
 विना बोर्ड हुई पृथ्वीके हैं और त्रिलिङ्गी हैं ॥ ६ ॥ जगती (स्त्री०), लोक
 (पु०), विष्टप (न०), भुवन (न०), जगत् (तान्त न०) ये पाँच नाम
 जगत्के हैं । जम्बूद्वीपमें वर्तमान लोक भारतवर्षके नामसे प्रसिद्ध हैं ।
 इलावृत्त आदि अन्यभी वर्ष हैं । शरावती नदीकी अवधिसे जो ॥ ६ ॥
 पूर्व दक्षिण देश है वह प्राच्य कहाता है और (पु०) है । और शरावती
 नदीकी अवधिसे जो देश पश्चिम उत्तर है वह उदीच्य कहाता है वह
 (पु०) है । प्रत्यन्त, म्लेच्छदेश ये दो (पु०) नाम म्लेच्छदेशके हैं । जिस
 देशमें चार वर्णोंकी व्यवस्था नहीं हो वह म्लेच्छदेश होता है । मध्यदेश,
 मध्यम ये दो (पु०) नाम मध्यदेशके हैं । हिमालय और विन्ध्याचलके
 मध्य हो कुम्भक्षेत्रसे पूर्व और प्रयागसे पश्चिम हो यह मध्यदेश है ॥ ७ ॥
 आर्यावर्त, पुण्यभूमि ये दो (पु०) नाम आर्यावर्त देशके हैं । यह आर्या-
 वर्त हिमालय और विन्ध्याचलके भीतर है अर्थात् पूर्वके समुद्र और पश्चि-
 मके समुद्रके बीचकी पृथ्वी आर्यावर्तसे प्रसिद्ध है । नीवृत्त (पु० स्त्री०),
 जनपद (पु०) ये दो नाम मगध आदि देशके हैं । देश (पु०),
 विषय (पु०), उपवर्तन (न०) ये तीन नाम देशमात्रके हैं ॥ ८ ॥
 गोष्ठशब्दतक त्रिलिङ्गी हैं । नड्वत्, नड्वल ये दो नाम बहुत नरसलवाले
 देशके हैं । कुमुद्वत् यह एक नाम बहुत कमोदनीवाले देशका है ।
 वेतस्वत् (तान्त) यह एक नाम बहुत वेतोंवाले देशका है ॥ ९ ॥ शाद्वल

स्त्री शर्करा शर्कीरलः शर्करा शर्करावति ।

देश एवादिमावेवमुन्नेया. सिकतावति ॥ ११ ॥

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः ।

स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् ।

गोष्ठं गोस्थानकं तत्तु गोष्ठीनं भृतपूर्वकम् ॥ १३ ॥

पर्यतभू. परिसर. सेतुरालौ द्विधा पुमान् ।

वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुनपुसकम् ॥ १४ ॥

अयन वर्त्म मार्गाध्वपन्थान् पदवी सति. ।

सरणिः पद्धतिः पद्या वर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

यह एक नाम बालवृणोसे हरे देशका है । पकिल यह एक नाम कीचडवाले देशका है । अनूप यह एक नाम अनूप अर्थात् बहुत जल-वाले देशका है । कच्छ यह एक नाम नदी आदिके समीपदेशका है, और पुंलिङ्ग है ॥ १० ॥ शर्करा, शर्कीरल ये दो नाम बालूरेतसे युक्त देशके हैं । तहां शर्कराशब्द स्त्रीलिङ्ग है । शर्करा, शर्करावति ये दो नाम ककणोसे युक्त देशके हैं । सिकता, सिकतिल ये दो नाम ककरोसे युक्त हुए देशके हैं । सिकत, सिकतावति ये दो नाम बालूसे युक्त हुए देश आदिके हैं ॥ ११ ॥ नदीमातृक यह नाम नदीके पानीसे सम्पन्न हुए व्रीहिवाले देशका है । देवमातृक यह नाम वर्षाके पानीसे सम्पन्न हुए व्रीहिवाले देशका है ॥ १२ ॥ राजन्वत् (तान्त) यह एक नाम सुन्दर धर्म धर्मशील राजा जिसमें हो उसका है । राजवत् (तान्त) यह एक नाम साधारण राजा जिस देशमें हो उसका है । गोष्ठ, गोस्थानक ये दो नाम गोवोंके स्थानके हैं यहाँकर त्रिलिङ्गी है । गोष्ठीन (न०) यह जहाँ पहले गो रहती हों उस स्थानका नाम है ॥ १३ ॥ पर्यतभू (स्त्री०), परिसर (पु०) ये दो नाम नदी पर्वत आदिके समीपकी पृथ्वीके हैं । सेतु (पु०), आलि ये दो नाम पुलके हैं । तहां सेतुशब्द (पु०) है और आलिशब्द (पु० स्त्री०) है । वामलूर (पु०), नाकु (पु०), वल्मीक (पु० न०) ये तीन नाम साप आदिकी बाँधीके हैं ॥ १४ ॥ अयन (न०), वर्त्म (नात्त न०), मार्ग (पु०), सध्वत्

अतिपथ्याः लुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ।

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृंगाटकचतुष्पथे ।

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री कोशयुगं नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।

घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

“ द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी ।

दिवस्पृथिव्यौ गङ्गा तु रुमा स्याल्लवणाकरः ॥ ”

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः ॥ २ ॥

पूरः स्त्री पुरी नगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।

स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥

(नान्त पु०), पथिन् (नान्त पु०), पदवी, सृति, सरणि, पद्वाति, पद्या, वत्तनी, एकपदी ये बारह नाम मार्ग (रस्ते) के हैं । पदवीसे एकपदी-शब्दतक (स्त्री०) हैं ॥ १६ ॥ अतिपथिन्, सुपथिन्, सत्पथ ये तीन (पु०) नाम सुन्दर रस्तेके हैं । व्यध्व, दुरध्व, विपथ, कदध्वन् (नान्त), कापथ ये पांच (पु०) नाम बुरे रस्तेके हैं ॥ १६ ॥ अपथिन् (नान्त पु०), अपथ (न०) ये दो नाम अमार्ग अर्थात् जहां रास्ता न हो उसके हैं । शृंगाटक, चतुष्पथ ये दो (न०) नाम चौराहेके हैं । प्रान्तर (न०) यह एक नाम दूर और शून्य रास्तेका है । कान्तार यह एक (पु० न०) नाम दुर्गम मार्गका है ॥ १७ ॥ गव्यूति यह एक (स्त्री०) नाम दो कोसका है । नल्व यह एक (पु०) नाम चार सौ हाथका है । घंटापथ (पु०), संसरण (न०) ये दो नाम घंटोंसे युत हस्ती आदिके निकलनेके चौड़े अर्थात् मुख्य मार्गके हैं । उपनिष्कर यह एक (न०) नाम जिस राजमार्गसे सेना निकले वा मार्ग साकड़ा हो उसका है ॥ १८ ॥ “ द्यावा-पृथिवी, रोदसी, द्यावाभूमी, रोदसी, दिवस्पृथिवी ये पांच (स्त्री) नाम आकाशसहित पृथिवीके हैं । गङ्गा (स्त्री०), रुमा (स्त्री०), लवणाकर (पु०) ये तीन नाम खारी समुद्रके हैं ॥ ” इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः । पुर, पुरी, नगरी, पत्तन, पुटभेदन, स्थानीय, निगम

तच्छाखानगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।
 आपणस्तु निपद्याया विपाणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥
 रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीनः प्रान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥
 भित्तिः स्त्री कुडचमेहकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।
 गृहं गेहोदवासितं वेश्म सन्न निकेतनम् ॥ ४ ॥
 निशान्तपस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ।
 गृहाः पुंसि च भूमन्येव निकार्यनिलयालया ॥ ५ ॥
 वासः कुटी द्वयोः शाला समा सजवनं त्विदम् ।
 चतुःशाल मुनीना तु पर्णशालोऽष्टजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

ये सात नाम नगरके हैं । तहाँ पुर, पुरी और नगरीशब्द (स्त्री०) हैं और जब पुर नगर ऐसा बनता है तब (न०) है । निगम (पु०) शेष (न०) है ॥ १ ॥ जो मूलनगरसे अन्य पुर हो वह शाखानगर (न०) कहाता है । वेश यह एक (पु०) नाम वेश्याके निवासस्थानका है । आपण (पु०), निपद्या (स्त्री०) ये दो नाम हाटके हैं । विपाणि (स्त्री०), पण्यवीथिका (स्त्री०) ये दो नाम दुकानोंकी पत्तिके हैं ॥ २ ॥ रथ्या, प्रतोली, विशिखा ये तीन (स्त्री०) नाम ग्रामकी गलीके हैं । चय (पु०), वप्र ये दोनों नाम झोपके हैं । तहाँ वप्रशब्द (पु० न०) है । प्राकार, वरण, साल ये तीन (पु०) नाम बाड करनेके हैं । प्राचीन (न०) यह एक नाम नगर आदिके प्रान्तभागमें वास और काटे आदिके घेष्टनका है ॥ ३ ॥ भित्ति (स्त्री०), कुट्य (न०) ये दो नाम भीतके हैं । एडूय यह एक (न०) नाम हड्डियोंमहित भीतका है । गृह, गेह, उदवासित, वेश्म (नाँत), सन्न (नाँत), निकेतन ॥ ४ ॥ निशान्त, पस्त्य, सदन, भवन, अगार, मन्दिर, गृह, निफार्य, निलय, आलय ये सोलह नाम घरके हैं । तहाँ गृहशब्द बहुवचनमें (पु०) है । निकार्य, निलय आलय ये तीन (पु०) शेष (न०) हैं ॥ ५ ॥ वास (पु०), कुटी (स्त्री०), शाला (स्त्री०), समा (स्त्री०) ये चार नाम सभाघरके हैं । तहाँ कुटीशब्द (स्त्री० पु०) है । सजवन (न०), चतुःशाल (न०) ये दो नाम आपसमें सन्मुखरूप चार शाला अर्थात् चौकके हैं । पर्णशाला (स्त्री०), उटज ये दो नाम मुनियोंके घरके हैं । तहाँ उटजशब्द (पु० न०) है ॥ ६ ॥

चैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा ।

आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयो गङ्गा तु मदिरागृहम् ।

गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥

“ कुट्टिमोऽस्त्री निवद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम् । ”

वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभृशुजाम् ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥

विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसन्ननाम् ।

हयगारं भृशुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥

चैत्य, आयतन ये दो (न०) नाम यज्ञके स्थानभेदके हैं । वाजिशाला, मन्दुरा ये दो (स्त्री०) नाम अश्वशालाके हैं । आवेशन (न०) शिल्पिशाला (स्त्री०) ये दो नाम सुनार आदिकी शालाके हैं । प्रपा, पानीयशालिका ये दो (स्त्री०) नाम प्याऊके हैं ॥ ७ ॥ मठ (पु०) यह एक नाम शिष्य संन्यासी आदिकोंके स्थानका है । गङ्गा (स्त्री०), मदिरागृह (न०) ये दो नाम मदिराघरके हैं । गर्भागार, वासगृह ये दो (न०) नाम गर्भस्थानके हैं । अरिष्ट, सूतिकागृह ये दो (न०) नाम सूतिकाघरके हैं ॥ ८ ॥ “ कुट्टिम यह एक (पु० न०) नाम पत्थर आदिसे बँधी हुई पृथ्वीका है । चन्द्रशाला (स्त्री०), शिरोगृह (न०) ये दो नाम अटारीके हैं । ” वातायन (न०), गवाक्ष (पु०) ये दो नाम झरोखाके हैं । मण्डप (पु० न०), जनाश्रय (पु०) ये दो नाम मण्डपके हैं । हर्म्य यह एक (न०) नाम धनवालोंके स्थानका है । प्रासाद यह एक (पु०) नाम राजघरका है ॥ ९ ॥ सौध (पु० न०), राजसदन, (न०) उपकार्य (स्त्री०), उपकारिका (स्त्री०) ये चार नाम राजाके स्थानके हैं । स्वस्तिक यह एक (पु० न०) नाम तोरणसहित चारद्वारवाले स्थानका है । सर्वतोभद्र यह एक (पु० न०) नाम ऊपरके घरका है । नन्द्यावर्त यह एक (पु० न०) नाम गोलघरका है । आदिशब्दसे अन्यगृहभी जानने ॥ १० ॥ विच्छन्दक यह एक (पु०) नाम बड़े सुन्दर घरका है ।

शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ।

प्रघाणप्रघणालिन्दा वहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

गृहावग्रहणी देहल्यंगणं चत्वरोजिरे ।

अधस्ताद्धारुणि शिला नासा दारूपारि स्थितम् ॥ १३ ॥

प्रच्छन्नमन्तर्द्वार स्यात्पक्षद्वार तु पक्षकम् ।

वशीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।

कपोतपालिकाया तु विटकं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥

स्त्री द्वार्द्वार प्रतीहारः स्याद्वितीर्दिस्तु वेदिका ।

तोरणोऽस्त्री वहिर्द्वार पुग्द्वारं तु गोपुग्म् ॥ १६ ॥

ये स्वस्तिक आदि राजघरोके भेद हैं । अन्त पुर (न०), अवरोधन (न०) ॥ ११ ॥ शुद्धान्त (पु०), अवरोध (पु०) ये चार नाम राजाओंके स्त्रीघर (रनिजास) के हैं । अट्ट (पु०), क्षौम ये दो नाम हर्म्य आदिके पृष्ठस्थानके हैं । तहां क्षौमशब्द (पु० न०) है । प्रघाण, प्रघण, आलिन्द ये तीन (पु०) नाम घरके बाहरके चोतरेके हैं ॥ १२ ॥ गृहावग्रहणी, देहली ये दो (स्त्री०) नाम देहलके हैं । अगण, चत्वर, अजिर ये तीन (न०) नाम आंगनके हैं । शिला (स्त्री०) यह एक नाम द्वारस्तम्भके नीचे स्थित काठका है । नासा (स्त्री०) यह एक नाम द्वारस्तम्भके ऊपर स्थितका है ॥ १३ ॥ प्रच्छन्न, अन्तर्द्वार ये दो (न०) नाम खिडकीके हैं । पक्षद्वार, पक्षक ये दो (न०) नाम पार्श्वद्वारके हैं । वलीक (पु० न०), नीध्र (न०) ये दो नाम पट्टके प्रान्तमें घरके आच्छादनके हैं । पटल (न०), छदि (स्त्री०) ये दो नाम छातके हैं । छदिशब्द सान्तभी पाया जाता है ॥ १४ ॥ गोपानसी, बलभी ये दो (स्त्री०) नाम छादनके लिये टेढ़े काठके हैं । कपोतपालिका (स्त्री०), विटक ये दो नाम काठ आदिसे बने हुए पक्षीघरके हैं । तहां विट्शब्द (पु० न०) है ॥ १५ ॥ द्वार (स्त्री०), द्वार (न०), प्रतीहार (पु०) ये तीन नाम द्वारके हैं । वितीर्द, वेदिका ये दो (स्त्री०) नाम वेदीके हैं । तोरण (पु० न०), वहिर्द्वार (न०) ये दो नाम तोरणके हैं । पुग्द्वार, गोपुर ये दो (न०)

कूटं पृथ्वीरि यद्धस्तिनखरतरिमन्नय त्रिषु ।

कपाटमरं तुल्ये तद्विष्णुस्थोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥

आरोहणं स्यात्सोपानं निःश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ।

संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥

क्षिते सुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणम् ।

समौ संवसथग्रामौ वेश्मभृवास्तुगस्त्रियाम् ॥ १९ ॥

ग्रामान्त उपशल्यं स्यात् सीमसीमे द्वियामुभे ।

घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः शवगलयः ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३ ।

महीध्रे शिखरिक्षमाभृदहार्यधग्पर्वताः ।

अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

नाम नगरके द्वारके हैं ॥ १६ ॥ हस्तिनख यह एक (पु०) नाम नगरके द्वारमें सुखपूर्वक उतरनेके लिये माटीकी सीढ़ीके हैं । कपाट, अरर ये दो नाम किवाडके हैं और त्रिलिङ्गी हैं । अर्गल यह एक नाम आगलका है और (स्त्री० न०) है ॥ १७ ॥ आरोहण, सोपान ये दो (न०) नाम जीने वा सीढ़ीके हैं । निश्रेणि, अधिरोहिणी ये दो (स्त्री०) नाम काष्ठकी बनी सीढ़ीके हैं । समार्जनी, शोधनी ये दो (स्त्री०) नाम बुहारीके हैं । संकर, अवकर ये दो (पु०) नाम कूडाकरकटके हैं ॥ १८ ॥ सुख, निःसरण ये दो (न०) नाम घर आदिके प्रवेश वा निकलनेके द्वारके हैं । संनिवेश (पु०), निकर्षण (न०) ये दो नाम सम्यक् प्रकारसे वासस्थानके हैं । संवसथ, ग्राम ये दो (पु०) नाम गामके हैं । वेश्मभू (स्त्री०), वास्तु ये दो नाम घरकी पृथ्वीके हैं । वास्तुशब्द (पु० न०) है ॥ १९ ॥ उपशल्य यह एक (न०) नाम ग्रामके समीप प्रदेशका है । सीमन् (नान्त), सीमा यह दो (स्त्री०) नाम सीमाके हैं । घोष (पु०), आभीरपल्ली (स्त्री०) ये दो नाम गोपलोगोंके गामके हैं । पक्कण, शवगलय ये दो (पु०) नाम भोलोंके गामके हैं ॥ २० ॥ इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः । महीध्र, शिखरिन् (इन्नन्त), क्षमाभृत्, अहार्य, धग्, पर्वत, अद्रि, गोत्र, गिरि, ग्रावन् (नान्त), अचल, शैल, शिलोच्चय ये

लोकालोकश्चक्रवालश्चिकूटश्चिकुत्समौ ।

अस्तस्तु चरमक्षमाभृदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ १ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रिकः ।

गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ २ ॥

पापाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

कूटोऽस्त्री शिखर शृङ्गं प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽष्ट्रे स्तुः प्रस्थ सानुरास्त्रियाम् ।

उत्सः प्रस्रवण वारिप्रवाहो निर्झरो झर ॥ ५ ॥

दरी तु कंदरी वा स्त्री देवखातविले गुहा ।

गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युता रथलोपला गिरेः ॥ ६ ॥

तेरह (पु०) नाम पर्वतके है ॥ १ ॥ लोकालोक, चक्रवाल ये दो (पु०) नाम सात द्वीपवाली पृथ्वीके प्राकारभूत पर्वतके है । त्रिकूट, त्रिकुत् (दान्त) ये दो (पु०) नाम त्रिकूट पर्वतके है । अस्त, चरमक्षमाभृत् (तात) ये दो (पु०) नाम अस्ताचलके है । उदय, पूर्वपर्वत ये दो (पु०) नाम उदयाचल पर्वतके है ॥ २ ॥ हिमवत् (मत्सन्त), निषध, विन्ध्य, माल्यवत् (मत्सन्त), पारियात्रिक, गन्धमादन, हेमकूट, (मलय, चित्रकूट, मन्दराचल) ये सब (पु०) नाम पर्वतभेदवाची है । तहां गन्धमादन शब्द (न०) भी है ॥ ३ ॥ पापाण, प्रस्तर, ग्रावर (नात), उपल, अश्मन् (नात), शिला, दृषद् (दान्त) ये सात नाम पत्थरके है । इनमें शिला और दृषद् (स्त्री०) शेष (पु०) है । कूट (पु० न०), शिखर (न०), शृङ्ग (न०) ये तीन नाम पर्वतके अग्रभागके है । प्रपात, अतट, भृगु ये तीन (पु०) नाम पर्वतसे पतनस्थानके है ॥ ४ ॥ कटक यह एक (पु० न०) नाम पर्वतके मध्यभागका है । स्तु, प्रस्थ, सानु ये तीन नाम पर्वतके एक देशके है और तीनों शब्द (पु० न०) है । उत्स (पु०), प्रस्रवण (न०) ये दो नाम जहां पानी झिरके बहुत हो जाता है उस स्थानके है । वारि-प्रवाह, निर्झर, झर ये तीन (पु०) नाम झिरनेके है ॥ ५ ॥ दरी (स्त्री०), कन्दर (पु० स्त्री०) ये दो नाम समान बनाई हुई पर्वतकी गुफाके है । देवखात, विल, गुहा, गह्वर ये चार नाम विना बनाई हुई पर्वतकी गुफाके है । गुहाशब्द (स्त्री०) शेष (न०) है । गण्डशैल यह एक (पु०) नाम

“ दन्तकास्तु वहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः । ”

खनिः खियामावरः स्यात् पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः ।

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीवे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः ४ ।

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

आगमः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।

अमात्यगणिकागोदोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुगेचितम् ॥ ३ ॥

पर्वतसे गिरे हुए मोटे पत्थरका है ॥ ६ ॥ “ दन्तक यह एक (पु०) नाम पर्वतके तिरछे प्रदेशसे बाहर निकले हुए झूलके आकारवाले पत्थरोंका हैं । ” खनि (स्त्री०), आकर (पु०) ये दो नाम खानके हैं । पाद, प्रत्यन्तपर्वत ये दो (पु०) नाम पर्वतके समीपमें छोटे पर्वतोंके हैं । उपत्यका (स्त्री०) यह एकनाम पर्वतके नीचेवाली पृथ्वीका है । अधित्यका (स्त्री०) यह एक नाम पर्वतके ऊपरकी पृथ्वीका है ॥ ७ ॥ धातु यह एक (पु०) नाम पर्वतकी मनशिल आदिका है । गैरिक यह एक (न०) नाम पर्वतकी धातुविशेष अर्थात् गेरूका है । निकुञ्ज, कुञ्ज ये दो (पु०, न०) नाम लता आदिसे ढके हुए स्थानके हैं ॥ ८ ॥ इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः । अटवी, अरण्य, विपिन, गहन, कानन, वन ये छः नाम वनके हैं । तहां अटवीशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । महारण्य (न०), अरण्यानी (स्त्री०) ये दो नाम बड़े वनके हैं । गृहाराम, निष्कुट ये दो (पु०) नाम घरके समीप बनाये हुए बगीचेके हैं ॥ १ ॥ आराम (पु०), उपवन (न०) ये दो नाम लगाये हुए बगीचेके हैं । वृक्षवाटिका यह एक (स्त्री०) नाम राजमंत्री और वेश्याओंके घरमें लगाये हुए बगीचेके हैं ॥ २ ॥ आक्रीड (पु०), उद्यान (न०) ये दो नाम

वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी लेखास्तु राजयः ।
 वन्या वनसमूहे स्यादंकुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥
 वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।
 अनोकहः कुटः शालः पलाशी दुद्रुमागमा ॥ ५ ॥
 वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।
 ओषध्यः फलपाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥
 वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च फलवान् फलिनः फली ।
 प्रफुल्लोत्फुल्लसफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥
 फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।
 स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शकुर्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

राजाके साधारण बगीचेके है। प्रमदवन (न०) यह एक नाम रानियोंके क्रीडावनका है ॥ ३ ॥ वीथी, आलि, आवलि, पक्ति, श्रेणी ये पांच (स्त्री०) नाम पक्तिके हैं। लेखा, राजि ये दो (स्त्री०) नाम रेखाके हैं। वन्या यह एक (स्त्री०) नाम वनके समूहका है। अकुर यह एक (पु०) नाम नये अकुरका है ॥ ४ ॥ वृक्ष, महीरुह, शाखिन (इन्नन्त), विटपिन (इन्नन्त), पादप, तरु, अनोकह, कुट, शाल, पलाशिन (इन्नन्त), दुद्रु, हुम, अगम ये तेरह (पु०) नाम वृक्षके हैं ॥ ५ ॥ फूलसे उपजे फलोंकरके उपलक्षित कुयेको वानस्पत्य कहते हैं यह (पु०) है। जैसे—आम आदि। फूलोंके बिना फलोंसे उपजा वनस्पति कहलाती है। जैसे—गूडर आदि। फलपाकही है अन्त जिन्होंका वे ओषधि कहाते हैं। जैसे—ग्रीहि जव आदि। अवध्य, फलेग्रहि ये दो (पु०) नाम जैसा काल हो उसके अनुसार फलधारी वृक्षके हैं ॥ ६ ॥ वध्य, अफल, अवकेशिन (इन्नन्त) ये तीन नाम ऋतुकालमें फलरहित वृक्षके हैं। फण्यत् (मत्वन्त), फलिन, फलिन (इन्नन्त) ये तीन नाम फलवाले वृक्षके हैं। प्रफुल्ल, उत्फुल्ल, सफुल्ल, व्याकोश, विकच, स्फुट, फुल्ल ॥ ७ ॥ ये आठ नाम फूले हुए वृक्षके हैं। अवध्यसे लेके फुल्लपर्यंत शब्द (त्रि०) हैं। स्थाणु (पु० न०), ध्रुव (पु०), शकु (पु०) ये तीन नाम छटि हुए शाखावाले वृक्षके अर्थात् दृष्टके हैं। क्षुप यह एक (पु०) नाम छोटी

अग्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रततिर्लता ।

लता व्रततिर्नी वीरुहुलिमन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥

नगाधरोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥

समे शाखालते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे ।

शाखा शिफावरोहः स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना मूलं बुध्रोऽग्निनामकः ।

सारो मज्जा नरि त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इधममेधः समित् स्त्रियाम् ।

निष्कुहः कोटरं वा ना वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

डाली और जड़वाले वृक्षका है ॥ ८ ॥ स्तव, गुल्म ये दो (पु०) नाम प्रकांडरहित वृक्षके हैं । वल्ली, व्रतति, लता ये तीन (स्त्री०) नाम वेलिके हैं । वीरु (धान्त स्त्री०), गुलिमनी (स्त्री०), उलप (पु०) ये तीन नाम फैली हुई वेलिके हैं ॥ ९ ॥ उच्छ्राय, उत्सेध, उच्छ्रय ये तीन (पु०) नाम वृक्ष आदिकी उंचाईके हैं । प्रकांड (पु० न०), स्कंध (पु०) ये दो नाम वृक्षके मूलसे शाखापर्यंत भागके हैं ॥ १० ॥ शाखा, लता ये दो (स्त्री०) नाम शाखाके हैं । स्कंधशाखा, शाला ये दो (स्त्री०), नाम प्रधान शाखाके हैं । शिफा, जट ये दो (स्त्री०) नाम वृक्षकी जड़के हैं । अवरोह यह एक (पु०) नाम शाखाकी जड़का है । वृक्षके मूलसे अग्रभागपर्यंत चढ़ी हुई वेल गिलोय आदिभी अवरोह कहाती है ॥ ११ ॥ शिखर यह एक (पु० न०) नाम शिखरे आग्रभागका है । मूल (न०), बुध्र (पु०), अग्निनामक (पु०) ये तीन नाम वृक्ष आदिकी जड़के हैं । सार, मज्जा (नान्त) ये दो (पु०) नाम वृक्षके गुद्देके हैं । त्वक् (चान्त स्त्री०), वल्क, वल्कल ये तीन नाम वृक्षकी छालके हैं । तहां वल्क और वल्कलशब्द (पु० न०) हैं ॥ १२ ॥ काष्ठ (न०), दारु (पु० न०) ये दो नाम काठमात्रके हैं । इधन (न०), एधस् (सान्त न०), इध्म (न०), एध (पु०), समिध् (धान्त स्त्री०) ये पांच नाम सूखे हुए तृण काष्ठ आदिके हैं । निष्कुह (पु०), कोटर (पु० न०) ये दो नाम वृक्षके छिद्रके हैं । वल्लरि, मञ्जरि ये दो (स्त्री०) नाम तुलसी

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥
 वृक्षादीनां फलं सस्यं वृन्तं प्रसवेवन्धनम् ।
 आम्रे फले शलाटुः स्याच्छुष्के वानमुभे त्रिषु ॥ १५ ॥
 क्षारको जालकः क्लीबे कलिका कोरकः पुमान् ।
 स्याद्गुच्छकस्तु स्तवकः कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
 स्त्रियं सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं समम् ।
 मकरन्दं पुष्पस्य परागं सुमनोरजः ॥ १७ ॥
 द्विहीनं प्रसवे सर्वं हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।
 आश्रत्यैवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैर्गुदं फले ॥ १८ ॥

आदिकी मजरीके है ॥ १३ ॥ पत्र, पलाश, छदन, दल, पर्ण, छद ये छ.
 नाम पत्तोंके है । तहाँ छदशब्द (पु०) शेष (न०) है । पल्लव, किस्-
 लय ये दो (पु० न०) नाम पत्ता आदिसे युत हुए शाखाके पर्वके हैं ।
 यथा ' पुसि क्लीबे च पल्लव ' इति तु व्याधि । विटप यह एक (पु० न०)
 नाम शाखापत्तोंके समुदायका है ॥ १४ ॥ सस्य यह एक (न०) नाम
 वृक्ष आदिके फलका है । वृन्त यह एक (न०) नाम फल आदि जिसक-
 रके बांधे जाते हैं उसका है । शलाटु यह एक नाम कच्चे फलका है । वान
 यह एक नाम सूखे हुए फलका है । शलाटु और वान शब्द त्रिलिङ्गी हैं
 ॥ १५ ॥ क्षारक (पु०), जालक (न०) ये दो नाम नई कलीके है ।
 कलिका (स्त्री०), कोरक (पु०) ये दो नाम कलीके है । गुच्छक, स्त-
 वक ये दो (पु०) नाम कली आदिसे आकीर्ण हुई पत्तोंकी गाँठके हैं ।
 कुड्मल, मुकुल ये दो (पु० न०) नाम थोड़ी खिली हुई कलीके हैं ॥ १६ ॥
 सुमनस् (सान्त), पुष्प, प्रसून, कुसुम ये चार नाम फूलके है । तहाँ सुम-
 नस्शब्द (स्त्री०) शेष (न०) है । मकरन्द, पुष्पस्य ये दो (पु०) नाम
 फलोंके मधुके हैं । पराग (पु०), सुमनोरजस् (सान्त न०) ये दो नाम
 फलोंकी रणुके हैं ॥ १७ ॥ पुष्प, फल, मूल इन्हींमें वर्तमान सय (न०) हैं ।
 और हरीतकी आदि शब्द (स्त्री०) हैं । आश्रत्य, वैणव, प्लाक्ष, नैयग्रोध,
 रैर्गुद ये पाँचों (न०) नाम क्रमसे पीपल, बांस, पिलखन, बड, हींगड

वार्हतं च फले जम्बू जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वर्लिंगा ब्रीहयः फले ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला ।

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥

अश्वत्थेऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः ।

तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञांगो हेमदुग्धकः ।

कोविदारो चमरिकः कुहालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।

आरग्वधे राजवृक्षश्म्याकचतुरंगुलाः ॥ २३ ॥

आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।

स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥

इन्होंके फलोंके हैं ॥ १८ ॥ वार्हत यह एक (न०) नाम बड़ी कटेहरीके फलका है । जम्बू, जम्बु, जाम्बव ये तीन नाम जाम्बुनके फलके हैं । तहाँ जम्बूशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । जातीसे आदि ले पुष्पवाचक शब्द अपने २ लिंगवाले हैं और फलवाचक ब्रीहिशब्द अपने २ लिंगवाले हैं । किन्तु (न०) नहीं हैं । तहाँ जातीशब्द (स्त्री०) है । ब्रीहिशब्द (पु०) है ॥ १९ ॥ विदारी आदि फलपुष्पवाचक शब्द स्वर्लिंग हैं । पाटलाशब्द पुष्पवाचक होनेसे भी (न० और स्वर्लिंग) है । जैसे— ' पाटलायाः पुष्पं पाटलम् ' । बोधिद्रुम, चलदल, पिप्पल, कुञ्जराशन ॥ २० ॥ अश्वत्थ ये पांच (पु०) नाम पीपलवृक्षके हैं । कपित्थ, दधित्थ, ग्राहिन् (इन्नन्त), मन्मथ, दधिफल पुष्पफल, दन्तशठ ये सात (पु०) नाम कैथके हैं ॥ २१ ॥ उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक ये चार (पु०) नाम गूलरके हैं । कोविदार, चमरिक, कुहाल, युगपत्रक ये चार (पु०) कचनारके हैं ॥ २२ ॥ सप्तपर्ण, विशालत्वक् (चात), शारद, विषमच्छद ये चार (पु०) नाम सातविण अर्थात् सात पत्तेवालेके हैं । आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, चतुरंगुल ॥ २३ ॥ आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णक ये आठ (पु०) नाम अमलतासके हैं । जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल ये पांच (पु०) नाम जम्भीर नीबूके हैं ॥ २४ ॥

वरुणो वरणं सेतुस्तित्तशाखं कुमारकम् ।
 पुंनागे पुरुपरतुंगः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥
 पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दार पारिजातकम् ।
 तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्वरातिमुक्तकम् ॥ २६ ॥
 वंजुलश्चित्रकृचाय द्वौ पीतनकपीतनौ ।
 आम्रातके मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥
 वानप्रस्थमधुष्ठीलौ जलजेऽत्र मधूलकम् ।
 पीलौ गुडफलं स्रसी तस्मिस्तु गिरिभृम्भवे ॥ २८ ॥
 अक्षोटकन्दरालौ द्वावंकोटे तु निकोचकम् ।
 पलाशे किंशुकं पर्णो वातपोथोऽथ वेतसे ॥ २९ ॥
 रथाम्रपुष्पविदुरशीतवानीरवंजुला ।
 द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥
 सौभाग्यने शिश्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचका ।
 रक्तोऽमौ मधुशिश्रु स्यादरिष्टं फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥

वरुण, वरण, सेतु, तित्तशाख, कुमारक ये पांच (पु०) नाम वरनाके हैं । पुंनाग, पुरुष, तुंग, केसर, देववल्लभ ये पांच (पु०) नाम केसरके हैं ॥ २५ ॥ पारिभद्र, निम्बरु, मन्दार, पारिजातक ये चार (पु०) नाम नीबू-विशेष वृक्षके हैं । तिनिश, स्यन्दन, नेमि, रथद्वर, अतिमुक्तक ॥ २६ ॥ वंजुल, चित्रकृत (तान्त) ये सात (पु०) नाम तिलस (तेलुए) के हैं । पीतन, कपीतन, आम्रातक ये तीन (पु०) नाम आमलेके हैं । मधूक, गुडपुष्प, मधुद्रुम ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ, मधुष्ठील ये पांच (पु०) नाम महुवेके हैं । मधूलक यह एक (पु०) नाम जलमहुवेका है । पीलु, गुडफल, स्रसिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम पीलुवृक्षके हैं ॥ २८ ॥ अक्षोट, कन्दराल ये दो (पु०) नाम पर्णतपीलु अर्थात् अखरोटके हैं । अकोट, निकोचक ये दो (पु०), नाम पित्तके हैं । पलाश, किंशुक, पर्ण, वातपोय ये चार (पु०) नाम टाकके हैं । वेतस ॥ २९ ॥ रथ, अम्रपुष्प, विदुर, शीत, वानीर, वंजुल ये सात (पु०) नाम वेतके हैं । परिव्याध, विदुल, नादेयी, अंबुवेतस ये चार (पु०) नाम जलवेतके हैं ॥ ३० ॥ सौभाग्यन, शिश्रु, तीक्ष्णगन्धक,

विल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूश्रीफलावपि ।

प्लक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपादः ॥ ३२ ॥

गालवः शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ ।

आम्रश्रूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥

कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलः पुरः ।

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बाहुवारकः ॥ ३४ ॥

राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्रुधनुःपटः ।

गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥

श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ।

कर्कधूर्वदरी कोलिः कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥

सौवीरं बदरं घोण्टाप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।

विकंकतः सुबावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

अक्षीव, मोचक ये पांच (पु०) नाम सहजनेके हैं । मधुशिष्ट यह एक (पु०) नाम लाल फूलवाले सहजनेका है । अरिष्ट, फेनिल ये दो (पु०) नाम रोठेके हैं ॥ ३१ ॥ विल्व, शाण्डिल्य, शैलूष, मालू, श्रीफल ये पांच (पु०) नाम वेलवृक्षके हैं । प्लक्ष, जटिन्, पर्कटिन् ये तीन (पु०) नाम पिलखनके हैं । न्यग्रोध, बहुपाद् (दान्त), वट ये तीन (पु०) नाम वडवृक्षके हैं ॥ ३२ ॥ गालव, शावर, लोध्र, तिरीट, तिल्व, मार्जन ये छः (पु०) नाम लोधेके हैं । आम्र, चूत, रसाल, ये तीन (पु०) नाम आंवके हैं । सहकार यह एक (पु०) नाम अत्यन्त सुगन्धवाले आंवका है ॥ ३३ ॥ कुम्भ, उलूखल, कौशिक, गुग्गुलु, पुर ये पांच नाम गुग्गुलुके हैं । तहां कुम्भ-उलूखलक (न०) शेष (पु०) हैं । शेलु, श्लेष्मातक, शीत, उद्दाल, बहुवारक ये पांच (पु०) नाम लहसोठेके हैं ॥ ३४ ॥ राजादन, प्रियाल, सन्नकद्रु, धनुःपट ये चार (पु०) नाम चिरोंजीके हैं । राजादन क्लीवभी है । गंभारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य ये सात नाम कंभारीके हैं । काश्मर्य (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । कर्कधूर्व, बदरी, कोलि ये तीन (पु० स्त्री०) नाम वडबेरीके हैं । कोल, कुवल, फेनिल ॥ ३६ ॥ सौवीर, बदर, घोंटा ये छः नाम बेरके हैं । घोंटा (स्त्री०) शेष (न०) हैं । स्वादुकण्टक, विकंकत, सुबावृक्ष, ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद् (दान्त)

ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।
 तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥
 काकैन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ।
 गोलीढो क्षाटलो घटापाटलिर्मोक्षमुष्करौ ॥ ३९ ॥
 तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचुलश्चावुकौ ।
 श्रीपार्णिका कुमुदिका कुम्भी कैटयकट्फलौ ॥ ४० ॥
 क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।
 तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥
 तूल च नीपम्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः ।
 वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिपु ॥ ४२ ॥
 गर्दभाण्डे कदरालकपीतनसुपार्श्वकाः ।
 पुष्पश्च तिलिन्दी चिंचाम्लिकाथो पीतसारके ॥ ४३ ॥

ये पांच (पु०) नाम बेहली (शमी) वृक्षके हैं ॥ ३७ ॥ ऐरावत, नागरग,
 नादेयी, भूमिजम्बुका ये चार नाम नारंगीके हैं । प्रयम दो नाम (पु०)
 शेष (स्त्री०) हैं । तिन्दुक, स्फूर्जक, कालस्कन्ध, शितिसारक ये चार नाम
 टैमुरनी (छोटे तैदुए) के हैं ॥ ३८ ॥ काकैन्दु, कुलक, काकतिन्दुक, का
 कपीलुक ये चार (पु०) नाम काकतैदू अर्थात् कुचलेके हैं । गोलीढ,
 क्षाटल, घटापाटलि, मोक्ष, मुष्कर ये पांच (पु०) नाम घटापाटलि (का-
 ली पांढरी) के हैं । घटापाटलि (स्त्री०) भी है ॥ ३९ ॥ तिलक, क्षुरक,
 श्रीमत् (मत्तन्त) ये तीन (पु०) नाम फिरास (तालमग्याने) के हैं ।
 पिचुल, झावुक ये दो (पु०) नाम झाऊके हैं । श्रीपार्णिका, कुमुदिका,
 कुम्भी, कैटय, कट्फल ये पांच नाम कायफलके हैं । श्रीपार्णिका, कुमुदिका,
 कुम्भी (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ ४० ॥ क्रमुक, पट्टिकाख्य, पट्टिक
 (इन्नन्त), लाक्षाप्रसादन ये चार (पु०) नाम लाल रोगके हैं । तूद,
 यूप, क्रमुक, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, तूल ये छ नाम पारस पीपलके हैं । ब्रह्म-
 दारु और तूल (न०) शेष (पु०) हैं ॥ ४१ ॥ नीप, म्रियक, कदम्ब,
 हरिप्रिय ये चार (पु०) नाम कदम्बके हैं । वीरवृक्ष (पु०), अरुष्कर
 (पु०), अग्निमुखी (स्त्री०), भल्लातकी ये चार नाम भिल्लावेके हैं । तहाँ
 भल्लातक शब्द त्रिलिङ्गी है ॥ ४२ ॥ गर्दभाण्ड, कन्दराल, कपीतन, सुपार्श्वक,

सर्जकासनबन्धूकपुष्पाप्रियकजीवकाः ।

साले तु सर्जकाश्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुर्निद्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ द्वयोः ॥ ४५ ॥

इंगुदी तापसतरुर्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ।

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

पिच्छा तु शाल्मली वेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः ।

चिरिविल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥

प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ।

करंजभेदाः षडग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।

गायत्री वालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥

पृक्ष ये पांच (पु०) नाम लाखी पीपलके हैं । तितिडी, चिंचा, अम्लिका ये तीन (स्त्री०) नाम इमलीके हैं । पीतसारक ॥ ४३ ॥ सर्जक, असन, बंधूकपुष्प, प्रियक, जीवक ये छः (पु०) नाम आसनाके हैं । साल, सर्ज, काश्य, अश्वकर्णक, सस्यसंवर ये पांच (पु०) नाम सालवृक्षके हैं ॥ ४४ ॥ नदीसर्ज, वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, अर्जुन ये पांच (पु०) नाम कोह (अर्जुन) वृक्षके हैं । राजादन (पु० न०), फलाध्यक्ष (पु०), क्षीरिका (स्त्री०) ये तीन नाम खिरनीके हैं ॥ ४५ ॥ इंगुदी (स्त्री० पु०) है । (पु०) में इंगुद होता है । तापसतरु (पु०) ये दो नाम हिगनवेट (गोंदी) के हैं । भूर्जे, चर्मिन् (इन्नन्तः), मृदुत्वच् (चान्तः) ये तीन (पु०) नाम भोजपत्रके हैं । पिच्छिला (स्त्री०), पूरणी (स्त्री०), मोचा (स्त्री०), स्थिरायु (पु०), शाल्मलि (पु० न०) ये पांच नाम शंभलके हैं ॥ ४६ ॥ पिच्छा यह एक (स्त्री०) नाम शंभलके गोंदका है । रोचन (पु०), कूटशाल्मलि (पु० स्त्री०) ये दो नाम काली शंभलके हैं । चिरिविल्व, नक्तमाल, करज, करंजक ये चार (पु०) नाम करंजुवाके हैं ॥ ४७ ॥ प्रकीर्य, पूतिकरज, पूतिक, कलिमारक ये चार (पु०) नाम कांटेदार करंजुवाके हैं । षडग्रन्थ (पु०), मर्कटी (स्त्री०), अंगारवल्लरी (स्त्री०) ये तीन करंजुवाके भेद हैं ॥ ४८ ॥ रोहिन् (इन्नन्तः), रोहितक, प्लीहशत्रु,

अरिमेदो विदस्वदिरे कदर* खदिरे सिते ।
 सोमवल्लोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगधर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥
 एरण्ड उरुवृक्षश्च रुचकश्चित्रकश्च स* ।
 चक्षु पञ्चागुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बका* ॥ ५१ ॥
 अल्पा शमी शमीर* स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ।
 पिण्डीतको मरुवक* श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥
 शल्यश्च मदनं शक्रपाटप* पारिभद्रकः ।
 भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥
 पूतिकाष्ठ च सप्त स्युर्देवदारुण्यथ द्वयोः ।
 पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली* फलेरुहा ॥ ५४ ॥
 कृष्णवृन्ता कुवेराक्षी श्यामा तु महिलाह्वया ।
 लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियंगु* फलिनी फली ॥ ५५ ॥
 विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।
 मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकदुङ्गदुण्डुका* ॥ ५६ ॥

दाडिमपुष्पक ये चार (पु०) नाम लाल रोहिडा (करज) के हैं । गायत्री, बालतनय, खदिर, दत्तधावन ये चार नाम खैरके हैं । गायत्री (स्त्री०) शोष (पु०) हैं ॥ ४९ ॥ अरिमेद, विदस्वदिरे ये दो (पु०) नाम दुर्गंधवाले खैरके हैं । कदर, सोमवल्लक ये दो (पु०) नाम सुपेद खैरके हैं । व्याघ्रपुच्छक, गधर्वहस्तक ॥ ५० ॥ एरण्ड, उरुवृक्ष, रुचक, चित्रक, चक्षु, पञ्चागुल, मण्ड, वर्धमान, व्यडम्बक ये ग्यारह (पु०) नाम अरुचके हैं ॥ ५१ ॥ शमीर यह एक (पु०) नाम स्वल्प आकारवाली शमीका है । शमी, शक्तुफला, शिवा ये तीन (स्त्री०) नाम शमीके हैं । पिण्डीतक, मरुवक, श्वसन, करहाटक ॥ ५२ ॥ शल्य, मदन ये छ (पु०) नाम मेनफलके हैं । शक्रपाटप (पु०), पारिभद्रक (पु०) भद्रदारु (पु० न०), द्रुकिलिम (न०), पीतदारु (न०), दारु (न०) ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठ (न०) ये सात नाम देवदारुके हैं । पाटलि, पाटला, मोघा, काचस्थाली, फलेरुहा ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता, कुवेराक्षी ये सात (स्त्री०) नाम पाटलके हैं । तहाँ पाटलिशब्द (पु०) भी है । श्यामा, महिला, लता, गोवन्दिनी, गुन्द्रा, प्रियंगु, फलिनी, फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना, गंध

स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।

शोणकश्चारलौ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥

अमृता च वयस्था च त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ।

नाक्षस्तूपः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता ।

हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः ।

कर्णिकारः परिव्याधो लकुचो लिङ्गुचो डहुः ॥ ६० ॥

पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।

काकोदुम्बारिका फल्गुर्मलयूर्जवनेफला ॥ ६१ ॥

अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ।

पिचुमन्दश्च लिम्बेऽथ पिच्छिलाऽगुरुर्जिज्ञापा ॥ ६२ ॥

फली, कारंभा, प्रियक ये बारह नाम मेहदीके हैं । तहां प्रियकशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । मंडूकपर्ण, पत्रोर्ण, नट, कटंग, टुंडुक ॥ ५६ ॥ स्योनाक, शुक्नास, ऋक्ष, दीर्घवृत्, कुटन्नट, शोणक, अरल ये बारह (पु०) नाम शोनापाठके हैं । तिष्यफला (स्त्री०), आमलकी ॥ ५७ ॥ अमृता (स्त्री०) वयस्था (स्त्री०) ये चार नाम आवलेके हैं । तहां आमलकी शब्द त्रिलिङ्गी है । विभीतक, अक्ष, तुप, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम ये छः नाम बहेडके हैं । तहां विभीतकशब्द त्रिलिङ्गी है, अक्षशब्द आदि (पु०) हैं ॥ ५८ ॥ अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हरीतकी, हैमवती, चेतकी, श्रेयसी, शिवा ये ग्यारह (स्त्री०) नाम हरडके हैं ॥ ५९ ॥ पीतद्रु (पु०), सरल (पु०), पूतिकाष्ठ (न०) ये तीन नाम देवदारविशेषके हैं । द्रुमोत्पल, कर्णिकार, परिव्याध ये तीन (पु०) नाम कर्णिकार वृक्षके हैं । लकुच, लिङ्गुच, डहु ये तीन (पु०) नाम औद (बडहल) वृक्षके हैं ॥ ६० ॥ पनस, कण्टकिफल ये दो (पु०) नाम पनसके हैं । निचुल, हिज्जल, अंबुज ये तीन (पु०) नाम जलवेतके भेद हैं । काकोदुम्बारिका, फल्गु, मलयूर्ज, जघनेफला ये चार (स्त्री०) नाम काली गलरके हैं ॥ ६१ ॥ अरिष्ट, सर्वतोभद्र, हिङ्गुनिर्यास, मालक,

कापिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः ।
 भण्डिलोऽप्यथ चाम्पेयश्चपको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥
 एतस्य कालिका गन्धफली स्यादथ केसरो ।
 वक्रुलो वज्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥
 चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।
 जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥
 श्रीपर्णमाग्निमन्य स्यात्काणिका गणिकारिका ।
 जयोऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥
 एतस्यैव कलिंगेन्द्रयवमद्रयव फले ।
 कृष्णपाकफलाविग्रसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥
 कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुके ।
 सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीद्राणिकेऽपि ॥ ६८ ॥

पिचुमन्द, निव ये छ पुँल्लिग नाम नीबूके हे । पिच्छिला, अगुरुशिशापा ॥ ६२ ॥ कापिला, भस्मगर्भा ये चार (स्त्री०) नाम शीशमके हैं । शिरीष, कपीतन, भण्डिल ये तीन (पु०) नाम शिरसके हैं । चाम्पेय, चपक, हेमपुष्पक ये तीन (पु०) नाम सुनहरी चमेलीके ह ॥ ६३ ॥ गन्धफली यह एक (स्त्री०) नाम पूर्वोक्त चमेलीकी करीका है । केसर, वक्रुल ये दो (पु०) नाम आबलवृक्ष अर्थात् वरुलके हैं । वज्जुल, अशोक ये दो (पु०) नाम अशोकवृक्षके हैं । करक, दाडिम ये दो (पु०) नाम अनारके हैं ॥ ६४ ॥ चाम्पेय, केसर, नागकेसर, काञ्चनाह्वय ये चार (पु०) नाम नागकेसरके हैं । जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका ये पाँच (स्त्री०) नाम अरनीके हैं ॥ ६५ ॥ श्रीपर्ण (न०), आग्निमन्य (पु०) काणिका (स्त्री०), गणिकारिका (स्त्री०), जय (पु०) ये पाँच नाम नखेलके हैं । कुटज, शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका ये चार नाम कुरैआके हैं । गिरिमल्लिका (स्त्री०) शेष (पु०) है ॥ ६६ ॥ कलिंग, इन्द्रयव, मद्रयव ये तीन (त्रि०) नाम इन्द्रजयके हैं । कृष्णपाकफल, आविग्र, सुषेण, करमर्दक ये चार (पु०) नाम करदेरे हैं ॥ ६७ ॥ कालस्कन्ध, तमाल, तापिच्छ ये तीन (पु०) नाम तमालके हैं । सिन्दुक (पु०) सिन्दुवार (पु०), इन्द्रसुर (पु०), निर्गुण्डी (स्त्री०), इन्द्राणिना

वेणी गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।
 श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥
 भृपदी शीतभीरुश्च सैवास्फोटा वनोद्भवा ।
 शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥
 सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी ।
 गणिका यूथिकाऽम्बुष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
 अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।
 सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥
 माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।
 सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥
 तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ।
 नीली झिण्टी द्वयोर्वाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

(स्त्री०) ये पांच नाम संभालूके हैं ॥ ६८ ॥ वेणी, गरा, गरी, देवताड,
 जीमूत ये पांच नाम देवदालीके हैं । देवताड और जीमूत (पु०) शेष
 (स्त्री०) हैं । श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी ये दो (स्त्री०) नाम अरबीशाकके हैं ।
 तृणशून्य (न०), मल्लिका (स्त्री०) ॥ ६९ ॥ भृपदी (स्त्री०) शीतभीरु
 (पु०) ये चार नाम मोगरेके हैं । आस्फोटा यह एक (स्त्री०) नाम वन-
 मोगरेका है । शेफालिका, सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका ये चार (स्त्री०) नाम
 रानासंभालूके हैं ॥ ७० ॥ श्वेतसुरसा, भूतवेशी ये दो (स्त्री०) नाम सपेद
 संभालूके हैं । मागधी, गणिका, यूथिका, अम्बुष्ठा ये चार (स्त्री०) नाम
 जुईके हैं । हेमपुष्पिका यह एक (स्त्री०) नाम पीली जुईका है ॥ ७१ ॥
 अतिमुक्त (पु०), पुण्ड्रक (पु०), वासन्ती (स्त्री०) माधवीलता (स्त्री०) ये
 चार नाम कुन्दके भेदके हैं । सुमना, मालती, जाति ये तीन (स्त्री०) नाम
 चमेलीके हैं । सप्तला, नवमालिका ये दो (स्त्री०) नाम वेलमोगराके हैं
 ॥ ७२ ॥ माध्य, कुन्द ये दो (पु० न०) नाम कुन्दके हैं । रक्तक, बन्धूक,
 बन्धुजीवक ये तीन (पु०) नाम दुपहरियाके हैं । सहा, कुमारी, तरणि
 ये तीन (स्त्री०) नाम सेवतीगुलाबके हैं । अम्लान (पु०), महासहा
 (स्त्री०) ये दो नाम आबोली (कांटेदार सेवती) के हैं ॥ ७३ ॥ कुरवक
 यह एक (पु०) नाम लाल कुरंटेका है । कुरण्टक यह एक (पु०) नाम पीले

सैरेयकस्तु क्षिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ।
 पीता कुरण्टको क्षिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥
 ओण्डपुष्पं जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।
 प्रतिहासशतप्रासचण्डातद्वयमारकाः ॥ ७६ ॥
 करवीरे करी रे तु क्रूरप्रान्थिलानुमौ ।
 उन्मत्तं कितवो धूर्तो धनूः कनकाद्वय ॥ ७७ ॥
 मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रक ।
 फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलङ्गके ॥ ७८ ॥
 समीरणी मरुवक प्रस्थपुष्प फणिज्जक ।
 जम्बीगेऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुटेरकौ ॥ ७९ ॥
 नितेऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको वदिसत्तकः ।
 अर्जाद्वयसुखाऽऽस्फोटगणरूपविकीर्णः ॥ ८० ॥

उग्रा अर्थात् पीले पियावासेना है । बाणा (स्त्री० पु०), दासी (स्त्री०),
 आर्त्तगल (पु०) ये तीन नाम नीली क्षिण्टीके हैं ॥ ७५ ॥ सैरेयक (पु०),
 क्षिण्टी (स्त्री०) ये दो नाम कुरटके हैं । कुरवक यह एक (पु०) नाम
 रक्तवर्ण कुरटका है । कुरटक यह एक (पु०) नाम पीले कुरटका है ।
 सहचरी यह भी कुरटका नाम है तहाँ सहचरशब्द (पु० स्त्री०) है ॥ ७६ ॥
 ओण्डपुष्प, जपापुष्प ये दो (न०) नाम जास्यद (गुडहल) के हैं । वज्र
 पुष्प यह एक (न०) नाम निगंके फल है । प्रतिहास, शतप्रास, चण्डात,
 हयमारक ॥ ७६ ॥ करवार ये पाँच (पु०) नाम कनेरके हैं । करीर,
 क्रूर, प्रान्थिल ये तीन (पु०) नाम करीलके हैं । उन्मत्त, कितव, धूर्त,
 धनूः, कनकाद्वय ॥ ७७ ॥ मातुल, मदन ये सात (पु०) नाम धनूके
 हैं । मातुलपुत्रक यह एक (पु०) नाम धनूके फल है । फलपूर,
 बीजपूर, रुचक, मातुलगक ये चार (पु०) नाम विजोरेके हैं ॥ ७८ ॥
 समीरण, मरुवक, प्रस्थपुष्प, फणिज्जक, जबीर ये पाँच नाम सुपेद मरुवाके
 हैं । पर्णास, कठिञ्जर, कुटेर ये तीन (पु०) नाम पर्णासे के भेदके हैं
 ॥ ७९ ॥ अर्जक यह एक (पु०) नाम सुफेद पर्णामक है । पाठिक
 (इन्द्र), चित्रक, वदिसत्तक ये तीन (पु०) नाम चित्रके हैं । अर्जाद्वय,

मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ।
 शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥
 वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।
 वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥
 जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।
 मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी सुवा ॥ ८३ ॥
 मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।
 पाठाऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥
 एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।
 कटुः कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥
 मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ।
 आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥
 ऋष्यप्रोक्ता शूकशिखिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।
 चित्रोपाचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥

वसुक, आस्फोट, गणरूप, विकीरण ॥ ८० ॥ मन्दार, अर्कपर्ण ये सात
 (पु०) नाम आकके हैं । अलर्क, प्रतापस ये दो (पु०) नाम सुपेद आ-
 कके हैं । शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु ये पांच नाम आकके
 भेदके हैं । शिवमल्ली (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ ८१ ॥ आगेके मूषक-
 पर्णीतक सब शब्द (स्त्री०) हैं । वन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा जीवन्तिका
 ये चार नाम अमरवेलके हैं । वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची, तन्त्रिका, अमृता
 ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी ये नव नाम गिलोयके
 हैं । मूर्वा, देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, सुवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका, मधु-
 श्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी ये दश नाम मरोरफलके हैं । पाठा, अम्बष्ठा,
 विद्धकर्णी, स्थापनी, श्रेयसी, रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला, पापचेली, प्रा-
 चीना, वनतिक्तिका ये दश नाम पाठाके हैं । कटु, कटम्भरा, अशोकरो-
 हिणी, कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी, चक्राङ्गी, शकुलादनी
 ये आठ नाम कुटकीके हैं । आत्मगुप्ता, अजहा, अव्यण्डा, कण्डुरा, प्रावृ-
 षायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिखि, कपिकच्छु, मर्कटी ये नव नाम

प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥
 प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।
 हज्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
 अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्षवर्धकाः ।
 मज्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समग्ना कालमेपिका ॥ ९० ॥
 मण्डूक्पर्णी मण्डीरी मण्डी योजनवल्ल्यपि ।
 यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥
 रोदनी कच्छुगाऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।
 पृथ्विपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यग्निबल्लिका ॥ ९२ ॥
 क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।
 निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥
 प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।
 नीली काला स्त्रीतत्रिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥

कौचके हे । चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवती, शम्बरी, वृषा ॥ ८७ ॥
 प्रत्यक्श्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा, मूषिकपर्णी ये दश नाम मूषापर्णीके हे ।
 यहाँतक (स्त्री०) हे । अपामार्ग (पु०), शैखरिक (पु०), धामार्गव
 (पु०), मयूरक (पु०) ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी (स्त्री०), केशपर्णी
 (स्त्री०), किणिही (स्त्री०), खरमञ्जरी (स्त्री०) ये आठ नाम
 ओंकाके हे । हज्जिका, ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
 अङ्गारवल्ली, बालेयशाक, बर, वर्धक ये नव नाम भार्गीके हे । बालेय
 शाक आदि तीन (पु०) हे शेष (स्त्री०) हे । मज्जिष्ठा, विकसा, जिङ्गी,
 समग्ना, कालमेपिका ॥ ९० ॥ मण्डूक्पर्णी, मण्डीरी, मण्डी योजनवल्ली ये
 नव (स्त्री०) नाम मज्जीठके हे । यास, यवास, दुःस्पर्श, धन्वयास, कुना
 शक ये (पु०) हे ॥ ९१ ॥ रोदनी, कच्छुगा, अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरा
 लभा ये पाँच (स्त्री०) ये दश नाम धमासेके हे । पृथ्विपर्णी, पृथक्पर्णी
 चित्रपर्णी, अग्निबल्लिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी,
 गुहा ये नव (स्त्री०) नाम पिठानके हे । निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री,
 बृहती, कण्टकारिका ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका

रजनी श्रीफली तुत्या द्रोणी दोला च नीलिनी ।
 अवलगुजः सोमराजी सुबलिः सोमबलिका ॥ ९५ ॥
 कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफलपि ।
 कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥
 उपणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽथ करिपिप्पली ।
 कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥
 चव्यं तु चविका काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला ।
 पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥
 गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।
 विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥
 शृङ्गी महौषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे ।
 शतमूली बहुसुताऽभीरुर्इन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥

ये दश (स्त्री०) नाम कटेलीके हैं । नीली, काला, छीतकिका, ग्रामीणा,
 मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रजनी, श्रीफली, तुत्या, द्रोणी, दोला, नीलिनी
 ये ग्यारह (स्त्री०) नाम नीलके हैं । अवलगुज (पु०), सोमराजी,
 सुबलि, सोमबलिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी, कृष्णफला, बाकुची, पूतिफली
 ये (स्त्री०) कुल आठ नाम बावचीके हैं । कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी,
 चपला, कणा ॥ ९६ ॥ उपणा, पिप्पली, शौण्डी, कोला ये दश (स्त्री०)
 नाम पीपलके हैं । करिपिप्पली, कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर ये
 पाँच नाम गजपीपलके हैं । तहां वशिरशब्द (पु०) है शेष (स्त्री०) हैं
 ॥ ९७ ॥ चव्य (न०), चविका (स्त्री०) ये दो नाम चव्य (पीपलकी
 लकड़ी) के हैं । काकचिञ्ची, गुञ्जा, कृष्णला ये तीन (स्त्री०) नाम चिर-
 मिटीके हैं । पलंकषा (स्त्री०), इक्षुगन्धा (स्त्री०) श्वदंष्ट्रा (स्त्री०),
 स्वादुकण्टक (पु०) ॥ ९८ ॥ गोकण्टक (पु०), गोक्षुरक (पु०),
 वनशृङ्गाट (पु०) ये सात नाम गोखरूके हैं । विश्वा, विषा, प्रतिविषा,
 अतिविषा, उपविषा, अरुणा ॥ ९९ ॥ शृङ्गी, महौषध ये आठ नाम अती-
 सके हैं । महौषध (न०) शेष (स्त्री०) हैं । क्षीरावी, दुग्धिका ये दो
 (स्त्री०) नाम दूधीके हैं । शतमूली, बहुसुता, अभीरु, इन्दीवरी, वरी

ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी ।

अहेरुय पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥

दार्वी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ।

वचोग्रगन्धा पङ्गग्रन्था गोलोमी शतपर्षिका ॥ १०२ ॥

शुक्लः हैमवनी वैद्यमातृसिंहयो तु वाशिका ।

वृषोऽरूपः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुकान्ताऽपराजिता ।

इक्षुगन्धा तु काण्डेशुकोकिलाक्षेशुरशुरा ॥ १०४ ॥

शालेय स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसि ।

मिश्रेयाप्यथ सीहुण्डो वज्र स्नुक् स्त्री स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥

समन्तदुग्धाऽथो वेल्लममोत्रा चित्रतण्डुला ।

तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्ग पुनपुसकम् ॥ १०६ ॥

॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायणी, शतावरी, अहेरु ये दस (स्त्री०) नाम शतावरीके हैं। पीतद्रु, कारीयक, हरिद्रु ये तीन नाम (पु०) हैं ॥ १०१ ॥ दार्वी, पचंपचा, दारुहरिद्रा, पर्जनी ये चार (स्त्री०) कुल सात नाम दारुहरिद्राके हैं। वचा, उग्रगन्धा, पङ्गग्रन्था, गोलोमी, शतपर्षिका ये पांच (स्त्री०) नाम वचके हैं ॥ १०२ ॥ हैमवती यह एक (स्त्री०) नाम सुपेद वचका है। वैद्यमातृ, सिंही, वाशिका ये तीन नाम (स्त्री०) हैं। वृष, अरूप, सिंहास्य, वासक, वाजिदन्तक ये पांच (पु०) हैं ये आठ नाम वासके हैं ॥ १०३ ॥ आस्फोटा, गिरिकर्णी, विष्णुकान्ता, अपराजिता ये चार (स्त्री०) नाम विष्णुकान्ताके हैं। इक्षुगन्धा, काण्डेशु, कोकिलाक्ष, इक्षुर, शुर ये पांच नाम तालमखानेके हैं। तहां इक्षुगन्धा (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ १०४ ॥ शालेय (पु०), शीतशिव (पु०), छत्रा (स्त्री०), मधुरिका (स्त्री०) मिसि (स्त्री०), मिश्रेया (स्त्री०) ये छ नाम साफके हैं। सीहुण्ड (पु०), वज्र (पु०) स्नुक् (हकारान्त स्त्री०), स्नुही (स्त्री०), गुडा (स्त्री०), समन्तदुग्धा (स्त्री०) ये छ नाम धूहरके हैं ॥ १०५ ॥ वेल्ल (पु० न०), अमोत्रा (स्त्री०), चित्रतण्डुला (स्त्री०), तण्डुल (पु०), कृमिघ्न (पु०), विडङ्ग (पु० न०) ये छ नाम वायविडङ्गके हैं ॥ १०६ ॥

बला वाट्यालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७ ॥

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।

त्रिभण्डी रोचनी श्यामापालिन्द्यो तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥

काला मसूरविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेपिका ।

मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुक्लेशुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ।

वन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतक्षगन्धिका ॥ ११० ॥

लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥

गोपी श्यामा सारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।

योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याद्वया इमे ॥ ११२ ॥

बला, वाट्यालका ये दो (स्त्री०) नाम खरैहृदके हैं । घंटाखा, शणपुष्पिका ये दो (स्त्री०) नाम शणपुष्पीके हैं । मृद्वीका, गोस्तनी, द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा ये पांच (स्त्री०) नाम मुनक्का दाखके हैं ॥ १०७ ॥ सर्वानुभूति, सरला, त्रिपुटा, त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभण्डी, रोचनी ये सात (स्त्री०) नाम निसोतके हैं । श्यामा, पालिन्दी, सुषेणिका ॥ १०८ ॥ काला, मसूरविदला, अर्धचन्द्रा, कालमेपिका ये सात (स्त्री०) नाम काली निसोतके हैं । मधुक (न०), क्लीतक (न०), यष्टिमधुक (न०), मधुयष्टिका (स्त्री०) ये चार नाम मुलहठीके हैं ॥ १०९ ॥ विदारी, क्षीरशुक्ला, इक्षुगन्धा, क्रोष्ट्री ये चार (स्त्री०) नाम सुषेद भूमिकोहलेके हैं । क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका ये तीन (स्त्री०) नाम काले भूमिकोहलेके हैं ॥ ११० ॥ लांगली, शारदी, तोयपिप्पली, शकुलादनी ये चार (स्त्री०) नाम जलपीपलके हैं । खराश्वा (स्त्री०), कारवी (स्त्री०), दीप्य (पु०), मयूर (पु०), लोचमस्तक (पु०) ये पांच नाम मोरशिखा (अजमोदी) के हैं ॥ १११ ॥ गोपी, श्यामा, सारिवा, अनन्ता, उत्पलशारिवा ये पांच (स्त्री०) नाम सरयाईके हैं । योग्य, ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी ये चार नाम ऋद्धि औपधीके हैं । योग्य (न०) शेष (स्त्री०) हैं । और

कदली वारणवुसा रम्मा मोचाशुमत्फला ।
 काष्ठीला मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥
 वार्ताकी हिंगुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रवर्षिणी ।
 नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥
 नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ।
 विदारिगन्धाऽशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥
 तुडिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च ।
 भारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु ऋषभो वृष ॥ ११६ ॥
 गाङ्गेरुकी नागबला झपा ह्रस्वगवेधुका ।
 धामार्गवो घोषक स्यान्महाजाली स पीतक ॥ ११७ ॥
 ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ।
 स्याल्लाङ्गलिक्याग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥

येही नाम वृद्धि औषधीकेभी है ॥ ११२ ॥ कदली, वारणवुसा, रम्मा, मोचा, अशुमत्फला, काष्ठीला ये छ (छी०) नाम केलाके हैं । मुद्गपर्णी, काक मुद्गा, सहा ये तीन (स्त्री०) नाम रानी भूगके हैं ॥ ११३ ॥ वार्ताकी, हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रवर्षिणी ये पांच (स्त्री०) नाम बड़ी कटेलीके हैं । नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा, गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा, भुजगाक्षी, छत्राकी, सुवहा ये नव (स्त्री०) नाम रास्नाके हैं । विदारि गन्धा, अशुमती, सालपर्णी, स्थिरा, ध्रुवा ये पांच (स्त्री०) नाम सालवनके हैं ॥ ११५ ॥ तुडिकेरी, समुद्रान्ता, कार्पासी, बदरा ये चार (स्त्री०) नाम कपासके हैं । कार्पास (पु०) है । भारद्वाजी यह एक (स्त्री०) नाम रानी वनकपासका है । शृङ्गिन्, ऋषभ, वृष ये तीन (पु०) नाम ऋषभरु औषधी (काकडासिगी) के हैं ॥ ११६ ॥ गाङ्गेरुकी, नागबला, झपा, ह्रस्वगवेधुका ये चार (स्त्री०) नाम बड़ी खरहदीके हैं । धामार्गव, घोषक ये दो (पु०) नाम कडवी तोरईके हैं । महाजाली यह एक (स्त्री०) नाम पीले पर्णकी तोरईका है ॥ ११७ ॥ ज्योत्स्नी, पटोलिका, जाली ये तीन (स्त्री०) नाम परलके हैं । नादेयी, भूमिजम्बुका ये दो (स्त्री०) नाम भूमिजामनके हैं । लांगलिकी, अग्निशिखा ये दो (स्त्री०) नाम कलहारीके हैं । काकाङ्गी, काकनासिका ये दो (स्त्री०) नाम मकोहविशेषके हैं ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमूलिका ।
 अजशृङ्गी विषाणी स्याद्रोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥
 ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यप्यथ द्विजा ।
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥
 एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
 बालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरु ॥ १२१ ॥
 बालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।
 कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥
 शैलेयं तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।
 गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥
 महेरुणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ।
 अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥
 पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्वहुलाऽथ सा ।
 सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्या कोरङ्गी त्रिपुटा नृदिः ॥ १२५ ॥

गोधापदी, सुवहा ये दो (स्त्री०) नाम लाल लज्जावन्तीके हैं । मुसली, तालमूलिका ये दो (स्त्री०) नाम मुसलीके हैं । अजशृङ्गी, विषाणी ये दो (स्त्री०) नाम मेढासोंगीके हैं । गोजिह्वा, दार्विका ये दो (स्त्री०) नाम गाभेशिकके हैं ॥ ११९ ॥ ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली ये तीन (स्त्री०) नाम नागरपानकी वेलिके हैं । द्विजा, हरेणु, रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्म-गन्धिनी ये छः (स्त्री०) नाम रेणुकबीजके हैं ॥ १२० ॥ एलावालुक, ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, बालुक ये पांच (न०) नाम अतरके हैं । पालकी (स्त्री०), मुकुन्द (पु०), कुन्द (पु०), कुन्दुरु (पु० स्त्री०) ये चार नाम पालकशाकके हैं ॥ १२१ ॥ बाल, ह्रीवेर, बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशाम्बु-नाम ये पांच (न०) नाम नेत्रवालाके हैं । कालानुसार्य, वृद्ध, अश्मपुष्प, शीतशिव ॥ १२२ ॥ शैलेय ये पांच (न०) नाम शिलाजीतके हैं । तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी ये पांच (स्त्री०) नाम तालीसपत्रके हैं । गजभक्ष्या, सुवहा, सुरभी, रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा, कुन्दुरुकी, सल्लकी, ह्लादिनी ये आठ (स्त्री०) नाम सालयीके हैं । अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी, धातुपुष्पिका ये चार (स्त्री०) नाम धायके हैं ॥ १२४ ॥ पृथ्वीका,

व्याधिः कुष्ठ पारिभाव्य वाप्य पाकलमुत्पलम् ।
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्कोशिन्यय वितुन्नकं ॥ १२६ ॥
 झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।
 प्रपौण्डरीक पौण्डर्यमथ तुन्न कुवेरक ॥ १२७ ॥
 कुणिं कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ राक्षसी ।
 चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥
 व्याडायुध व्याघ्रनख करज चक्रकारकम् ।
 सुषिगं विद्रुमलता कपोताघ्रिर्वटी नली ॥ १२९ ॥
 धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्दृष्टविलासिनी ।
 शुक्तिं शङ्खं खुरं कोलदलं नखमथादकी ॥ १३० ॥
 काक्षी मृत्सना तुवरिका मृत्तालङ्गुणाष्टमे ।
 कुटन्नटं दाशपुत्रं वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥

चन्द्रवाला, एला, निष्कटी, बहुला ये पांच (स्त्री०) नाम इलायचीके हैं । उपरुचिका, तुत्था, कोरगी, त्रिपुटा, झुटि ये पांच (स्त्री०) नाम छोटी इलायचीके हैं ॥ १२६ ॥ व्याधि, कुष्ठ, पारिभाव्य, वाप्य, पाकल, उत्पल ये छ नाम वूटके हैं । व्याधिशब्द (पु०) शेष (न०) हैं । शङ्खिनी, चोरपुष्पी, केशिनी ये तीन नाम चोरखेलके हैं । वितुन्नक ॥ १२६ ॥ झटामला, अज्झटा, ताली, शिवा, तामलकी ये छ नाम भूमिखिलके हैं । वितुन्नकशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) है । प्रपौण्डरीक, पौण्डर्य ये दो (न०) नाम स्यालङ्गमलके हैं । तुन्न, कुवेरक ॥ १२७ ॥ कुणि, कच्छ, कान्तलक, नन्दिवृक्ष ये छ (पु०) नाम नादिवृक्षके हैं । राक्षसी (स्त्री०), चण्डा (स्त्री०), धनहरी (स्त्री०) क्षेम (पु०), दुष्पत्र (पु०), गणहासक (पु०), ये छ नाम किरमाणी अजमायनके हैं ॥ १२८ ॥ व्याडायुध, व्याघ्रनख, करज, चक्रकारक ये चार (न०) नाम व्याघ्रनखके हैं । सुषिग, विद्रुमलता, कपोताघ्रि, नटी, नली ॥ १२९ ॥ धमनी, अजनकेशी ये सात (स्त्री०) नाम पवारिके हैं । हनु (स्त्री०), दृष्टविलासिनी (स्त्री०), शुक्ति (स्त्री०), शङ्ख (पु०), खुर (पु०), कोलदल (न०), नख (न०) ये सात नाम नखलाके हैं । आदकी (स्त्री०) ॥ १३० ॥ काक्षी (स्त्री०), मृत्सना (स्त्री०), तुवरिका (स्त्री०), मृत्तालङ्ग

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥

अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यापि ॥ १४६ ॥

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो ददुघ्नश्चक्रमर्दकः ।

पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥

लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम् ।

लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यापि ॥ १४९ ॥

पारावताग्निः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

स्वादुरसा, वयस्था ये तीन (स्त्री०) नाम काकोलीके हैं । मकूलक (पु०)
निकुम्भ (पु०), दन्तिका (स्त्री०), प्रत्यक्श्रेणी (स्त्री०), उदुम्बरपर्णी
(स्त्री०) ये पांच नाम जमालगोटेके जड़के हैं ॥ १४४ ॥ अजमोदा,
उग्रगन्धा ये दो (स्त्री०) नाम अजमोदके हैं । ब्रह्मदर्भा, यवानिका ये
दो (स्त्री०) नाम अजवानके हैं । पुष्कर, काश्मीर, पद्मपत्र ये तीन (न०)
नाम पोहकरमूलके हैं ॥ १४५ ॥ अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचा-
रिणी ये पांच (स्त्री०) नाम स्थलकमलिनिके हैं । काम्पिल्य, कर्कश, चन्द्र,
रक्ताङ्ग, रोचनी ये पांच नाम रोचना (कबीला) के हैं । रोचनी (स्त्री०)
शोष (पु०) हैं ॥ १४६ ॥ प्रपुन्नाड, एडगज, ददुघ्न, चक्रमर्दक, पद्माट, उरणा-
ख्य ये छः (पु०) नाम पंजाडके हैं । पलाण्डु, सुकन्दक ये दो (पु०) नाम
प्याजके हैं ॥ १४७ ॥ लतार्क, दुद्रुम ये दो (पु०) नाम हरी प्याजके हैं ।
महौषध, लशुन, गृञ्जन, अरिष्ट, महाकन्द, रसोनक ये छः नाम लहशुनके
हैं । महौषध, गृञ्जन शब्द (न०) शोष (पु०) हैं ॥ १४८ ॥ पुनर्नवा, शो-
थघ्नी ये दो (स्त्री०) नाम सांठीके हैं । वितुन्न, सुनिषण्णक ये दो (न०)
नाम कुरडूके हैं । वातक (पु०), शीतल (पु०), अपराजिता (स्त्री०),
शणपर्णी (स्त्री०) ये चार नाम गोकर्णिके हैं ॥ १४९ ॥ पारावताग्नि,
कठभी, पण्या, ज्योतिष्मती, लता ये पांच (स्त्री०) नाम मालकाङ्गनी

विष्वक्सेनाप्रिया गृष्टिर्वाराही वदरेत्यपि ।

मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसि ।

अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥

तस्या कटभरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।

जनी जतुका रजनी जतुकृचक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥

सस्पर्शाऽथ शटी गन्धमूली पङ्कग्रन्थिकेत्यपि ।

कर्चूरोऽपि पलाशोऽथ कारवेलः कठिलक ॥ १५४ ॥

सुपवी चाथ कुलकं पटोलस्तित्तकं पटु ।

कृष्णाण्डकस्तु कर्कारुस्वारु कर्कटी स्त्रियौ ॥ १५५ ॥

इक्ष्वाकु कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलावूरुमे समे ।

चित्रा गवाक्षी गोडुम्ना विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥

हे । वार्षिक, त्राणमाणा, त्रायती, बलभाद्रिहा ये चार नाम त्राग्ण्ण नि
रायतके फलके हे । तहां वार्षिकशब्द (न०) ओष (स्त्री०) हे ॥ १५० ॥
विष्वक्सेनाप्रिया, गृष्टि, वाराही, वदरा ये चार (स्त्री०) नाम वाराही
(बिलाई) कन्दके हे । मार्कव, भृङ्गराज ये दो (पु०) नाम भारिके हे ।
काकमाची, वायसी ये दो (स्त्री०) नाम मकोहके हे ॥ १५१ ॥ शतपुष्पा,
सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसी, अवाक्पुष्पी, कारवी ये सात
(स्त्री०) नाम सौंफके हे । सरणा, प्रसारिणी ॥ १५२ ॥ कटभरा, राजबला,
भद्रबला ये पांच (स्त्री०) नाम रडीप नामक औषधिके हे । जनी, जतुका,
रजनी, जतुकृच, चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ सस्पर्शा ये छ (स्त्री०) नाम
चाकवत शाकवे हे । शटी (स्त्री०), गन्धमूली (स्त्री०), पङ्कग्रन्थिना
(स्त्री०), कर्चूर (पु०), पलाश (पु०) ये पांच नाम कपूरकचरीके
हे । कारवेल (पु०), कठिलक (पु०) ॥ १५४ ॥ सुपवी (स्त्री०) ये
तीन नाम करेले हे । कुलक (न०), पटोल, तित्तक, पटु (तीन पु०),
ये चार नाम कटवी परलके हे । कृष्णाण्डक, कर्कारु ये दो (पु०) नाम
कोहले हे । स्वारु, कर्कटी ये दो (स्त्री०) नाम उडलीके हे ॥ १५५ ॥
इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी ये दो (स्त्री०) नाम कटवी तुर्वीके हे त्वी, अलावू
ये दो (स्त्री०) नाम वाली तुर्वीके हे । चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्ना ये तीन

अर्शोन्नः सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समाष्ठिला ।

कलम्बुपुोदिका स्त्री तु मूलकं हिलमोचिका ॥ १५७ ॥

वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका ।

सहस्रवीर्याभार्गव्या रुहाऽनन्ताऽय सासिता ॥ १५८ ॥

गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षका ।

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमध्वियाम् ॥ १५९ ॥

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ।

वंशे त्वक्सारकर्मास्त्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥

शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

(स्त्री०) नाम जेठऊ ककरीके ह । विशाला, इन्द्रवारुणी ये दो (स्त्री०) नाम इन्द्रवारुणीके हैं ॥ १५६ ॥ अर्शोन्न, सूरण, कन्द ये तीन (पु०) नाम जमीकन्दके हैं । गण्डीर (पु०), समाष्ठिला (स्त्री०) ये दो नाम कडुये जमीकन्दके हैं । कलंवी यह एक (स्त्री०) नाम बांसकी आकृति-वाले शाकका है । उपोदिका यह एक (स्त्री०) नाम पुदीना शाकका है । मूलक यह एक (न०) नाम मूलीशाकका है । हिलमोचिका यह एक (स्त्री०) नाम हलहंची शाकका है ॥ १५७ ॥ वास्तुक यह एक (न०) नाम बथुआ शाकका है । ये शाकोंके भेद हैं । दूर्वा, शतपर्विका, सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता ये छः (स्त्री०) नाम दूबके हैं ॥ १५८ ॥ गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षका ये चार (स्त्री०) नाम सुपेद दूबके हैं । कुरुविन्द, मेघनाम (नान्त) (दो पु०), मुस्ता (स्त्री०), मुस्तक (पु० न०) ये चार नाम नागरमोथेके हैं । मेघनामा याने मेघके नाम इसकेभी वाचक होते हैं ॥ १५९ ॥ भद्रमुस्तक (पु०), गुन्द्रा (स्त्री०) ये दो नाम भद्रमोथाके हैं । चूडाला, चक्रला, उच्चटा ये तीन (स्त्री०) नामभी मोथाविशेषके हैं । वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वज ॥ १६० ॥ शतपर्बन् (नान्त), यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन ये दश (पु०) नाम बांसके हैं । कीचक यह एक (पु०) नाम कीड़ोंसे किये हुए छिद्रोंमें होकर गये हुए पवनके झकोरोंसे शब्दवाले बांसका है ॥ १६१ ॥

ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

नडस्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥

इक्षुगन्धा पोटगलः पुसि भूम्नि तु बल्वजाः ।

रसाल इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तागकादयः ॥ १६३ ॥

स्याद्वीरण वीस्तर मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।

अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥

लामज्जकं लघुलयमवदाहृष्टकापथे ।

नडादयस्तृण गर्मुच्छ्रयामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रमथ कत्तृणम् ।

पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकतौहिपम् ॥ १६६ ॥

उत्रातिच्छत्रपालघ्नौ मालातृणकभृस्तृणे ।

शष्पं बालतृण घासो यवत्तं तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

अथि, पर्वर (नात), परुस् ये तीन नाम वास आदिकी गाठके हे । तहा
अथिजब्द (पु०) शेष (न०) हे । गुन्द्र, तेजनक, शर ये तीन (पु०) नाम
अगके हे । नड, धमन, पोटगल ये तीन (पु०) नाम नरसलके हे । काश
(पु० न०) ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धः (स्त्री०), पोटगल (पु०) ये तीन
नाम काशके ह । बल्वज यह एक नाम लवाका बहुवचनमे (पु०) हे ।
रसाल, इक्ष ये दो (पु०) नाम ईसके हे । पुण्ड्र, कान्तागक ये दो (पु०)
नाम ईसके भेद (पाडा) के ह ॥ १६३ ॥ वीरण, वीस्तर ये दो (न०)
नाम तृणभेदके ह । उशीर, अभय, नलद, सेव्य, अमृणाल, जलाशय
॥ १६४ ॥ लामज्जक, लघुलय, अमृदाह, इष्टकापथ ये दश नाम वीरण
क्षत्री जट अर्थात् रसके ह । तहां उशीरशब्द (पु० न०) शेष (न०)
हे । नड आदि शब्द तृण जातिके वाचक हे । गर्मुत्त (पु०), रयामाक
(पु०) इत्यादि शब्दभी तृणजातिवाचक ह । यहां प्रमुखाशब्दसे मुखा
आदि नागनीका दूब आदिका ग्रहण हे ॥ १६५ ॥ कुश (पु० न०)
रुय (पु०), टम (पु०), पवित्र (न०) ये चार नाम टमके ह । कत्तृण,
पौर, सौगन्धिक, ध्याम, देवजग्धक, तौहिप ये च (न०) नाम तौहिप
तृणके हे ॥ १६६ ॥ छत्रा (स्त्री०), अतिच्छत्र (पु०), पालत्र (पु०),
मालानृण (न०), भूमृण (न०) ये तीन नाम अतिच्छत्रके हे । शष्प, बाल

नृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नडसंहतिः ।

तृणराजाद्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥

घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोऽस्य तु ।

फलमुद्गेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥

खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणहुमाः ।

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

अथ सिंहादिवर्गः ५ ।

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

“ कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिमृगाशनः ।

पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विपः ॥ ”

शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

तृण ये दो (न०) नाम कोमल तिनकेके हैं । घास (पु०), यवस (न०)
ये दो नाम गौ आदिके चरने योग्य तृणके हैं । तृण, अर्जुन ये दो (न०)
नाम तृणमात्रके हैं ॥ १६७ ॥ तृण्या यह एक (स्त्री०) नाम तृणोंके
समूहका है । नड्या यह एक (स्त्री०) नाम नडोंके समूहका है । तृणरा-
जाद्वय, ताल ये दो (पु०) नाम ताडके हैं । नालिकेर (पु०), लांगली
(स्त्री०) ये दो नाम नारियलके हैं ॥ १६८ ॥ घोंटा, पूग, क्रमुक, गुवाक,
खपुर ये पांच नाम सुपारीके हैं । घोंटा (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । उद्गेग यह
एक नाम सुपारीके फलका है । और ताल, नारिकेर और पूग इन तीनोंके
सहित हिन्तालशब्द तालभेदका वाचीभी है ॥ १६९ ॥ खर्जूर यह एक (पु०)
नाम खजूरवृक्षका है । केतकी यह एक (स्त्री०) नाम केतकीका है । ताली
यह एक (स्त्री०) नाम ताडके भेदका है । खर्जूरी यह एक (स्त्री०) नाम
खजूरके भेदका है । ये तृणवृक्ष हैं ॥ इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

अथ सिंहादिवर्गः । सिंह, मृगेन्द्र, पञ्चास्य, हर्यक्ष, केसरिन् (इन्नन्त),
हरि ये छः नाम और “ कंठीरव, मृगरिपु, मृगदृष्टि, मृगाशन, पुण्डरीक,
पञ्चनख, चित्रकाय, मृगद्विप् (पान्त) ये आठ सब चौदह (पु०) नाम
सिंहके हैं । ” शार्दूल, द्वीपिन् (इन्नन्त), व्याघ्र ये तीन (पु०) नाम
वघेराके हैं । तरक्षु, मृगादन ये दो (पु०) नाम चीतेके हैं ॥ १ ॥

वराहः सूक्तो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः ।
 दष्टी घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥
 कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः ।
 मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुके ॥ ३ ॥
 ऋक्षाऽञ्छमलभल्लूका गण्डके खड्गखड्गिनौ ।
 लुलायो महिषो बाहद्विपत्कासरसैरिमा ॥ ४ ॥
 श्रिया शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः ।
 शृगालवश्रुकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुका ॥ ५ ॥
 ओतुर्विडालो मार्जगे वृषदंशक आरुभुक् ।
 प्रयो गौधेरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥
 श्वावित्तु शरपस्तलोन्नि शरः शरः शलमः ।
 वातप्रमीर्वातमृग कोकस्त्योहामृगो वृक ॥ ७ ॥

'वराह, सूक्त', 'घृष्टि, कोल, पोत्रि' (इन्त), 'किरि, किटि, दष्टि' (इन्त), 'घोणि' (इन्त), 'स्तब्धरोम' (नान्त), 'क्रोड, भूदार' ये वराह (पु०) नाम शूकरके हैं ॥ २ ॥ 'कपि, प्लवग, प्लवग, शाखामृग, वलीमुख, मर्कट, वानर, कीश, वनौक' (सान्त) ये नव (पु०) नाम वानरके हैं । 'भल्लुक' ॥ ३ ॥ 'ऋक्ष, अञ्छमल, भल्लूक' ये चार (पु०) नाम रीछके हैं । 'गण्डक, खड्ग, खड्गि' (इन्त) ये तीन (पु०) नाम गण्डके हैं । 'लुलाय, महिष, बाहद्विपत् (तान्त), कासर, सैरि' ये पाँच (पु०) नाम भैंसेके हैं ॥ ४ ॥ 'शिवा, भूरिमाय, गोमायु, मृगधूर्तक, शृगाल, वशुक, क्रोष्टु, फेरु, फेरव, जम्बुक' ये दश नाम गीदडके हैं । 'शिवाशन्' (स्त्री०) शेष (पु०) है ॥ ५ ॥ 'ओतु, विटाल, मार्जार, वृषदंशक, आरुभुक्' (जान्त) ये पाँच (पु०) नाम बिलावके हैं । 'गौधेर, गौधार, गौधेय' ये तीन (पु०) नाम गुहेरा (चदनगोह) के हैं । यह काले सर्पसे गोहमें पैदा होता है ॥ ६ ॥ 'श्ववित्तु' (धान्त), 'शर' ये दो (पु०) नाम शेरके हैं । 'शर' (स्त्री०), 'शर' (न०), 'शर' (न०) ये तीन नाम शेरके रोमके हैं । 'वातप्रमी, वातमृग' ये दो (पु०) नाम वातमृगके हैं । 'कोक, शोभामृग, वृक' ये तीन (पु०) नाम नेट्टियेके हैं ॥ ७ ॥

मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।

ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यमेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।

समूरुश्चेति हरिणा अमा अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

कुष्णसाररुन्यंकुरंकुशम्बररौहिषाः ।

गोकर्णपृषतैणश्चरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।

इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

“ अधोगन्ता तु खनको वृकः पुंघ्वज उन्दुरः । ”

उन्दुरुर्मूषिकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूषिका ।

सरटः कृकलासः स्यान्मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

लूता स्त्रीतन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ।

नीलंगुस्तु कृमिः कर्णजलौकाः शतपद्भुमे ॥ १३ ॥

मृग, कुरंग, वातायु, हरिण, अजिनयोनयि ये पांच (पु०) नाम मृगके हैं । ऐणेय यह एक नाम हरिणीके चाम तथा मांसका है । हरिणका चाम तथा मांस आदि ऐण कहाता है ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं ॥ ८ ॥ कदली (स्त्री०), कन्दली (स्त्री०), चीन (पु०), चमूरु (पु०), प्रियक (पु०) समूरु (पु०) ये छः हरिणके भेद और कृष्णसार आदि अजिनयोनयि कहाते हैं ॥ ९ ॥ कृष्णसार, रुरु, न्यंकु, रकु, शंबर, रौहिण, गोकर्ण, पृषत, ऐण, ऋश्य, रोहित, चमर ये बारह (पु०) नाम मृगोंके भेदके हैं ॥ १० ॥ गन्धर्व, शरभ, राम, सृमर, गवय, शश, सिंह आदि और गौ आदि ये सब (पु०) नाम पशुजातिके हैं ॥ ११ ॥ “ अधोगतृ (ऋकारान्त), खनक, वृक, पुंघ्वज, उन्दुर ये पांच (पु०) नाम क्षेपक श्लोकके अनुसार ” और उन्दुरु, मृषक, आखु ये तीन (पु०) कुल आठ नाम मूसेके हैं । गिरिका, बालमूषिका ये दो (स्त्री०) नाम छोटी मूसीके हैं । सरट, कृकलास ये दो (पु०) नाम गिरगटके हैं । मुसली, गृहगोधिका ये दो (स्त्री०) नाम छिपकलीके हैं ॥ १२ ॥ लूता, तंतुवाय, उर्णनाभ, मर्कटक ये चार नाम मकड़ीके हैं । तहां लूताशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । नीलंगु, कृमि ये दो (पु०) नाम छोटे कीड़ेके हैं । कर्णजलौकम् (सकारान्त), शतपदी

वृश्चिक शूककीटः स्यादलिद्रोणौ तु वृश्चिके । -

पारावतः कलरवः कपातोऽथ शशादनः ॥ १४ ॥

पत्री श्येन उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ । -

“ दिवान्धः कौशिको घृको दिवाभीतो निशादनः । ”

व्याघ्राट् स्याद्भरद्वाजः खज्जरीटस्तु खज्जनः ॥ १५ ॥

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादथ चापः किक्कीदिविः ।

कालिङ्गभृङ्गधूम्याटा अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥

दार्वाघाटोऽथ सारङ्गस्तोकश्चातकः समाः ।

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुकुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥

चटकः कलविकः स्यात्तस्य स्त्री चटका तयोः ।

पुमपत्ये चाटकेरः ह्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥

कर्करेटुः करेटुः स्यात्कृकणः कृकौ समौ ।

वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिकः इत्यपि ॥ १९ ॥

ये दो (स्त्री०) नाम कानखजुरेके ह ॥ १३ ॥ आगेके कलरवकशब्दतरु (पु०) है । वृश्चिक, शूककीट ये दो नाम उनके सानेवाले कीड़ेके हैं । अलि, द्रोण, वृश्चिक ये तीन नाम बीरके हैं । पारावत, कलरव, कपात ये तीन नाम कनूतरके हैं । शशादन ॥ १४ ॥ पत्री (इन्त), श्येन ये तीन नाम शिकरा (बाज) के हैं । उलूक, वायसाराति, पेचक ये तीन नाम उलूके हैं । “ दिवान्ध, कौशिक, घृक, दिवाभीत, निशादन ये पाँच नामभी उलूके हैं । ” व्याघ्राट, भरद्वाज ये दो नाम लवाविशेषके ह । खजरीट, खजन ये दो नाम सजन पक्षीके हैं ॥ १५ ॥ लोहपृष्ठ, कङ्क ये दो नाम ककक्षीके हैं । चाप, किक्कीदिवि ये दो नाम नीलकण्ठ पक्षीके ह । कालिङ्ग, भृङ्ग, धूम्याट ये तीन नाम मस्तकचूड पक्षीके हैं । शतपत्रक ॥ १६ ॥ दार्वाघाट ये दो नाम गुटगडई वा कठफोफेके हैं । सारङ्ग, तोकरु, चातक ये तीन नाम पपैयाके हैं । कृकवाकु, ताम्रचूड, कुकुट, चरणायुध ये चार नाम मुरगेके हैं ॥ १७ ॥ चटरु, कलविक य दो नाम चिड़ोटेके हैं । यहाँतक (पु०) है । चटका यह एक (स्त्री०) नाम चिड़ोका है । चाटकेर यह एक (पु०) नाम इनके पुरुषरूप वच्चेका है । और चीकली हो तो चटका इस (स्त्री०) नामसे प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥ कर्करेटु, करेटु ये दो (पु०) नाम कर्करु

काके तु करटारिष्टवलिपुष्टसकृत्प्रजाः ।

ध्वाङ्गात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥

“ स एव च चिरंजीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः । ”

द्रोणकाकस्तु काकोलो दात्यूहः कालकण्ठकः ।

आतापिचिल्लो दाक्षाय्यगृध्रौ कीगुक्षौ समौ ॥ २१ ॥

कुङ्क् क्रीश्चोऽथ वकः कद्वः पुष्कराद्वस्तु सारसः ।

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाद्वयनामकः ॥ २२ ॥

कादम्बः कलहंसः स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ ।

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चकाङ्गा मानसौकमः ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुरणल्लोहितैः सिताः ।

मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतैः ॥ २४ ॥

पक्षीके हैं । कुकण, ककर ये दो (पु०) नाम करटु (तीतरावेशे) के हैं । आगेके शब्द धार्तराष्ट्रक (पु०) है । वनप्रिय, परभृत, कोकिल, पिक ये चार नाम कोयलके हैं ॥ १९ ॥ काक, करट, अरिष्ट, वलिपुष्ट, सकृत्प्रज, ध्वाक्ष, आत्मघोष, परभृत (तांत), बलिभुज (जान्त), वायस ये दश नाम काकके हैं ॥ २० ॥ “ चिरञ्जीविन (इन्नत), एकदृष्टि, मौकुलि ये तीन नामभी काकके हैं । ” द्रोणकाक, काकोल ये दो नाम काले काकके हैं । दात्यूह, कालकण्ठक ये दो नाम जलकाकके हैं । आतापिन् (इन्नन्त), चिल्ल ये दो नाम चील्हके हैं । दाक्षाय्य, गृध्र ये दो नाम गोधके हैं । कीर, शुक्र ये दो नाम तोतेके हैं ॥ २१ ॥ कुङ्क् (चान्त), क्रींच ये दो नाम कुञ्जके हैं । वक, कद्व ये दो नाम बगलेके हैं । पुष्कराद्व, सारस ये दो नाम सारसके हैं । कोक, चक्र, चक्रवाक, रथांग ये चार नाम चक्रवाकके हैं ॥ २२ ॥ कादम्ब, कलहंस ये दो नाम मधुर बोलनेवाले हंसके हैं । उत्क्रोश, कुरर ये दो नाम कुसीके हैं । हंस, श्वेतगरुत (तान्त), चकांग, मानसौकस् (सांत) ये चार नाम हंसके हैं ॥ २३ ॥ जिन्होंका शरीर सुपेद हो चोंच और पैर लाल हों वे राजहंस कहाते हैं । कुछ धूम्ररंग चोंच और पैरोंवाले हंस मल्लिकाक्ष कहाते हैं । काले रंगकी चोंच और पैरोंवाले हंस धार्तराष्ट्र क-

शरारिगाटिगाडिश्च बलाका विसकण्ठिका ।
 हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका ।
 वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥
 पताङ्गिका पुत्तिका स्यादशस्तु वनमक्षिका ।
 दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्वन्वोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥
 भृङ्गारी शीरुका चीरी क्षिलिका च समा इमाः ।
 समौ पतङ्गशलमौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥
 मधुव्रतो मधुस्रो मधुलिण्मधुपालिनः- ।
 द्विरेफपुष्पलिङ्गभृङ्गपद्मदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥
 मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गमुक् ।
 शिखावल शिखी केकी मेवनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥

हाते हे । यहाँतक (पु०) हे ॥ २४ ॥ शरारि, आदि, आदि ये तीन (स्त्री०) नाम अडीपक्षीके है । बलाका, विसकण्ठिका ये दो (स्त्री०) नाम बगलेके भेदके है । वरटा यह एक (स्त्री०) नाम हसकी स्त्रीका है । लक्ष्मणा यह एक (स्त्री०) नाम सारसकी स्त्रीका है ॥ २५ ॥ जतुका, अजिनपत्रा ये दो (स्त्री०) नाम चामचिरी (चिमगादर) के है । परोष्णी, तैलपायिका ये दो (स्त्री०) नाम तेलदुना (गीदड) के है । वर्वणा, मक्षिका, नीला ये तीन (स्त्री०) नाम मक्खीके है । सरघा, मधुमक्षिका ये दो (स्त्री०) नाम मधुकी मक्खीके है ॥ २६ ॥ पताङ्गिका, पुत्तिका ये दो (स्त्री०) नाम मधुमक्खीके भेदके है । दश (पु०), वनमक्षिका (स्त्री०) ये दो नाम डालके हैं । दंशी यह एक (स्त्री०) नाम उन टी सोंकी छोटी जातिका है । गधोली (स्त्री०), वरटा (पु० स्त्री०) ये दो नाम गांधीणी (वर्ममक्खी) के है ॥ २७ ॥ भृङ्गारी, शीरुका, चींगी, क्षिलिका ये चार (स्त्री०) नाम चिल्ल (झीगुर) के ह । पतङ्ग, शलम ये दो (पु०) नाम पतंगके हैं । खद्योत, ज्योतिर्गिण ये दो (पु०) नाम पटङ्गीजनके हैं ॥ २८ ॥ मधुव्रत, मधुस्र, मरुलिङ्ग (हान्त), मधुप, अलिङ्ग (इन्नत), द्विरेफ, पुष्पलिङ्ग (हान्त), भृङ्ग, पद्मद, भ्रमर, अलि ये ग्यारह (पु०) नाम भौरेके है ॥ २९ ॥ मयूर, बर्हिण, बर्हिन (इन्नत),

केका वाणी मयूरस्य समौ चन्द्रकमेचकौ ।
 शिखा चूडा शिखण्डस्तु पिच्छवर्हं नपुंसके ॥ ३१ ॥
 खगे विहंगविहगविहंगमविहायसः ।
 शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥
 पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः ।
 नगौकोवाजिविकिरविविष्करपतत्रयः ॥ ३३ ॥
 नीडोद्भवा गरुमन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः ।
 तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिः कुक्षुभो लाघौ जीवजीवश्चकोरकः ।
 कोयष्टिकाष्टिष्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

नीलकण्ठ, भुजंगभुज् (जान्त), शिखावल, शिखिन् (इन्नन्त), केकिन्
 (इन्नन्त), मेघनादानुलासिन् (इन्नन्त) ये नव (पु०) नाम मोरके हैं
 ॥ ३० ॥ केका यह एक (स्त्री०) नाम मोरकी वाणीका है । चन्द्रक,
 मेचक ये दो (पु०) नाम मोरकी चन्द्राके हैं । शिखा, चूडा ये दो
 (स्त्री०) नाम मोरकी शिखाके हैं । शिखण्ड (पु०), पिच्छ (न०),
 वर्ह (न०) ये तीन नाम मोरके पांखके हैं ॥ ३१ ॥ खग, विहग, विहग-
 विहगम, विहायम् (सान्त), शकुन्ति, पक्षिन् (इन्नन्त), शकुनि, शकुत,
 शकुन, द्विज ॥ ३२ ॥ पतत्रिन् (इन्नन्त), पत्रिन् (इन्नन्त), पतग, पतत्
 (तान्त), पत्ररथ, अण्डज, नगौकम् (सान्त), वाजिन् (इन्नन्त),
 विकिर, वि, विष्कर, पतत्रि ॥ ३३ ॥ नीडोद्भव, गरुमन्त (तान्त),
 पित्सन्त (तान्त), नभसंगम ये सत्ताईस (पु०) नाम पक्षिनात्रके हैं ।
 पक्षियोंके विषयमें विशेष कहते हैं । हारीत यह एक (पु०) नाम तिलगरू
 पक्षीका है । मद्गु यह एक (पु०) नाम जलकाकका है । कारण्डव यह
 एक (पु०) नाम करडुवा (बतकविशेष) का है । प्लव यह एक (पु०)
 नाम पाणकाकका है ॥ ३४ ॥ तित्तिरि यह एक (पु०) नाम तीतरका
 है । कुक्षुभ यह एक (पु०) नाम वनके सुर्गेका है । लाव यह एक (पु०)
 नाम बरेपक्षीका है । जीवजीव यह एक (पु०) नाम मोरके पांखोंके
 समान पखोंवाले पक्षीका है । चकोरक यह एक (पु०) नाम चकोरका
 है । कोयष्टिक, टिट्ठिभक ये दो (पु०) नाम ट्यौहरी पक्षीके हैं । वर्तक

गरुत्पक्षच्छत्रा पत्र पतत्र च तनूरुहम् ।
 स्त्री पक्षति पक्षमूल चक्षुस्त्रोटिर्गमे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥
 प्रडीनोड्डीनमडीनान्येता खगगतिक्रिया ।
 पेशी कोशो द्विहीनेऽण्ड कुलायो नीडमाश्रियाम् ॥ ३७ ॥
 पोतः पाकोऽर्भको डिम्बः पृथुकः शावकः शिशुः ।
 स्त्रीपुमौ मिथुन द्वन्द्व युग्मं तु युगुल युगम् ॥ ३८ ॥
 समूहो निबहव्यूहसदोहाविसरव्रजाः ।
 स्तोमौघनिकरघ्रातवारसंघातसचयाः ॥ ३९ ॥
 समुदायः समुदयः समवायश्च यो गणः ॥
 स्त्रिया तु सहतिर्वृन्दः निकुरम्बः कदम्बकम् ॥ ४० ॥
 वृन्दमेदाः समैर्वर्गः संघसार्थो तु जन्तुभिः ।
 सजातीयैः कुल यूथ तिरश्चा पुनपुसकम् ॥ ४१ ॥

यह एक (पु०) नाम वतकका है । वृत्तिका, सगिरा, कपिजला ये तीनों एक (स्त्री०) नाम वतत्रविशेषके हैं ॥ ३६ ॥ गरुत् (तान्त पु०), पक्ष (पु०), छद् (पु० न०), पत्र (न०), पतत्र (न०) तनूरुह (न०) ये छ नाम पक्षके हैं । पक्षति यह एक (स्त्री०) नाम पक्षके मूलका है । चक्षु, त्रोटि ये दो (स्त्री०) नाम पक्षीकी चोंचके हैं ॥ ३६ ॥ प्रडीन, उड्डीन, सडीन ये तीनों (न०) नाम पक्षियोंके गमनविशेषके हैं । पेशी (स्त्री०), कोश (पु० न०), अण्ड (न०) ये तीन नाम अण्डके हैं । कुलाय (पु०), नीड (पु० न०) ये दो नाम पक्षियोंके घरके हैं ॥ ३७ ॥ पोत, पाक, अर्भक, डिम्ब, पृथुक, शावक, शिशु ये छ (पु०) नाम छोटे बालकके हैं । स्त्रीपुस (पु०), मिथुन, द्वन्द्व (दो न०) ये तीन नाम स्त्री-पुरुषके जोड़ेके हैं । युग्म, युगुल, युग ये तीन (न०) नाम युग्म अर्थात् जोड़के हैं ॥ ३८ ॥ समूह, निबह, व्यूह, सदोह, विसर, व्रज, स्तोम, औघ, निकर, घ्रात, वार, संघात, सचय ॥ ३९ ॥ समुदाय, समुदय, समवाय, चय, गण, सहति, वृन्द, निकुरम्ब, कदम्बक ये चाईस नाम समूहके हैं । तहा सहतिगन्द (स्त्री०) समूहसे गणतक (पु०) शेष (न०) है ॥ ४० ॥ वृन्दमेद अर्थात् समुदायविशेष कहते हैं । वर्ग यह एक (पु०) नाम सजानीय प्राणी व्यवसाय अग्राणियोंके समूहका है ।

पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ।

स्यान्निकायः पुञ्जराशी वृत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे ।

गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥

इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ६ ।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।

प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥

जैसे मनुष्यवर्ग, शैलवर्ग ये हैं । संघ, सार्थ ये दो (पु०) नाम सजातीय और विजातीय प्राणियोंके समूहके हैं । जैसे पशुसंघ है । वणिक्सार्थ है । कुल यह एक (न०) नाम सजातीय प्राणियोंके समूहका है । जैसे विप्रकुल है । यूथ यह एक (पु० न०) नाम सजातीय तिरछे जन्तुओंके समूहका है । जैसे मृगयूथ है ॥ ४१ ॥ समज यह एक (पु०) नाम पशुओंके समूहका है । पशुसे अन्योका समूह समाज (पु०) कहाता है । निकाय यह एक (पु०) नाम समानधर्मवालोंके समूहका है । पुञ्ज (पु०), राशि (पु० स्त्री०), उत्कर (पु०), कूट (पु० न०) ये चार नाम अन्न आदिकी राशिके हैं ॥ ४२ ॥ कापोत यह एक (न०) नाम कबूतरोंके समूहका है । शौक यह एक (न०) नाम तोतोंके समूहका है । मायूर यह एक (न०) नाम मोरोंके समूहका है । तैत्तिर यह एक (न०) नाम तीतरोंके समूहका है । आदिशब्दसे काक यह एक (न०) नाम काकोंके समूहका है । घरके विषे पीजरे आदिमें स्थापित किये पक्षी और मृग इनको छेक और गृह्यक कहते हैं । ये दोनों शब्द (पु०) हैं ॥ ४३ ॥ इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः । मनुष्य, मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, पुंस् (सकारान्त), पञ्चजन, पुरुष, पूरुष, नृ (ऋकारान्त) ये ग्यारह (पु०) नाम मनुष्योंके हैं । आगेके स्त्रीशब्दसे उद्वया शब्दतक सब (स्त्री०) हैं ॥ १ ॥ स्त्री, योषित् (तान्त), अबला, योषा, नारी, सीमन्तिनी, वधू, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला ये ग्यारह नाम स्त्रीके हैं ॥ २ ॥

विशेषास्त्वङ्गना भीरु* कामिनी वामलोचना ।

प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥

सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव मामिनी ।

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

कृतामिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥

भार्या जायाथ पुभूम्नि दाराः स्यात् कुटुम्बिनी ।

पुरंध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥

कृतसापत्निकाध्यूढाधिविज्ञाथ स्वयवरा ।

पतिवरा च वर्याथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥

अगना यह एक (स्त्री०) नाम सुन्दर अगोंवाली स्त्रीका है । भीरु यह एक नाम डरपोक स्त्रीका है । कामिनी यह एक नाम कामदेवसे युत हुई स्त्रीका है । वामलोचना यह एक नाम सुन्दर नेत्रोंवाली स्त्रीका है । प्रमदा यह एक नाम बहुत कामके बेगवाली स्त्रीका है । मानिनी यह एक नाम नव तापुषेक कोपवाली स्त्रीका है । कान्ता यह एक नाम मनके हरनेवाली स्त्रीका है । ललना यह एक नाम चंचला स्त्रीका है । नितम्बिनी यह एक नाम सुन्दर कटिप्रान्तवाली स्त्रीका है ॥ ३ ॥ सुन्दरी यह एक नाम सुन्दर अगोंवाली स्त्रीका है । रमणी यह एक नाम रमण करनेवाली स्त्रीका है । रामा यह एक नाम सुन्दर स्त्रीका है । कोपना, मामिनी ये दो नाम कोप वाली स्त्रियाँ हैं । वरारोहा, मत्तकाशिनी, उत्तमा, वरवर्णिनी ये चार नाम बहुत गुणोंवाली स्त्रियोंके हैं ॥ ४ ॥ महिषी यह एक नाम अभिषेक हुई गनीका है । भोगिनी यह एक नाम राजाकी अथ रानियोंका है । पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या, जाया, दार ये सात नाम भिन्नाही हुई स्त्रियाँ हैं । तहां दारशब्द (पु०) बहुवचनान्त है । कुटुम्बिनी, पुरंध्री ये दो नाम कुटुम्बवाली स्त्रियोंके हैं । सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता ये चार नाम पतिव्रता स्त्रियोंके हैं ॥ ६ ॥ कृतसापत्निका, अध्यूढा, अधिविज्ञा ये तीन नाम अनेक भिन्नाहारी पुष्पकी पहली पि वाही स्त्रियाँ हैं । स्वयवरा, पतिवरा, वर्या ये तीन नाम स्वयवर करनेवाली स्त्रियोंके हैं । कुलस्त्री, कुलपालिका ये दो नाम कुलवाली स्त्रियोंके हैं ॥ ७ ॥

कन्या कुमारी गौरी तु नम्रिकाऽनागतार्त्तवा ।
 स्थान्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥
 समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी ।
 इच्छावती कामुका स्यादृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥
 कान्तार्थिनी तु या याति संकेन साऽभिसारिका ।
 पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलदेवरी ॥ १० ॥
 स्वैरिणी पांसुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना ।
 अवीरा निष्पतिमुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥
 आलिः सखी वयस्याऽथ पतिवर्त्नी सभर्तृका ।
 वृद्धा पलिक्री प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥
 शूद्री शूद्रस्य भार्या स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव च ।
 आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥

कन्या कुमारी ये दो नाम कुंवारी स्त्रीके हैं । गौरी, नम्रिका, अनागता-
 र्त्तवा ये तीन नाम नहीं दीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं । मध्यमा दृष्टरजसू
 (सान्त) ये दो नाम प्रथम दीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं । तरुणी, युवति
 ये दो नाम मध्यम अवस्थावाली (जवान) स्त्रीके हैं ॥ ८ ॥ स्नुषा, जनी,
 वधू ये तीन नाम पुत्र आदिके स्त्रीके हैं । चिरिटी, सुवासिनी ये दो नाम
 थोड़े उठे यौवनवाली विवाही स्त्रीके हैं । इच्छावती, कामुका ये दो नाम
 कामदेवकी इच्छावाली स्त्रीके हैं । वृषस्यन्ती, कामुकी ये दो नाम वृष और
 अश्वकी तरह भोगकी इच्छावाली स्त्रीके हैं ॥ ९ ॥ अभिसारिका यह एक
 नाम पतिकी इच्छासे संकेतस्थानको जानेवाली स्त्रीका है । पुंश्चली,
 धर्षिणी, बंधकी, असती, कुलटा, इत्थरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी, पांसुला ये आठ
 नाम जारिणी स्त्रीके हैं । अशिश्वी यह एक नाम विना बालकवाली स्त्रीका
 है । अवीरा यह एक नाम पतिपुत्रसे रहित स्त्रीका है । विश्वस्ता, विधवा
 ये दो नाम विधवा अर्थात् रंडा स्त्रीके हैं ॥ ११ ॥ आलि, सखी, वयस्या
 ये तीन नाम सखीके हैं । पतिवर्त्नी, सभर्तृका ये दो नाम सुहागिन स्त्रीके
 हैं । वृद्धा, पलिक्री ये दो नाम बूढ़ी स्त्रीके हैं । प्राज्ञी, प्रज्ञा ये दो नाम
 थोड़ी समझवाली स्त्रीके हैं । प्राज्ञा, धीमती ये दो नाम बुद्धिवाली स्त्रीके
 हैं ॥ १२ ॥ शूद्री यह एक नाम शूद्रकी स्त्रीका है । शूद्रा यह एक नाम

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।
 उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
 आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादर्या क्षत्रियो तथा ।
 उपाध्यायान्युपाध्यायी षोढा स्त्री पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसू ।
 जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥
 स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्वृत्तीसचारिके समे ।
 कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥
 सैन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा जिल्पकारिका ।
 असिक्री स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन पुग्चारिणी ॥ १८ ॥
 वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाऽथ सा जनैः ।
 सत्कृता वारमुख्या स्यात्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

शूद्रकी शूद्रजातिवाली स्त्रीका है । आभीरी, महाशूद्रा ये दो नाम गोपालिका स्त्रीके हैं । जातिमें और पुयोगमें महाशूद्रा ऐसाही रूप बनता है ॥ १३ ॥ अर्याणी, अर्या ये दो नाम वनेनीके हैं । क्षत्रिया, क्षत्रियाणी ये दो नाम क्षत्रिय जातिसे उत्पन्न हुई स्त्रीके हैं । उपाध्याया, उपाध्यायी ये दो नाम पढितानी स्त्रीके हैं । आचार्या यह नाम अपने आप भर्त्रोंका अर्थ कहनेवालीका है ॥ १४ ॥ आचार्यानी यह एक नाम आचार्यकी स्त्रीका है । अर्या यह एक नाम वैश्यकी स्त्रीका है । क्षत्रियो यह एक नाम क्षत्रियस्त्रीका है । उपाध्यायानी, उपाध्यायी ये दो नाम पढानेवालेकी स्त्रीके हैं । षोढा यह एक नाम पुरुषके लक्षणोंवाली स्त्रीका है ॥ १५ ॥ वीरपत्नी, वीरभार्या ये दो नाम वीरपुरुषकी स्त्रीके हैं । वीरमाता (ऋका-रान्त), वीरसू ये दो नाम वीरपुरुषकी माताके हैं । जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका ये चार नाम प्रसूता स्त्रीके हैं ॥ १६ ॥ कोटवी यह एक नाम नगी स्त्रीका है । दूती, सचारिका ये दो नाम दूतीके हैं । आधी बूढ़ी रंगे हुए कपड़ोंवाली और पतिसे रहित हुई इन तीन विशेषणोंवाली स्त्री का त्यागनी कहाती है ॥ १७ ॥ सैन्ध्री यह एक काम दूसरे कामजाजमें रहने वाली स्वतंत्र और बालोंका गूथना आदि कर्म करनेवाली स्त्रीका है । जो बूढ़ी न हो आश्रावर्तिनी हो और भीतरके स्नानमें रहनेवाली हो यह स्त्री असिक्री कहाती है ॥ १८ ॥ वारस्त्री, गणिका, वेश्या, रूपाजीवा ये चार

विप्रश्रिका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ।
 स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यापि ॥ २० ॥
 ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।
 श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥
 आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।
 गणिकादेस्तु गाणिक्यं गा॥र्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥
 पुनर्भूर्दीधिषूख्वा द्विस्तस्या दिधिषुः पतिः ।
 स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥
 कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सुभगासुतः ।
 सौभागिनेयः स्यात्पारस्त्रिणेयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥

नाम वेश्याके हैं । वारमुख्या यह एक नाम पुरुषोसे सत्कार करी गई वेश्याका है । कुट्टनी, शम्भली ये दो नाम कुटनी स्त्रीके हैं ॥ १९ ॥ विप्रश्रिका, ईक्षणिका, दैवज्ञा ये तीन नाम शुभ अशुभ निरूपण करनेवाली स्त्रीके हैं । रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, अवि, आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती ॥ २० ॥ ऋतुमती, उदक्या ये आठ नाम रजस्वला स्त्रीके हैं । यहांतक (स्त्री०) हैं । रजस् (सांत), पुष्प, आर्तव ये तीन (न०) नाम स्त्रीके रजके हैं । श्रद्धालु, दोहदवती ये दो (स्त्री०) नाम गर्भके वशसे अन्न आदि विशेषको चाहनेवाली स्त्रीके हैं । निष्कला, विगतार्तवा ये दो (स्त्री०) नाम मासिक धर्मसे रहित हुई स्त्रीके हैं ॥ २१ ॥ आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी, अन्तर्वत्नी गर्भिणी ये चार (स्त्री०) नाम गर्भवती स्त्रीके हैं । गाणिक्य यह एक (न०) नाम वेश्याओंके समूहका है । गाभिण यह एक (न०) नाम गर्भवतियोंके समूहका है । यौवत यह एक (न०) नाम युवतियोंके समूहका है ॥ २२ ॥ पुनर्भू, दिधिषू ये दो (स्त्री०) नाम दोवार विवाही स्त्रीके हैं । दिधिषु यह एक (पु०) नाम दो बार विवाही स्त्रीके पतिका है । अग्रेदिधिषू यह एक (पु०) नाम दोवार विवाही स्त्रीके पति द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हो सका है ॥ २३ ॥ कानीन यह एक (पु०) नाम कन्याके उत्पन्न हुए पुत्रका है । सुभगासुत, सौभागिनेय ये दो (पु०) नाम सुभगाके पुत्रके हैं । पारस्त्रिणेय यह एक (पु०) नाम दूसरेकी स्त्रीसे उत्पन्न हुए

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्वसुः ।
 सुतो मातृष्वसुश्चैव वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
 अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ।
 कौलटेरः कौलटेयो भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
 तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।
 आत्मजस्तनयः सनुः सुतः पुत्रः स्त्रिया तन्मी ॥ २७ ॥
 आहुर्दुहितर मर्वेऽपत्यं तोकं तयोः मग्ने ।
 स्वजाते त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥
 जनयित्री प्रसूमाता जननी भगिनी स्वसा ।
 ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥
 भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।
 प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

पुत्रका है ॥ २४ ॥ पैतृष्वसेय, पैतृष्वस्त्रीय ये दो (पु०) नाम भुआके पुत्रके है । मातृष्वसेय, मातृष्वस्त्रीय ये दो (पु०) नाम माताकी बहनके पुत्रके है । वैमात्रेय यह एक (पु०) नाम पिताकी दूसरी स्त्रीके पुत्रका है ॥ २५ ॥ बान्धकिनेय, बन्धुल, असतीसुत, कौलटेर, कौलटेय ये पाँच (पु०) नाम कुलटा स्त्रीके पुत्रके है ॥ २६ ॥ भिक्षुके लिये कुलीमें विचरनेवाली सती स्त्री हो उसका पुत्र कौलटिनेय, कौलटेय इन दो (पु०) नामोंसे प्रसिद्ध है । आत्मज, तनय, सनु, सुत, पुत्र ये पाँच (पु०) नाम पुत्रके है । आत्मजा, तनया, सनु, सुता, पुत्री ॥ २७ ॥ दुहिता ये छ (स्त्री०) नाम पुत्रीके है । अपत्य, तोक ये दो (पु०) नाम सत्तानके है । औरस, उरस्य ये दो (पु०) नाम अपनी जातिही विवाही हुई स्त्रीमें अपने सत्ता शसे उपजे पुत्रके हैं । तात, जनक, पितृ (ऋकारान्त) ये तीन (पु०) नाम पिताके है ॥ २८ ॥ जनयित्री, प्रसू, मातृ (ऋकारान्त), जननी ये चार (स्त्री०) नाम माताके है । भगिनी, स्वसृ (ऋकारान्त) ये दो (स्त्री०) नाम बहनके है । ननान्द (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री०) नाम पतिकी बहन (ननन्द) का है । नप्त्री, पौत्री, सुतात्मजा ये तीन (स्त्री०) नाम पोतीके है ॥ २९ ॥ यातृ (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री०) नाम आपसमें दिवराणी जिठानीका है । प्रजावती, भ्रातृजाया ये दो

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः ।
 पितृभ्राता पितृव्यः स्यान्मातृभ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥
 श्यालाः स्युभ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवदेवरौ ।
 स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्याज्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ।
 मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥
 समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।
 सगोत्रवान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥
 ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ।
 धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तूपतिः समौ ॥ ३५ ॥

(स्त्री०) नाम भाईकी स्त्री (भौजाई) के हैं । मातुलानी, मातुली ये दो (स्त्री०) नाम मामाकी स्त्री (मामी) के हैं ॥ ३० ॥ श्वश्रू यह एक (स्त्री०) नाम पति और स्त्रीकी माता (सास) का है । श्वशुर यह एक (पु०) नाम पति और स्त्रीके पिता (ससुर) का है । पितृव्य यह एक (पु०) नाम पिताके भाई (चचा) का है । मातुल यह एक (पु०) नाम माताके भाई (मामा) का है ॥ ३१ ॥ श्याल यह एक (पु०) नाम अपनी स्त्रीके भाई (साले) का है । देव (ऋकारान्त), देवर ये दो (पु०) नाम देवर अर्थात् पतिके छोटे भाईके हैं । स्वस्त्रीय, भागिनेय ये दो (पु०) नाम बहनके पुत्र अर्थात् भानजेके हैं । जामातृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम पुत्रीके पति (जमाई) का है ॥ ३२ ॥ पितामह, पितृपितृ (ऋकारान्त) ये दो (पु०) नाम दादाके हैं । प्रपितामह यह एक (पु०) नाम पितामहके पिता (परदादा) का है । मातामह यह एक (पु०) नाम माताके पिता (नाना) का है । प्रमातामह यह एक (पु०) नाम मातामहके पिता (परनाना) का है । सपिण्ड, सनाभि ये दो (पु०) नाम सात पुरुष अवाधिकुलके हैं ॥ ३३ ॥ समानोदर्य, सोदर्य, सगर्भ्य, सहज ये चार (पु०) नाम एक मातासे उत्पन्न सगे भाईके हैं । सगोत्र, वांधव, ज्ञाति, बंधु, स्व, स्वजन ये छः (पु०) नाम अपने गोत्रवालेके हैं ॥ ३४ ॥ ज्ञातेय यह एक (न०) नाम ज्ञातियोंके समूहका है । बंधुता यह एक (स्त्री०) नाम बंधुओंके समूहका है । धव, प्रिय, पति,

अमृते जारज कुण्डो मृते भर्तारि गोलक ।
 भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ भ्रातराभौ ॥ ३६ ॥
 मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितरौ । -
 श्वश्रुश्वशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥
 दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ । -
 गर्भाशयो जरायुः स्याद्गुल्मश्च कल्मसश्चियाम् ॥ ३८ ॥
 सूतिमासो वैजननो गर्भो भ्रूण इमौ ममौ ।
 तृतीयाप्रकृतिः पण्ड ह्रीव पण्डो नपुसके ॥ ३९ ॥
 शिशुत्वं शैशवं बाल्य तारुण्य यौवन समे ।
 स्यात्स्थायिर तु वृद्धत्व वृद्धमंचेऽपि धार्यम् ॥ ४० ॥

भर्तृ (ऋकारान्त) ये चार (पु०) नाम पतिके ह । जार, उपपति ये दा (पु०) नाम जारपतिके हे ॥ ३६ ॥ कुण्ड यह एक (पु०) नाम पतिके बिना मग्नेपर जागसे उत्पन्न पुत्रका हे । गोलक यह एक (पु०) नाम पतिके मरने बाद जारमे उपजे पुत्रका हे । भ्रात्रीय, भ्रातृन ये दो (पु०) नाम भाईके पुत्र (भतीजे) के ह । भ्रातरी यह एक (पु०) नाम भाई बहनका हे । यही भगिनीशब्दका एक्शेष समास हा रहा है ॥ ३६ ॥ मातापितरौ, पितरौ, मातरपितरौ, प्रसूजनयितरौ ये चार (पु०) नाम माना पिता दोनोंके ह । श्वश्रुश्वशुरौ, श्वशुरौ ये दो (पु०) नाम सासु और ससुर दोनोंके ह । पुत्रौ यह एक (पु०) नाम पुत्रीपुत्रका है । यही एक्शेष समास है ॥ ३७ ॥ दम्पती, जम्पती, जायापती, भार्यापती ये चार (पु०) नाम स्त्रीपतिके ह । गर्भाशय (पु०), जरायु (पु०), गुल्म (न०) ये तीन नाम जेखे ह । कल्मस (पु० न०) यह एक नाम बीये और रक्तके समूहका है ॥ ३८ ॥ सूतिमास, वैजनन ये दो (पु०) नाम प्रसवमासके ह । गर्भ, भ्रूण ये दो (पु०) नाम गर्भके ह । तृतीयाप्रकृति (स्त्री०), पण्ड (पु०), ह्रीव, पण्ड (पु०), नपुंसक ये पांच नाम हिजडेके ह । तही ह्रीव और नपुंसक ये दोनों शब्द (पु० न०) ह ॥ ३९ ॥ शिशुत्वं, शैशवं, बाल्य ये तीन (न०) नाम बालक अवस्थाके ह । तारुण्य, यौवन ये दो (न०) नाम युवा अवस्थाके ह । स्थायिर, वृद्धत्व, वृद्धक ये तीन (न०) नाम उदात्तका ह ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ विस्त्रसा जरा ।
 स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनंधयी ॥ ४१ ॥
 बालरतु स्यान्माणवको वयस्यस्तरुणो युवा ।
 प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥
 वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।
 जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोवरजानुजाः ॥ ४३ ॥
 अमांसो दुर्बलश्छातो बलवान्मांसलोऽसलः ।
 तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥
 अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।
 केशवः केशिकः केशी बालिनो बालिभः समौ ॥ ४५ ॥
 विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।
 खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

पलित यह एक (न०) नाम बालआदिमें बुढापेसे सुपेदपनेका है । विस्त्रसा, जरा ये दो (स्त्री०) नाम बुढापेके हैं । उत्तानशया, डिम्भा, स्तनपा, स्तनंधयी ये चार (स्त्री०) नाम चूंचीसे दूध पीनेवाले बच्चेके हैं ॥ ४१ ॥ आगे तिलकालक शब्दतक सब शब्द (पु०) हैं । बाल, माणवक ये दो नाम बालकके हैं । वयस्य, तरुण, युवन् (नांत) ये तीन नाम युवाके हैं । प्रवयस् (सान्त), स्थविर, वृद्ध, जीन, जीर्ण, जरत् (तान्त) ये छः नाम बूढेके हैं ॥ ४२ ॥ वर्षीयस् (सान्त), दशमिन् (इन्नन्त), ज्यायस् (सान्त) ये तीन नाम अत्यन्त बूढेके हैं । पूर्वज, अग्रिय, अग्रज ये तीन नाम बड़े भाईके हैं । जघन्यज, कनिष्ठ, यवीयस् (सान्त); अवरज, अनुज ये पांच नाम छोटे भाईके हैं ॥ ४३ ॥ अमांस, दुर्बल, छांत ये तीन नाम दुर्बलके हैं । बलवत् (तान्त), मांसल, अंसल ये तीन नाम बलवानके हैं । तुन्दिल, तुन्दिभ, तुन्दिन् (इन्नन्त), बृहत्कुक्षि, पिचण्डिल ये पांच नाम बड़े पेटवालेके हैं ॥ ४४ ॥ अवटीट, अवनाट, अवभ्रट, नतनासिक ये चार नाम चपटी नाकवालेके हैं । केशव, केशिक, केशिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम सुन्दर बालवालेके हैं । बालिन, बालिभ ये दो नाम बुढापेसे ढीली हुई चामवालेके हैं ॥ ४५ ॥ विकलाङ्ग, अपोगण्ड ये दो नाम आदिसेही कम अंगोंवालेके हैं । खर्व, ह्रस्व, वामन ये तीन नाम बौनेके हैं । खरणस् (सान्त), खरणस ये दो

खुरणा* स्यात्खुरणस* प्रजु* प्रगतजानुकः ।

ऊर्ध्वजुर्ऊर्ध्वजानुः स्यात्सजु* सहतजानुकः ॥ ४७ ॥

स्यादेडे बधिरः कुब्जे गडुल* कुकुरे कुणि ।

पृश्निरल्पतनौ श्रोण* पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

वालिर केकरे खोडे खञ्जघ्निषु जरावरा* ।

जडुल* कालक* पिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥

अनामय स्यादारोग्य किञ्चित्सा रुम्प्रतिक्रिया ।

भेषजौषधभेषज्यान्वगदो जायुर्नित्यापि ॥ ५० ॥

स्त्री रुग्णज्ञा चोपतापरोगव्याधिगदामया* ।

क्षय शोषश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनस ॥ ५१ ॥

नाम तीक्ष्ण (सरल) नासि हावालेके है । विग्र, गतनासिक ये दो नाम नक-
टेने ह ॥ ४६ ॥ खुरणस (सान्त), खुरणस ये दो नाम खुरकी तरह नाक-
वालेके है । प्रजु, प्रगतजानुक ये दो नाम गोडोंमें बहुत अतरवालेके है ।
ऊर्ध्वजु, ऊर्ध्वजानु ये दो नाम ठहरनेसे गोडे ऊपरको रहे उसके ह । सजु,
सहतजानुक ये दो नाम मिले हुए गोडोंवालेके है ॥ ४७ ॥ एट, बधिर ये
दो नाम बहरेके है । कुब्ज, गडुल ये दो नाम कूबडेके है । कुरक, कुणि
ये दो नाम रोग आदिसे दूषित हुए हाथोंवालेके ह । पृश्नि, अल्पतनु ये
दो नाम छोटे शरीरवालेके है । श्रोण, पङ्गु ये दो नाम पङ्गुके ह । मुण्ड,
मुण्डित ये दो नाम शिर मुंडे हुएके है ॥ ४८ ॥ वालिर, केकर ये दो नाम
कायरा (एंचेताने) के है । खोडे खज ये दो नाम लगडेके हैं । उत्तान
शय शब्दसे आदि ले सजशब्दपर्यंत शब्द वाच्यलिङ्गी अर्थात् तीनों लिङ्गी
हैं । जडुल, कालक, पिप्लु ये तीन नाम शरीरमें काले रहसन्नालेके है ।
तिलक, तिलकालक ये दो नाम शरीरमें उपजे तिलके है यहाँतक (पु०)
है ॥ ४९ ॥ अनामय, आरोग्य ये दो (न०) नाम आरोग्यके हैं । चि-
क्त्तिता, रुम्प्रतिक्रिया ये दो (स्त्री०) नाम रोगके इलाजके हैं । भेषज
(न०), औषध (न०), भेषय (न०), अगद (पु०), जायु (पु०)
ये पाँच नाम औषधके हैं ॥ ५० ॥ रुज् (जान्त), रुजा, उपताप, रोग,
व्याधि, गद, आमय ये सात नाम रोगके हैं । रुज् और रुजा (स्त्री०)
शोष (पु०) है । क्षय, शोष, यक्ष्मा (नान) ये तीन (पु०) नाम क्षयी

स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।
 शोफस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥
 किलाससिध्मे कच्छ्रां तु पामपामे विचर्चिका ।
 कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटकः स्त्रियाम् ॥ ५३ ॥
 व्रणोऽस्त्रियामीर्मरुः क्लीवे नाडीव्रणः पुमान् ।
 कोठो मण्डलकं कुष्ठश्चित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥
 आनाहस्तु निबन्धः रयाद् ग्रहणीरुक् प्रवाहिका ।
 प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥
 व्याधिभेदा विद्राधिः स्त्री ज्वरमेहभगंदराः ।
 “ श्लीपदं पादवलमीकं केशघ्नस्तिवन्द्रलुप्तकः । ”
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

रोगके हैं । प्रतिश्याय, पीनस ये दो (पु०) नाम पीनसरोगके हैं ॥ ५१ ॥
 क्षुत् (तान्त स्त्री०) क्षुत (न०), क्षव (पु०) ये तीन नाम छींकके हैं ।
 कास, क्षवथु ये दो (पु०) नाम खांसीके हैं । शोफ, श्वयथु, शोथ ये तीन
 (पु०) नाम सूजनेके हैं । पादस्फोट (पु०), विपादिका (स्त्री०)
 ये दो नाम पादस्फोट (बिवाई) के हैं ॥ ५२ ॥ किलास, सिध्मन्
 (नान्त) ये दो (न०) नाम सींपरोगके हैं । कच्छ्र, पामन् (नान्त),
 पामा, विचर्चिका ये चार नाम खाजके हैं । तहां पामन्शब्द
 (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । कण्डू, खर्जू, कण्डूया ये तीन (स्त्री०)
 नाम खुजलीके हैं । विस्फोट (पु०), पिटक (पु० स्त्री०) ये दो नाम फो-
 डेके हैं । (स्त्री०) में पिटका (फूँसी) ऐसा होता है ॥ ५३ ॥ व्रण,
 ईर्म, अस्स ये तीन नाम घावके हैं । तहां व्रणशब्द (पु० न०) शेष शब्द
 (न०) हैं । नाडीव्रण यह एक (पु०) नाम नाडीव्रण (नसूर) का है ।
 कोठ (पु०), मण्डलक (न०) ये दो नाम गजकर्ण (कुष्ठ) के हैं ।
 कुष्ठ, चित्र ये दो (न०) नाम श्वेतकुष्ठके हैं । दुर्नामक, अर्शस् (सान्त)
 ये दो (न०) नाम बवासारके हैं ॥ ५४ ॥ आनाह, निबन्ध ये दो (पु०)
 नाम मल मूत्र रुकने अर्थात् कब्जके हैं । ग्रहणीरुक् (जान्त), प्रवाहिका
 ये दो (स्त्री०) नाम सग्रहणीके हैं । प्रच्छर्दिका (स्त्री०), वमि (स्त्री०)
 वमथु (पु०) ये तीन नाम छर्दिके हैं ॥ ५५ ॥ विद्राधि यह एक (स्त्री०)

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यो चिकित्सके ।

वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

ग्लानग्लास्तू आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।

आतुरोऽभ्यामितोऽभ्यान्त समौ पामनकच्छुरो ॥ ५८ ॥

ददृणो ददुरोगी स्यादर्शोरागयुतोऽर्शसः ।

वातकी वातरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥

स्युः क्षिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लः क्षिन्नेऽक्षिण चाप्यमी ।

उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मल श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

न्युञ्जो भुमे रुजा वृद्धनामौ तुन्दिलतुन्दिमौ ।

फिळासी सिध्मलोऽन्गोऽहद् मूर्च्छाले मूर्तमूर्छितौ ॥ ६१ ॥

नाम विद्रधिरोगका है । ज्वर यह एक (पु०) नाम ज्वरका है । मेह यह एक (पु०) नाम प्रमहका है । भगदर यह एक (पु०) नाम भगदरका है । “ स्त्रीपद, पादवल्मीक ये दो (न०) नाम स्त्रीपदके हैं । केशन, इन्द्रलुप्तक ये दो (पु०) नाम इन्द्रलुप्तके हैं । ” अश्मरी (स्त्री०) यह एक नाम पथरीरोगका है । मूत्रकृच्छ्र यह एक (न०) नाम मूत्रकृच्छ्ररोगका है । शूक्रगण्डसे पूर्व याने मूर्छितपर्यंत शब्द वाच्यलिंगी (त्रिलिङ्गी) है ॥ ५६ ॥ रोगहारिन्, अगदंकार, भिषज् (जान्त), वैद्य, चिकित्सक ये पाँच नाम वैद्यके हैं । वार्त्त, निरामय, कल्य ये तीन नाम रोगसे रहित हुए मनुष्यके हैं । उल्लाघ यह एक नाम रोगसे मुक्त हुए मनुष्यका है ॥ ५७ ॥ ग्लान, ग्लास्तु ये दो नाम रोग आदिके वशकरके आनन्दरहितका है । आमयाविन् (इन्नन्त), विकृत, व्याधित, अपटु, आतुर, अभ्यामित, अभ्यात ये सात नाम रोगीके हैं । पामन, कच्छुर ये दो नाम पामरोगीके हैं ॥ ५८ ॥ ददृण, ददुरोगिन् (इन्नन्त) ये दो नाम दादरोगीके हैं । अर्शस यह एक नाम बवासीर रोगीका है । वातकिन् (इन्नन्त), वातरोगिन् (इन्नन्त) ये दो नाम वातरोगीके हैं । सातिसार, अतिसारकिन् ये दो नाम अतिसार रोगीके हैं ॥ ५९ ॥ क्षिन्नाक्ष, चुल्ल, चिल्ल, पिल्ल ये चार नाम चिपड़ी (खुदी) आँखोंवालेके हैं । उन्मत्त, उन्मादवत् (मत्तवन्त) ये दो नाम उन्मादरोगीके हैं । श्लेष्मल, श्लेष्मण, कफिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम कफरोगीके हैं ॥ ६० ॥ न्युञ्ज यह एक नाम रोगकरके अधोमुख हुए

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।

मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् ।

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

रुधिरेऽसृगलोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ।

बुक्काग्रमांसं हृदयं हन्मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या नाडी तु धमनिः शिरा ।

तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोर्दं किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

अन्त्रं पुरीतत् गुल्मस्तु प्लीहा पुंस्यथ वस्रसा ।

स्नायुः स्त्रियां कालखण्डयकृत्नी तु समे इमे ॥ ६६ ॥

कुबडेका है । वृद्धनाभि, तुंदिल, तुंदिभ ये तीन नाम वात आदिसे ऊंची हुई नाभिवालेके हैं । किलासिन (इवन्त), सिध्मल ये दो नाम सीपरो-गीके हैं । अंध, अदृश (शान्त) ये दो नाम अंधेके हैं । मृच्छाल, मूर्त्त, मूर्च्छित ये तीन नाम मृच्छावालेके हैं ॥ ६१ ॥ शुक्र, तेजस् (सान्त), रेतस् (सान्त) बीज, वीर्य, इन्द्रिय ये छः (न०) नाम वीरजके हैं । मायु (पु०), पित्त (न०) ये दो नाम पित्तके हैं । कफ, श्लेष्मन् (नान्त) ये दो (पु०) नाम कफके हैं । त्वच् (चान्त), असृग्धरा ये दो (स्त्री०) नाम खालके हैं ॥ ६२ ॥ पिशित, तरस, मांस, पलल, क्रव्य, आमिष ये छः (न०) नाम मांसके हैं । उत्तप्त (न०), शुष्कमांस (न०), वल्लूर (त्रि०) ये तीन नाम सूखे मांसके हैं ॥ ६३ ॥ रुधिर, असृज्, लोहित, अस्त्र, रक्त, क्षतज, शोणित ये सात (न०) नाम रक्तके हैं । बुक्का (त्रि०), अग्रमांस (न०) ये दो नाम हृदयके भीतर कमलके आकारवाले मांसभेदके हैं । हृदय, हृत् ये दो (न०) नाम हृदयके हैं । मेदस् (न०), वपा (स्त्री०), वसा (स्त्री०) ये तीन नाम मांसके उपजे स्नेह (चर्वी) के हैं ॥ ६४ ॥ मन्या यह एक (स्त्री०) नाम नाडके पिछले भागका है । नाडी, धमनी, शिरा ये तीन (स्त्री०) नाम नाडीके हैं । तिलक, क्लोमन् (नान्त) ये दो (न०) नाम मांसके पिडविशेषके हैं । मस्तिष्क, गोर्दं ये दो (न०) नाम मस्तकमें उपजे घृतके आकारवाले चिकनाहटके हैं । किट्ट (न०), मल (पु० न०) ये दो नाम मलके हैं ॥ ६५ ॥ अंत्र (न०), पुरीतत् (पु० न०) ये दो

सृणिका स्पन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।
 " नासामलं तु सिद्धानं पिञ्जूपं कर्णयोर्मलम् । "
 मूत्र प्रस्राव उच्चारवस्करो शमल शकृत् ॥ ६७ ॥
 पुरीष गूथवर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ स्त्रियौ ।
 स्यात्कर्परं कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥
 म्याच्छरीरास्थि न कङ्कालं पृष्ठास्थि न तु कशेरुका ।
 शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पशुका ॥ ६९ ॥
 अङ्ग प्रतीकोऽयवोऽपघनोऽथ क्लेश्वरम् ।
 गात्रं यष्टु सहनन शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥
 कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रिया मूर्तिस्तनुस्तनूः ।
 पादाः प्रपद पादः पदोऽत्रिंश्रणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

नाम आतके है। गुल्म, प्लीहव (नान्त) ये दो (पु०) नाम घाई को खमें स्थित मांसपिंड अर्थात् तिल्लीके हैं। उन्मसा, स्त्रायु ये दो (स्त्री०) नाम अग प्रथम संधि इन्हींके बन्धनरूप नसके है। कालखट, यष्टुत् ये दो (न०) नाम दाहिनी कोखके मांसके पिंडके हैं ॥ ६६ ॥ सृणिका, स्पन्दिनी, लाला ये तीन (स्त्री०) नाम लागके हैं। दूषिका यह एक (स्त्री०) नाम नेत्रोंकी गीढका है। " सिद्धान यह एक (न०) नाम नासके मलका है। पिञ्जूप यह एक (न०) नाम कानोंके मलका है। मूत्र (न०) प्रस्राव (पु०) ये दो नाम पिसाबके है। उच्चार (पु०), अपस्क (पु०), शमल (न०), शकृत् (न०) ॥ ६७ ॥ पुरीष (न०) गय, वर्चस्क, विष्टा विश ये नम नाम विष्टाके ह। तहां गूथ और वर्चस्कशब्द (पु० न०), विष्टा और विशशब्द (स्त्री०) हैं। कपेर (पु०), कपाल ये दो नाम सोपडीके ह। यहां कपालशब्द (पु० न०) है। कीकस, कुल्य, अस्थि ये तीन (न०) नाम हट्टीके है ॥ ६८ ॥ कपाल यह एक (पु०) नाम शरीरकी हड्डियोंके पिंडोका है। कशेरुका यह एक (स्त्री०) नाम पीठकी हड्डीका है। करोटि यह एक (स्त्री०) नाम शिखी हड्डीका है। पशुका यह एक (स्त्री०) नाम पसलीकी हड्डीका है ॥ ६९ ॥ अग, प्रतीक, अपघन, अपघन ये चार नाम अंगों हैं। अगशब्द (न०) शेष (पु०) ह। कलेश्वर, गात्र, यष्टु (सात), सहनन, शरीर, वर्ष्म (नान्त), विग्रह ॥ ७० ॥ काय, देह, क्लीब, पुंस, तनू ये चार नाम शरीरके हैं। तहां कलेश्वरमे वर्ष्म

तद्ग्रन्थी घुटिके, गुल्फौ पुमान्पार्श्विणस्तयोरधः ।

जंघा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥

सक्थि क्लीबे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वङ्गणः ।

गुदं त्वपानं पायुर्ना वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

कटो नाश्रोणिफलकं कटिः श्रोणिः ककुब्जती ।

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥

कूपकौ तु नितंबस्यौ द्वयद्गोत्रे कुकुन्दरे ।

स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थौ वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥

भगं योनिर्द्वयोः शिशो मेढ्रो मेहनशेफसी ।

मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

वृश्चन्दतक (न०) हैं। विग्रह और काय (पु०) हैं, देहशब्द (पु० न०) है, मूर्ति, तनु, तनू ये तीनों शब्द (स्त्री०) हैं। पादाग्र, प्रपद् ये दो (न०) नाम पैरके अग्रभागके हैं। पाद, पत्, अग्रि, चरण ये चार नाम पैरके हैं। तहां चरणशब्द (पु० न०) शेष (पु०) हैं ॥ ७१ ॥ घुटिका (स्त्री०), गुल्फ (पु० न०) ये दो नाम टकनेके हैं। पार्श्विण यह एक (पु०) नाम एडीका है। जंघा, प्रसृता ये दो (स्त्री०) नाम जांघके हैं। जानु, ऊरुपर्वर (नांत), अष्ठीवत् (मस्वंत) ये तीन (पु० न०) नाम गोडाकी संधि (घुटने) के हैं ॥ ७२ ॥ सक्थि (न०), ऊरु (पु०) ये दो नाम गोडाके ऊपर भागके हैं। वङ्गण यह एक (पु०) नाम ऊरुकी संधिका है। गुद (न०), अपान (न०), पाय (पु०) ये तीन नाम गुदाके हैं। वस्ति यह एक (पु० स्त्री०) नाम नाभिके नीचे स्थानका है ॥ ७३ ॥ कट यह एक (पु०) नाम कटिके फलकका है। कटि, श्रोणि, ककुब्जती ये तीन (स्त्री०) नाम कटिके हैं। नितम्ब यह एक (पु०) नाम स्त्रीकी कटिके पश्चाद्भागका है। जघन यह एक (न०) नाम स्त्रीकी कटिके अग्रभागका है ॥ ७४ ॥ कुकुन्दर यह एक (न०) नाम पृष्ठवंशसे अधोभागमें विद्यमान गत्तीका है। स्फिच (स्त्री०), कटिप्रोथ (पु०) ये दो नाम कटिमें स्थित मांसके पिंडों अथात् कूलोंके हैं। उपस्थ यह एक (पु०) नाम योनि और लिङ्गका है ॥ ७५ ॥ भग (न०), योनि (पु० स्त्री०) ये दो नाम स्त्रियोंकी योनिके हैं। शिश (पु०), मेढ्र (पु० न०), मेहन (न०),

पिचण्डकुक्षी जठरोदर तुन्द स्तनौ कुचौ ।

चुचुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

उरौ वत्स च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनोः ।

स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री सन्धी तस्यैव जनुणी ॥ ७८ ॥

बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।

मध्यम चावलग्न च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

भुजबाहु प्रवेष्टो दोः स्यात्क्रफोणिस्तु कूर्पर ।

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

मणिवन्धादाकानिष्ठं कस्य कर्मो बहिः ।

पञ्चशाखं शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

शेफस् (न०) ये चार नाम लिगके हैं । मुष्क, अटकोश, वृषण ये तीन (पु०) नाम अटकोशके हैं । त्रिम्ब यह एक (न०) नाम पीठके बशके नीचे तीन हड्डियोंकरके घटित स्थानका है ॥ ७६ ॥ पिचण्ड (पु०), उक्षि (पु०) जठर (पु० न०), उदर (न०), तुद (न०) ये पाँच नाम पेटके हैं । स्तन, कुच ये दो (पु०) नाम चूचियोंके हैं । चुचुक (पु० न०), कुचाग्र (न०) ये दो नाम चूचियोंके अग्रभागके हैं । क्रोड, भुजान्तर ॥ ७७ ॥ उरस् (सान्त), वत्स, वक्षस् (सान्त) ये पाँच नाम छातीके हैं । तहां क्रोडशब्द (स्त्री० न०) शेष (न०) हैं । पृष्ठ यह एक (न०) नाम शरीरकी पीठका है । स्कन्ध (पु०), भुजशिरस् (सान्त न०), अस् (पु० न०) ये तीन नाम कंधेके हैं । जनु यह एक (न०) नाम कंधोंकी संधि अर्थात् जोतीका है ॥ ७८ ॥ बाहुमूल (न०), उक्ष (पु०) ये दो नाम कोरके हैं । पार्श्व यह एक (पु० न०) नाम दोनों कानोंके नीचेकी जगहका है । मध्यम, अवलग्न, मध्य ये तीन (पु० न०) नाम कमरके हैं । भुज बाहु शब्द (स्त्री० पु०) है ॥ ७९ ॥ भुज (भुजा), बाहु, प्रवेष्ट, दोस् (सान्त) ये चार नाम भुजाके हैं । भुज बाहु शब्द (पु० स्त्री०) शेष (पु०) है । कफोणि, कूर्पर ये दो (पु० स्त्री०) नाम कुहनीके हैं । प्रगण्ड यह एक (पु०) नाम कुहनीके ऊपरले स्थानका है । प्रकोष्ठ यह एक (पु०) नाम कुहनीके नीचे भागका है ॥ ८० ॥ मणिवन्ध यह एक (पु०) नाम हाथ और प्रकोष्ठकी संधिका

अंगुलयः करशाखाः स्युः पुस्यंगुष्ठः प्रदेशिनी ।

मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः ।

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृतांगुलौ ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ त्रामदक्षिणौ ।

पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावज्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तौ मुष्ट्या तु बद्ध्या ।

स रत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

है । करम यह एक (पु०) नाम मणिबंधसे लेकर कनिष्ठिका अंगुलीपर्यंत हाथके बाहरले भागका है । पञ्चशाख, शय, पाणि ये तीन (पु०) नाम हाथके हैं । तर्जनी, प्रदेशिनी ये दो (स्त्री०) नाम अंगूठेके समीपकी अंगुलीके हैं ॥ ८१ ॥ अंगुली, करशाखा ये दो (स्त्री०) नाम अंगुली-मात्रके हैं । अंगुष्ठ यह एक (पु०) नाम अंगूठेका है । प्रदेशिनी (तर्जनी) यह एक (स्त्री०) नाम अंगूठेके पासकी अंगुलीका है । मध्यमा यह एक (स्त्री०) नाम बीचकी अंगुलीका है । अनामिका यह एक (स्त्री०) नाम छोटी अंगुलीके समीपवाली अंगुलीका है । कनिष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम छोटी अंगुलीका है । ये अंगुली क्रमसे जाननी चाहिये ॥ ८२ ॥ पुनर्भव (पु०), कररुह (पु०), नख (पु० न०), नखर (पु० न०) ये चार नखके हैं । प्रादेश यह एक (पु०) नाम तर्जनी अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तारका है । ताल यह एक (पु०) नाम मध्यमा अंगुलीसे अंगूठेपर्यंतका है । गोकर्ण यह एक (पु०) नाम अनामिका अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तारका है ॥ ८३ ॥ वितस्ति (पु० स्त्री०), द्वादशांगुल (पु०) ये दो नाम कनिष्ठिका अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तारके हैं । चपेट, प्रतल, हस्त ये तीन (पु०) नाम विस्तृत हुई अंगुलियोंवाले हाथके हैं ॥ ८४ ॥ संहतल, प्रतल ये दो (पु०) नाम दोनों हाथोंके मिलनेका है । प्रसृति यह एक (पु०) नाम पस्तेका है । दो प्रसृतियोंकी अंजलि होती है । तहां अंजलिशब्द (पु०) है ॥ ८५ ॥ हस्त यह एक (पु०) नाम अंगुलीके अग्रभागसे कुहनीपर्यंत

व्यामो बाहोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।

ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषात्रिषु ॥ ८७ ॥

कण्ठो गलोऽथ ग्रीवाया शिरोधिः कन्धरेत्यापि ।

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥

वक्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।

ह्रीवे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।

अधस्ताच्चिबुकं गण्डौ कपोलौ तत्परा हनुः ॥ ९० ॥

रदना दशना दन्ता रदास्तालुः तु काकुदम् ।

रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥ ९१ ॥

लम्बे हाथका है । रस्ति यह एक (पु० स्त्री०) नाम बधी हुई मुट्ठीसाहित हाथका है । अरस्ति यह एक (पु० स्त्री०) नाम छोटी अंगुलीसे वर्जित हुए मुट्ठीसाहित हाथका है ॥ ८६ ॥ व्याम यह एक (पु०) नाम हाथों साहित बाहुओंके मध्यका है । पौरुष यह एक नाम ऊपरको लम्बे हाथ किये मनुष्यके प्रमाणका है और त्रिलिङ्गी है ॥ ८७ ॥ कठ, गल ये दो (पु०) नाम कठके हैं । कठशब्द (त्रि०) भी है । ग्रीवा, शिरोधि, वधरा ये तीन (स्त्री०) नाम नाटके हैं । कम्बुग्रीवा यह एक (स्त्री०) नाम तीन रेखाओंसे युत हुई नाटका है । अवटु (पु० स्त्री०), घाट्टा (स्त्री०), कृकाटिका (स्त्री०) ये तीन नाम नाट और शिरकी सधिके पश्चाद्भागके हैं ॥ ८८ ॥ वक्त्र, आस्य, वदन, तुण्ड, आनन, लपन, मुख ये सात (न०) नाम मुखके हैं । घ्राण, गन्धवहा, घोणा, नासा, नासिका ये पांच नाम नासिकाके हैं । घ्राणशब्द (न०) शेष (स्त्री०) है ॥ ८९ ॥ ओष्ठ (पु०), अधर (पु०), रदनच्छद (पु०), दशनवासस् (सान्त न०) ये चार नाम ओठके हैं । चिबुक यह एक (न०) नाम ओठके नीचे भागका है । गण्ड, कपोल ये दो (पु०) नाम गालके हैं । हनु यह एक (पु० स्त्री०) नाम ठोड़ीका है ॥ ९० ॥ रदना, दशन, दन्त, रदा ये चार (पु०) नाम दाँतोंके हैं । दशनशब्द (न०) भी है । तालु, काकुद ये दो (न०) नाम तालुघाते हैं । रसज्ञा, रसना, जिह्वा ये तीन (स्त्री०) नाम जीभके हैं । सृक्किणी यह एक (स्त्री०) नाम दोनों ओठोंके प्रान्त

ललाटमलिकं गोधिरुर्ध्वं दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ।

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्षः कनीनिका ॥ ९२ ॥

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ।

दृग्दृष्टी चास्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥ ९३ ॥

अपाङ्गी नेत्रयोस्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्ध्ना ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

तद्वन्दे कैशिकं कैश्यमलकाशूर्णकुन्तलाः ।

ते ललाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

कवरी केशवेशोऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः ।

शिखा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु सदा जटा ॥ ९७ ॥

भागका है ॥ ९१ ॥ ललाट (न०), अलिक (न०), गोधि (पु०) ये तीन नाम माथेके हैं। भ्रू यह एक (स्त्री०) नाम भ्रुकुटिका है। कूर्च यह एक (पु० न०) नाम भ्रुकुटियोंके मध्यभागका है। तारका यह एक (स्त्री०) नाम आँखके तारेका है ॥ ९२ ॥ लोचन, नयन, नेत्र, ईक्षण, चक्षुस्, अक्षि, दृश् (शान्त), दृष्टि ये आठ नाम नेत्रके हैं। तहाँ दृश्, दृष्टिशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं। अस्रु, नेत्राम्बु, रोदन, अस्त्र, अश्रु ये पाँच (न०) नाम आँसुके हैं ॥ ९३ ॥ अपाङ्ग यह एक (पु०) नाम नेत्रोंके अंतका है। कटाक्ष यह एक (पु०) नाम अपाङ्गसे देखने और चेष्टा करनेका है। कर्ण (पु०), शब्दग्रह (पु०) श्रोत्र (न०), श्रुति (स्त्री०), श्रवण (पु० न०), श्रवस् (शान्त न०), ये छः नाम कानके हैं ॥ ९४ ॥ उत्तमाङ्ग, शिरस् (शान्त), शीर्ष, मूर्ध्व, मस्तक ये पाँच नाम शिरके हैं। तहाँ मूर्ध्वशब्द (पु०) है मस्तकशब्द (पु० न०) है शेष (न०) हैं। चिकुर, कुन्तल, बाल, कच, केश, शिरोरुह ये छः (पु०) नाम बालोंके हैं ॥ ९५ ॥ कैशिक, कैश्य ये दो (न०) नाम बालोंके समूहके हैं। अलक, पूर्णकुन्तल ये दो (पु०) नाम टेढ़े बालोंके हैं। भ्रमरक यह एक (पु०) नाम ललाटपर झुके बालोंका है। काकपक्ष, शिखण्डक ये दो (पु०) नाम जुलफोंके हैं ॥ ९६ ॥ कवरी (स्त्री०), केशवेश (पु०)

वेणि० प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ।
 पाश० पक्षश्च दस्तश्च कलापार्या कचात्परे ॥ ९८ ॥
 तनूरुह रोम लोम तद्दृष्टौ श्मश्रु पुमुखे ।
 आकल्पवेपौ नेपथ्य प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥
 दशैते त्रिष्वलकर्ताऽलकरिण्युश्च मण्डित० ।
 प्रसाधितोऽलकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥
 विभ्राद् भ्राजिष्णुरोचिष्णू भूषणं स्यादलक्रिया ।
 अलंकारस्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥
 मण्डन चाथ मुकुट किरीट पुनपुसकम् ।
 चूडामणिः शिरोरत्न तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥

ये दो नाम बाल बांधनेकी रचनाके हे । धम्मिल्ल यह एक (पु०) नाम मोती आदिसे गुथे हुए बालोंके समूहका है । शिखा, चूटा, केशपाशी ये तीन (स्त्री०) नाम चौटीके हैं । सटा, जटा ये दो (स्त्री०) नाम जटाके हैं ॥ ९७ ॥ वेणि, प्रवेणी ये दो (स्त्री०) नाम बालोंकी मीठीके हैं । शीर्षण्य, शिरस्य ये दो (पु०) नाम सुन्दर बालोंके हैं । कचपाश, केशपाश, केशपक्ष, कुन्तलहस्त ये चार (पु०) नाम केशसमूहके वाचक हैं ॥ ९८ ॥ तनूरुह, रोमन् (नान्त), लोमन् (नान्त) ये तीन (न०) नाम रोमके हैं । तनूरुहशब्द (पु०) भी है । श्मश्रु (नात) यह एक (न०) नाम पुस्पकी ढाढीका है । आकल्प (पु०), वेप (पु०), नेपथ्य (न०), प्रतिकर्मन् (न०), प्रसाधन (न०) ये पांच नाम अलकृतकी शोभाके हैं ॥ ९९ ॥ आगेके अलङ्कर्ता आदि वक्ष्यमाण दश शब्द वाच्यलिंगी हैं । अलङ्कर्तृ, अलकरिण्य ये दो नाम अलङ्कर्ताके हैं । मण्डित, प्रसाधित, अलकृत, भूषित, परिष्कृत ये पांच नाम अलकृतके हैं ॥ १०० ॥ विभ्राज्, भ्राजिष्णु, रोचिष्णु ये तीन नाम अस्यत शोभावालेके हैं । भूषण (न०), अलक्रिया (स्त्री०) ये दो नाम भूषणक्रियाके हैं । अलंकार (पु०) आभरण (न०), परिष्कार (पु०), विभूषण ॥ १०१ ॥ मण्डन (दो न०) ये पांच नाम गहनेके हैं । मुकुट (न०), किरीट (पु० न०) ये दो नाम मुकुटके हैं । चूडामणि (पु०), शिरोरत्न (न०) ये दो नाम शिरकी मणिके हैं । तरल यह एक (पु०) नाम हारके मध्यगत नायकमणिका है

वालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ।

कर्णिका तालपत्रं स्यात्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।

स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

हारभेदा यष्टिभेदाद्गुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥

अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।

सैव नत्रक्षमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ।

केयूरमङ्गदं तुल्ये अंगुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

॥१०२॥ वालपाश्या, पारितथ्या ये दो (स्त्री०) नाम सीमंतभूषणके हैं । पत्रपाश्या, ललाटिका ये दो (स्त्री०) नाम माथेके भूषण अर्थात् वैनके हैं । कर्णिका यह एक (स्त्री०) नाम कानके भूषणका है । तालपत्र यह एक (न०) नाम कानोंमें पहननेके सुवर्णके पत्तोंका है । कुण्डल, कर्णवेष्टन ये दो (न०) नाम कानोंके कुण्डलके हैं ॥१०३॥ ग्रैवेयक (न०), कंठभूषा (स्त्री०) ये दो नाम कंठके भूषणके हैं । लम्बन (न०), ललन्तिका (स्त्री०) ये दो नाम कंठके हैं । प्रालम्बिका यह एक (स्त्री०) नाम सोनेके कंठीका है । उरःसूत्रिका यह एक (स्त्री०) नाम मोतियोंकी कंठीका है ॥१०४॥ हार (पु०), मुक्तावली (स्त्री०) ये दो नाम मोतियोंके हारका हैं । देवच्छन्द यह एक (पु०) नाम सौ लडोंवाले मोतियोंके हारका है । गुच्छ यह एक (पु०) नाम लताके भेदसे बत्तीस लडोंके हारका है । गुच्छार्ध यह एक (पु०) नाम चौबीस लडोंवाले हारका है । गोस्तन यह एक (पु०) नाम चौसठ लडोंवाले हारका है ॥ १०५ ॥ अर्धहार यह एक (पु०) नाम बारह लडोंवाले अर्धहारका है । माणवक यह एक (पु०) नाम तीस लडोंवाले हारका है । एकावली यह एक (स्त्री०) नाम एक लडवाले हारका है । नक्षत्रमाला यह एक (स्त्री०) नाम सत्ताईस मोतियोंसे बनाये गये उसी एकावली हारके हैं ॥ १०६ ॥ आवापक (पु०), पारिहार्य (पु०), कटक (पु० न०), वलय (पु० न०) ये चार नाम पहुँचीके हैं । केयूर, अंगद ये दो (पु० न०) नाम बानूवन्दके हैं । अंगुलीयक (पु० न०), ऊर्मिका (स्त्री०) ये दो नाम

साक्षरागुलिमुद्रा स्यात्ककणं करभूषणम् ।
 स्त्रीकट्या मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥
 क्लीवे सारसन चाथ पुस्कट्या शृङ्खल त्रिषु ।
 पादागुद तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽश्वियाम् ॥ १०९ ॥
 हसक, पादकटक, किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।
 त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोर्निर्देश त्रिषु ॥ ११० ॥
 बालकं क्षौमादि फाल तु कार्पासं वादरं च तत् ।
 कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्गवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥
 अनाहत निष्प्रवाणि तन्त्रक च नवाम्बरम् ।
 तत्स्यादुद्रमनीय यच्चैतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥
 पत्रोर्णं धीतकौशेयं बहुमूल्य महाधनम् ।
 क्षौम दुकूल स्याद्दे तु निवीत प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३ ॥

अगूठी और छल्लेके हैं ॥ १०७ ॥ अगुलिमुद्रा यह एक (स्त्री०) नाम
 राम आदिके नामसे जड़ी हुई अगुठीका है । ककण (पु० न०), कर
 भूषण (न०) ये दो नाम हाथोंके कड़वांके हैं । मेखरा, काञ्ची, सप्तकी,
 रशना ॥ १०८ ॥ सारसन ये पाँच नाम स्त्रियोंकी तागढीके हैं । सारसन
 शब्द (न०) शेष (स्त्री०) है । शृङ्खल यह एक नाम पुरुषकी तागढीका
 है । तहाँ शृङ्खलशब्द त्रिलिङ्गी है । पादागुद (न०), तुलाकोटि (स्त्री०),
 मञ्जीर (पु० न०), नूपुर (पु० न०) ॥ १०९ ॥ हसक (पु०), पाद-
 कटक (पु०) ये छ' नाम पैरोंका झाझणा वा पाजेबके हैं । किङ्किणी, क्षुद्रघ-
 ण्टिका ये दो (स्त्री०) नाम घुघरूवाली तागढीके हैं । त्वक्, फल, कृमि,
 रोम ये चारों वस्त्रोंकी योनि हैं । बालकसे निष्प्रवाणिपर्यंत दश शब्द त्रिलि-
 ङ्गी हैं ॥ ११० ॥ बालक अर्थात् बालकसे बना यह एक नाम बालकके वस्त्रका
 है । क्षौम अर्थात् अतसी आदिसे बना वस्त्र जानना । फाल, कार्पास,
 वादर ये तीन नाम रई आदिके रस्ते हैं । कौशेय यह एक नाम कृमियोंके
 कोशमे उपजे वस्त्रका है । राङ्गव यह एक नाम मृग आदिके रोमसे बने हुए
 वस्त्रका है ॥ १११ ॥ अनाहत, निष्प्रवाणि, तन्त्रक, नवाम्बर ये चार नाम
 नये वस्त्रके हैं । उद्रमनीय यह एक (न०) नाम धोये हुए दो वस्त्रोंके
 जोड़ेका है ॥ ११२ ॥ पत्रोर्ण यह एक (न०) नाम धोये हुए कौशेय

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वेद्ययोर्द्वयोः ।

दैर्घ्यमायाम आरोहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

पटश्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ ।

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ।

निचोलः प्रच्छदपटः समौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ।

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥

संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

वस्त्रका हे । महाधन यह एक (न०) नाम बहुत मोलके वस्त्र अर्थात् दुशा-
लेका है । क्षौम, दुकूल ये दो (न०) नाम पाटके वस्त्रके हैं । निवीत,
प्रावृत ये दो नाम प्रावृत्त (ढके) हुए वस्त्रके हैं और त्रिलिङ्गी हैं ॥ ११३ ॥
दशा यह एक नाम वस्त्रके दोनों किनारोंका है । तहां दशाशब्द बहुवचनांत
(स्त्री०) है । दैर्घ्य (न०), आयाम (पु०), आरोह (पु०) ये तीन
नाम वस्त्रकी लम्बाईके हैं । परिणाह (पु०), विशालता (स्त्री०) ये दो
नाम वस्त्रके विस्तारके हैं ॥ ११४ ॥ पटश्चर, जीर्ण वस्त्र ये दो (न०) नाम
पुराने वस्त्रके हैं । नक्तक, कर्पट ये दो (पु०) नाम पुराने वस्त्रके टुकड़ेके हैं ।
वस्त्र, आच्छादन, वासस् (सान्त), चैल, वसन, अशुक ये छः (न०) नाम
वस्त्रके हैं ॥ ११५ ॥ सुचेलक (पु०), पट (पु० न०) ये दो नाम शो-
भन वस्त्रके हैं । वराशि (पु०), स्थूलशाटक (त्रि०) ये दो नाम मोटे
वस्त्रके हैं । निचोल (त्रि०), प्रच्छदपट (पु०) ये दो नाम वीणा आदिके
ढकनेके वस्त्रके हैं । रल्लक, कंबल ये दो (पु०) नाम कंबलके हैं ॥ ११६ ॥
अंतरीय, उपसंव्यान, परिधान, अधोऽशुक ये चार (न०) नाम शरीरके
नीचे भागके वस्त्र पाजामा आदिके हैं । प्रावार (पु०), उत्तरासंग (पु०),
बृहतिका (स्त्री०) ॥ ११७ ॥ संव्यान (न०), उत्तरीय (न०) ये
पांच नाम ढपड़ेके हैं । चोल (पु०), कूर्पासक (पु० न०) ये दो नाम
आंगीके हैं । नीशार यह एक (पु०) नाम शीत और वायुको निवारण

अर्धोरुक वरखीणा स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ।
 स्याच्चिष्वाप्रपदीन तत्प्राप्नोत्याप्रपद् हि यत् ॥ ११९ ॥
 अस्त्री वितानश्लोचो दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मानि ।
 प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्कारिणी च सा ॥ १२० ॥
 परिकर्मार्गसंस्कारः स्यान्मार्ष्टर्मार्जना मृजा ।
 उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥
 स्नान चर्चा तु चार्चिक्य स्यासकोऽथ प्रबोधनम् ।
 अनुबोधः पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥
 तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।
 द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामय कुकुमम् ॥ १२३ ॥
 काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने ।
 रक्तसकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

करनेवाले ओढ़नेके वस्त्रका है ॥ ११८ ॥ चडातर यह एक (पु० न०) नाम स्त्रियोंके लहंगेका है । आप्रपदीन यह एक (त्रि०) नाम जो वस्त्र पैरके अग्रभागपर्यंत हो उसका है ॥ ११९ ॥ वितान (पु० न०), श्लोच (पु०) ये दो नाम चढ़ावा वस्त्रके हैं । दूष्य (न०), पट्कुटी (स्त्री०) ये दो नाम डेरा तम्बूके हैं । प्रतिसीरा, जवनिका, तिरस्कारिणी ये तीन (स्त्री०) नाम षडदा (कनात) के हैं ॥ १२० ॥ परिकर्मन् (नान्त न०), अगसस्कार (पु०) ये दो नाम केशर आदिकरके शरीरमें सस्कारमात्रके हैं । मार्ष्टि, मार्जना, मृजा ये तीन (स्त्री०) नाम प्रोक्षण आदिकरके देहको निर्मल करने अर्थात् पौछनेके हैं । उद्वर्तन, उत्सादन ये दो (न०) नाम उबटने मलनेके हैं । आप्लाव (पु०), आप्लव (पु०) ॥ १२१ ॥ स्नान (न०) ये तीन नाम स्नानके हैं । चर्चा (स्त्री०), चार्चिक्य (न०), स्यासक (पु०) ये तीन नाम चन्दन आदिमें देहपर लेप करनेके हैं । प्रबोधन (न०), अनुबोध (पु०) ये दो नाम गत हुए गंधके हैं । पत्र लेखा, पत्राङ्गुलि ये दो (स्त्री०) नाम कस्तूरी केशर आदिकरके कपोल आदिपर रची हुई पत्रके समान रेखाके हैं ॥ १२२ ॥ तमालपत्र (न०), तिलक (पु० न०), चित्रक (न०), विशेषक (पु० न०) ये चार नाम मायेमें कस्तूरी आदिसे किये हुए तिलकके हैं । कुकुम ॥ १२३ ॥ काश्मी

लाक्षा राक्षा जतु क्लीवे यावोऽलक्तो हुमामयः ।
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ जायकम् ॥ १२५ ॥
 कालीयकं च कालानुसार्य चाथ समार्थकम् ।
 वंशकागुरुराजार्दलोहं कृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥
 कालागुर्वगुरु स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।
 यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥
 बहुरूपोऽप्यथ वृक्षधूपकृत्रिमधूपकौ ।
 तुरुष्कः पिण्डकः सिंहो यावनोऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥
 श्रीवासो वृक्षधूपोऽपि श्रीविष्टसरलद्रवौ ।
 मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम् ॥ १२९ ॥
 कङ्गोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।
 घनसारश्चद्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

रजन्मन् (नान्त), अग्निशिख, वर, बाह्यीक, पीतन, रक्त, संकोच, पिशुन,
 वीर, लोहितचन्दन ये ग्यारह (न०) नाम केशरके हैं ॥ १२४ ॥ लाक्षा
 (स्त्री०), राक्षा (स्त्री०), जतु (न०), याव (पु०), अलक्त (पु०),
 हुमामय (पु०) ये छः नाम लाखके हैं । लवंग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ ये
 तीन (न०) नाम लोंगके हैं । जायक ॥ १२५ ॥ कालीयक, कालानु-
 सार्य ये तीन (न०) नाम पीले चन्दनके हैं । समार्थक, वंशिक, अगरु,
 राजार्ह, लोह, कृमिज, जोंगक ये सात (न०) नाम अगरके हैं । अगर-
 शब्द (पु० न०) है ॥ १२६ ॥ कालागुरु, अगर ये दो (न०) नाम
 काले अगरके हैं । मंगल्या यह एक (स्त्री०) नाम मल्लिके समान गंधवाले
 अगरका है । यक्षधूप, सर्जरस, राल, सर्वरस ॥ १२७ ॥ बहुरूप ये पांच
 (पु०) नाम रालके हैं । वृक्षधूप, कृत्रिमधूपक ये दो (पु०) नाम अनेक
 पदार्थोंसे बनाये गये धूपके हैं । तुरुष्क, पिण्डक, सिंह, यावन ये चार
 (पु०) नाम लोवानके हैं । पायस ॥ १२८ ॥ श्रीवास, वृक्षधूप, श्रीविष्ट,
 सरलद्रव ये पांच (पु०) नाम देवदारुके द्रवके हैं । मृगनाभि (पु०),
 मृगमद (पु०), कस्तूरी (स्त्री०) ये तीन नाम कस्तूरीके हैं । कोलक
 ॥ १२९ ॥ कंकोलक, कोशफल ये तीन (न०) नाम कंकोलके हैं । कर्पूर
 (पु० न०), घनसार (पु०), चन्द्रसंज्ञ (पु०), सिताभ्र (पु०), हिम-

गन्धसारो मलयजो मद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् ।

तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमास्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जन रक्तचन्दनम् ।

कुचन्दनं चाथ जातीकोशजातीफले ममे ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकङ्कोलैर्यक्षकर्मः ।

गात्रानुलेपनी वर्तिवर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥

चूर्णानि वासयोगा स्युर्भाषित वासित त्रिषु ।

सस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्य स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥

माल्य मालास्तजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु गर्भकः ।

प्रभ्रष्टक शिखालम्बि पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

चालुका (स्त्री०) ये पाच नाम कपूरके हे ॥ १३० ॥ गधसार (पु०), मलयज (पु०), मद्रश्री (स्त्री०), चन्दन (पु० न०) ये चार नाम मलयागिर चन्दनके हे । तैलपर्णिक यह एक (न०) नाम सुपेद शीतल चन्दनका हे । गोशीर्ष यह एक (न०) नाम सुपेद कमलके समान गन्ध वाले चन्दनका हे । हरिचन्दन यह एक (पु० न०) नाम कपिल वर्णवाले चन्दनका हे ॥ १३१ ॥ तिलपर्णी, पत्राङ्ग, रञ्जन, रक्तचन्दन, कुचन्दन ये पाच नाम लाल चन्दनके हे । तिलपर्णीशब्द (स्त्री०) शेष (न०) ह । जातीकोश, जातीफल ये दो (न०) नाम जायफलके हे ॥ १३२ ॥ यक्ष कर्म यह एक (पु०) नाम कर्पूर, अगर, कस्तूरी, ककोल इन्हींको पीसकर किये हुए लेपका हे । गात्रानुलेपनी (स्त्री०), वर्ति (स्त्री०), वर्णक (पु० न०), विलेपन (न०) ये चार नाम सुगन्धि द्रव्योंके उवटनेके हे ॥ १३३ ॥ चूर्ण (न०), वासयोग (पु०) ये दो नाम चूर्णमात्रके हे । भाषित, वासित ये दो (त्रि०) नाम गन्धद्रव्यकरके वासित करी वस्तुके हे । अधिवासन यह एक (न०) नाम गन्ध और माल्य आदिकरके जो सस्कार किया जावे उसका हे ॥ १३४ ॥ माल्य (न०), माला (स्त्री०), स्तज (स्त्री०) ये तीन नाम फूलोंकी मालाके ह । गर्भक यह एक (पु०) नाम बालोंपर धारण करी मालाका हे । प्रभ्रष्टक यह एक (न०) नाम चोटी पर्यंत लम्बी मालाका हे । ललामक यह एक (न०) नाम मस्तरूपर्यंत

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात् कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् ।

यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

रचना स्यात्परिस्थन्द आभोगः परिपूर्णता ।

उपधानं तूपवर्हः शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥

शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्का खट्वा समाः ।

गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

समुद्रकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।

प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पट्वासकः ॥ १३९ ॥

दर्पणे मुकुरादर्शौ व्यजनं तालवृन्तकम् ।

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

धारण करी मालाका है ॥ १३५ ॥ प्रालम्ब यह एक (न०) नाम कंठसे सीधी और लम्बी मालाका है । वैकक्षिक यह एक (न०) नाम छातीपर तिरछी मालाका है । आपीड, शेखर ये दो (पु०) नाम चौटीमें गूथी हुई मालाके हैं ॥ १३६ ॥ रचना (स्त्री०), परिस्थन्द (पु०) ये दो नाम माला आदिकी रचनाके हैं । आभोग (पु०), परिपूर्णता (स्त्री०) ये दो नाम सब उपचारवालोंकी परिपूर्णताके हैं । उपधान (न०), उपवर्ह (पु०) ये दो नाम तकियेके हैं । शय्या (स्त्री०), शयनीय (न०) ॥ १३७ ॥ शयन (न०) ये तीन नाम शय्याके हैं । मञ्च, पर्यङ्क, पल्यङ्क, खट्वा ये चार नाम खाटके हैं । खट्वाशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । गेन्दुक, कन्दुक ये दो (पु०) नाम छोटे तकिये वा गेदके हैं । दीप, प्रदीप ये दो (पु०) नाम दीपकके हैं । पीठ, आसन ये दो (न०) नाम आसनके हैं ॥ १३८ ॥ समुद्रक, संपुटक ये दो (पु०) नाम संपुट अर्थात् डिब्बेके हैं । प्रतिग्राह, पतद्ग्रह ये दो (पु०) नाम पीकदानीके हैं । प्रसाधनी, कङ्कतिका ये दो (स्त्री०) नाम कंघीके हैं । पिष्टात, पट्वासक ये दो (पु०) नाम बुकनीके हैं ॥ १३९ ॥ दर्पण (पु० न०), मुकुर (पु०), आदर्श (पु०) ये तीन नाम शीशेके हैं । व्यजन, तालवृन्तक ये दो (न०) नाम ताडके पत्तोंसे बने हुए पंखेके हैं ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्ग ७ ।

संततिगोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।

वशोऽन्ववाय* सतानो वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

विप्रक्षत्रियविद्वद्भ्रातृवर्ण्यमिति स्मृतम् ।

राजबीजी राजवश्यो बीज्यस्तु कुलमभव* ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधव ।

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥

आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।

विप्रश्च ब्राह्मणोऽभौ पट्कर्म यागादिभिर्वृत* ॥ ४ ॥

विद्वान् विपश्चिदोपज्ञ सन्सुधी कोविदो बुध* ।

वीरो मनीषी ज्ञ प्राज्ञः मरुयावान् पण्डित कवि ॥ ५ ॥

धीमान्स्रि कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।

दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियश्चान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्ग । सतति, गोत्र, जनन, कुल, अभिजन, अन्वय, वश, अन्ववाय, सतान ये नव नाम पशके हे । तहा सततिशब्द (स्त्री०), गोत्र, जनन, कुल (न०) शेष (पु०) हे । ब्राह्मण आदि वर्ण हे ॥ १ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, विश् इन्द्र ये चारो वर्ण चातुर्वर्ण्य कहाते हे । आगेके अग्निचित्शब्दतरु (पु०) हे और आश्रमशब्द (पु० न०) है । राज बीज्य, राजवश्य ये दो नाम राजवश्ये उत्पन्न हुऐके है । बीज्य, कुलस भव ये दो नाम कुलमात्रमे उत्पन्न हुऐके है ॥ २ ॥ महाकुल, कुलीन, आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु ये छ नाम सज्जनके हे । ब्रह्मचारिन्, गृहिन्, वानप्रस्थ, भिक्षु ये चार आश्रम है । तहां ब्रह्मचारिन् गृहिन् शब्द (इ व्रन्त पु०) है ॥ ३ ॥ आश्रम यह एक (पु० न०) नाम आश्रमका है । द्विजाति, अग्रजन्मन् (नान्त), भूदेव, वाडव, विप्र, ब्राह्मण ये छ नाम ब्राह्मणके हे । पट्कर्मन् यह एक (नान्त पु०) नाम यज्ञ आदिसे युक्त नाह्मणका है ॥ ४ ॥ विद्वस् (वस्वन्त), विपश्चित्, दोपज्ञ, सत् (तान्त), सुधी, कोविद्, बुध, धीर, मनीषिन् (इव्रन्त), ज्ञ, प्राज्ञ, मरुयावत् (मत्वन्त), पण्डित, कवि ॥ ५ ॥ धीमत् (मत्वन्त), स्रि, कृतिन् (इव्रन्त), कृष्टि, लब्धवर्ण, विचक्षण, दूरदर्शिन् (इव्रन्त), दीर्घ

“ मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ।
 वैशेषिके स्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि ॥
 नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आर्हकः ।
 चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये सांख्यकापिलौ ॥ ”
 उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः ।
 मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥
 यद्य च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः ।
 इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
 स गीष्पतीष्ट्यः स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः ।
 सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

दर्शित (इन्नन्त) ये वाईस नाम पंडितके हैं । श्रोत्रिय, छान्दस ये दो नाम वेदपाठीके हैं ॥ ६ ॥ “ मीमांसक, जैमिनीय ये दो (पु०) नाम मीमांसा शास्त्रको जाननेवालेके हैं । वेदान्तिन्, ब्रह्मवादिन् ये दो (इन्नन्त पु०) नाम वेदान्तीके हैं । वैशेषिक, औलूक्य ये दो (पु०) नाम सात पदार्थवादीके हैं । सौगत, शून्यवादिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम शून्यवादीके हैं । नैयायिक, अक्षपाद ये दो (पु०) नाम न्यायशास्त्रको जाननेवालेके हैं । स्याद्वादिक, आर्हक ये दो (पु०) नाम मोक्ष है अथवा नहीं है ऐसे कहनेवालेके हैं । चार्वाक लौकायतिक ये दो (पु०) नाम देहात्मवादी बौद्धके हैं । सांख्य, कापिल ये दो (पु०) नाम सांख्यको जाननेवालेके हैं । ॥ उपाध्याय, अध्यापक ये दो (पु०) नाम पढानेवालेके हैं । गुरु यह एक (पु०) नाम गर्भाधान आदि कर्मोंके करानेवाले पिता आदिका है । आचार्य यह एक (पु०) नाम वेदकी व्याख्या करनेवालेका है । यज्ञविशेषमें ऋत्विजोंका आदेष्टा व्रतिन् (इन्नन्त) कहाता है ॥ ७ ॥ यष्ट (ऋकारान्त), यजमान ये तीन (पु०) नाम यजमानके हैं । दीक्षित यह एक (पु०) नाम सोमयज्ञमें आदेष्टा यजमानका है । इज्याशील, यायजूक ये दो (पु०) नाम यजनशीलके हैं । यज्वन् (नान्त) यह एक (पु०) नाम विधिसे यज्ञ करनेवालेका है ॥ ८ ॥ स्थपति यह एक (पु०) नाम बृहस्पतिके कहे विधिकरके यज्ञ करनेवालेका है । सोमपीथिन्, सोमपा ये दो (पु०) नाम सोमयज्ञ करनेवालेके हैं । सर्ववेदस

अनूचानः प्रवचने साङ्गोऽधीती गुरोस्तु य ।

लब्धानुज्ञं समावृत्तं सुत्वा त्वमिषवे कृते ॥ १० ॥

छात्रान्नेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकालिकाः ।

एकत्रहस्रताचारा मिथः सत्रहस्रचारिणः ॥ ११ ॥

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवश्चिनवानग्निमग्निचित् ।

पारम्पर्यापदेशे स्यादैतितमिनिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

उपना ज्ञानमाद्य स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।

यज्ञं सप्तोऽध्वरो यागं सप्ततन्तुर्मसं ऋतु ॥ १३ ॥

पाठो ह्यमश्वातिथीना मपर्यां तर्पणं बलि ।

पते पञ्च मशयज्ञा त्रहस्रनादिनामका ॥ १४ ॥

(सान्न) यह एक (पु०) नाम सर्वस्व दक्षिणाबाले निश्चिन् नामक यज्ञ करनेवाले का है ॥ ९ ॥ अनूचान यह एक (पु०) नाम भिक्षा आदि अर्गांसे युक्त वेद अथवा करनेवाले का है । समावृत्त यह एक (पु०) नाम गुरुमे गृहस्थ आदि आश्रमस्त्री प्रातिक्रिये अनुज्ञा पानेवाले का है । सत्तत्र (सान्न) यह एक (पु०) नाम अभिषेक स्नान क्रिये हुआ है ॥ १० ॥ छात्र, अनेकामित्र (इन्द्र), शिष्य ये तीन (पु०) नाम चलेके हैं । शैक्ष, प्राथमकान्तिक ये दो (पु०) नाम नये पढ़नेवाले के हैं । सत्रहस्रचारि (इन्द्र) यह एक (पु०) नाम आपसमें सन्मान देकर सन्मानार्थका है ॥ ११ ॥ सतीर्थ ये यह एक (पु०) नाम गुरु पास पढ़नेवाले का है । अग्निचित् यह एक (पु०) नाम अग्निसे तैयारनेवाले का है । ऐतिहासिक (१०), इतिहास ये दो नाम लोकप्रसिद्ध के उपदेश के हैं । तर्पण इतिहास यह अव्यय है ॥ १२ ॥ उपना यज्ञ एक (पु०) नाम पहले ज्ञान का है । उपक्रम यह एक (पु०) नाम जानने आरम्भ क्रिये हुआ है । याग, मश, अश्व, याग, सप्ततन्तु, मस, ऋतु ये सात (पु०) नाम पाते हैं ॥ १३ ॥ पाठो ह्यमश्वातिथीना पठना त्रहस्रनादिनामका । अश्वदेहोम करना देवता कहाता है । परमे आपसे सम्प्राप्तनामो अत्र नादिके प्रसन्न करना अनुष्ठान कहाता है । पितामहा अथवा जड आदिमे प्रतिष्ठा करना पित्र्या अनुष्ठान है । तर्पण करना भूयः । तर्पण । ये पाँच कहाते हैं ॥ १४ ॥

समज्या परिपद्रोष्ठी सभासमितिसंनदः ।

आस्थानी ह्रीवमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥

प्राग्वंजः प्राग्वविर्गेहात्सदस्या विधिदर्शिनः ।

सभासदः सभास्तारः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥

अध्वर्युद्वात्रहोतारो यजुःसामग्विदः क्रमात् ।

आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥

वेदिः परिष्कृता भूमिः ममे स्थाण्डिलचत्वरे ।

चपालो यूपकटकः कुम्वा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥

यूपाग्रं तर्म निर्मन्थ्यदारुणि त्वग्निर्द्वयोः ।

दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

समज्या, परिपत्, गोष्ठी, सभा, समिति, ससद्, आस्थानी, आस्थान, सदस् (सांत) ये नव नाम सभाके हैं। तहां आस्थानशब्द (न०) हैं, सदस् शब्द (स्त्री० न०), शेष (स्त्री०) है ॥ १५ ॥ प्राग्वश यह एक (पु०) नाम हविके गेहसे पूर्वदेशमें सदस्य आदियोंके घरका है। सदस्य यह एक (पु०) नाम वेदोक्त क्रियाकलापको देखनेवालेका है। सभासद्, सभास्तार, सभ्य, सामाजिक ये चार (पु०) नाम सभ्योंके हैं ॥ १६ ॥ अध्वर्यु यह एक (पु०) नाम यजुर्वेदके जाननेवाले ऋत्विज्का है। उद्गातृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम सामवेदके जाननेवाले ऋत्विज्का है। होतृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम ऋग्वेदके जाननेवाले ऋत्विज्का है। ऋत्विज् (जान्त), याजक ये दो (पु०) नाम यजमानने धन आदि देके जिन्होंको बरे उन्हींके हैं ॥ १७ ॥ वेदि यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञके लिये डमरुके आकारकी बनाई पृथ्वीका है। स्थाण्डिल, चत्वर ये दो (न०) नाम यज्ञके लिये संस्कार किये हुए पृथ्वीके भाग अर्थात् चौतरेके हैं। चपाल, यूपकटक ये दो (पु०) नाम यज्ञखंभके शिरमें बल्यके आकारवाले काठविशेषके हैं। कुम्वा यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञभूमिमें नीचजातिकी दृष्टिके निवारणके लिये बहुत वेष्टन (आवरण) करनेका है ॥ १८ ॥ यूपाग्र, तर्मन् (नांत) ये दो (न०) नाम यज्ञखंभके अग्रभागके हैं। अरणि यह एक (पु० स्त्री०) नाम अग्नि निकालनेकी लकड़ियोंका है। दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय ये तीन (पु०)

अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीतं सस्कृतोऽनलः ।
 समूहः परिचार्योपचार्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥
 यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निं प्रणीयते ।
 तस्मिन्नानाम्योऽथाग्रायी स्वाहा च हुतभुक्तिप्रया ॥ २१ ॥
 ऋक् सामिधेनी धार्या च या स्यादग्निमन्धने ।
 गायत्रीप्रमुख छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
 आभिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्वियोगतः ।
 धवित्र व्यजन तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
 पृषदाज्य सदध्याजे परमान्न तु पायसम् ।
 हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पात्रं सुवादिकम् ॥ २४ ॥
 ध्रुवोपभृज्जुह्ना तु सुवो भेदाः सुचः स्त्रियः ।
 उपाकृतं पशुरसौ योऽग्निमन्ध्यं क्रतौ हत ॥ २५ ॥

नाम यज्ञकी अग्निके हे ॥ १९ ॥ त्रेता यह एक (स्त्री०) नाम इन तीनों अग्नियोंका है । प्रणीत यह एक (पु०) नाम मन्त्र आदिसे सस्कार किये हुए अग्निका है । समूह, परिचार्य, उपचार्य ये तीन (पु०) नाम यज्ञकी अग्निके स्थलविशेषके हे ॥ २० ॥ आनाय्य यह एक (पु०) नाम गार्हपत्य अग्निसे ग्रहण कर जो दक्षिणाग्नि स्थापित कराया जावे उसका है । अग्रायी, स्वाहा, हुतभुक्तिप्रया ये तीन (स्त्री०) नाम अग्निकी स्त्रीके हे ॥ २१ ॥ सामिधेनी, धार्या ये दो (स्त्री०) नाम अग्निको प्रज्वलित करनेमें जो ऋचा पढ़ी जावे उसके हे । छन्दस् (सात न०) यह एक नाम गायत्री उष्णिष् आदि छन्दोंका है । चरु यह एक (पु०) नाम अग्निविषै हूयमान अन्न आदिका है ॥ २२ ॥ आभिक्षा यह एक (स्त्री०) नाम पकाये हुए गरम दूधमे दहीके योगसे उत्पन्न विकृतिका है । धवित्र यह एक (न०) नाम मृगछालासे रचे पखेका है ॥ २३ ॥ पृषदाज्य यह एक (न०) नाम दहीसे मिले घृतका है । परमान्न (न०), पायस (पु० न०) ये दो नाम दूधकी खीरके हे । हव्य यह एक (न०) नाम देवताओंके अर्थ दिये जानेवाले अन्नका है । कव्य यह एक (न०) नाम पित्तोंके अर्थ दिये जानेवाले अन्नका है । पात्र यह एक (न०) नाम सुव, क्षमसा आदिका है ॥ २४ ॥ ट्ना, उपभृत्, जुह्वा (तीन स्त्री०) सुव (पु०) ये

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।
 वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥
 सान्नाय्यं हविर्गौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।
 दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे तत्कर्माहं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥
 त्रिष्वथ ऋतुकर्मष्टं पूर्तं खातादि कर्म यत् ।
 अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
 त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
 विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
 प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।
 मृतार्थं तद्वहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥
 पितृदानं निवापः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।
 अन्वाहार्यं मासिकेऽशोऽष्टमोऽङ्गः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

चार नाम स्तुत्के भेदके हैं । उपाकृत यह एक (पु०) नाम अभिमंत्रित कर यज्ञमें हत किये जानेवाले पशुका है ॥ २६ ॥ परम्पराक, शमन, प्रोक्षण ये तीन (न०) नाम वधके अर्थ यज्ञसम्बन्धीय पशु मारनेके हैं । प्रमीत, उपसम्पन्न, प्रोक्षित ये तीन नाम यज्ञके अर्थ हत हुए पशुमात्रके हैं और वाच्यलिङ्गी हैं । सान्नाय्य यह एक (न०) नाम हविर्विशेषका है । वषट्कृत यह एक नाम अग्निविषे होमे हुए याज्य आदिका है और वाच्यलिङ्गी है ॥ २६ ॥ अवभृथ यह एक (पु०) नाम यज्ञमें दीक्षाके अंतमें स्नान-विशेषका है । यज्ञिय यह एक (त्रि०) नाम यज्ञकर्मके योग्य वस्तुका है ॥ २७ ॥ इष्ट यह एक (न०) नाम यज्ञके कर्मका है । पूर्त यह एक (न०) नाम वावडी कुआ आदि खातका है । अमृत यह एक (न०) नाम यज्ञशेष पुरोडाश आदिका है । विघस्य यह एक (पु०) नाम देव और पितृ आदिके भुक्तशेषका है ॥ २८ ॥ त्याग, विहापित, दान, उत्सर्जन, विसर्जन, विश्राणन, वितरण, स्पर्शन, प्रतिपादन ॥ २९ ॥ प्रादेशन, निर्वपण, अपवर्जन, अहति ये तेरह नाम दानके हैं । त्यागशब्द (पु०) अंहति (स्त्री०) शेष (न०) हैं । और्ध्वदेहिक यह एक नाम मरणादिनसे आरंभ कर दश दिनपर्यंत पिंडदान आदिका है और त्रिलिङ्गी है ॥ ३० ॥ पितृदान (न०), निवाप (पु०) ये दो नाम पितरोंका उद्देश कर जो

पर्येषणा परीष्टिश्चाऽन्वेपणा च गवेपणा ।
 मनिस्त्वद्येषणा याच्ञाऽभिशास्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
 पद् तु त्रिष्वर्ध्यमर्थाये पाद्यं पादाय वागिणि ।
 क्रमादातिथ्यातियेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥
 स्युगवेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहगतते ।
 प्राघूर्णिक प्राघुणकश्चाभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ ३४ ॥
 पूजा नमस्याऽपचितिः सर्पयार्चार्हणाः समाः ।
 वरिषस्या तु शुश्रूषा परिचर्याऽप्युपासना ॥ ३५ ॥
 ब्रज्याऽटाट्या पर्यटन चर्या त्वीर्यापये स्थितिः ।
 उपस्पर्शस्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम् ॥ ३६ ॥

दान किया जावे उसके है । श्राद्ध यह (न०) नाम शास्त्रसे पितृसवर्धी कर्मका है । अन्वाहार्य्य यह एक (न०) नाम मासिक अमावास्या श्राद्धका है । कुतप यह एक नाम दिनके आठवें भागका है और (पु० न०) है ॥ ३१ ॥ पर्येषणा, परीष्टि ये दो (स्त्री०) नाम श्राद्धमें ब्राह्मणके भोजनकी टहल वा भक्तिके है । अन्वेपणा, गवेपणा ये दो (स्त्री०) नाम धर्म आदिनों टूटनेके ह । सनि, अत्येषणा ये दो (स्त्री०) नाम गुरु आदिसे प्रार्थनापूर्वक विनतीके है । याच्ञा, अभि शास्ति, याचना, अर्थना ये चार (स्त्री०) नाम याचनाके है ॥ ३० ॥ अर्ध्य, पाद्य, आतिथ्य, आतियेय, आवेशिक, आगत ये छ शब्द वाच्य लिंगी है । अर्ध्य यह एक नाम अतिथिकी पूजाके उपचारके अर्थ पानीका है । पाद्य यह एक पेरोंके अर्थ जो पानी हो उसका है । आतिथ्य यह एक नाम अतिथिके अर्थ अन्न आदिना है । आतियेय यह एक नाम अतिथिमें जो साधु हो उसका है ॥ ३३ ॥ आवेशिक, आगत, अतिथि, गृहागत ये चार (पु०) नाम घरमें आये हुए अतिथिके है । प्राघूर्णिक, प्राघुणक ये दो (पु०) नाम अभ्यागतने ह । अभ्युत्थान, गौरव ये दो (न०) नाम उत्थानपूर्वक सस्कारके है ॥ ३४ ॥ पूजा, नमस्या, अप चिति, सपर्या, अर्चा, अर्हणा ये छ (स्त्री०) नाम पूजाके है । वरिषस्या, शुश्रूषा, परिचर्या, उपासना ये चार (स्त्री०) नाम उपासनाके है ॥ ३५ ॥ ब्रज्या, अटा, अट्या, पर्यटन ये चार नाम चलनेके ह । पर्यटनशब्द (न०)

“ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः ।
 वाल्मीकश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः ॥
 व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः । ”
 आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्पाणिपाटी अनुक्रमः ।
 पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥ ३७ ॥
 नियमो व्रतगस्त्री तच्चोपवामादि पुण्यकम् ।
 औपवस्तं तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ॥ ३८ ॥
 स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिरयाञ्जलिः ।
 पाठे ब्रह्माञ्जलिः पाठे विप्रश्चो ब्रह्मविन्दवः ॥ ३९ ॥
 ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ।
 मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥ ४० ॥

शेष (स्त्री०) हैं । चर्या यह एक (स्त्री०) नाम ध्यान मौन आदि मार्गमें स्थित होनेवालेका है । उपस्पर्श (पु०), आचमन (न०) ये दो नाम आचमनके हैं । मौन, अभाषण ये दो (न०) नाम नहीं बोलनेके हैं ॥ ३६ ॥ “ प्राचेतस् (सान्त), आदिकवि, मैत्रावरुणि, वाल्मीक ये चार (पु०) नाम वाल्मीक मुनिके हैं । गाधेय, विश्वामित्र, कौशिक ये तीन (पु०) नाम विश्वामित्रके हैं । व्यास, द्वैपायन, पाराशर्य, सत्यवतीसुत ये चार (पु०) नाम वेदव्यासके हैं । ” आनुपूर्वी, आवृत्, परिपाटी, अनुक्रम, पर्याय ये पाँच नाम अनुक्रमके हैं । अनुक्रम, पर्याय (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । अतिपात, पर्यय, उपात्यय ये तीन (पु०) नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३७ ॥ नियम (पु०), व्रत (पु० न०) ये दो नाम व्रतके हैं । पुण्यक यह एक (न०) नाम उपवास चान्द्रायण व्रत आदिका है । औपवस्त (न०), उपवास (पु०) ये दो नाम उपवासके हैं । विवेक यह एक (पु०) नाम पृथक् स्वरूपपनेका है ॥ ३८ ॥ ब्रह्मवर्चस यह एक (न०) नाम सदाचार पालन और वेदका अभ्यास इन दोनोंकी संपत्तिका है । ब्रह्माञ्जलि यह एक (पु०) नाम वेदके पाठकी आदिमें हाथोंकी अङ्गुलीके उच्चारणपूर्वक अञ्जलिका है । ब्रह्मविन्दु यह एक (पु०) नाम वेदके पाठमें मुखसे निकसे हुए जलके किनकोंका है ॥ ३९ ॥ ब्रह्मासन यह एक (न०) नाम ध्यान और योगके आसनका है । कल्प, विधि,

सस्कारपूर्व ग्रहण स्यादुपाकरणं श्रुते ।

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ॥ ४१ ॥

भिक्षु परित्राद् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ।

तपस्वी तापसः पारीक्षाक्षी वाचयमो मुनि ॥ ४२ ॥

तपः क्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिण ।

ऋषयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाष्ट्रव्रती ॥ ४३ ॥

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यनिनो यतयश्च ते ।

य स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशायसौ ॥ ४४ ॥

स्थाण्डिलश्चाथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ।

पवित्रः प्रयतः पृत पाखण्डा सर्वलिङ्गिनः ॥ ४५ ॥

क्रम ये तीन (पु०) नाम नियोगशास्त्रके है । मुख्य यह एक (पु०) नाम आद्यविधिका है । अनुकल्प यह एक (पु०) नाम मुरयसे नीचे गौणका है ॥ ४० ॥ उपाकरण यह एक (न०) नाम सस्कारपूर्वक वेदके ग्रहण करनेका है । पादग्रहण, अभिवादन ये दो (१०) नाम गोत्रमथनपूर्वक नमस्कारविशेषके हैं ॥ ४१ ॥ भिक्षु, परित्राज् (जान्त), कर्मन्दिन् (इन्नन्), पाराशरिन्, मस्करिन् (इन्नन्त) ये पांच (पु०) नाम सन्यासीके हैं । तपस्विन् (इन्नन्त), तापस, पारिकाक्षिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम तप करनेवालेके हैं । वाचयम, मुनि ये दो (पु०) नाम परिमित बोलनेवालेके हैं ॥ ४२ ॥ दान यह एका (पु०) नाम तपके ऐशके सहनेवालेका है । वर्णिन् (इन्नन्त), ब्रह्मचारिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम ब्रह्मचारीके हैं । ऋषि, सत्यवचस् ये दो (पु०) नाम ऋषिके हैं । स्नातक, आष्ट्रव्रतिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम वेदव्रती होके समावर्त्तन किये हुएके हैं ॥ ४३ ॥ यतिन् (इन्नन्त), यति ये दो (पु०) नाम इन्द्रियों को जीतनेवालेके हैं । स्थण्डिलशायिन् (इन्नन्त), स्थण्डिल ये दो (पु०) नाम नियमके पूजक पृथ्वी विशेषण सोनेवालेके हैं ॥ ४४ ॥ विरजस्तमस् (सान्त), द्वयातिग ये दो (पु०) नाम सत्त्वमें एका निष्ठावाले व्यास आदिकोंके हैं । पवित्र, प्रयत, पृत ये तीन (पु०) नाम पवित्र है । पाखण्ड, सर्वलिङ्गिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम बौद्ध क्षण आदि दृष्ट शास्त्रान्तर्गते हैं ॥ ४५ ॥

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ।

अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनां सासनं वृषी ॥ ४६ ॥

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ।

स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ॥ ४७ ॥

सर्वेनसामपध्वांसि जप्यं त्रिष्वधमर्षणम् ।

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥

शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ।

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ॥ ४९ ॥

“ क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु । ”

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ।

प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बिनम् ॥ ५० ॥

आषाढ यह एक (पु०) नाम ब्रह्मचारीके पलाशसंवन्धी दण्डका है । राम्भ यह एक (पु०) नाम बांसके दण्डका है । कमण्डलु (पु० न०), कुण्डी (स्त्री०) ये दो नाम व्रतियोंके जलपात्रके हैं । वृषी यह एक (स्त्री०) नाम व्रतियोंके आसनका है ॥ ४६ ॥ अजिन (न०), चर्मन् (नांत न०), कृत्ति (स्त्री०) ये तीन नाम मृगचर्म आदिके हैं । भैक्ष यह एक (न०) नाम भिक्षाके समूहका है । स्वाध्याय, जप ये दो (पु०) नाम वेदके अभ्यासके हैं । सुत्या (स्त्री०), अभिषव (पु०), सवन (न०) ये तीन नाम सोमाभिषवके हैं ॥ ४७ ॥ अधमर्षण यह एक नाम सब पापोंको नाश करनेवाले जापका है और त्रिलिगी है । दर्श यह एक (पु०) नाम कृष्णपक्षके अन्तमें होनेवाले यज्ञका है । पौर्णमास यह एक (पु०) नाम पौर्णमासीमें होनेवाले यज्ञका है ॥ ४८ ॥ यम यह एक (पु०) नाम शरीरमात्रकरके साधनके योग्य नित्यकर्मका है । नियम यह एक (पु०) नाम माटी और जल आदिसे साध्य कर्म अर्थात् नित्यप्राति कृत्रिम कर्मका है ॥ ४९ ॥ ‘ क्षौर (न०), भद्राकरण (न०), मुण्डन (न०), वपन (त्रि०) ये चार नाम क्षौरके हैं ॥ उपवीत यह एक (न०) नाम दहिने हाथको ऊपर करके जनेऊ धारण किये जानेका है । प्राचीनावीत यह एक (न०) नाम वाम हाथ ऊपरको करके जनेऊ धारण किये जानेका है । निवीत यह एक

अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैव स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ।

मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्यो' पित्र्य मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥ ५१ ॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मन्व ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।

देवमृयादिक तद्वत्कृच्छ्रं सान्त्तपनादिकम् ॥ ५२ ॥

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा ।

नष्टाग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ॥ ५३ ॥

व्रात्य. सस्कारहीन. स्यादस्वाध्यायो निराकृति ।

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रत ॥ ५४ ॥

सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ।

अशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ॥ ५५ ॥

(न०) नाम कठमें लबित किये जनेऊका है ॥ ५० ॥ दैव यह एक

(न०) नाम अंगुलियोंके अग्रभागमें देवतीर्थका है । काय यह एक (न०)

नाम कनिष्ठिका कौर अनामिका अंगुलियोंके मूलमें कायतीर्थका है ।

पित्र्य यह एक (न०) नाम अगूठा और तर्जनी अंगुलीके मध्यमें पितृ

तीर्थका है । ब्राह्म यह एक (न०) नाम अगूठेकी मूलमें ब्राह्मतीर्थका

है ॥ ५१ ॥ ब्रह्मभूय, ब्रह्मत्व, ब्रह्मसायुज्य ये तीन (न०) नाम ब्रह्मभा

वके हैं । देवभूय, देवत्व, देवसायुज्य ये तीन (न०) नाम देवभावके हैं ।

कृच्छ्र यह एक (न०) नाम सातपन आदिका है ॥ ५२ ॥ प्राय यह

एक (पु०) नाम संन्यासपूर्वक भोजनके त्यागनेका है । वीरहर (नका

रान्त), नष्टाग्नि ये दो (पु०) नाम नष्ट हुए अग्निवालेके हैं । कुहना

यह एक (स्त्री०) नाम लोभसे छल कपटकरके ध्यान मौनका है ॥ ५३ ॥

व्रात्य यह एक (पु०) नाम सस्कारसे हीन हुएका है । अस्वाध्याय यह

एक (पु०) नाम अपनी शाराके अनुसार अध्ययनसे शून्य हुएका है ।

धर्मध्वजिन् (इन्द्रन्त), लिङ्गवृत्ति ये दो (पु०) नाम जीविकाके अर्थ

जटा आदिको धारण करनेवालेके हैं । अवकीर्णिन् (इन्द्रन्त), क्षतव्रत ये

दो (पु०) नाम नष्ट हुए ब्रह्मचर्यवालेके हैं ॥ ५४ ॥ अभिनिर्मुक्त यह

एक (पु०) नाम जिसके सोते हुए सूर्य अस्त हो जावे उसका है । अभ्यु

दित यह एक (पु०) नाम जिसके सोते हुए सूर्य उदय हो जावे उसका

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ।

परिवित्तिरतु तज्ज्यायान् विवाहोपयमौ समौ ॥ ५६ ॥

तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ।

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥ ५७ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ।

सवलैस्तेश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८ ।

मूर्धाभिपिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।

राजा राट् पार्थिवक्षमाभृतृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजा तु प्रगताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।

चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

हे ॥ ५६ ॥ परिवेत्तृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम बडे भाईका विवाह नहीं हो और छोटा भाई कर ले उसका है । परिवित्ति यह एक (पु०) नाम उस परिवेत्ताके बडे भाईका है ॥ ५६ ॥ विवाह, उपयम, परिणय, उद्वाह, उपयाम, पाणिपीडन ये छः नाम विवाहके हैं । पाणिपीडनशब्द (न०) शेष (पु०) हैं । व्यवाय (पु०), ग्राम्यधर्म (पु०), मैथुन (न०), निधुवन (न०), रत (न०) ये पांच नाम छीसे भोगके हैं ॥ ५७ ॥ त्रिवर्ग यह एक (पु०) नाम धर्म अर्थ काम इनके समूहका है । चतुर्वर्ग यह एक (पु०) नाम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्हींके समूहका है । चतुर्भद्र यह एक (न०) नाम बलसहित धर्म, अर्थ, काम, मोक्षका है । जन्य यह एक (पु०) नाम वरके समान अवस्थावाले और प्रियजनोका है ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः । मूर्धाभिपिक्त, राजन्य, बाहुज, क्षत्रिय, विराज् ये पांच (पु०) नाम क्षत्रियके हैं । राजन् (नान्त), राज् (जान्त), पार्थिव, क्षमाभृत, नृप, भूप, महीक्षित ये सात (पु०) नाम राजाके हैं ॥ १ ॥ अधीश्वर यह एक (पु०) नाम सब देशोंके राजा जिसको प्रणाम करते हैं उस राजाका है । चक्रवर्तिन् (इन्नन्त), सार्वभौम ये दो (पु०) नाम समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके पतिके हैं । मण्डलेश्वर यह एक (पु०) नाम थोड़ी

येनेष्ट राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च य ।
 शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञं स मम्राट्य राजकम् ॥ ३ ॥
 राजयक च नृपतिक्षत्रियाणा गणे ऋमात् ।
 मन्त्री वीसचिवोऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवारणतः ॥ ४ ॥
 महामात्रा प्रधानानि पुरोवास्त पुरोहितः ।
 द्रष्टारं व्यवहागणा प्राड्विवाकाक्षदर्शनी ॥ ५ ॥
 प्रतीहारो द्वारपालश्च स्थवा स्थितदर्शकाः ।
 रक्षिवर्गस्त्वगीरस्थोऽथाव्यक्षाधिकृतौ नमौ ॥ ६ ॥
 स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिपु ।
 भौरिकं कनकाध्यक्षो रूप्याव्यक्षस्तु नैर्ष्यकः ॥ ७ ॥
 अन्तपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वेशिको जनः ।
 सौविदल्ला कञ्चुकिन म्यापत्या पीपिदाश्च ते ॥ ८ ॥

पृथ्वीके पतिने ह ॥ २ ॥ सम्राज्ञ (ज्ञान्त) यह एक (पु०) नाम जि
 सने राजभूय यज्ञ किया हो और बारह मण्डलोंका स्वामी हो और जो
 अपनी आज्ञासे सन राजाओंको शिक्षा करता हो उसका है । राजक यह
 एक (न०) नाम राजाओंके समूहका है ॥ ३ ॥ राजन्यक यह एक (न०)
 नाम क्षत्रियोंके समूहका है । मन्त्रिन् (इन्नन्त), धीसचिव, अमात्य ये तीन
 (पु०) नाम मन्त्रिके ह । कमसचिव यह एक (पु०) नाम कार्योंमें
 योजित किये मन्त्रियोंका है ॥ ४ ॥ महामात्र (पु०), प्रधान (पु० न)
 ये दो नाम मुख्यरूप राजसहायकोंके हैं । आगे शत्रुशब्दतक (पु०) है ।
 पुरोधस् (सान्त), पुरोहित ये दो नाम ऋण आदि व्यवहारोंके विषयमें वादी
 और प्रतिवादीसे निर्मित किये निगदोंके निर्णय करनेवालेके हैं । प्राड्वि-
 विनाक, अक्षदर्शक ये दो नाम न्याय करनेवाले हाकिमके ह ॥ ५ ॥
 प्रतीहार, द्वारपाल, द्वा स्थ, द्वा स्थित, दर्शक ये पांच नाम द्वारपालके हैं ।
 रक्षिवर्ग, अनकिम्य ये दो नाम राजाकी रक्षा करनेवाले समूहके हैं । अ
 ध्यक्ष, अधिकृत ये दो नाम अधिकारोंके हैं ॥ ६ ॥ स्थायुक यह एक नाम
 ग्रामके अध्यक्षका है । गोप यह एक नाम बहुतसे गामोंके अध्यक्षका है ।
 भौरिक, कनकाध्यक्ष ये दो नाम सुवर्णके अधिकारोंके हैं । रूप्याध्यक्ष,
 नैर्ष्यक ये दो नाम चांदीके अधिकारोंके हैं ॥ ७ ॥ अतवेशिक यह

पण्डो वर्षवरस्तुल्यौ सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

विषयानन्तरो राजा शत्रुभिन्नमतः परम् ॥ ९ ॥

उदासीनः परतरः पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥

द्विद्विषक्षाहितामित्रदरयुशात्रवशत्रवः ।

अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥

वयरयः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

सख्यं सातपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥

यथार्हदर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।

चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥

एक नाम भीतरके महलमें अधिकृत पुरुषका है । सौविदल्ल, कटुकिक, स्थापत्य, सौविद ये चार नाम राजाके समीपमें बैठको धारण करने-वाले पुरुषोंके हैं ॥ ८ ॥ पंड, वर्षवर ये दो नाम राजाके रहनेवाले हीजडोंके हैं । सेवक, अर्थिन् (इन्नन्त), अनुजीविन् (इन्नन्त) ये तीन नाम सेवकके हैं । शत्रु यह एक नाम अपने देशके पास रहनेवाले राजाका है । यहाँतक (पु०) हैं । मित्र यह एक (न०) नाम अपने देशसे दूर रहनेवाले राजाका है ॥ ९ ॥ उदासीन यह एक (पु०) नाम शत्रु और मित्रसे भिन्न राजाका है । पार्ष्णिग्राह यह एक (पु०) नाम राजाके पृष्ठभागमें रहनेवाले राजाका है । रिपु, वैरिन्, सपत्न, अरि, द्विष, द्वेषण, दुर्हृद् ॥ १० ॥ द्विष् (पात), विषक्ष, अहित, अमित्र, दस्यु, शात्रव, शत्रु, अभिघातिन् (इन्नन्त), पर, अराति, प्रत्यर्थिन् (इन्नन्त), परिपन्थिन् (इन्नन्त) ये उन्नीस नाम वैरोंके हैं । अमित्रशब्द (न०) शेष (पु०) हैं ॥ ११ ॥ वयरय, स्निग्ध, सवयस् (सांत) ये तीन (पु०) नाम प्यारेके हैं । मित्र, सखि, सुहृद् (दान्त) ये तीन नाम मित्रके हैं । मित्र (न०) शेष (पु०) है । सख्य, सातपदीन ये दो (न०) नाम मैत्रोंके हैं । अनुरोध (पु०), अनुवर्तन (न०) ये दो नाम अनुकूलताके हैं ॥ १२ ॥ यथार्हवर्ण, प्रणिधि, अपसर्प, चर, स्पश, चार, गूढपुरुष ये सात (पु०) नाम गुप्तपुरुषके हैं । आप्त, प्रत्ययित ये दो नाम विशेष विश्वासीके

सायत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि ।
 स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥
 तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः समौ ।
 लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुक्षुश्च लेखके ॥ १५ ॥
 लिखिताक्षरसस्थाने लिपिलिखिरुमे द्वियौ ।
 स्यात्सदेशहरो दूतो दूत्य तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥
 अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गजलानि च ॥ १७ ॥
 गज्याङ्गानि प्रकृतयः पौगणा श्रेणयोऽपि च ।
 संधिर्ना विग्रहो यानमासन द्वैधमाश्रय ॥ १८ ॥

ह और त्रिलिङ्गी है ॥ १३ ॥ सायत्सर, ज्योतिषिक, दैवज्ञ, गणक, मौहूर्तिक, मौहूर्त, ज्ञानिक (इन्द्रत), कार्तान्तिक ये आठ (पु०) नाम ज्योतिषिके ह ॥ १४ ॥ तान्त्रिक, ज्ञातसिद्धान्त ये दो (पु०) नाम शास्त्रको जाननेवालेके ह । सत्री (इन्द्रत), गृहपति ये दो (पु०) नाम घरके पति अर्थात् सन कालमें अन्न आदिसे दान करनेवालेके ह । लिपिकर, अक्षरचण, अक्षरचुक्षु, लेखक ये चार (पु०) नाम लिखनेवालेके ह ॥ १५ ॥ लिखित (न०), अक्षरसस्थान (न०), लिपि (स्त्री०), लिखि (स्त्री०) ये चार नाम लिखे हुए अक्षरोंके ह । सन्देशहर, दूत ये दो (पु०) नाम दूतके ह । दूत्य यह एक (न०) नाम उस दूतके भाव और कर्मका है ॥ १६ ॥ अध्वनीन, अध्वग, अध्वय, पथ, पथिक ये पाँच (पु०) नाम मार्ग चलनेवालेके ह । स्वामिक अर्थात् राजा, जमात्य अर्थात् मंत्री, सुहृत् अर्थात् मित्र, कोश अर्थात् खजाना, राष्ट्र अर्थात् देशकी पृथ्वी, किला, सेना ॥ १७ ॥ ये सात राज्यके अंग हैं और प्रकृति कहते हैं । अगशब्द (न०) है और पुग्मे रहनेवालेके समूहको भी प्रकृति कहते ह । प्रकृतिशब्द (स्त्री०) है । सुगण आदि देकर शत्रुओंसे प्रीति उपजानेकी संधि कहते ह और संधिशब्द (पु०) है । विग्रह यह एक (पु०) नाम दूसरेके साथमें जमि लगाने और छूटमार करनेका है । यान यह एक (न०) नाम शत्रुके प्रति जातेनेकी इच्छामें गमन करनेका है । आसन यह एक (न०) नाम अपनी जातिके रुझने

पङ्गुणाः शक्तयस्त्रिभिः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
 क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥
 स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ।
 सामदाने भेददण्डादित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥
 साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समौ ।
 भेदोपजापावुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥
 पञ्च त्रिष्वपडक्षीणो यरतृतीयाद्यगोचरः ।
 विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥
 रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।
 समौ विश्रम्भविश्वासौ श्रेष्ठो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥

पर किला बनाकर रहनेका है। द्वैध यह एक (न०) नाम बलवान् के साथ
 सांधि अर्थात् मिलाप और निर्बलके साथ विग्रह करनेका है। आश्रय
 यह एक (पु०) नाम शत्रुसे पीडित हुए राजाको बलवान् राजाके आश्र-
 य लेनेका है ॥ १८ ॥ आगेके ये साधि आदि छः गुण हैं। प्रभाव, उत्साह,
 मंत्र इन्हींसे उपजी तीन शक्ति हैं। क्षय (पु०), स्थान (न०), वृद्धि
 (स्त्री०) यह नीति जाननेवालोंके त्रिवर्ग हैं ॥ १९ ॥ प्रताप, प्रभाव ये
 दो (पु०) नाम खजाना और सेनासे उपजे तेजका है। उपाय यह एक
 (पु०) नाम साम अर्थात् प्रिय वचन आदि, दान अर्थात् धन आदिका
 देना, भेद अर्थात् इकट्ठे मिले हुए शत्रुओंको भेदकर नष्ट करना और
 दण्ड इनका है ॥ २० ॥ साहस (न०), दम (पु०), दण्ड (पु०) ये
 तीन नाम दण्डके हैं। सामन् (नांत्), सान्त्व ये दो (न०) नाम मि-
 लापके हैं। भेद, उपजाप ये दो (पु०) नाम फूटके हैं। उपधा यह एक
 (स्त्री०) नाम धर्म, अर्थ, काम और भय करके मंत्री आदिकी परीक्षा
 करनेका है ॥ २१ ॥ अपडक्षीणसे आदि ले निःशलाका शब्दपर्यंत पांच
 शब्द (त्रि०) हैं। अपडक्षीण यह एक नाम तीसरे मनुष्यादिसे नहीं
 जाना जावे किंतु दो जनोंहीसे किया जाय उस सम्मतिका है। विविक्त,
 विजन, छन्न, निःशलाक, रहस् (सान्त न०) ॥ २२ ॥ रहस्, उपांशु ये
 सात नाम एकान्तके हैं। तहां रहस् और उपांशु ये दोनों अव्यय हैं।
 रहस्य यह एक (त्रि०) नाम एकान्तमें होनेवालेका है। विश्रम्भ, विश्वास

अत्रेपन्यायकल्लारु देशरूप समञ्जसम् ।
 युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥
 न्याय्यं च त्रिषु पद संप्रधारणा तु समर्थनम् ।
 अववादस्तु निर्देशो निर्देशः शासन च स ॥ २५ ॥
 शिष्टिश्चाज्ञा च सस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।
 आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्धानबन्धने ॥ २६ ॥
 द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो बलिः ।
 घट्टादिदेय शुल्कोऽस्त्री प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥
 उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।
 यौतकादि तु यदेय सुदायो हरण च तत् ॥ २८ ॥
 तत्कालम् तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः ।
 सादृष्टिक फलं सद्य उदकः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

ये दो (पु०) नाम विश्वासके हैं । अत्रेप यह एक (पु०) नाम यथोचित स्वरूपसे गिरनेका है ॥ २३ ॥ अत्रेप (पु०), न्याय (पु०), कल्प (पु०), देशरूप (न०), समजस (न०) ये पाँच नाम नीतिके हैं । युक्त, औपयिक, लभ्य, भजमान, अभिनीत ॥ २४ ॥ न्याय्य ये छ नाम न्यायसे युक्त द्रव्य आदिके हैं और छहों शब्द (त्रि०) हैं । संप्रधारणा (स्त्री०), समर्थन (न०) ये दो नाम युक्त और अयुक्त परीक्षाके हैं । अपवाद (पु०) निर्देश (पु०), निर्देश (पु०), शासन (न०) ॥ २५ ॥ शिष्टि (स्त्री०), आज्ञा (स्त्री०) ये छ नाम आज्ञाके हैं । सस्था, मर्यादा, धारणा, स्थिति ये चार (स्त्री०) नाम न्यायमार्गीनी स्थितिके हैं । आगस् (मान्त न०), अपराध (पु०), मन्तु (पु०) ये तीन नाम अपराधके हैं । उद्धान, बन्धन ये दो (न०) नाम बन्धनके हैं ॥ २६ ॥ द्विपाद्य यह एक (पु०) नाम दुगुने दंडका है । भागधेय, करो, बलि ये तीन (पु०) नाम राजग्राह्य भागके हैं । शुल्क यह एक (पु० न०) नाम घाट आदिमें ले जाने और लानेमें राजग्राह्य भाग अर्थात् महसूयका है । प्राभृत, प्रदेशन ॥ २७ ॥ उपायन, उपग्राह्य, उपहार, उपदा ये छ नाम भेटके हैं । उपदा (स्त्री०) उपहार (पु०) अत्रेप (न०) हैं । सुदाय (पु०), हरण (न०) ये दो नाम कन्यादादिसे तथा उदकधर्मा जो टिगा जाये उनके हैं ॥ २८ ॥ नरका

अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
 महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥
 प्रक्रिया त्वाधिकारः स्याच्चाभरं तु प्रकीर्णकम् ।
 नृपासनं यत्तद्भद्रासनं सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
 छत्रं छात्रं त्वातपत्रं राजस्तु नृपलक्ष्म तत् ।
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥
 निवेशः शिविरं षण्ढे सज्जनं तूपरक्षणम् ।
 हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥
 दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।
 मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥

(पु०), तदात्व (न०) ये दो नाम वर्तमान कालके हैं । आयति यह एक (स्त्री०) नाम आनेवाले कालका है । सांढष्टिक यह एक (न०) नाम तात्कालिक फलका है । उदर्क यह एक (पु०) नाम भाषि (होनेवाले) फलका है ॥ २९ ॥ अदृष्ट यह एक (न०) नाम अग्निके उत्पात और अत्यंत जलवृष्टिसे उत्पन्न भयका है । दृष्ट यह एक (न०) नाम स्वदेश और परदेशसे उत्पन्न चौर आदिके भयका है । अहिभय यह एक (न०) नाम राजाओंको अपने सहायकसे उपजे भयका है ॥ ३० ॥ प्रक्रिया (स्त्री०), अधिकार (पु०) ये दो नाम व्यवस्था स्थापनके हैं । चामर, प्रकीर्णक ये दो (न०) नाम चँवरके हैं । नृपासन, भद्रासन ये दो (न०) नाम मणि आदिसे बने हुए राजाके आसनके हैं । सिंहासन यह एक (न०) नाम सुवर्णसे रचे हुए आसनका है ॥ ३१ ॥ छत्र, आतपत्र ये दो (न०) नाम छत्रके हैं । नृपलक्ष्मन् (नान्त) यह एक (न०) नाम राजाके छत्रका है । भद्रकुम्भ, पूर्णकुम्भ ये दो (पु०) नाम पूरित कलशके हैं । भृङ्गार (पु०), कनकालुका (स्त्री०) ये दो नाम सोनेसे बने हुए पात्रके हैं ॥ ३२ ॥ निवेश (पु०), शिविर (न०) ये दो नाम सेनाके निवासस्थानके हैं । सज्जन, उपरक्षण ये दो (न०) नाम पहरा (गस्त) के हैं । हस्ती, घोडा, रथ, प्यादा ये चार सेनाके अंग हैं ॥ ३३ ॥ दन्तिन् (इन्नन्त), दन्तावल, हस्तिन् (इन्नन्त), द्विरद, अनेकप, द्विप, मतंगज, गज, नाग, कुञ्जर, वारण, करिन् (इन्नन्त) ॥ ३४ ॥

इभं स्तम्बेरमं पद्मी यूथनाथस्तु यूथपः ।
 मदोत्कटो मदकलः कलम. करिशावकः ॥ ३५ ॥
 प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समा उद्धान्तनिर्मदौ ।
 हास्तिक गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥
 गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकर. ।
 कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥
 अवग्रहो ललाट स्यादीपिका त्वक्षिभूटकम् ।
 अपाङ्गदेशो निर्याण कर्णमूल तु चूलिका ॥ ३८ ॥
 अथ कुम्भस्य बाहिर्य प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
 आसनं स्कन्धदेशं स्यात्पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

इभ, स्तम्बेरम, पद्मिन् (इन्नन्त) ये पन्द्रह (पु०) नाम हाथीके हैं । यूथ
 नाथ, यूथप ये दो (पु०) नाम हाथियोंके समूहमें मुख्य हाथीके हैं । मदो
 उत्कट, मदकल ये दो (पु०) नाम मदसे उन्मत्त हुए हाथीके हैं । कलम,
 करिशावक ये दो (पु०) नाम हाथीके बच्चेके हैं ॥ ३५ ॥ प्रभिन्न, गर्जित,
 मत्त ये तीन (पु०) नाम शिरसे हुए मदगले हाथीके हैं । उद्धान्त, निर्मद
 ये दो (पु०) नाम मदमें रहित हाथीके हैं । हास्तिक (न०), गजता
 (स्त्री०) ये दो नाम हाथियोंके समूहके हैं । करिणी, धेनुका, वशा ये तीन
 (स्त्री०) नाम हाथीनीके हैं ॥ ३६ ॥ गण्ड, कट ये दो (पु०) नाम हाथीके
 कपोलके हैं । मद (पु०), दान (न०) ये दो नाम हाथीके मदके पानीके
 हैं । वमथु, करशीकर ये दो (पु०) नाम हाथीकी सूँडसे निरुत्ते हुए पा
 नीके किनारोंके हैं । कुम्भ यह एक (पु०) नाम हाथीके शिरसे पिण्डोंका
 है । विदु यह एक (पु०) नाम दोनों उभोंके मध्यके आकाशस्थानका है ।
 ॥ ३७ ॥ अवग्रह (पु०) यह एक नाम हाथीके मन्त्रका है । ईपिका
 (स्त्री०), अक्षिभूटक (न०) ये दो नाम हस्तीके नेत्रगोलके हैं । निर्याण
 यह एक (न०) नाम हाथीके त्र्यक्षदेशका है । चूलिका यह एक (स्त्री०)
 नाम हाथीके कर्णमूलका है ॥ ३८ ॥ बाहिर्य यह एक (न०) नाम
 हाथीके उभोंके अधोभागका है । प्रतिमान यह एक (न०) नाम बाहि
 र्यके नीचे दोनोंके मध्यका है । आसन यह एक (न०) नाम हाथीके
 रथका है । पद्मक यह एक (न०) नाम हाथीके बिन्दुओंके समूहका

पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।

द्वौ पूर्वपश्चाज्झादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥

तोत्रं वेणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खले ।

अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे ।

प्रवेण्यास्तगणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजबन्धनी ।

घोटके वीतितुंगतुरङ्गाश्चतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥

वाजिवाहार्बगन्धर्वहयसैन्धवमत्तयः ।

आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाल्लिका इयाः ।

यग्रश्चोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

हे ॥ ३९ ॥ पक्षभाग यह एक (पु०) नाम हाथीके पार्श्वभागका है । दन्त-
भाग यह एक (पु०) नाम हाथीके अग्रभागका है । गात्र यह एक (न०)
नाम हाथीके पूर्व जंघा आदि देशका है । अवर - यह एक (न०) नाम
हाथीके जंघा आदि पश्चाद्भागका है ॥ ४० ॥ तोत्र, वेणुक ये दो (न०)
नाम चावकके हैं । आलान यह एक (न०) नाम बंधनके आधारस्तंभ
(खंटे) का है । शृङ्खल (त्रि०), अंदुक (पु०), निगड (पु० न०)
ये तीन नाम सांकलके हैं । अंकुश (पु० न०), सृणि (स्त्री०) ये दो नाम
अंकुशके हैं ॥ ४१ ॥ दूष्या, कक्ष्या, वरत्रा ये तीन (स्त्री०) नाम कम-
रबंधनके उपयोगी चर्मकी रस्सीके हैं । कल्पना, सज्जना ये दो (स्त्री०)
नाम मालिकको बैठानेके लिये हस्तीको सज्जी करनेके हैं । प्रवेणी (स्त्री०),
आस्तरण (न०), वर्ण (पु०), परिस्तोम (पु०), कुथ (पु० स्त्री०)
ये पांच नाम हस्तीकी पालखी वा झूलके हैं ॥ ४२ ॥ वीत यह एक (पु०)
नाम युद्ध आदिको नहीं सहनेवाले हाथी घोड़ेका है । वारी यह एक
(स्त्री०) नाम हाथी बंधनकी पृथ्वीका है । घोटक, वीति, तुरग, तुरंग,
अश्व, तुरंगम ॥ ४३ ॥ वाजिन (इन्नन्त), वाह, अर्वन् (नान्त), गंधर्व,
हय, सैन्धव, सप्ति ये तेरह (पु०) नाम घोड़ेके हैं । आजानेय यह एक
(पु०) नाम सुन्दर जातीमें उत्पन्न हुए घोड़ेका है । विनीत यह एक (पु०)
नाम सुन्दर सीखे हुए घोड़ेका है ॥ ४४ ॥ वनायुज यह एक (पु०)

पृष्ठ्य, स्थौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य य' ।

वालः किशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडव गणे ॥ ४६ ॥

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।

कश्यं तु मध्यमश्चाना हेषा हेषा च निस्वन' ॥ ४७ ॥

निगालस्तु गलोद्देशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्वत् ।

आस्वन्दित धौरितक रोचित वलिगत प्लुतम् ॥ ४८ ॥

गतयोऽधू' पश्च धारा घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।

कविका तु खलीनोऽस्त्री शफं क्लीवे खु' पुमान् ॥ ४९ ॥

नाम वनायुदेशमें उत्पन्न होनेवाले घोड़ोंका है । पारसीक यह एक (पु०) नाम पारसदेशमें उत्पन्न हुए घोड़ेका है । कांजोज, बाहिक ये दो (पु०) नाम घोड़ोंके भेदोंके हैं । ययु यह एक (पु०) नाम अश्वमेध यज्ञके हित घोड़ेका है । जवन यह एक (पु०) नाम बहुत वेगवाले घोड़ेका है ॥ ४६ ॥ पृष्ठ्य, स्थौरिन (इवन्त) ये दो (पु०) नाम जल आदिमें बोझको ले जानेवाले घोड़ोंके हैं । कर्क यह एक (पु०) नाम सुपेद घोड़ेका है । रथ्य यह एक (पु०) नाम रथमें जानेवाले घोड़ेका है । किशोर यह एक (पु०) नाम घोड़ेके बच्चेका है । वामी, अश्वा, वडवा ये तीन (स्त्री०) नाम घोड़ोंके हैं । वाडव यह एक (न०) नाम घोड़ियोंके समूहका है ॥ ४६ ॥ आश्वीन यह एक (त्रि०) नाम घोड़ा एक दिनमें जितना चले उस मार्गका है । कश्य यह एक (न०) नाम घोड़ोंके मध्यभागका है । हेषा, हेषा ये दो (स्त्री०) नाम घोड़ेके शब्द (हिनहिनाने) के हैं ॥ ४७ ॥ निगाल यह एक (पु०) नाम घोड़ेके जोतेकी साधिका है । अश्वीय, आश्व ये दो (न०) नाम घोड़ोंके समूहके हैं । आस्वन्दित यह एक (न०) नाम जहाँ वेगसे पीड़ित हुआ घोड़ा न सुने और न देखे उस गतिकका है । धौरितक यह एक (न०) नाम घोड़ेकी चतुराईसे सरल गतिकका है । रोचित यह एक (न०) नाम घोड़ेकी दुलकी चालका है । वलिगत यह एक (न०) नाम घोड़ेकी टेढ़ी चालका है । प्लुत यह एक (न०) नाम घोड़ेकी चौकड़ी चालका है ॥ ४८ ॥ ये पाँच गति धारा (स्त्री०) कहलाती हैं । प्रोथ यह एक (पु० न०) नाम घोड़ेकी नासिकाका है । कविका (स्त्री०), खलीन (पु० न०) ये दो नाम घोड़ेकी लगामके हैं । शफ (न०), खुर (पु०) ये दो नाम सुमके

पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले वालहस्तश्च वालधिः ।

त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।

असौ पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥

कर्णरिथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।

क्लीवेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलिवाहकम् ॥ ५२ ॥

शिविका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेक्षादिका स्त्रियाम् ।

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।

रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकट्या रथवजे ।

धुरः स्त्री क्लीवे यानमुखं स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

हैं ॥ ४९ ॥ पुच्छ (पु० न०), लूम (न०), लांगूल (न०) ये तीन नाम पूँछके हैं । वालहस्त, वालधि ये दो (पु०) नाम वालोंके समूहसे युक्त पूँछके अग्रभागके हैं । उपावृत्त, लुठित ये दो (त्रि०) नाम घोड़ेके लोटनेके हैं ॥ ५० ॥ शताङ्ग, स्यन्दन, रथ ये तीन (पु०) नाम युद्धके अर्थ बने हुए रथके हैं । पुष्परथ यह एक (पु०) नाम युद्धको छोड़ क्रीड़ाके लिये बनाये हुए रथका है ॥ ५१ ॥ कर्णरिथ (पु०), प्रवहण (न०), डयन (न०) ये तीन नाम वहलके हैं । अनस (सान्त न०), शकट (पु० न०) ये दो नाम गाड़ेके हैं । गन्त्री यह एक (स्त्री०) नाम बैलोंसे जुतनेवाले रथका है ॥ ५२ ॥ शिविका (स्त्री०), याप्ययान (न०) ये दो नाम पालकीके हैं । दोला, प्रेक्षा ये दो (स्त्री०) नाम हिंडोलेके हैं । आगे (त्रि०) हैं । द्वैप, वैयाघ्र ये दो नाम सिंहकी चामड़ेसे मढ़े हुए रथके हैं ॥ ५३ ॥ पाण्डुकम्बल (इन्द्रन्त) यह एक नाम सुपेद कंबलसे मढ़े हुए रथका है । काम्बल यह एक नाम कंबलसे मढ़े हुए रथका है । वास्त्र यह एक नाम वस्त्रसे मढ़े हुए रथका है । आदिशब्दसे चार्म यह नाम चामड़ेसे मढ़े हुए रथका है ॥ ५४ ॥ द्वैप आदि शब्द (त्रि०) हैं । रथ्या, रथकट्या ये दो (स्त्री०) नाम रथोंके समूहके हैं । धुर (स्त्री०), यानमुख (न०) ये दो नाम रथ आदिकी धुरीके हैं । रथांग (न०), अपस्कर

चक्रं रथाङ्गं नस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।
 पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके तु द्वयोराणि ॥ ५६ ॥
 रथगुप्तिर्वरूथो ना कूबरस्तु युगंधरः ।
 अनुकर्षो दार्वधः स्थं प्रासङ्गो ना युगाद्युगः ॥ ५७ ॥
 सर्वं स्याद्वाहनं यान युग्य पत्रं च धोरणम् ।
 परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥
 बाधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
 नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥
 सव्येष्टदक्षिणस्थौ च सज्ञा रथकुटुम्बिनः ।
 रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥
 भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
 सेनायाः सम्भेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

(पु०) ये दो नाम रथके अवयवमात्रके अर्थात् तागेके हैं ॥ ५५ ॥ चक्र, रथांग ये दो (न०) नाम रथके पहियोंके हैं । नेमि (स्त्री०), प्रधि (पु०) ये दो नाम रथके पहियोंकी नेमिके हैं । पिण्डिका, नाभि ये दो (स्त्री०) नाम पहियोंके मध्यभागके हैं । आणि यह एक (पु० स्त्री०) नाम रथकी लहोदर (कुलावे) का है ॥ ५६ ॥ रथगुप्ति (स्त्री०), वरूथ (पु०) ये दो नाम रथके लोहे आदिसे बनाये हुए आच्छादन अर्थात् छत्रीके हैं । कूबर, युगंधर ये दो (पु०) नाम रथकी डडीके हैं । अनुकर्ष यह एक (पु०) नाम रथके नीचेके भागके काठका है । प्रासग यह एक (पु०) नाम रथ आदिके जुआका है ॥ ५७ ॥ यान, युग्य, पत्र, धोरण ये चार (न०) नाम हस्ती घोडा आदि वाहनके हैं । वैनीतिक यह एक (पु० न०) नाम परंपराकी पालकी आदि वाहनका है ॥ ५८ ॥ बाधोरण, हस्तिपक, हस्त्यारोह, निषादिन (इन्नन्त) ये चार (पु०) नाम हाथीचारके हैं । नियन्त (ऋकारान्त), प्राजित (ऋकारान्त), यन्त (ऋकारान्त), सूत, क्षत्त (ऋकारान्त), सारथि ॥ ५९ ॥ सव्येष्ट, दक्षिणस्थ ये आठ (पु०) नाम सारथिके हैं । रथिन, स्यन्दनारोह ये दो (पु०) नाम रथमें बैठ युद्ध करनेवालेके हैं । अश्वारोह, सादिन (इन्नन्त) ये दो (पु०) अश्वपर बैठ युद्ध करनेवालेके हैं ॥ ६० ॥ भट, योध,

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
 परिधिरथः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥
 कञ्चुको वारवाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये मकञ्चुकाः ।
 बध्नाते तत्सारसनमधिकाङ्गोऽय शीर्षकम् ॥ ६३ ॥
 शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽय तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
 उरश्छदः कंकटकौ जगरः करचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥
 आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च गिनद्धश्चापिनद्धवत् ।
 संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकंकटः ॥ ६५ ॥
 त्रिष्वामुक्तादयो वर्मभृतां कावचिकं गणे ।
 पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥
 पद्मश्च पदिकश्चाऽय पादातं पतिसंहतिः ।
 शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

योधृ (ऋ मरान्त) ये तीन (पु०) नाम युद्ध करनेवालेके हैं । सेनारक्ष, सैनिक ये दो (पु०) नाम पहिरेसे सेनाकी रक्षा करनेवालोंके हैं । सैन्य, सैनिक ये दो (पु०) नाम सेनामें संपूर्ण एकत्रित हुआँके हैं ॥ ६१ ॥ साहस्र, सहस्रिण (इन्नन्त) ये दो (न०) नाम हजार सेनावालोंके हैं । परिधिरथ, परिचर ये दो (पु०) नाम फौजके चारों ओर घूमनेवालोंके हैं । सेनानी, वाहिनीपति ये दो (पु०) नाम सेनाके पतिके हैं ॥ ६२ ॥ कञ्चुक, वारवाण ये दो (पु० न०) नाम वखतरके हैं । सरितन (न०), अधिकांग (पु०) ये दो नाम कमरपट्टीके हैं । शीर्षक ॥ ६३ ॥ शीर्षण्य, शिरस्त्र ये तीन (न०) नाम टोपके हैं । तनुत्र (न०), वर्मव (नान्त न०), दशन (न०), उरश्छद (पु०), कंकटक (पु०), जगर (पु०), कवच (पु० न०) ये सात नाम कवचके हैं ॥ ६४ ॥ आमुक्त, प्रतिमुक्त, पिनद्ध, अपिनद्ध ये चार (त्रि०) नाम कञ्चुकको धारण करनेवालेके हैं । संनद्ध, वर्मित, सज्ज, दंशित, व्यूढकंकट ये पाँच (त्रि०) नाम कवचको धारण करनेवालेके हैं ॥ ६५ ॥ कावचिक यह एक (न०) नाम कवचको धारण करनेवालोंके समूहका है । पदाति, पत्ति, पदग, पादातिग, पदाति ॥ ६६ ॥ पद्म, पदिक ये सात (पु०) नाम प्यादेके हैं । पादात यह एक

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिख. कृतपुंखत् ।

अपराद्धपृष्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्रुतसायकः ॥ ६८ ॥

धन्वी धनुष्मान् धानुष्मो निपद्मचर्त्री धनुर्धर* ।

स्यात्काण्डवास्तु काण्डीर* शाक्तीक शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधहेतिकौ ।

नैस्त्रिशिकोऽभिहेतिः स्यात्समौ प्रासिककोन्तिकौ ॥ ७० ॥

चर्मी फलकपाणि. स्यात्पताकी वैजयन्तिक. ।

अनुप्लव* सहायश्चाऽनुचरोऽभिचरः समा. ॥ ७१ ॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रत. सरपुरःसरा. ।

पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थर. ॥ ७२ ॥

जङ्घालोऽतिज्वस्तुल्यो जङ्घाकरिकजाह्निकौ ।

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जव* ॥ ७३ ॥

(न०) नाम प्यादोके समूहका है । आगेके सायुगीन शब्दतक (त्रि०) है । शस्त्राजीव, कांडपृष्ठ, आयुधीय, आयुधक ये चार नाम शस्त्रसे जीविका करनेवालेके हैं ॥ ६७ ॥ कृतहस्त, सुप्रयोगविशिख, कृतपुंख ये तीन नाम शरके फेंकनेमें कुशल अर्थात् तारदाजके हैं । अपराद्धपृष्क यह एक नाम निशानसे चूकनेवालेका है ॥ ६८ ॥ धन्विन् (इन्नन्त), धनुष्मत् (मत्वन्त), धानुष्क, निपगिन्, अस्त्रिन्, धनुर्धर ये छ नाम धनुषधारीके हैं । कांडवत् (मत्वन्त), कांडीर ये दो नाम शरको धारण करनेवालेके हैं । शाक्तीक, शक्तिहेतिक ये दो नाम बरछी को धारण करनेवालेके हैं ॥ ६९ ॥ याष्टीक यह एक नाम लाठीवालेका है । पारश्वधिक यह एक नाम फरसा वालेका है । नैस्त्रिशिक यह एक नाम तलवारवालेका है । प्रासिक, कौन्तिक ये दो नाम भालेसे लड़नेवालेके हैं ॥ ७० ॥ चर्मीन् (इन्नन्त), फलकपाणि ये दो नाम ढालको धारण करनेवालेके हैं । पताकिन् (इन्नन्त), वैजयन्तिक ये दो नाम ध्वजा (निशान) को धारण करनेवालेके हैं । अनुप्लव, सहाय, अनुचर, अभिचर ये चार नाम सेवकके हैं ॥ ७१ ॥ पुरोग, अग्रेसर, प्रष्ठ, अग्रत सर, पुर सर, पुरोगम, पुरोगामिन् (इन्नन्त) ये सात नाम आगे चलनेवालेके हैं । मन्दगामिन् (इन्नन्त), मन्थर ये दो नाम हौले २ चलनेवालेके हैं ॥ ७२ ॥ जङ्घाल, अतिजन ये दो नाम अ

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

त्यंत वेगसे चलनेवालेके हैं । जंघाकरिक, जांघिक ये दो नाम जंघाके बलसे जीनेवालेके हैं । तरस्वित्र (इन्नन्त), त्वरित, वेगित्र (इन्नन्त), प्रजवित्र (इन्नन्त) जवन, जब ये छः नाम शीघ्र चलनेवालेके हैं ॥ ७३ ॥ जय्य यह एक नाम जो शीघ्र जीतनेको शक्य हो उसका है । जेय यह एक नाम जीतनेके योग्यका है । जैत्र, जेतृ (ऋकारान्त) ये दो नाम जीतनेवालोंके हैं ॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य, अभ्यमित्र्यीय, अभ्यमित्र्यीण ये तीन नाम शत्रुओंके सन्मुख अपनी सामर्थ्यसे गमन करनेवालेके हैं । ऊर्जस्वल, ऊर्जास्वित्र (इन्नन्त) ये दो नाम अत्यंत पराक्रमीके हैं ॥ ७५ ॥ उरस्वत् (मत्वन्त), उरसिल ये दो नाम सुन्दर छातीवालेके हैं । रथिन, रथिक, रथित्र (इन्नन्त) ये तीन नाम रथके स्वामीके हैं । अनुकामीन यह एक नाम यथेच्छ गमनशीलका है । अत्यंतीन यह एक नाम अत्यंत गमनशीलका है ॥ ७६ ॥ शूर, वीर, विक्रान्त ये तीन नाम शूरवीरके हैं । जेतृ (ऋकारान्त), जिष्णु, जित्वर ये तीन नाम जयशीलके हैं । सांयुगीन यह एक नाम युद्धकुशलका है । शस्त्राजीव आदि शब्द (त्रि०) हैं ॥ ७७ ॥ ध्वजिनी, वाहिनी, सेना पृतना, अनीकिनी, चमू, वरूथिनी (ये स्त्री०), बल, सैन्य, चक्र (ये न०), अनीक (पु० न०) ये ग्यारह नाम सेनाके हैं ॥ ७८ ॥ व्यूह यह एक (पु०) नाम सेनाके युद्धके लिये रचना विशेषकरके स्थापन क-

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ।
 पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादारूपा यथोत्तरम् ॥ ८० ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चम्बू ।
 अनीकिनी दशानीकिन्यक्षौहिण्यय सपदि ॥ ८१ ॥
 संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्या विपदापदी ।
 आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥
 धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
 इष्वासोऽप्यय कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥
 कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुनपुस्तकौ ।
 कोटिरस्याटनी गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥

रत्नेका है । मुखभागमें रथ हों पृष्ठभागमें घोड़े हों घोड़ोंके पीछे प्यादे हों और दोनों पार्श्वोंमें हाथी हों वह व्यूह कहाता है । व्यूहके दृढ मङ्गल आदि भेदविशेष युद्धमें हैं । प्रत्यासार, व्यूहपाणि ये दो (पु०) नाम व्यूहके पृष्ठभागके हैं । प्रतिग्रह यह एक (पु०) नाम सेनाके पृष्ठभागका है ॥ ७९ ॥ जहाँ एक हाथी हो एक रथ हो तीन घोड़े और पाँच प्यादे हों वह पत्ति कहाती है । पत्तिके अवयवोंको तीन गुनाकरके उत्तरोत्तर क्रमसे सेनामुख आदि होते हैं ॥ ८० ॥ तीन पत्तियोंका सेना-मुख होता है । तीन सेनामुखोंका गुल्म होता है । तीन गुल्मोंका गण होता है । तीन गणोंकी वाहिनी होती है । तीन वाहिनियोंकी पृतना होती है । तीन पृतनाओंकी चम्बू होती है । तीन चम्बूओंकी अनीकिनी होती है । तीन अनीकिनियोंकी दशानीकिनी और तीन दशानीकिनियोंकी एक अक्षौहिणी होती है । सेनामुख (न०), गुल्म (पु० न०), गण (पु०) और शेष (स्त्री०) है । सप्त ॥ ८१ ॥ संपत्ति, श्री, लक्ष्मी ये चार (स्त्री०) नाम संपत्तिके हैं । विपत्ति, विपद्, आपद् ये तीन (स्त्री०) नाम विपत्तिके हैं । आयुध, प्रहरण, शस्त्र, अस्त्र ये चार (न०) नाम हथियारके हैं ॥ ८२ ॥ धनुस् (सान्त पु० न०), चाप (पु० न०), धन्वन (सान्त न०), शरासन (न०), कोदण्ड (न०), कार्मुक (न०), इष्वास (पु०) ये सात नाम धनुषके हैं । कालपृष्ठ यह एक (न०) नाम कर्णके धनुषका है ॥ ८३ ॥ गाण्डीव, गाण्डिव ये दो नाम अर्जुनके धनुषके हैं

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च शराभ्यास उपासनम् ।

पृषत्कवाणविशिखा अजिह्मगरुगाशुगाः ॥ ८६ ॥

कलस्वमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्रयोः ।

प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाजस्त्रिपूत्तरे ॥ ८७ ॥

निरस्तः प्रहिते वाणे विपाक्ते दिग्धलितकौ ।

तूणोपासङ्गनूगीरानिषङ्गा इषुधिर्द्रयोः ॥ ८८ ॥

तूण्यां खड्गे तु निस्त्रिंशच्चन्द्रहासासिरिष्ठयः ।

कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

और दोनों शब्द (पु० न०) हैं । कोटि, अटनी ये दो (स्त्री०) नाम धनुषके प्रान्तके हैं । गोधा (स्त्री०), तला (स्त्री० न०) ये दो नाम धनुषकी डोरीके शब्दको दूर करनेके लिये चमड़ेके बंधविशेषके हैं ॥ ८४ ॥ लस्तक यह एक (पु०) नाम धनुषके मध्यभागका है । मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी, गुण ये चार नाम धनुषकी डोरीके हैं । गुणशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । प्रत्यालीढ, आलीढ, समपद, वैशाख, मंडल ये पांच भेद धनुषको धारण करनेवालोंकी स्थितिके हैं । वैशाखशब्द (पु०) शेष (न०) हैं ॥ ८५ ॥ लक्ष, लक्ष्य, शरव्य ये तीन (न०) नाम वेधके हैं । शराभ्यास (पु०), उपासन (न०) ये दो नाम शर फेंकनेके अभ्यासके हैं । पृषत्क, वाण, विशिख, अजिह्मग, खग, आशुग ॥ ८६ ॥ कलंब, मार्गण, शर, पत्रिद (इन्नत) , रोप, इषु ये बारह (पु०) नाम वाणके हैं । तहां इषुशब्द (पु० स्त्री०) है । प्रक्ष्वेडन नाराच ये दो (पु०) नाम लोहेसे बने हुए वाणके हैं । पक्ष, वाज ये दो (पु०) नाम ककपक्षी आदिके पंखके हैं । निरस्तशब्दसे आदि लेकर लितक शब्दपर्यंत (त्रि०) हैं ॥ ८७ ॥ निरस्त यह एक नाम छोड़े हुए वाणका है । विपाक्त, दिग्ध, लिप्त ये तीन नाम विपसे युक्त किये वाणके हैं । तूण, उपासङ्ग, नूगीर, निमग, इषुधि, तूणी ये छः नाम वाणके घर (तरकस) के हैं । तहां इषुधिशब्द (पु० स्त्री०), तूणीशब्द (स्त्री०), शेष (पु०) हैं ॥ ८८ ॥ खड्ग, निस्त्रिंश, चन्द्रहास, असिरिष्टि, कौक्षेयक, मंडलाग्र, करवाल, कृपाण

त्सरु* खड्गादिमुष्टौ स्यान्मेखला तन्निबन्धनम् ।

फलकोऽधो फलं चर्म सग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥

हुघणो मुद्गरधनौ स्यादीली कर्वालिका ।

मिन्दपालः सृगस्तुल्यौ पण्डि* परिघातिनः ॥ ९१ ॥

द्वयोः कुठारः स्वाधिति* परशुश्च परश्वध* ।

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च दुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥

वा पुसि शल्प शंकुर्ना सर्वला तोमरोऽस्त्रिगाम् ।

प्रासस्तु कुन्त* कोणस्तु छियः पाल्यश्रिकोट्य* ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वमन्त्रनार्यक* ।

लोहाभिमारोऽस्त्रभृता राज्ञा नीगजनाविधे ॥ ९४ ॥

ये नव (पु०) नाम तलवारके हैं ॥ ८९ ॥ तसरु यह एक (पु०) नाम तलवारके आदिनी मूठरा है । मेखला यह एक (स्त्री०) नाम तलवारके म्यानरा है । फलक (पु० न०), फल (न०), चर्म (न०) ये तीन नाम डालक हैं । सग्राह यह एक (पु०) नाम डालकी ठका है ॥ ९० ॥ हुघण, मुद्गर, धन ये तीन (पु०) नाम मुद्गरके हैं । ईली, कर्वालिका ये दो (स्त्री०) नाम साँडेरे हैं । मिन्दपाल, सृग दो (पु०) नाम गोफियाके हैं । परिघ, परिघातिन ये दो (पु०) नाम लोहेसे बंधे हुए हाथके प्रमाण टटके हैं ॥ ९१ ॥ कुठार स्वाधिति, परशु, परश्वध ये चार नाम कुल्हाड़ेके हैं । तहाँ दुट शब्द (पु० स्त्री०) शेष (पु०) है । शस्त्रौ, असिपुत्री, दुरिका, आसिधेनुका ये चार (स्त्री०) नाम छुरीके हैं ॥ ९२ ॥ शल्प (पु० न०) शर (पु०) ये दो नाम चाणके अग्रभागके हैं । सर्वग (स्त्री०), तोमर (पु० न०) ये दो नाम गुरगुंजशरके हैं । प्रास, कुन्त ये दो (पु०) नाम भाँटेके हैं । कोण, पाले, श्रिकोटि ये चार नाम तटवार आदि प्रासभागके हैं । कोणऽच्छ (पु०), शेष (स्त्री०) है ॥ ९३ ॥ सर्वाभिसार (पु०), सर्वौघ (पु०), सर्वमन्त्रनार्यक (न०) ये तीन नाम शत्रु सेनाके जमादोरे हैं । लोहाभिमार यह एक (पु०) नाम शस्त्रों को धरनेवाली राजाओं को पहनानीके दिन तारा-मन्त्रमयमे शर आदिनी

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ।

यात्रा ब्रज्याऽभिनिर्माणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलितार्थकम् ।

आहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।

स्युर्मागधास्तु मगधा वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षौद्रः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।

अहं पूर्वमहं पूर्वामेत्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

नर्पण लक्षणवाली विधिका है ॥ ९४ ॥ अभिषेणन यह एक (न०) नाम शत्रुके समीप सेनासहित सन्मुख गमनका है । यात्रा (स्त्री०), ब्रज्या (स्त्री०), अभिनिर्माण (न०), प्रस्थान (न०), गमन (न०), गम (पु०) ये छः नाम गमनके हैं ॥ ९५ ॥ आसार (पु०), प्रसरण (न०) ये दो नाम सेनाकी सब ओरकी व्याप्तिके हैं । प्रचक्र, चलित ये दो (न०) नाम चलती हुई सेनाके हैं । अभिक्रम यह एक (पु०) नाम युद्धमें शत्रुओंके प्रति भयरहित शूरवीरके गमनका है ॥ ९६ ॥ वैतालिक, बोधकर ये दो (पु०) नाम राजाओंको स्तुतिकरके प्रभातमें उठानेवालोंके हैं । चाक्रिक, घाण्टिक ये दो (पु०) नाम वन्दिनिशेषके हैं । मागध, मगध, वन्दिन (इत्यन्त), स्तुतिपाठक ये चार (पु०) नाम राजाकी स्तुति करनेवालेके हैं ॥ ९७ ॥ संशप्तक यह एक (पु०) नाम सौगदसे युद्धमेंसे नही मुख मोड़नेवालेका है । रेणु, धूलि, पांशु, रजस् ये चार नाम धूलके हैं । तहाँ रेणुशब्द (पु० स्त्री०) है, धूलिशब्द (स्त्री०), पांशुशब्द (पु०) है, रजस्शब्द (सकारान्त न०) है ॥ ९८ ॥ चूर्ण (पु० न०), क्षौद्र (पु०) ये दो नाम पीसे हुए रजके हैं । समुत्पिञ्ज, पिञ्जल ये दो (पु०) नाम अत्यन्त आकुल हुई सेना आदिके हैं । पताका (स्त्री०), वैजयन्ती (स्त्री०), केतन (न०), ध्वज (पु० न०) ये चार नाम ध्वजाके हैं ॥ ९९ ॥ वीराशंसन

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सभावनात्मनि ।

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्पर यो भवत्यहकारः ॥ १०१ ॥

द्रविणं तर. सहोबलशौर्याणि स्याम शुष्मं च ।

शक्ति. पराक्रम. प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

वीरपान तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।

युद्धमायोधनं जन्य प्रघनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

मृधमास्कन्दनं सरस्य समीकं सापरायिकम् ।

अस्त्रिया समरानीकरणा कलहविग्रही ॥ १०४ ॥

सप्रहारमिसंपातकलिसंस्फोटसयुगा ।

अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवा. ॥ १०५ ॥

समुदायः स्त्रिय. सयत्समित्याजिसमिश्रुध ।

नियुद्ध बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसकुले ॥ १०६ ॥

यह एक (न०) नाम अत्यंत भय देनेवाली युद्धभूमिका है ।
अहपूर्विका यह एक (स्त्री०) नाम मे पहले में पहले ऐसा आग्रहपूर्वक युद्धादि करनेका है ॥ १०० ॥ आहोपुरुषिका यह एक (स्त्री०) नाम गर्वसे अपने विपै सामर्थ्य प्रकट करनेका है । अहमहमिका यह एक (स्त्री०) नाम आपसमें अहकारका है ॥ १०१ ॥ द्रविण, तरस् (सान्त), सहस्, बल, शौर्य स्यामन्, शुष्म, शक्ति, पराक्रम, प्राण ये दश नाम पराक्रमके हैं । तहा शक्ति (स्त्री०), पराक्रम, प्राण (पु०), शेष (न०) ह । विक्रम (पु०), अतिशक्तिता (स्त्री०) ये दो नाम अत्यंत शक्तिके ह ॥ १०२ ॥ वीरपान यह एक (पु०) नाम वर्तमान युद्धमें परिश्रमकी शान्तिके लिये तथा होनेवाले युद्धमें उत्साह बढ़ानेके लिये मदिरा पीनेका है । युद्ध आयोधन, जन्य, प्रघन, प्रविदारण ॥ १०३ ॥ मृध, आस्कन्दन, सरस्य, समीक, सापरायिक (यहातरक न० हैं), समर, अनीक, रण ये तीन (पु० न०), कलह, विग्रह ॥ १०४ ॥ सप्रहार, अभिनपात, कलि, संस्फोट, सयुग, अभ्यामर्द, समाघात, संग्राम, अभ्यागम, आहवा ॥ १०५ ॥ समुदाय यहातरक (पु०) ह, सयत् (पु० स्त्री०), समिति, आजि, समित, युध् ये चार नाम (स्त्री०) ह । इस प्रकार ये इकतीस नाम युद्धके ह । नियुद्ध, बाहुयुद्ध ये दो (न०) नाम बाहुयुद्धके ह । तुमुल यह एक (न०)

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्कारिणां घटना घटा ।
 क्रन्दनं योधसंरावो वृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥
 विस्फारो धनुषः स्त्रानः पटहाडम्बरौ समौ ।
 प्रसभं तु वलात्कारो हठोऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥
 अज्यन्यं ह्रीवमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।
 मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः ।
 वैरशुद्धिः प्रतीकागे वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥
 प्रद्रावोद्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ।
 अपक्रमोऽपयानं च रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

नाम युद्धके विप्रे आपसमें बहुत पीडाका है ॥ १०६ ॥ क्ष्वेडा (स्त्री०), सिंहनाद (पु०) ये दो नाम वीरोंके सिंहशब्दके समान शब्दविशेषके हैं । घटा यह एक (स्त्री०) नाम हस्तियोंके युद्धमें संघटनका है । क्रन्दन यह एक (न०) नाम योद्धाओंके आक्रोशपूर्वक शब्दका है । वृंहित यह एक (न०) नाम हस्तियोंके गर्जनेका है ॥ १०७ ॥ विस्फार यह एक (पु०) नाम धनुषके शब्दका है । पटह, आडंबर ये दो (पु०) नाम संग्रामकी ध्वनि अर्थात् जुझाऊ नगाडेके हैं । प्रसभ (न०), वलात्कार (पु०), हठ (पु०) ये तीन नाम हठके हैं । स्खलित, छल ये दो (न०) नाम युद्धमें धोखा देनेके हैं ॥ १०८ ॥ अजन्य (न०), उत्पात (पु०), उपसर्ग (पु०) ये तीन नाम उत्पातके हैं । मूर्च्छा (स्त्री०), कश्मल (न०), मोह (पु०) ये तीन नाम मूर्च्छाके हैं । अवमर्द (पु०) पीडन (न०) ये दो नाम खेती आदिसे संपन्न हुए देशको परचक्रसे पीडा होनेके हैं ॥ १०९ ॥ अभ्यवस्कन्दन, अभ्यासादन ये दो (न०) नाम शत्रुके सन्मुख जानेके अथवा शस्त्रोंसे उसकी हिम्मत तोड़ देनेके हैं । विजय, जय ये दो (पु०) नाम जयके हैं । वैरशुद्धि (स्त्री०), प्रतीकार (पु०), वैरनिर्यातन (न०) ये तीन नाम वैरको दूर करनेके हैं ॥ ११० ॥ प्रद्राव, उद्राव, संद्राव, सदाव, विद्रव, द्रव, अपक्रम, अपयान ये अठ नाम भागनेके हैं । तहां अपयान (न०), शेष (पु०) हैं । पराजय यह एक (पु०) नाम रणमें भंगका है ॥ १११ ॥ पराजित, पराभूत ये दो नाम

पराजितपराभूतौ त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।
 प्रमापणं निर्वहणं निवारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥
 प्रवासनं परासनं निपृदनं निहिंसनम् ।
 निर्वासनं सज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥
 निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।
 निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥
 उद्घासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ।
 आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥
 स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।
 अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६ ॥
 परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतमेतसंस्थिता ।
 मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते चित्ता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥
 कवन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।
 मशानं स्यात्पितृवनं कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥

निर्जित (हारे हुए) के हैं । नष्ट, तिरोहित ये दो नाम छिपे हुए के हैं और पराजित आदि चारों शब्द (त्रि०) हैं । प्रमापण, निर्वहण, निवारण, विशारण ॥ ११२ ॥ प्रवासन, परासन, निपृदन, निहिंसन, निर्वासन, सज्ञपन, निर्ग्रन्थन, अपासन ॥ ११३ ॥ निस्तर्हण, निहनन, क्षणन, परिवर्जन, निर्वापण, विशसन, मारण, प्रतिघातन ॥ ११४ ॥ उद्घासन, प्रमथन, क्रथन, उद्घासन यहाँ तक (न०) और आगे के (पु०) हैं । आलम्भ, पिञ्ज, विशर, घात, उन्माथ, वधा ये तीस नाम मारने के हैं ॥ ११५ ॥ पञ्चता, कालधर्म, दिष्टान्त, प्रलय, अत्यय, अन्त, नाश, मृत्यु, मरण, निधन ये दश नाम मरण के हैं । तहाँ निधनशब्द (पु० न०) पञ्चता (स्त्री०) मृत्यु (स्त्री० पु०) मरण (न०) और शेष (पु०) हैं ॥ ११६ ॥ परासु, प्राप्तपञ्चत्व, परेत, प्रेत, संस्थित, मृत, प्रमीत ये सात नाम मरे हुए के हैं और (त्रि०) हैं । चित्ता, चित्या, चितिये तीन (स्त्री०) नाम चित्ता के हैं ॥ ११७ ॥ कवन्ध यह एक (पु० न०) नाम गिरसे रहित युद्ध करते हुए पटका है । मशान, पितृवन ये दो (न०) नाम प्रेतभूमि के हैं । कुणप (पु०), शव (पु० न०) ये दो नाम मुदके हैं ॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहौ बन्धां कारा स्याद्बन्धनालये ।

पुंति भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

आयुर्जोवितकालौ ना जीवातुर्जीवनौषधम् ।

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९ ।

ऊरव्य ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।

सेवा श्ववृत्तिर्नृत्नं कृषिरुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतमृते ।

सत्यान्तं वणिग्भावः स्याद्वणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥

प्रग्रह (पु०), उपग्रह (पु०), बन्दी (स्त्री०) ये तीन नाम कैदके हैं । कारा यह एक (स्त्री०) नाम जेलखानेका है । असु, प्राण ये दो (पु०) नाम प्राणके हैं । तहां प्राणशब्द बहुवचनांत है । असुशब्द विकल्पकरके बहुवचनांत है । जीव (पु०), असुधारण (न०) ये दो नाम प्राणधारणके हैं ॥ ११९ ॥ आयुस् यह एक (न०) नाम उमरका है । जीवातु यह एक (पु०) नाम जीवनकी औषधका है । इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः । ऊरव्य, ऊरुजा, अर्य, वैश्य, भूमिस्पृश ये छः (पु०) नाम वैश्यके हैं । आजीव (पु०), जीविका (स्त्री०), वार्ता (स्त्री०), वृत्ति (स्त्री०), वर्तन (न०), जीवन (न०) ये छः नाम जीविका-भावके हैं ॥ १ ॥ कृषि (स्त्री०) अर्थात् खेती करना, पाशुपाल्य (न०) अर्थात् गौ आदिकी रक्षा करना, वाणिज्य (न०) अर्थात् खरीदना बेचना ये तीन वृत्ति वैश्यकी हैं । सेवा, श्ववृत्ति अर्थात् कुत्तेकी वृत्ति ये दो (स्त्री०) नाम सेवाके हैं यह निन्दनीय है । अनृत (न०), कृषि (स्त्री०) ये दो नाम खेती करनेके हैं । और जीवोंकी हिंसा होनेसे खेतीभी निन्दनीय है । उञ्छ यह एक (पु०) नाम दुकान आदिमें पड़े हुए दानोंको इकट्ठे करनेका है । शिल यह एक (न०) नाम खेत आदिके स्वामीके त्यागे हुए अन्नके दानोंको ग्रहण करनेका है । ये दोनों ऋत (न०) कहलाते हैं ॥ २ ॥ मृत यह एक (न०) नाम मांगनेवालेको अन्न दिये जाने का

उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीद वृद्धिजीविका ।

याच्ययाप्त याचितकं नियमादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

उग्रमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोस्त्वग्राहकौ क्रमात् ।

कुसीदको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।

क्षेत्र त्रैहेयशालेय त्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥

यव्य यवक्य पाष्टिक्यं यवादिभवन हि यत ।

तिल्यं तैलीनवन्मापोमाणुमङ्गा द्विरूपता ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवसमम् ।

“ शाकक्षेत्रादिके शाकशाकट शाकशाकिनम् । ”

बीजाकृतं तूमकृष्टे सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

हे । अमृत यह एक (न०) नाम बिना मांगनेवाले को अन्न आदि देनेका है । सत्यावृत यह एक (न०) नाम खरीदना बेचना आदि वाणिज्यका है । चर्याकि इसमें कुछ सत्य और कुछ झूठ बोलना पड़ता है । ऋण (न०) पर्युद्धन (न०) ॥ ३ ॥ उद्धार (पु०) ये तीन नाम कजेके हैं । अर्थप्रयोग (पु०), कुसीद (न०), वृद्धिजीविका (स्त्री०) ये तीन नाम व्याजके हैं । याचितक यह एक (न०) नाम मांगनेसे प्राप्त हुऐका है । आपमित्यक यह एक (न०) नाम नियमसे प्राप्त हुऐका है ॥ ४ ॥ उत्तमर्ण यह एक (पु०) नाम माहजारका है । अधमर्ण यह एक (पु०) नाम कर्जदारका है । कुसीदर, वार्धुषिक, वृद्ध्याजीव, वार्धुषि ये चार (पु०) नाम व्याजचारके हैं ॥ ५ ॥ क्षेत्राजीव, कर्षक, कृषिक, कृषीवल ये चार (पु०) नाम खेती करनेवालेके हैं । अंगिरे शब्द (त्रि०) है । त्रैहेय यह एक नाम त्रीहि अन्न उपजनेसे खेतका है । शालेय यह एक नाम शालिचारु उपजनेसे खेतका है ॥ ६ ॥ यव्य यह एक नाम जव उपजनेसे खेतका है । यवक्य यह एक नाम अन्नजव उपजनेसे खेतका है । पाष्टिक्य यह एक नाम माठी अर्थात् माठ रातियोंमें जो पड़े उस चावंगेसे खेतका है । तिल्य, तैलीन ये दो नाम तिल उपजनेसे खेतके हैं । माप्य, मापीण ये दो नाम उट्ट उपजनेसे खेतके हैं । उग्र, औमीन ये दो नाम अल्मी उपजनेसे खेतके हैं । अन्ध, आणवीन ये दो नाम अण अणविशेष उपजनेसे खेतके हैं । भाप्य, भापीन ये दो नाम भांग उपजनेसे खेतके हैं ॥ ७ ॥ मौद्गीन यह एक नाम मृग

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
 द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥
 द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।
 खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥
 पुनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।
 कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥
 लोष्ठानि लेष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः ।
 प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

उपजनेके खेतका है । कौद्रवीण यह एक नाम कोद्रू उपजनेके खेतका है ।
 चाणकीन यह एक नाम चने उपजनेके खेतका है । गौधूमीन यह एक
 नाम गेहूं उपजनेके खेतका है । ऐसे अन्यभी जानने । “ शाकशाकट, शाक-
 शाकिन ये दो नाम शाक उपजनेके खेतके हैं । ” बीजाकृत यह एक नाम
 पहले बोया पीछे जोते ऐसे खेतका है । सीत्य, कृष्ट, हल्य ये तीन नाम
 जुते हुए खेतके हैं ॥८॥ त्रिगुणाकृत, तृतीयाकृत, त्रिहल्य, त्रिसीत्य ये चार
 नाम तीन बार जोते हुए खेतके हैं । द्विगुणाकृत, द्वितीयाकृत, द्विहल्य,
 द्विसीत्य, शम्बाकृत ये पांच नाम दो बार जुते हुए खेतके हैं ॥ ९ ॥ द्रोण
 आदि परिमित अन्नके बोये जाने आदिमें द्रौणादिक होते हैं । जैसे-द्रौ-
 णिक यह एक नाम जिसमें द्रोणभर अन्न बोया जावे उस खेतका है ।
 आढकिक यह एक नाम आढकभर अन्न बोया जावे उस खेतका है ।
 प्रास्थिक यह एक नाम प्रस्थभर अन्न बोया जावे उस खेतका है । आदि
 शब्दसे द्रौणिक आदि परिमित अन्न जिस कढावमें पक सके उसकेभी हैं ।
 खारीक यह एक नाम खारीभर अन्न जिसमें बोया जाय उस खेतका है ।
 उत्तमर्णसे आदि ले खारीकशब्दपर्यंत (त्रि०) हैं ॥ १० ॥ वप्र (पु०
 न०), केदार (पु०), क्षेत्र (न०) ये तीन नाम खेतके हैं । कैदारक,
 कैदार्य, क्षेत्र, कैदारिक ये चार (न०) नाम खेतके समूहके हैं ॥ ११ ॥
 लोष्ट (पु० न०), लेष्ट- (पु०) ये दो नाम माटीके टुकडेके हैं । कोटिश,
 लोष्टभेदन ये दो (पु०) नाम माटीके डेले फोड़नेकी मोगरीके हैं । प्रा-
 जन, तोदन, तोत्र ये तीन (न०) नाम चावक तथा सांटेके हैं । खनित्र,
 अवदारण ये दो (न०) नाम कुदार या कसीके हैं ॥ १२ ॥

दात्र लवित्रमावन्धो योत्र योक्त्रमथो फलम् ।
 निरीश कुट्टक फालः कृषको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
 गोदारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।
 ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
 पुसि मेघिः खलेदारु न्यस्त यत्पशुबन्धने ।
 आशुव्रीहिः पाटलः स्याच्छितशक्यवौ समौ ॥ १५ ॥
 तोक्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः ।
 हरेणुण्णकौ चास्मिन्कोरद्वपस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥
 मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्टकमयुष्टकौ ।
 वनमुष्टे सर्पे तु द्वौ तन्तुमकदम्बकौ ॥ १७ ॥
 सिद्धार्थस्त्वेव धवलौ गोधूमः सुमनः समौ ।
 स्याद्यावकस्तु कुल्मापश्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

दात्र, लवित्र ये दो (न०) नाम दरांतीके हैं । आवध (पु०), योत्र (न०), योक्त्र (न०) ये तीन नाम जोतेके रस्सीके हैं । फ०, निरीश, कुट्टक, फाल (पु० न०), कृषक (पु०) ये पाच नाम जोतनेके हलकी कुशके समीप जो काठ है उसके हैं । लांगल, हल ॥ १३ ॥ गोदारण, सीर ये चार नाम हलके हैं । सीरशब्द (पु०) शेष (न०) हैं । शम्या (स्त्री०), युगकीलक (पु०) ये दो नाम कीलके हैं । ईषा (स्त्री०), लांगलदण्ड (पु०) ये दो नाम हरिशके हैं । सीता यह एक (स्त्री०) नाम हलकी रसाका है ॥ १४ ॥ मोघि (पु०), खलेदारु (न०) ये दो नाम बेल आदि बांधनेके काष्ठखडके हैं । आशु, व्रीहि, पाटल ये तीन (पु०) नाम धोहिके हैं । शितशक, यय ये दो (पु०) नाम जरीके हैं ॥ १५ ॥ तोक्म यह एक (पु०) नाम हरे जयका है । कलाय, सतीनक, हरेणु, रेणुका ये चार (पु०) नाम मटरके हैं । कोरद्वप, कोद्रव ये दो (पु०) नाम कोद्रुके हैं ॥ १६ ॥ मङ्गल्यक, मसूर ये दो (पु०) नाम मसूरके हैं । मकुष्टक, मयुष्टक, वनमुष्ट ये तीन (पु०) नाम मोठके हैं । मर्पे, तन्तुम, कदम्बक ये तीन (पु०) नाम सरसोंके हैं ॥ १७ ॥ सिद्धार्थ यह एक (पु०) नाम सुपेद सरसोंका है । गोधूम, सुमन ये दो (पु०) नाम गेहूँके हैं । यावक, कुल्माप ये दो (पु०) नाम आधे पत्रे हुए ज्व आदि

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कंगुप्रियंगू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

मातुलानी तु भङ्गायां ब्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्काणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्यं ब्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छरतृणादिनः ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

कडङ्गरो बुसं क्लीबे धान्यत्वाच्च तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्बा त्रिषूत्तरे ।

ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

वा कुलथीके हैं । चणक, हरिमंयक ये दो (पु०) नाम चनोंके हैं ॥ १८ ॥ तिलपेज, तिलपिंज ये दो (पु०) नाम फलरहित तिल अर्थात् रानतिलके हैं । क्षव (पु०), क्षुताभिजनन (पु०), राजिका (स्त्री०), कृष्णिका (स्त्री०), आसुरी (स्त्री०) ये पांच नाम राईके हैं ॥ १९ ॥ कंगु, प्रियंगु ये दो (स्त्री०) नाम कांगनीके हैं । अतसी, उमा, क्षुमा ये तीन (स्त्री०) नाम अलसीके हैं । मातुलानी, भंगा ये दो (स्त्री०) नाम सनके हैं । अणु यह एक (पु०) नाम ब्रीहिके भेदका है ॥ २० ॥ किंशारु यह एक (पु०) नाम किशारी अन्नका है । इसका अग्रभाग सुईके समान होता है । कणिश यह एक (पु० न०) नाम खेतीके नये शिर अथवा बालका है । धान्य (न०), ब्रीहि (पु०), स्तंबकरि (पु०) ये तीन नाम ब्रीहि जव आदिके हैं । स्तंब यह एक (पु०) नाम तृण जव आदिके गुच्छेका है ॥ २१ ॥ नाडी (स्त्री०), नाल (न०) ये दो नाम इस गुच्छेके कांडके हैं । पलाल यह एक (पु० न०) नाम फलरहित कांडका है । कडंगर (पु०), बुस (न०) ये दो नाम भूसके हैं । तुष यह एक (पु०) नाम अन्नके छिलके (भूसी) का है ॥ २२ ॥ शूक यह एक (पु० न०) नाम महीन चिकना तीक्ष्ण और पैना ऐसे अग्रभागवाले जव आदिका है । शमी, शिम्बा ये दो (स्त्री०) नाम सेंगरीके हैं । आगे ऋद्धा आदि चारों शब्द वाच्यलिंगी हैं । ऋद्ध, आवसित ये दो नाम तृणसे अलग किये अन्नके हैं । पूत, बहुलीकृत ये दो नाम छाज आदिसे शुद्ध किये

मापादयः शमीधान्ये शकधान्ये यवादयः ।

शालयः कलमाद्याश्च पष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।

अयोत्र मुसलोऽस्त्री स्यादुदृत्तलमुल्लूखलम् ॥ २५ ॥

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री चालनी तितउः पुमान् ।

स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटौ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

समानौ रसवत्या तु पाकस्थानमहानसे ।

पौरोगवस्तदध्यक्षः सूपकागस्तु वह्मवाः ॥ २७ ॥

आरालिका जान्धसिकाः सूता औदनिका गुणाः ।

आपूपिक कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिफा ।

अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि हमन्त्यपि ॥ २९ ॥

अन्नके है । यहाँ तक (त्रि०) है ॥ २३ ॥ उदृत्, मूग आदि शमीधान्य
कहाते हैं । जम गेहू आदि शकधान्य कहाते हैं । बटी नालवाला और
बहुत पानीसे उपजा ऐसा व्रीहिविशेष रूम कहालाता है । कलम आदि
और साठ रात्रिभ पत्रनेवाले ये सब चालल शाकि कहाते हैं । ये मय
माप आदिशब्द (पु०) है ॥ २४ ॥ नीवार, श्यामाक आदि (पु०) नाम
तृणधान्यके हैं । गवेधु, गवेधुका ये दो (स्त्री०) नाम मुनिजनोंके अन्नर
हैं । अयोत्र (न०), मुसल (पु० न०) ये दो नाम मूसलके हैं । उद्वल,
उल्लूखल ये दो (न०) नाम ओगलीक ह ॥ २५ ॥ प्रस्फोटन (न०), शूर्प
(पु० न०) ये दो नाम छाजके ह । चालनी (स्त्री०), तितउ (पु०) ये दो
नाम चालनीके हैं । स्यूत, प्रमेय ये दो (पु०) नाम चोरेख ह । कण्डोल,
पिट ये दो (पु०) नाम पिठारीके ह । कट, किलजक ये दो (पु०) नाम
छबडेके ह ॥ २६ ॥ रसवती (स्त्री०), पाकस्थान (न०), महानस (पु०
न०) ये तीन नाम पाकशालाके ह । पौरोगव यह एक नाम पाकशाला
मारिका है । सूपकार, वह्म ॥ २७ ॥ आरालिक, आंधसिक, सूद, औद
निक, गुण ये सात (पु०) नाम रमादयेके हैं । आपूपिक, कान्दविक,
भक्ष्यकार ये तीन नाम पत्रधान बनानेवालेके हैं । तहाँ पौरोगव आदि और
भक्ष्यकारपर्यंत शब्द (त्रि०) है ॥ २८ ॥ अश्मन्त (न०), उद्धान (न०),

हसन्प्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।

ह्रीवेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

अलङ्गरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

पिठरः स्यात्पुष्पा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

घटः कुटनिपावस्त्री शरावो वर्धमानकः ।

ऋजीपं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

कुतुः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥

दर्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।

अस्त्री शाकं हरितकं शिशुस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥

अधिश्रयणी (स्त्री०), चुल्लि (स्त्री०), अंतिका (स्त्री०) ये पांच नाम
 चूल्हेके हैं । अंगारधानिका, अंगारशकटी, हसंती ॥ २९ ॥ हसनी ये
 चार (स्त्री०) नाम अंगीठीके हैं । अंगार, अलात, उल्मुक ये तीन नाम
 अंगारके हैं । तहां अंगार शब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं । अंबरीष,
 भ्राष्ट्र ये दो नाम चने आदिके भूननेके पात्रके हैं । तहां अंबरीष शब्द
 (न०) और भ्राष्ट्रशब्द (पु०) है । कन्दु (पु० स्त्री०), स्वेदनी (स्त्री०) ये
 दो नाम मदिरा आदिके भट्टीके हैं ॥ ३० ॥ अलंजर, मणिक ये दो (पु०)
 नाम बड़े मटकेके हैं । कर्करि, आलु, गलतिका ये तीन (स्त्री०) नाम
 झारीके हैं । पिठर (पु०), स्याली (स्त्री०), उखा (स्त्री०), कुंड
 (न०) ये चार नाम नैकनीके हैं । कलश ॥ ३१ ॥ घट, कुट, निप ये
 चार नाम कलशके हैं । तहां कलशशब्द (त्रि०) है । घटशब्द (पु०
 स्त्री०) शेष (पु०) हैं । शराव (पु० न०), वर्धमानक (पु०) ये दो
 नाम सकोरेके हैं । ऋजीप, पिष्टपचन ये दो (न०) नाम तवा कढाईके
 हैं । कंस (पु० न०), पानभाजन (न०) ये दो नाम दूध आदि पीनेके
 पात्रके हैं ॥ ३२ ॥ कुतु यह एक (स्त्री०) नाम चामसे बने तेल आदिकी
 कुप्पीका है । कुतुप यह एक (पु०) नाम छोटी कुप्पीका है । ये सर्व
 पूर्वोक्त पात्र आवपन आदि संज्ञक हैं । आवपन, भांड, पात्र, अमत्र, भाजन
 ये पांच (न०) नाम वर्त्तनके हैं । पात्रशब्द (पु०) भी पाया जाता है
 ॥ ३३ ॥ दर्वि, कंबि, खजाका ये तीन (स्त्री०) नाम कडछीके हैं । तर्दू-

कलम्बश्च कडम्बश्च वेपवार उपस्करः ।

तित्तिडीक च चुक्र च वृक्षाम्लमथ वेलजम् ॥ ३५ ॥

मरीच कोलक कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।

जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥

सुपवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुशिका ।

आर्द्रक शृङ्गवेर रशादथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

कुस्तुम्बरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम् ।

स्त्रीनपुसकयोर्विश्व नागर विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

आरनालकसौवीरकुल्माषाभिपुनानि च ।

अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥

सहस्रवेधि जतुक बाह्लीक हिंगु रामठम् ।

तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥

(पु०), दारुहस्तक (पु०) ये दो नाम काठकी कड़लीके हैं । शाक (पु० न०), हरितक (न०), शिशु (पु०) ये तीन नाम बथुषा आदि शाकके हैं ॥ ३४ ॥ कलब, कडब ये दो (पु०) नाम शाककी नालके हैं । वेपवार, उपस्कर ये दो (पु०) नाम मसालके हैं । तित्तिडीक (न०), चुक्र (पु० न०), वृक्षाम्ल (न०) ये तीन नाम खट्वाड़के हैं । वेलज ॥ ३५ ॥ मरीच, कोलक, कृष्ण, उपण, धर्मपत्तन ये च (न०) नाम मिरचके हैं । जीरक (पु०), जरण (पु०), अजाजी (स्त्री०), कणा (स्त्री०) ये चार नाम जीरके हैं ॥ ३६ ॥ सुपवी, कारवी, पृथ्वी, पृथु, काला, उपकुशिका ये छ (स्त्री०) नाम काले जीरके हैं । आर्द्रक, शृङ्गवेर ये दो (न०) नाम अदरखके हैं । छत्रा (स्त्री०), वितुन्नक (न०) ॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बरु (न०), धान्याक (न०) ये चार नाम धनियेके हैं । शुण्ठी (स्त्री०), महौषध (न०), विश्व (स्त्री० न०), नागर (न०), विश्वभेषज (न०) ये पाँच नाम साँठके हैं ॥ ३८ ॥ आरनालक, सौवीर, कुल्माषाभिपुत, अवन्तिमोम, धान्याम्ल, कुञ्जल, काञ्जिक ये सात (न०) नाम कांजीके हैं ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधि, जतुक, बाह्लीक, हिंगु, रामठ ये पाँच (न०) नाम हींगके हैं । हिंगुशब्द (पु०) भी है । कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका, कबरी, पृथु ये पाँच (स्त्री०) नाम हींगपत्रीके हैं ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।

रौमकं वसुकं पाक्यं विडं च कृनके द्वयम् ॥ ४२ ॥

सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके ।

मत्स्यं डी फाणितं खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता ।

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥

शूलाकृतं भट्टित्रं स्याच्छूल्यमुख्यं तु पैठरम् ।

प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

निशा, काञ्चनी, पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी ये पांच (स्त्री०) नाम हलदीके हैं । अक्षीव, वशिर ये दो (न०) नाम सामुद्रनमकके हैं ॥ ४१ ॥ सैन्धव, शीतशिव, माणिमन्थ, सिन्धुज ये चार नाम सैन्धे नमकके हैं । तहाँ सैन्धव-शब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं । रौमक, वसुक ये दो (न०) नाम सांभर नमकके हैं । पाक्य, विड ये दो (न०) नाम खारी नमकके हैं ॥ ४२ ॥ सौवर्चल, अक्ष, रुचक ये तीन (न०) नाम मधुर नमकके हैं । तिलक यह एक (न०) नाम काले नमकका है । मत्स्यण्डी (स्त्री०), फाणित (न०) ये दो नाम रावके हैं । शर्करा, सिता ये दो (स्त्री०) नाम खांड और मिश्रीके हैं ॥ ४३ ॥ कूर्चिका यह एक (स्त्री०) नाम दही आदिसे बनी दूधकी विकृतिका है । रसाला, मार्जिता ये दो (स्त्री०) नाम दही, शहद, खांड, मिरच और अदरक आदिसे बनाये शिखरनका हैं । तेमन, निष्ठान ये दो (न०) नाम दही आदि व्यञ्जन (कढ़ीविशेष) के हैं । इससे आगे वासितपर्यंत सब शब्द (त्रि०) हैं ॥ ४४ ॥ शूला-कृत, भट्टित्र, शूल्य ये तीन नाम शूलकरके पकाये हुए मांस आदिके हैं । उख्य, पैठर ये दो नाम टोकनीमें पकाये अन्न आदिके हैं । प्रणीत, उपसम्पन्न ये दो नाम रस आदिसे सम्पन्न किये व्यञ्जन आदिके हैं । प्रयस्त, सुसंस्कृत ये दो नाम जतन करके घृतमें पकाये पकवानके हैं ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छलं तु विजिल संमृष्ट शोधितं समे ।
 चिक्रणं मसृण स्निग्ध तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥
 आपकं पौलिरभ्यूषो लाजा पुंभून्नि चाक्षताः ।
 पृथुकः स्याच्चिपिटको धाना भ्रष्टयवे स्त्रिय ॥ ४७ ॥
 पूषोऽपूपः पिष्टकः स्यात्करम्मो दधिसक्तवः ।
 भिःसा स्त्री मक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिवि ॥ ४८ ॥
 भिस्सटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमास्त्रियाम् ।
 मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्रवे ॥ ४९ ॥
 यवागूष्णिणका श्राणा विलेपी तरला च सा ।
 “ म्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृमरस्तु तिलौदन । ”
 गव्य त्रिषु गवा सर्व गोविड् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥

पिच्छल, विजिल ये दो नाम मण्डसे युत हुई दही आदि अर्थात् मट्टाके
 है । समृष्ट, शोधित ये दो नाम विने हुए अन्न आदिके है । चिक्रण,
 मसृण, स्निग्ध ये तीन नाम चिकनेके है । भावित, वासित ये दो नाम
 जीरे आदिसे अधिवासित (छोके हुए) के है । यहातरु (त्रि०) ह
 ॥ ४६ ॥ आपक (न०), पौलि (पु०), अभ्यूष (पु०) ये तीन
 नाम पूरी आदिके है । लाज यह एक नाम धानकी सीलका है । अन्त
 यह एक नाम गीले जव चावल इन दोनोंका है । ये दोनों शब्द बहुवच
 तात (पु०) है । पृथुक, चिपिटक ये दो (पु०) नाम चावलोके सुरसु
 रीके है । धाना यह एक नाम जवाकी धानीका है और बहुवचनान्त तथा
 (स्त्री०) है ॥ ४७ ॥ पूष, अपूप, पिष्टक ये तीन (पु०) नाम मालपु
 वीके है । करम्म यह एक (पु०) नाम दहीसे युत हुए सलुओंका है ।
 भिःसा (स्त्री०), मक्त (न०), अन्धस् (न०), अन्न (न०), ओदन
 (पु० न०), दीदिवि (पु०) ये छ नाम अन्नके है ॥ ४८ ॥ भि सटा,
 दग्धिका ये दो (स्त्री०) नाम जले हुए अन्नके है । मण्ड यह एक (पु०
 न०) नाम सब द्रव्योंके द्रव अर्थात् झोलका है । मासर, आचाम, निस्त्राव
 ये तीन (पु०) नाम चावल आदिके मांडके है ॥ ४९ ॥ यवागू, उष्णिणका,
 श्राण, विलेपी, तरला ये पांच (स्त्री०) नाम गुडयानी और पतला भात
 (लपसी आदि) के है । “ म्रक्षण, अभ्यञ्जन ये दो (न०) नाम तेलके

तत्तु शुष्कं करीपोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।
 पयस्यमाज्यदध्यादि द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥
 घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम् ।
 तत्तु हैयंगवीनं यद्धचोगोदोहोद्धवं घृतम् ॥ ५२ ॥
 दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमापि गोरसः ।
 तक्रं हुदश्विन्मथितं पादाम्बुधाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥
 मण्डं दधिभवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः ।
 अशनाया बुभुक्षा क्षुद्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
 सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 उदन्या तु पिपासा तृद तपो जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥

हैं । कृसर यह एक (पु०) नाम तिलोंसहित चावलोंका है । ” गव्य
 यह एक (त्रि०) नाम गौके दूध आदिका है । गोविश (शान्त), गो-
 मय ये दो (पु० न०) नाम गोबरके हैं ॥ ५० ॥ करीप यह एक (पु०
 न०) नाम अरने उपलेका है । दुग्ध, क्षीर, पयस (सान्त) ये तीन (न०)
 नाम दूधके हैं । पयस्य यह एक (न०) नाम दूधके विकार दही आदिको
 है । द्रप्स यह एक (न०) नाम पतले दहीका है ॥ ५१ ॥ घृत, आज्य,
 हविस् (सान्त), सर्पिस् (सान्त) ये चार (न०) नाम घृतके हैं । नव-
 नीत, नवोद्धृत ये दो (न०) नाम नौनी (मक्खन) के हैं । हैयंगवीन
 यह एक (न०) नाम पहले दिनके दूधसे निकासे हुए नौनी घृतका है
 ॥ ५२ ॥ दण्डाहत, कालशेय, अरिष्ट, गोरस ये चार नाम रवाईसे विलोये
 गये गोरसके हैं । तहां गोरस (पु०) और शेष (न०) हैं । तक्र यह
 एक (न०) नाम चौथाई भाग पानी मिलाकर रवाईसे मथित किये मठका
 है । उदश्वित् यह एक (न०) नाम आधा पानी मिलाकर रवाईसे विलोये
 गयेका है । मथित यह एक (न०) नाम पानी नहीं मिलाया जावे और
 रवाईसे मथित किये जानेवालेका है ॥ ५३ ॥ मस्तु यह एक (न०) नाम
 दहीके पानीका है । पीयूष यह एक (पु०) नाम नवीन व्याई हुई गौके
 सात दिन भीतरके दूधका है । अशनाया, बुभुक्षा, क्षुद्र ये तीन (स्त्री०)
 नाम भूखके हैं । आस, कवल ये दो (पु०) नाम आसके हैं ॥ ५४ ॥
 सपीति (स्त्री०), तुल्यपान (न०) ये दो नाम सहपानके हैं । सग्धि (स्त्री०),

जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।
 सौहित्यं तर्पणं तृप्तिं फेला मुक्तसमुद्भितम् ॥ ५६ ॥
 कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
 गोपे गोपालगोसरस्यगोधुगामीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥
 गोमहिष्यादिकं पादवन्धनं द्वौ गवींश्च ।
 गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवा व्रजे ॥ ५८ ॥
 त्रिष्वशितगवीनं तद्गवो यत्राशिताः पुरा ।
 उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥
 अनङ्गान्सौरभेयो गौरुक्षणा संहतिरौक्षकम् ।
 गव्या गोत्रा गवा वत्सधेन्वोर्वात्सकधेनुके ॥ ६० ॥

सहभोजन (न०) ये दो नाम सहभोजनके हैं । उदन्या, पिपासा, तृप्ति (पान्त), तर्प ये चार नाम तृषाके हैं । तहां तर्पशब्द (पु०) और शेष (स्त्री०) हैं । जग्धि (स्त्री०) भोजन (न०) ॥ ५६ ॥ जेमन (न०), लेह (पु०), आहार (पु०), निघास (पु०), न्याद (पु०) ये सात नाम भोजनके हैं । सौहित्य (न०), तर्पण (न०), तृप्ति (स्त्री०) ये तीन नाम तृप्तिके हैं । फेला यह एक (स्त्री०) नाम पहले खाके पीछे छोड़का है ॥ ५६ ॥ काम, प्रकाम, पर्याप्त, निकाम, इष्ट, यथेप्सित ये छ नाम यथेप्सित (चाह) के हैं और सब क्रियाविशेषण हैं और क्रियाविशेषण सर्वदा (न०) द्वितीयाके एकवचनमें रहता है । गोप, गोपाल, गोसरस्य, गोधुह, आभीर, बल्लव ये छ (पु०) नाम गोपालके हैं ॥ ५७ ॥ पादवन्धन यह एक (न०), नाम गौ भेसे आदिका है । गोमत् (मत्वन्त), गोमित्र (इवन्त) ये दो (पु०) नाम गायोंके मालिकके हैं । गोकुल, गोधन ये दो (न०) नाम गायोंके समूहके हैं ॥ ५८ ॥ आशितगवीन यह एक नाम जहां गौ पहले चरती हो उस स्थानका है यह शब्द (त्रि०) है । उक्षा, भद्र, बलीवर्द ऋषभ, वृषभ, वृष ॥ ५९ ॥ अनङ्ग (हान्त), सौरभेय, गो ये नन (पु०) नाम बेलके हैं । तहां अक्षरशब्द नकारान्त (पु०) है । औक्षक यह एक नाम बेलोंके समूहका है । गव्या, गोत्रा ये दो (स्त्री०) नाम गायोंके समूहके हैं । वात्सर यह एक (न०) नाम बछड़ेके समूहका है । धेनुक यह एक (न०) नाम धेनुओंके समूहका है ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्याद्वृद्धोक्षस्तु जरद्भवः ।
 उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥
 शकृत्कारिस्तु वत्सः स्यादम्यवत्सतरौ समौ ।
 आर्षभ्यः पण्डतायोग्यः पण्डो गोपतिर्गिद्वरः ॥ ६२ ॥
 स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्त्रा तु गलकम्बलः ।
 स्यान्नस्ति तस्तु नस्योतः प्रष्टगाह युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
 युगादीनां तु बोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
 खनाति तेन तद्वोढाऽस्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥
 धूर्वह धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ।
 उभावेकधुगीणैकधुरावेकधुगवहे ॥ ६५ ॥
 स तु सर्वधुगीणः स्याद्यो वै सर्वधुगवहः ।
 माहेयी सौरभेयी गौरुस्त्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥

महोक्ष यह एक (पु०) नाम बड़े बैलका है । वृद्धोक्ष, जरद्भव ये दो (पु०) नाम बड़े बैलके हैं । जातोक्ष यह एक (पु०) नाम बैलभावको प्राप्त हुए बछड़ेका है । तर्णक यह एक (पु०) नाम तत्काल उपजे बछड़ेका है ॥ ६१ ॥
 शकृत्कारि, वत्स ये दो (पु०) नाम बछड़ेके हैं । दम्य, वत्सतर ये दो (पु०) नाम जवान बछड़ेके हैं । आर्षभ्य यह एक (पु०) नाम गोपतिपनेके योग्य बैलका है । पण्ड, गोपति, गिद्वर ये तीन (पु०) नाम सांडके हैं ॥ ६२ ॥
 वह यह एक (पु०) नाम बैलके कंधेका है । सास्त्रा (स्त्री०), गलकम्बल (पु०) ये दो नाम गैके कठमें लबी चामके हैं । नस्ति त, नस्योत ये दो (पु०) नाम नये हुए बैलके हैं । प्रष्टगाह, युगपार्श्वग ये दो (पु०) नाम बैलको ढोला करनेके लिये कंधेपर बंधे हुए काठवाले बैलके हैं ॥ ६३ ॥
 युग्य यह एक (पु०) नाम जोड़ीमें जानेवाले बैलका है । प्रासङ्ग्य यह एक (पु०) नाम जुएके ले जानेवाले बैलका है । शाकट यह एक (पु०) नाम गाड़ीको ले जानेवाले बैलका है । हालिक, सैरिक ये दो (पु०) नाम हलके खोदनेवाले बैलके हैं ॥ ६४ ॥
 धूर्वह, धुर्य, धौरेय, धुरीण, धुरंधर ये पाँच (पु०) नाम धुरमें वहनेवाले (जोत) बैलके हैं । एकधुरीण, एकधुर, एकधुरावह ये तीन (पु०) नाम एक धुरको ले जानेवाले बैलके हैं ॥ ६५ ॥
 सर्वधुरीण यह एक (पु०) नाम सब धुरोंको ले जानेवाले बैलका है ।

अर्जुन्यया रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी ।

वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥

द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी ।

चतुरब्दा चतुर्हायण्येव त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

वशा वन्ध्याऽवतोका तु स्रवद्रर्माऽथ सधिनी ।

आक्रान्ता वृषमेणाय वेदद्रर्मोपघातिनी ॥ ६९ ॥

काल्योपसर्गा प्रजने प्रष्टौही बालगर्भिणी ।

स्यादचण्डी तु सुक्रा बहुस्रुतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥

चिरप्रसूता वष्कयणी धेनु स्यान्नवस्रुतिका ।

सुवता सुखसंदोह्या पीनोन्मी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

आगेके शब्द समासमीनातक (स्त्री०) है । माहेयी, सौरभेयी, गो, उल्हा, मातृ, शृद्धिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुनी, अद्या, रोहिणी ये नव नाम गौके हैं । नैचिकी यह एक नाम उत्तम गौका है । वर्णके अवयव आदि भेदसे शबली धवला आदि संज्ञा है । चित्रवर्णवाली शबली होती है । सुपेदवर्णवाली धवला होती है । ऐसे लम्बकर्णी आदिभी जाननी ॥ ६७ ॥ द्विहायनी यह एक नाम दो वर्षकी उमरवाली बछियाका है । एकहायनी यह एक नाम एक वर्षकी उमरवाली बछियाका है । चतुर्हायणी यह एक नाम चार वर्षकी उमरवाली गौका है । त्रिहायणी यह एक नाम तीन वर्षकी उमरवाली गौका है ॥ ६८ ॥ वशा, वन्ध्या ये दो नाम वाइके है । अवतोका, स्रवद्रर्मा ये दो नाम अरुस्मात् पतिन हुए गर्भवालीके है । सधिनी यह एक नाम बैलके सग मैथुनके अर्थ जानेवाली गौका है । वेदतृ यह एक नाम बैलके सग मैथुन करनेसे गर्भको नाशनेवाली गौका है ॥ ६९ ॥ काल्या, उपसर्गा ये दो नाम गर्भको ग्रहण करनेमें प्राप्त समयवाली गौका है । प्रष्टौही यह एक नाम बालाही गर्भवाली हो जाय उस गौका है । अचण्डी, सुक्रा ये दो नाम सीधी गौके है । बहुस्रुति, परेष्टुका ये दो नाम बहुतबार व्याई हुई गौके है ॥ ७० ॥ चिरप्रसूता, वष्कयणी ये दो नाम बहुतकालसे व्यानेवाली गौके है । धेनु, नवस्रुतिका ये दो नाम नवीन व्याई हुई गौके है । सुवता, सुखसंदोह्या ये दो नाम सुन्दरशील स्वभाववाली गौके है । पीनोन्मी, पीवरस्तनी ये दो नाम मोटे थनोंवाली गौके है ॥ ७१ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या बन्धके स्थिता ।
 समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥
 ऊधस्तु ह्रीवमापीनं समौ शिवककीलकौ ।
 न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥
 वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।
 कुठरो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥
 उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः ।
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥
 अजा छागी शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे ।
 मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥
 उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।
 चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा ये दो नाम द्रोण अर्थात् एक हजार चौबीस तोले
 दूध देनेवाली गौके हैं । धेनुष्या यह एक नाम गिरवां रखी हुई गौका है ।
 समांसमीना यह एक नाम प्रतिवर्ष व्यानेवाली गौका है । यहाँतक (स्त्री०)
 हैं ॥ ७२ ॥ ऊधस् (सान्त), आपीन ये दो (न०) नाम गौके थनके
 हैं । शिवक, कीलक ये दो (पु०) नाम खूंटके हैं । दामन (नान्त स्त्री०
 न०), संदान (न०) ये दो नाम बांधनेकी रज्जूके हैं । दामनी यह एक
 (स्त्री०) नाम जिससे बैल आदि पशु बंधे उस रज्जूका है ॥ ७३ ॥ वैशाख,
 मन्थ, मन्थान, मथिन, (नान्त), मथदण्डक ये पाँच (पु०) नाम मन्थ-
 नदण्ड अर्थात् रईके हैं । कुठर, दण्डविष्कम्भ ये दो (पु०) नाम जि-
 समें रई बांधी जावे उस खंभेके हैं । मन्थनी, गर्गरी ये दो (स्त्री०) नाम
 वही मथनेके पात्रके हैं ॥ ७४ ॥ उष्ट्र, क्रमेलक, मय, महांग ये चार (पु०)
 नाम ऊंटके हैं । करभ यह एक (पु०) नाम ऊंटके बच्चेका है । शृङ्खल
 यह एक (पु०) नाम काठसे बंधे हुए ऊंटके बच्चेका है ॥ ७५ ॥ अजा,
 छागी ये दो (स्त्री०) नाम बकरीके हैं । शुभ, छाग, वस्त, छागलक,
 अज ये पाँच (पु०) नाम बकरेके हैं । मेढ्र, उरभ्र, उरण, उर्णायु, मेष,
 वृष्णि, एडक ये सात (पु०) नाम भेडके हैं । आवि यह भी नाम भेडका
 है ॥ ७६ ॥ औष्ट्रक यह एक (न०) नाम ऊंटोंके समूहका है । औरभ्रक

वैदेहक सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।

पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च स ॥ ७८ ॥

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः क्रयिकक्रयिकौ समौ ।

वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्य वस्त्रोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधन लाभोऽधिक फलम् ।

परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥

पुमानुपनिषिन्यासः प्रतिदानं तदर्पणम् ।

क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥

विक्रेयं पाणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु ।

स्त्रीवे सत्यापनं सत्यकारं सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥

यह एक (न०) नाम भेड़ोंके समूहका है । आजकल यह एक (न०) नाम बकरियोंके समूहका है । चन्नीवत, चालेय, रासभ, गर्दभ, खर ये पाँच (पु०) नाम गधेके हैं ॥ ७७ ॥ वैदेहक, सार्थवाह, नैगम, वाणिज, वणिज् (जान्त), पण्याजीव, आपणिक, क्रयविक्रयिक ये आठ (पु०) नाम क्रयविक्रय करनेवाले साहूकारके हैं ॥ ७८ ॥ विक्रेतृ (क्रयारान्त), विक्रयिक ये दो (पु०) नाम बेचनेवालेके हैं । क्रयिक, क्रयिक ये दो (पु०) नाम खरीदनेवालेके हैं । वाणिज्य (न०), वणिज्या (स्त्री०) ये दो नाम व्यवहारके हैं । मूल्य (न०), वस्तु (पु०), अवक्रय (पु०) ये तीन नाम मोलके हैं ॥ ७९ ॥ नीवी (स्त्री०), परिपण (पु० न०), मूलधन (न०) ये तीन नाम क्रयविक्रय आदि व्यवहारमें मूलधनके हैं । लाभ यह एक (पु०) नाम नफेका है । परिदान (न०), परीवर्त (पु०), नैमेय (पु०), निमय (पु०) ये चार नाम परिवर्तन अर्थात् ऐनदेनके हैं ॥ ८० ॥ उपनिधि, न्यास ये दो (पु०) नाम धरोहरके हैं । प्रतिदान यह एक (न०) धरोहर फेर देनेका है । क्रय्य यह एक नाम दुकानमें फैलाये हुए द्रव्यका है । क्रय्य यह एक नाम क्रेतव्य मात्र (खरीदनेके योग्य) का है ॥ ८१ ॥ विक्रेय, पाणितव्य, पण्य ये तीन (त्रि०) नाम बेचनेके योग्य वस्तुके हैं । सत्यापन (न०), सत्यकार (पु०), सत्याकृति (स्त्री०) ये तीन नाम निश्चय मुझे खरीदना है इस प्रकार सत्य करने अर्थात् बयाना देनेके हैं ॥ ८२ ॥

विपणो विक्रयः संख्याः संख्येये द्वादश त्रिषु ।
 विशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥
 संख्यार्थं द्विवहुत्वे स्तस्तापु चानवतेः स्त्रियः ।
 पंक्तेः शतसहस्रादि ऋषादशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥
 यौनवं द्रुवयं पाय्यमिति यानार्थकं त्रयम् ।
 मानं तुलांगुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमापकः ॥ ८५ ॥
 ते षोडशाक्षः कर्पोऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम् ।
 सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥
 तुला स्त्रिणां पलशतं भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।
 आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

विपण, विक्रय ये दो (पु०) नाम विक्रयके हैं । एक शब्दसे लेके अष्टादश शब्दपर्यंत संख्याशब्द संख्येयमें वर्तमान हुए (त्रि०) हैं । जैसे—‘एका शाटी, एकः पटः, एक वस्त्रम्, दश स्त्रियः, दश पुरुषाः, दश कुलानि’ ऐसे जानना । विशतिसे आरम्भ कर परार्द्धपर्यन्त सब संख्या सब कालमें संख्येय और संख्यामें एकवचनांत होती है । जैसे ‘एकोनविंशतिः पटः’ ॥ ८३ ॥ संख्यार्थमें वर्तमान विंशति आदि संख्याका द्विवचन बहुवचन होता है । जैसे—‘द्वे विंशती’ यह पद है । विंशतिशब्दसे लेकं नवतिशब्दपर्यंत संख्यावाचकशब्द (स्त्री०) हैं । पक्ति अर्थात् दश संख्यासे लेकर दशगुनी संख्याके क्रमसे शत सहस्र आदि होते हैं । जैसे—एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निखर्व, महापद्म, शंकु, जलधि, अन्त्य, मध्य, परार्द्ध ऐसे दशगुणोत्तर संज्ञा हैं ॥ ८४ ॥ यौतव, द्रुवय, पाय्य ये तीन (न०) शब्द परिमाणवाचक हैं । तुलामान, अंगुलिमान, प्रस्थमान इन्होंकरकें उसकी नाप तोल होती है । पाँच चिरमिटियोंका आद्यमापक होता है । यह (पु०) है ॥ ८५ ॥ सोलह मापककी अक्ष (पु०) और कर्ष होता है । तहां कर्षशब्द (पु० न०) है । चार कर्षोंका पल होता है । यह शब्द (न०) है । सुवर्ण, विस्त ये दो (पु० न०) नाम अस्सी रत्तीभर सोनेके हैं । सोनेका दो पल कुरुविस्त कहाता है । यह शब्द (पु०) है ॥ ८६ ॥ तुलाशब्द (स्त्री०) है । सौ पलोंकी तुला होती है । भार यह एक (पु०) नाम बीस तुलाओंके भारका

कार्पापण. कार्षिकः स्यात्कार्षिके ताम्रिके पण. ।
 अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी बाहो निकुञ्चक ॥ ८८ ॥
 कुडव. प्रस्थ इत्याद्या. परिमाणार्थका. पृथक् ।
 पादस्तुरीयो भागः स्यादशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥
 द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृथ्यं धनं वसु ।
 हिरण्यं द्रविणं शुभ्रमर्थैरविमवा अपि ॥ ९० ॥
 स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ।
 ताभ्यां यदन्यत्तत्तुल्यं रूप्यं तद्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥
 गारुत्मत मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।
 शोणरत्न लोहितक. पद्मरागोऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

हे । आचित यह एक (पु० न०) नाम दश भारीका है । गाटेमे चल सकनेवालाभी भार आचित कहाता है ॥ ८७ ॥ कार्पापण, कार्पापण ये दो (पु०) नाम रुपयेके है । पण यह एक (पु०) नाम ताम्रिके कणप्रमाण पैसैका है । आढक (पु० न०), द्रोण (पु० न०), खारी (खी०), बाह (पु०), निकुञ्चक (पु०) ॥ ८८ ॥ कुटव (पु०), प्रथ (पु०) आदि शब्द अलग २ परिमाणके वाचक है । नही चार पलका कुटव, चार पल बाका प्रस्थ, चार प्रस्थाका आढक, चार आढकाका द्रोण, दो द्रोणाका शूर्प, डेढ शूर्पाका खारी और दो शूर्पाका द्रोणा इसीको भाग रहते हैं । और चार भारका बाह इस प्रकार तोल है । पाद यह एक (पु०) नाम रुपये आदिके चौथाई भागका है । अश, भागका ये तीन (पु०) नाम भागमात्रके है ॥ ८९ ॥ द्रव्य, वित्त, स्वापतेय, रिक्थ, अर्थ, धन, वसु हिरण्य, द्रविण, शुभ्र यहीनक (न०) है, अर्थ (पु०), र (पु०), विम (पु०) ये तेह नाम धनके है ॥ ९० ॥ कोश (पु०), हिरण्य (न०) ये दो नाम घटे और अनघटे हुए सोने चाँदीके है । रूप्य य एक (न०) नाम घटे तथा अनघटे हुए सोने आदिना है । रूप्य यह एक (न०) नाम तामा चाँदा मिश्रके बने हुणका है ॥ ९१ ॥ गारुत्मत (न०), मरकत (न०), अश्मगर्भ (पु०), हरिन्मणि (पु०) ये चार नाम पत्थरके है । शोणरत्न (न०), लोहितक (पु०), पद्मराग (पु०) ये तीन नाम भाग

मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम् ।

रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।

तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥

चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।

रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥

अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ।

दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥

रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम् ।

शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवर्गिष्ठोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।

अश्मसारोऽथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥

सर्वं च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी ।

क्षारः काचोऽथ चषलो रसः सूतश्च पारदे ॥ ९९ ॥

कके हैं । मौक्तिक (न०) ॥ ९२ ॥ मुक्ता (स्त्री०) ये दो नाम मोतीके हैं । विद्रुम (पु०), प्रवाल (पु० न०) ये दो नाम मृंगेके हैं । रत्न (न०), मणि (पु० स्त्री०) ये दो नाम मरकत आदि मणिके हैं । और येही दो नाम मोती और मृंगेके हैं ॥ ९३ ॥ स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेमन् (नान्त), हाटक, तपनीय, शातकुम्भ, गाङ्गेय, भर्मन् (नान्त), कर्बुर ॥ ९४ ॥ चामीकर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद ये उन्नीस नाम सोनेके हैं । तहां अष्टापदशब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं ॥ ९५ ॥ शृङ्गीकनक यह एक (पु० न०) नाम सोनेके गहनेका है । दुर्वर्ण, रजत, रूप्य, खर्जूर, श्वेत ये पांच (न०) नाम चांदीके हैं ॥ ९६ ॥ रीति (स्त्री०), आरकूट (पु० न०) ये दो नाम पित्तलके हैं । ताम्रक, शुल्व, म्लेच्छमुख, द्व्यष्ट, वरिष्ठ, उदुम्बर ये छः (न०) नाम ताँबेके हैं ॥ ९७ ॥ लोह, शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिण्ड, कालायस, अयस्, अश्मसार ये सात नाम लोहेके हैं । लोहशब्द (पु० न०), अश्मसार (पु०), शेष (न०) हैं । मण्डूर (पु० न०), सिंहाण (न०) ये दो नाम लोहेके मैलके हैं ॥ ९८ ॥ लोह यह एक (न०) नाम सोने चांदी

गवलं माहिष शृङ्गमभ्रक गिरिजामले ।
 स्रोतोञ्जन तु सौवीर कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥
 तुत्याञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।
 कर्परी दार्विकाकाथोद्भव तुत्य रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥
 रसगर्भ तार्क्ष्यशैल गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।
 सौगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥
 रीतिपुष्प पुष्पकेतु पुष्पक कुसुमाञ्जनम् ।
 पिञ्जर पीतन तालमाल च हरितालके ॥ १०३ ॥
 गैरेयमथर्व गिरिजमश्मज च शिलाजतु ।
 बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥
 डिण्डीरोऽब्धिकफ फेन सिन्दूरं नागसंभवम् ।
 नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिष्टम् ॥ १०५ ॥

आदिका है। कुशी यह एक (स्त्री०) नाम लोहेके विकारका है। क्षार, काच ये दो (पु०) नाम काचके हैं। चपल (पु०), रस (पु०), सूत (पु० न०), पारद (पु० न०) ये चार नाम पारेके हैं ॥ ९९ ॥ गवल यह एक (न०) नाम भैंसेके सींगका है। अभ्रक, गिरिजामल ये दो (न०) नाम भोडलेके हैं। स्रोतोञ्जन, सौवीर, कापोताञ्जन, यामुन ये चार (न०) नाम सुमेके हैं ॥ १०० ॥ तुत्याञ्जन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक, कर्परी (स्त्री०) ये पाँच (न०) नाम नीलेथोथेके हैं। दारुहृत्दीके छायामें समान भाग बरुकीका दूध मिलाकर सस्कार करनेसे तुत्याञ्जन रसाञ्जन (दोनों न०) आदिक होता है ॥ १०१ ॥ रसगर्भ, तार्क्ष्यशैल ये भी दो (न०) नाम रसाञ्जनके हैं। गन्धाश्मन (नान्त), गन्धिक, सौगन्धिक ये तीन (पु०) नाम गन्धके हैं। चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका ये तीन (स्त्री०) नाम नीले सुमेके हैं ॥ १०२ ॥ रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पुष्पक, कुसुमाञ्जन ये चार (न०) नाम जस्तके फूलके हैं। पिञ्जर, पीतन, ताल, आल, हरिताल ये पाँच (न०) नाम हरतालके हैं ॥ १०३ ॥ गैरेय, अथर्व, गिरिज, अश्मज शिलाजतु ये पाँच (न०) नाम शिलाजीतके हैं। बोल, गन्धरस, प्राण, पिण्ड, गोपरस ये पाँच (पु०) नाम गन्धरसके हैं ॥ १०४ ॥ डिण्डीर, अब्धिकफ, फेन ये तीन (पु०) नाम समुद्रजागके हैं। सिन्दूर, नागसंभव ये दो (न०) नाम सिन्दूरके हैं। नाग, सीसर, योगेष्ट, वप ये

रङ्गवङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तमम् ।

स्यात्कुसुमं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

मेघकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ।

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।

नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥

पाक्योऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।

सौवर्चलं स्यादुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

शिशुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैक्षवम् ।

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटिकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥

गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

त्रिकटु द्यूषणं व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

चार (न०) नाम सीसेके हैं । त्रपु, पिच्छट ॥ १०६ ॥ रंग, वंग ये चार (न०) नाम रांगके हैं । पिचु, तूल ये दो (पु०) नाम कपासके हैं । कमलोत्तर, कुसुम, वह्निशिख, महारजन ये चार (न०) नाम कसूमके हैं ॥ १०६ ॥ मेघकम्बल, ऊर्णायु ये दो (पु०) नाम कम्बलके हैं । शशोर्ण, शशलोमन (नान्त) ये दो (न०) नाम शशाके रोमके हैं । मधु, क्षौद्र, माक्षिक ये तीन (न०) नाम शहदके हैं । मधूच्छिष्ट, सिक्थक ये दो (न०) नाम मोमके हैं ॥ १०७ ॥ मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्रा, नागजिह्विका ये चार (स्त्री०) नाम मनशिलके हैं । नैपाली, कुनटी, गोला ये तीन (स्त्री०) नाम नहपाली मनशिलके हैं । यवक्षार, यवाग्रज ॥ १०८ ॥ पाक्य ये तीन (पु०) नाम जवाखारके हैं । सर्जिकाक्षार, कापोत, सुखवर्चक ये तीन (पु०) नाम सजीखारके हैं । सौवर्चल, रुचक ये दो (न०) नाम खारके भेदके हैं । त्वक्क्षीरी, वंशरोचना ये दो (स्त्री०) नाम वंशलोचनके हैं ॥ १०९ ॥ शिशुज, श्वेतमरिच ये दो (न०) नाम सहीजनेके बीज अथवा श्वेत मिरचके हैं । मोरट यह एक (न०) नाम ईखकी जड़का है । ग्रन्थिक, पिप्पलीमूल, चटिकाशिरस् (सान्त) ये तीन (न०) नाम पीपला-मूलके हैं ॥ ११० ॥ गोलोमी (स्त्री०), भूतकेश (पु०) यह दो नाम

अथ शूद्रवर्गः १० ।

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजा* ।

आ चण्डालान् संकीर्णां अम्बष्ठकाणादय ॥ १ ॥

शूद्राविशोस्तु कर्णोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।

शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागव क्षत्रियाविशो. ॥ २ ॥

माहिषोऽर्याक्षत्रिययोः क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

ब्राह्मण्या क्षत्रियात्सूतस्तस्या वैदेहको विजः । ३ ॥

रथकारस्तु माहिष्यात्स्वरण्या यस्य समव* ।

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्या वृषलेन यः ॥ ४ ॥

जगमासीके हैं । पद्माग, रक्तचन्दन ये दो (न०) नाम पतंगके हैं । त्रिकुटु, श्यूपण, व्योष ये तीन (न०) नाम त्रिकुटाके हैं । त्रिफला (स्त्री०), फलत्रिक (न०) ये दो नाम त्रिफलाके हैं ॥ १११ ॥ इति वैश्यवर्ग ॥ १॥

अथ शूद्रवर्ग । शूद्र, अवरवर्ण, वृषल, जघन्यज ये चार (पु०) नाम शूद्रके हैं । चण्डालपर्यन्त अनष्टकरण आदि कहते हैं ॥ १ ॥ और ये शब्द (पु०) हैं । शूद्रका स्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्न हुआ पुत्र करण कहाता है । वह स्थिरनेसे आजीविकावाला होता है । वैश्यकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे उपजा पुत्र अवष्ट कहाता है । वह चिकित्सासे आजीविका करनेवाला होता है । शूद्रकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा पुत्र उग्र कहाता है । वह शस्त्र वृत्तिवाला है । क्षत्रियकी स्त्रीमें वैश्यसे उपजा मागव कहाता है । वह राजा आदिकी स्तुति करनेवाला होता है ॥ २ ॥ वैश्यकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा माहिष कहाता है । वह ज्योतिष, शाकुन, स्वरशास्त्र इन्होंसे वृत्ति करनेवाला होता है । क्षत्रियकी स्त्रीमें शूद्रसे उपजा क्षत्तु कहाता है । वह सेवा करता है । ब्राह्मणकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा सूत कहाता है । उसकी हाथी बांधना, घोड़ा फेरना, सारथीपना ये आजीविका हैं । ब्राह्मणकी स्त्रीमें वैश्यसे उपजा वैदेहक कहाता है । उसका चौमठ कलाकर्मकी शिक्षा करना आजीविका है ॥ ३ ॥ शूद्रका स्त्रीमें वैश्यसे उपजा पुत्रीमें वैश्यकी स्त्री और क्षत्रियसे उपजे पुत्रसे उत्पन्न हुआ पुत्र रथकार कहाता है । उसका रथ रख बनाना और स्थान बँचना आदि हैं । ब्राह्मणकी स्त्रीमें शूद्रसे उपजा पुत्र चण्डाल कहाता है । उसकी आजीविका भरे हुएके कल्ल लेना है ।

कारुः शिल्पी संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।
 कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
 कुम्भकारः कुशलः स्यात्पलगण्डस्तु लेपकः ।
 तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥
 रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
 पादूकृच्चर्मकारः स्याद्व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
 नाडीधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।
 स्याच्छांखिकः काम्बविकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट् ।
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
 क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितांतावसायिनः ।
 निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥

धोलेके शब्द (पु०) हैं और क्षत्तृशब्द ऋकारान्त है ॥ ४ ॥ कारु, शिल्पिन्
 (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम चित्रकार आदिके हैं । खाती, जुलाहा,
 नाई, धोबी, चमार ये पांच कारुशिल्पी हैं । श्रेणि यह एक (पु० स्त्री०)
 नाम सजातीय-समूहका है । आगेके शब्द देवलतक (पु०) हैं । कुलक,
 कुलश्रेष्ठिन् (इन्नन्त) ये दो नाम शिल्पिकुलप्रधानके हैं । मालाकार,
 मालिक ये दो नाम मालीके हैं ॥ ५ ॥ कुम्भकार, कुशल ये दो नाम
 कुम्भारके हैं । पलगण्ड, लेपक ये दो नाम लेपकारके हैं । तन्तुवाय, कुविन्द
 ये दो नाम जुलाहेके हैं । तुन्नवाय, सौचिक ये दो नाम छीपीके हैं ॥ ६ ॥
 रङ्गाजीव, चित्रकर ये दो नाम लीलगरके हैं । शस्त्रमार्ज, असिधावक ये
 दो नाम शिकलीगरके हैं । पादूकृत, चर्मकार ये दो नाम चमारके हैं ।
 व्योकार, लोहकारक ये दो नाम लुहारके हैं ॥ ७ ॥ नाडीधम, स्वर्णकार,
 कलाद, रुक्मकारक ये चार नाम सुनारके हैं । शांखिक, काम्बविक ये दो
 नाम शंखके चूडे आदि बनानेवालेके हैं । शौल्विक, ताम्रकुट्टक ये दो
 नाम तांबेके पात्र बनानेवालेके हैं ॥ ८ ॥ तक्षन् (नान्त), वर्धकि, त्वष्टृ
 (ऋकारान्त), रथकार, काष्ठतक्ष ये पांच नाम खातीके हैं । ग्रामतक्ष यह
 एक नाम ग्रामके खातीका है । कौटतक्ष यह एक नाम अपने आधीन
 खातीका है ॥ ९ ॥ क्षुरिन् (इन्नन्त), मुण्डिन् (इन्नन्त), दिवाकीर्ति,

जावालः स्यादजादीवो देवाजीवस्तु देवल* ।

स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रतिहारक* ॥ ११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवा कृशाश्विन* ।

भरता इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवा ॥ १२ ॥

मार्दङ्गिका मौरजिका* पाणिवादास्तु पाणिघाः ।

वेणुध्माः स्युर्वेणविका वीणावादास्तु वैणिका ॥ १३ ॥

जीवान्तक शाकुनिको द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

वैतसिक* कौटिकश्च मासिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक् कर्मरुो वैतनिकोऽपि स* ।

वार्तावहो वैवधिको भारवाहस्तु भारिक* ॥ १५ ॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।

निहीनोऽपसदो जालम क्षुल्लकश्चेतरश्च स* ॥ १६ ॥

नापिन, अतावसायिन (इवन्त) ये पाँच नाम नाईके हैं । निणेनर, रजक ये दो नाम धोबीके हैं । शौडिन, मट्टहारक ये दो नाम कलालके हैं ॥ १० ॥ जावाल, अजाजीव ये दो नाम चररी पालनेवाले हैं । देवाजीव, देवल ये दो नाम देवताकी सेवासे जीविका करनेवाले हैं । यहाँतक (पु०) हैं । माया, शाम्बरी ये दो (स्त्री०) नाम इन्द्रजालके हैं । आगेके शब्द विश्वकद्रुतक (पु०) हैं । मायाकार, प्रतिहारक ये दो नाम मायावीके हैं ॥ ११ ॥ शैलालिन (इवन्त), शैलूष, जायाजीव, कृशाश्विन (इवन्त), भरत, नट ये छ नाम नटके हैं । चारण, कुशीलव ये दो नाम कर्त्तव्योंके हैं ॥ १२ ॥ मार्दङ्गिक, मौरजिक ये दो नाम मृदङ्ग बजानेवालेके हैं । पाणिवाद, पाणिघ ये दो नाम हाथसे ताल बजानेवालेके हैं । वेणुध्म, वेणविक ये दो नाम बाँसुरी बजानेवालेके हैं । वीणावाद, वैणिक ये दो नाम वीणा बजानेवालेके हैं ॥ १३ ॥ जीवान्तक, शाकुनिक ये दो नाम पारधीके हैं । वागुरिक, जालिक ये दो नाम जालसे मृगको बाँधनेवालेके हैं । वैतसिक, कौटिक, मासिक ये तीन नाम मान बँचनेवालेके हैं ॥ १४ ॥ भृतक, भृतिभुक् (जात), कर्मरु, वैतनिक ये चार नाम नौकरके हैं । वार्तावह, वैवधिक ये दो नाम सदेशाले जानेवालेके हैं । भारवाह, भारिक ये दो नाम मोहनेवालेके हैं ॥ १५ ॥ विवर्ण, पामर, नीच, प्राकृत, पृथग्जन, निहीन,

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।

नियोज्यकिंकरप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥

पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।

मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।

चण्डालप्लवमातङ्गादिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥

निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।

भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।

कोलेयकः सारमेयः कुकुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥

शुनको भषकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः ।

इषा विश्वकहुर्मृगयाकुशलः सरमा शुनी ॥ २२ ॥

विद्वचरः सूकगो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः ।

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

अपसद, जालम, झुल्लक, इतर ये दश नाम नीचके हैं ॥ १६ ॥ भृत्य,

दासेर, दासेय, दास, गोप्यक, चेटक, नियोज्य, किंकर, प्रेष्य, भुजिष्य,

परिचारक ये ग्यारह नाम दासके हैं ॥ १७ ॥ पराचित, परिस्कन्द, परजात,

परैधित ये चार नाम दूसरोंसे वर्धित कियेके हैं । मन्द, तुन्द, परिमृज, आ-

लस्य, शीतक, अलस, अनुष्ण ये छः नाम आलस्यके हैं ॥ १८ ॥ दक्ष,

चतुर, पेशल, पटु, सूत्थान, उष्ण ये छः नाम चतुरके हैं । चण्डाल, प्लव,

मातंग, दिवाकीर्ति, जनंगम ॥ १९ ॥ निषाद, श्वपच, अन्तेवासिन् (इन्नन्त),

चाण्डाल, पुक्कस ये दश नाम चाण्डालके हैं । किरात, शबर, पुलिन्द ये

तीन भेद म्लेच्छ जातिके हैं ॥ २० ॥ व्याध, मृगवधाजीव, मृगयु-

लुब्धक ये चार नाम व्याधके हैं । कोलेयक, सारमेय, कुकुर, मृगदं-

शक ॥ २१ ॥ शुनक, भषक, श्वन् (नाति) ये सात नाम कुत्तेके हैं । अ-

लर्क यह एक नाम उन्मत्त (पागल) कुत्तेका है । विश्वकहु यह एक

नाम शिकारी कुत्तेका है । यहातक (पु०) हैं । सरमा यह एक (स्त्री०)

नाम कुत्तीका है ॥ २२ ॥ विद्वचर यह एक (पु०) नाम गामके शूक-

दक्षिणारुल्लब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥

प्रतिरोधिपगस्कन्दिपाटञ्चरमलिम्लुचा ।

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेय लोप्त्र तु तद्धने ॥ २५ ॥

वीतसस्तूपकरण बन्धने मृगपक्षिणाम् ।

उन्माथः कूटयन्त्र स्याद्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

शुलभ वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।

उद्धाटन घटीयन्त्र सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

पुसि वेमा वायदड् सूत्राणि नरि तन्तवः ।

वाणिर्व्यूतिः स्त्रियो तुल्ये पुस्त लेप्यादिकर्माणे ॥ २८ ॥

का है । वर्कर यह एक (पु०) नाम जवान पशु बकरे आदि का है ।
आच्छोदन (न०), मृगन्य (न०), आखेट (पु०), मृगया (स्त्री०)
ये चार नाम शिकारके हैं ॥ २३ ॥ दक्षिणेर्मन् (नाँत) यह एक (पु०)
नाम शिकारीके हाथसे दहने अगमें धाववाले मृगका है । चौर, ऐकागा
रिक, स्तेन, दस्यु, तस्कर, मोषक ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिन् (इन्नन्), परास्क
देन् (इन्नन्), पाटञ्चर, मलिम्लुच ये दश (पु०) नाम चोरके हैं ।
चौरिका (स्त्री०), स्तैन्य (न०), चौर्य (न०), स्तेय (न०) ये चार
नाम चोरीके हैं । लोप्त्र यह एक (न०) नाम चोरी किये धनका है
॥ २५ ॥ वीतस यह एक (पु०) नाम मृगपक्षियोंके बन्धनेके लिये पाश
और जाल आदि का है । उन्माथ (पु०), कूटयन्त्र (न०) ये दो नाम मृग
और पक्षियोंको बांधनेके लिये छलसे रखनेके यन्त्र अर्थात् फन्देके हैं ।
वागुरा, मृगबन्धनी ये दो (स्त्री०) नाम मृग बांधनेकी रज्जु (जाल)
का है ॥ २६ ॥ शुलभ (न०), वराटक (न०), रज्जु (स्त्री०), वटी,
(त्रि०), गुण (पु०) ये पाँच नाम रज्जुके हैं । उद्धाटन, घटीयन्त्र ये दो
(न०) नाम रहटके हैं ॥ २७ ॥ वेमन् (नाँत पु० न०), वायदण्ड
(पु०) ये दो नाम वपडा चुननेके दण्डके हैं । सूत्र (न०), तंतु (पु०)
ये दो नाम सूतके हैं । वाणि, व्यूति ये दो (स्त्री०) नाम चुननेके हैं ।
पुस्त यह एक (न०) नाम पुस्तलिकाकर्म (लीपने आदि) का है ॥ २८ ॥

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वृद्धदन्तादिभिः कृता ।
 जातुत्रपुविकारे तु जातुपं त्रापुपं त्रिषु ॥ २९ ॥
 पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूपाऽथ विहङ्गिका ।
 भारयष्टिस्तदालम्बि शिष्यं काचोऽथ पादुका ॥ ३० ॥
 पादूरुपानत्स्त्री सैवानुपदीना पदायता ।
 नध्री वध्री वरत्रा स्यादश्वदेस्ताडनी कशा ॥ ३१ ॥
 चाण्डालिका तु काण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ।
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ॥ ३२ ॥
 ब्रश्चनः पत्रपरशुरीषिका तूलिका समे ।
 तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥ ३३ ॥
 आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे ।
 वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः ॥ ३४ ॥

पाञ्चालिका यह एक (स्त्री०) नाम कपडा और दन्त आदिसे बनाई पुत्त-
 लिकाका है । जातुप यह एक (त्रि०) नाम, लेखके विकारका है ।
 त्रापुप यह एक (त्रि०) नाम रंगेके विकारका है ॥ २९ ॥ पिटक-
 (पु०), पेटक (पु०), पेटा (स्त्री०), मञ्जूपा (स्त्री०) ये चार नाम
 सन्दूकके हैं । विहङ्गिका, भारयष्टि ये दो (स्त्री०) नाम छींकेकी लक-
 डीके हैं । शिष्य (न०), काच (पु०) ये दो नाम उस लकड़ीमें लटके
 हुए छींकेके हैं । पादुका ॥ ३० ॥ पादू, उपानहू ये तीन (स्त्री०) नाम
 जूतीके हैं । अनुपदीना यह एक (स्त्री०) नाम पैरके समान विस्तारवाली
 जूतीका है । नध्री, वध्री, वरत्रा ये तीन (स्त्री०) नाम चामरजजूके हैं ।
 कशा यह एक (स्त्री०) नाम घोड़े आदिके ताडनेकी रज्जू अर्थात् चा-
 बुकका है ॥ ३१ ॥ चाण्डालिका, कण्डोलवीणा, चण्डालवल्लकी ये तीन
 (स्त्री०) नाम नीच जातिके वीणाके हैं । नाराची, एषणिका ये दो
 (स्त्री०) नाम कांटे तराजूके हैं । शाण, निकष, कष ये तीन (पु०) नाम
 क्रसोटीके हैं ॥ ३२ ॥ ब्रश्चन, पत्रपरशु ये दो (पु०) नाम कानस (रेत) के
 हैं । ईषिका, तूलिका ये दो (स्त्री०) नाम सलाईके भेदके हैं । मूषा यह एक
 (स्त्री०) नाम सोना आदि गलानेके पात्रविशेषका है । भस्त्रा, चर्मप्रसेविका
 ये दो (स्त्री०) नाम धौंकनीके हैं ॥ ३३ ॥ आस्फोटनी, वेधनिका ये दो

क्रकचोऽस्त्री करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका ।

सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा शिल्प कर्म कलादिकम् ॥ ३५ ॥

प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।

प्रतिकृतिरर्चा पुति प्रतिनिधिरुपमोपमान स्यात् ॥ ३६ ॥

वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्य सदृशः सदृशः सदृक् ।

साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥ ३७ ॥

निभसकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ।

कर्मण्या तु विधाभूत्याभूतयो भर्म वेतनम् । ३८ ॥

भरणं भग्ण मूल्य निवेशः पण इत्यपि ।

सुरा हलिप्रिया हाला परिसुद्धरुणात्मजा ॥ ३९ ॥

(स्त्री०) नाम मणि आदि वेधनेके शस्त्रविशेष अर्थात् वमके है । कृपाणी, कर्तरी ये दो (स्त्री०) नाम सोने आदिको काटनेको कैचीके है । वृक्षा दनी (स्त्री०), वृक्षभेदिन (इत्यन्त पु०) ये दो नाम वृक्षको काटनेके लिये शस्त्रविशेष (कुल्हाडी) के है । टरु, पापाणदारण ये दो (पु०) नाम टांकाके है ॥ ३४ ॥ क्रकच (पु० न०), करपत्र (न०) ये दो नाम करोत (आरे) के है । आरा, चर्मप्रभेदिका ये दो (स्त्री०) नाम चाम काटनेके आरीके हैं । सूर्मी, स्थूणा, अय प्रतिमा ये तीन (स्त्री०) नाम छोहेकी प्रतिमाके हैं । शिल्प यह एक (न०) नाम कला आदि कर्मका है ॥ ३५ ॥ प्रतिमान (न०), प्रतिविम्ब (न०), प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्चा, प्रतिनिधि ये आठ नाम प्रतिमाके है । तहां प्रतिनिधिशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) है । उपमा (स्त्री०), उपमान (न०) ये दो नाम उपमित करनेके है ॥ ३६ ॥ आगेके शब्द वाच्यलिङ्गी है । सम, तुल्य, सदृश, सदृशः, सदृक् (शान्त), साधारण, समान ये सात नाम समानके है और उत्तरपदमे स्थित हुए निभ, सकाश आदि शब्द वाच्यलिङ्गी अर्थात् त्रिलिङ्गी ह ॥ ३७ ॥ निभ, सकाश, नीकाश, प्रतीकाश, उपमा आदि शब्द तुल्यके पर्याय है । कर्मण्या (स्त्री०), विधा (स्त्री०), भूत्या (स्त्री०), भूति (स्त्री०), भर्मन (नान्त न०), वेतन (न०) ॥ ३८ ॥ भरण्य (न०), भरण (न०), मूल्य (न०), निवेश (पु०), पण (पु०) ये ग्याग्रह नाम मजदूरीके हैं । सुरा, हलि

तृतीयं काण्डम् ।

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः १ ।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरापि ।

लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।

गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्नस्य भेदकाः ॥ २ ॥

सुकृती पुण्यवान् धन्यो महेच्छस्तु महाशयः ।

हृदयालुः सुहृदयो मद्योत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः । इस सामान्य तृतीयकाण्डमें विशेष्यनिघ्न जिसमें विशेषणोंका वर्णन है, जैसे सुकृती आदि । संकीर्ण जिसमें विशेषण तो है परन्तु उन विशेषणोंके विशेष्य कई अर्थोंमें हो सक्ते हैं, जैसे ' कर्मपरायण ' जो शब्द है वह शिल्पविद्या पढाना आदि अनेक काममें जो चतुर हो उसको कह सक्ते हैं । नानार्थ जिसमें एकही शब्दके अनेक अर्थ हैं, जैसे ' अब्द ' यह एक नाम बादलका और वर्षका है । अव्यय जिसमें अव्ययोंके अर्थ हैं । लिंगादिसंग्रह जिसमें प्रत्ययोंसे लिंगका ज्ञान होता है । इन नामोंवाले वर्गोंके द्वारा पूर्वोक्त स्वर्ग आदि वर्गोंसे संबंध रखनेवाले ऐसे वर्ग कहे जावेंगे ॥ १ ॥ इस शास्त्रमें जैसे स्त्री आदि भेदकरके बहुधा लिंगका निर्णय है तैसेही यहांभी हो इस भ्रमको दूर करनेके लिये व्यापक लक्षण कहते हैं । जैसे स्त्री, दार आदि पदोंसे विशेष्य बनता है उसी प्रकार उसके गुण द्रव्य क्रियावाचक शब्द विशेष्य बनते हैं । अर्थात् जैसे विशेष्य होगा उसी लिंग और वचनका उसका विशेषण होगा । आगे उदाहरणमें सुकृती आदि गुण द्रव्य क्रियावाचक विशेषण हैं इनको विशेष्यके लिंगके अनुसार किये तो इस प्रकार हुए । जैसे—' सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः, सुकृति कुलम् ' । जैसे—दंडिनी स्त्री, दंडिनो दाराः, दंडि कुलम् ' । जैसे—पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कुलम् ' ऐसे हैं ॥ २ ॥ आगे आहतलक्षण शब्दतक सब शब्द त्रिलिङ्गी हैं । सुकृतिव्र (इन्नन्त), पुण्यवत् (मत्वन्त), धन्य ये तीन नाम भाग्यवाचकके हैं । महेच्छ, महाशय ये दो नाम उदारचित्तवालेके हैं । हृदयालु

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः साशयिकः सशयापन्नमानसः ।

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशीण्डा बहुप्रदे ।

जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्धकः ।

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मना ।

दक्षिणे सरलोदारौ सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥

तत्परे प्रसितासक्ताविद्यार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥

सुहृदय ये दो नाम सुन्दर हृदयवालेके हैं । महोत्साह, महोद्यम ये दो नाम उद्यमीके हैं ॥ ३ ॥ प्रवीण, निपुण, अभिज्ञ, विज्ञ, निष्णात, शिक्षित, वैज्ञानिक, कृतमुख, कृतिर (इन्नन्त), कुशल ये दश नाम चतुरके हैं ॥ ४ ॥ पूज्य, प्रतीक्ष्य ये दो नाम पूज्यके हैं । साशयिक, सशयापन्नमानस ये दो नाम सशयवालेके हैं । दक्षिणीय, दक्षिणार्ह, दक्षिण्य ये तीन नाम दक्षिणाके योग्यके हैं ॥ ५ ॥ वदान्य, स्थूललक्ष्य, दानशीण्ड, बहुप्रद ये चार नाम अधिकदानीके हैं । जैवातृक, आयुष्मत (मत्त्वन्त) ये दो नाम बड़ी आयुवालेके हैं । अन्तर्वाणि, शास्त्रविद् (दान्त) ये दो नाम शास्त्रको जाननेवाले (शास्त्री) के हैं ॥ ६ ॥ परीक्षक, कारणिक ये दो नाम परीक्षा करनेवालेके हैं । वरद, समर्धक ये दो नाम धर देनेवालेके हैं । हर्षमाण, विकुर्वाण, प्रमनस् (सान्त), हृष्टमानस ये चार नाम प्रसन्न मनवालेके हैं ॥ ७ ॥ दुर्मनस्, विमनस्, अन्तर्मनस् ये तीन नाम व्याकुलचित्तवाले अर्थात् उदासके हैं । और सान्त है । उत्क, उन्मनस् (सान्त) ये दो नाम उत्कण्ठावालेके हैं । दक्षिण, सरल, उदार ये तीन नाम सरलचित्तवालेके हैं । सुकल यह एक नाम दाता भोक्ताका है ॥ ८ ॥ तत्पर, प्रसित, आसक्त ये तीन नाम किसी विषयमें लगे हुएके हैं । इष्टार्थोद्युक्त, उत्सुक ये दो नाम उद्योगवालेके हैं । प्रतीत, प्रथित, ख्यात, वित्त, विज्ञात,

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ ।

इभ्य आढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥

अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥

स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥

निर्वार्यः कार्यकर्त्ता यः संपन्नः सत्वसंपदा ।

अवाचि मूकोऽथ मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥

सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।

लक्ष्मीर्वालक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥

स्यादयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ।

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

विश्रुत ये छः नाम विख्यातके हैं ॥ ९ ॥ कृतलक्षण, आहितलक्षण ये दो नाम धन शीर्ष आदिसे विख्यातके हैं । सुकृतीसे लेकर यहाँतक सब शब्द विशेषण होनेसे त्रिलिङ्गी हैं । इनका लिंग विशेष्यके समान रहता है । इभ्य, आढ्य, धनिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम धनवालेके हैं । स्वामिन् (इन्नन्त), ईश्वर, पति, ईशितृ (ऋकारान्त) ॥ १० ॥ अधिभू, नायक, नेतृ (ऋकारान्त), प्रभु, परिवृढ, अधिप ये दश (पु०) नाम स्वामीके हैं । अधिकर्द्धि, समृद्ध ये दो (त्रि०) नाम सुसम्पन्न (भरे पूरे) के हैं । कुटुम्बव्यापृत ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक, उपाधि ये तीन (पु०) नाम कुटुम्बोपपत्तके हैं । सिंहसंहनन यह एक (पु०) नाम उत्तम अंग और रूपवालेका है ॥ १२ ॥ निर्वार्य यह एक (त्रि०) नाम विकल अवस्थामेंभी चित्त लगाकर कार्य करनेवालेका है । अवाच्, मूक ये दो (त्रि०) नाम गूँगेके हैं । मनोजवस, पितृसन्निभ ये दो (त्रि०) नाम पिताके समानके हैं ॥ १३ ॥ कूकुद यह एक (पु०) नाम सत्कारपूर्वक अलंकृत करी कन्याको देनेवालेका है । आगे वर्गान्ततक सब शब्द (त्रि०) हैं । लक्ष्मीवत् (मत्त्वन्त), लक्ष्मण, श्रील, श्रीमत् (मत्त्वन्त) ये चार नाम लक्ष्मीवालेके हैं । स्निग्ध, वत्सल ये दो नाम स्नेहीके हैं ॥ १४ ॥ दयालु, कारुणिक, कृपालु, मूरत ये चार नाम दयावान्के हैं । स्वतन्त्र,

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।

अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।

जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥

कर्मक्षमोऽलकर्मिणः क्रियावान्कर्मसूद्यतः ।

स कर्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।

अपस्त्रातो मृतस्त्रात आमिपाशी तु शौष्कुलः ॥ १९ ॥

बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।

परात्रः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदारिको विजिगीषाविवर्जिते ।

उमौ त्वात्मभरिः कुक्षिभरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

अपावृत्त, स्वैरिव (इन्नन्त), स्वच्छन्द, निरवग्रह ये पाँच नाम स्वतन्त्र (अपराधीन) के हैं ॥ १६ ॥ परतन्त्र, पराधीन, परवत् (मत्त्वन्त), नाथ वत् (मत्त्वन्त) ये चार नाम पराधीनके हैं । अधीन, निघ्न, आयत्त, अस्वच्छन्द, गृह्यक ये पाँच नाम आधीनके हैं ॥ १६ ॥ खलपू, बहुकर ये दो नाम बुहारनेवालेके हैं । दीर्घसूत्र, चिरक्रिय ये दो नाम बहुत देरमें काम करनेवालेके हैं । जाल्म, असमीक्ष्यकारिन् (इन्नन्त) ये दो नाम बिना विचारे करनेवालेके हैं । कुण्ठ यह एक नाम आलसीका है ॥ १७ ॥ कर्मक्षम, अलकर्मिण ये दो नाम कर्ममें समर्थके हैं । क्रियावत् (मत्त्वन्त) यह एक नाम कर्मोंमें लगे हुएका है । कर्म, कर्मशील ये दो नाम सर्वदा कर्ममें लगे हुएके हैं । कर्मशूर कर्मठ ये दो नाम यत्नसे कार्यको पूरा करेनेवालेके हैं ॥ १८ ॥ भरण्यभुज् (जान्त), कर्मकर ये दो नाम तनखा लेके काम करनेवालेके हैं । कर्मकार यह एक नाम बिना तनखा काम करनेवालेका है । अपस्त्रात, मृतस्त्रात ये दो नाम मरेके लिये स्नान करेनेवालेके हैं । आमिपाशिन् (इन्नन्त), शौष्कुल ये दो नाम मच्छेका माँस खानेवालेके हैं ॥ १९ ॥ बुभुक्षित, क्षुधित, जिघत्सु, अशनायित ये चार नाम भूखेके हैं । परात्र, परपिण्डाद् ये दो नाम पराये अन्नको खानेवालेके हैं । भक्षक, घस्मर, अन्नर ये तीन नाम खानेवालेके हैं ॥ २० ॥ आद्यून

सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी गृध्रस्तु गर्धनः ।

लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक् समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥

सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः ।

मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कामिताऽनुकः ॥ २३ ॥

कम्प्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।

विधेयो विनयग्राही वचने स्थित आश्रवः ॥ २४ ॥

वश्यः प्रणयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।

धृष्टे धृष्णग्वियातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥

स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ।

अधीरे कातरस्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥

आशंसुराशंसितरि गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

औदरिक ये दो नाम भूखसे बहुत पीड़ित हुएके हैं । आत्मभरि, कुक्षिभरि ये दो नाम अपने पेटको भरनेवालेके हैं ॥ २१ ॥ सर्वान्नीन, सर्वान्नभोजिन् (इन्नन्त) ये दो नाम परमहंस आदिके हैं । गृध्र, गर्धन ये दो नाम आकांक्षावालेके हैं । लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णक् (जान्त) ये तीन नाम लोभीके हैं । लोलुप, लोलुभ ये दो नाम अत्यंत लोभीके हैं ॥ २२ ॥ सोन्माद, तून्मदिष्णु ये दो नाम पागलके हैं । अविनीत, समुद्धत ये दो नाम अन्यायीके हैं । मत्त, शौण्ड, उत्कट, क्षौव ये चार नाम मतवालेके हैं । कामुक, कामितु (ऋकारान्त), अनुक ॥ २३ ॥ कम्प्र, कामयितु (ऋकारान्त), अभीक, कमन, कामन, अभिक ये नव नाम कामवालेके हैं । विधेय, विनयग्राहिन् (इन्नन्त), वचनेस्थित, आश्रव ये चार नाम आज्ञाकारीके हैं ॥ २४ ॥ वश्य, प्रणय ये दो नाम वश हुएके हैं । निभृत, विनीत, प्रश्रित ये तीन नाम नम्रके हैं । धृष्ट, धृष्णक्, वियात ये तीन नाम ढीठके हैं । प्रगल्भ, प्रतिभान्वित ये दो नाम प्रतिभासहित अर्थात् बुद्धिमानके हैं ॥ २५ ॥ अधृष्ट, शालीन ये दो नाम लज्जासहितके हैं । विलक्ष, विस्मयान्वित ये दो नाम पराये धर्मशील आदिको देख आश्चर्य करनेवालेके हैं । अधीर, कातर ये दो नाम कायरके हैं । त्रस्त, भीरु, भीरुक, भीलुक ये चार नाम डर-पोकके हैं ॥ २६ ॥ आशंसु, आशंसितु (ऋकारान्त) ये दो नाम कहने-

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णुर्वन्शरुभिवादके ।

शरारुर्घातुको हिंस्र स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥

उत्पतिष्णुस्तुत्पतिताऽलंकारिष्णुस्तु मण्डनः ।

भूष्णुर्मविष्णुर्मविता वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥

निराकारिष्णुः क्षिप्नु स्यात्सान्द्रास्त्रिगधस्तु मेदुरः ।

ज्ञाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥

विमृत्वरो विमृमरः प्रसारी च विसारिणि ।

सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥

क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपन ।

जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

चाले वा इच्छाशीलके है । गृहयात्र, ग्रहीतृ (ऋकारान्त) ये दो नाम लेनेवालेके है । श्रद्धालु यह एक नाम श्रद्धावालेका है । पतयात्र, पातुक ये दो नाम गिरनेवालेके हैं ॥ २७ ॥ लज्जाशील, अपत्रपिष्णु ये दो नाम लौक लाजवालेके है । वन्दारु, अभिवादक ये दो नाम वन्दन करनेवालेके हैं । शरारु, घातुक, हिंस्र ये तीन नाम हिंसा करनेवालेके है । वर्धिष्णु, वर्धन ये दो नाम बढ़नेवालेके हैं ॥ २८ ॥ उत्पतिष्णु, उत्पति (ऋकारान्त) ये दो नाम उच्छलनेवालेके हैं । अलंकारिष्णु, मण्डन ये दो नाम गहना पहनने वालेके है । भूष्णु, भविष्णु, भवितृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम होनेवालेके हैं । वर्तिष्णु, वर्तन ये दो नाम वर्त्ताव करनेवालेके है ॥ २९ ॥ निराकारिष्णु, क्षिप्नु ये दो नाम तिरस्कार करनेवालेके है । मेदुर यह एक नाम सान्द्रास्त्रिगध (चिकने) का है । ज्ञातृ (ऋकारान्त), विदुर, विन्दु ये तीन नाम ज्ञाताके है । विकासित्र (इन्नन्त), विकस्वर ये दो नाम खिलनेवालेके है ॥ ३० ॥ विमृत्वर, विमृमर, प्रसारित्र (इन्नन्त), विसारित्र (इन्नन्त) ये चार नाम फैलनेवालेके है । सहिष्णु, सहन, क्षन्तृ (ऋकारान्त), तितिक्षु, क्षमित्र (ऋकारान्त), क्षमित्र (इन्नन्त) ये छ नाम क्षमा करनेवालेके हैं ॥ ३१ ॥ क्रोधन, अमर्षण, कोपित्र (इन्नन्त) ये तीन नाम क्रोधीके हैं । चण्ड, अत्यन्तकोपन ये दो नाम अत्यन्त क्रोधीके हैं । जागरूक, जागरितृ (ऋकारान्त) ये दो नाम जागनेवालेके हैं । घूर्णित, प्रचलायित ये दो नाम नाँदसे घूर्णित (घुराटे लेनेवाले) के हैं ॥ ३२ ॥

स्वप्नश्च शयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ समौ ।

पराङ्मुखः पराचीनः स्यादवाङ्मयधोमुखः ॥ ३३ ॥

देवानश्चाति देवद्रङ् विष्वद्रचङ् विष्वगश्चाति ।

यः सहाश्चाति सध्यङ् स स तिर्यङ् यस्तिरोश्चाति ॥ ३४ ॥

वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽतिवक्ता ॥ ३५ ॥

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ शङ्खः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

लोहलः स्यादस्फुटवाग्गर्हवादी तु कद्वदः ।

समौ कुवादकुचरौ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

रवणः शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

जडोऽज्ञ एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥

स्वप्नञ् (जान्त), शयालु, निद्रालु ये तीन नाम नींदवालेके हैं । निद्राण, शयित ये दो नाम शयन करते हुएके हैं । पराङ्मुख, पराचीन ये दो नाम विमुखके हैं । अवाञ्च (चान्त), अधोमुख ये दो नाम नीचे मुखवालेके हैं ॥ ३३ ॥ देवद्रचञ्च (चान्त) यह एक नाम देवताओंको पूजनेवालेका है । विष्वद्रचञ्च (चान्त) यह एक नाम सब ओरको चलनेवालेका है । सध्यञ्च (चान्त) यह एक नाम साथ चलनेवालेका है । तिर्यञ्च यह एक नाम तिरछे चलनेवालेका है ॥ ३४ ॥ वद, वदावद, वक्तृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम वक्ताके हैं । वागीश, वाक्पति ये दो नाम सुन्दर वाणी बोलनेवालेके हैं । वाचोयुक्तिपटु, वाग्मिन् (इन्नन्त) ये दो नाम न्यायसे बोलनेवालेके हैं । वावदूक, अतिवक्तृ (ऋकारान्त) ये दो नाम बहुत बोलनेवालेके हैं ॥ ३५ ॥ जल्पाक, वाचाल, वाचाट, बहुगर्हवाच् (चान्त) ये चार नाम अवाच्य बोलनेवालेके हैं । दुर्मुख, मुखर, अबद्धमुख ये तीन नाम अप्रियवादीके हैं । शङ्ख, प्रियवद ये दो नाम प्रियवादीके हैं ॥ ३६ ॥ लोहल, अस्फुटवाच् (चान्त) ये दो नाम अस्पष्ट बोलनेवालेके हैं । गर्हवादिन् (इन्नन्त), कद्वद ये दो नाम निन्दित बोलनेवालेके हैं । कुवाद, कुचर ये दो नाम दोषकथनशील (बुराई करनेवाले) के हैं । असौम्यस्वर, अस्वर ये दो नाम काकके स्वरके समान बुरे बोलनेवालेके हैं ॥ ३७ ॥ रवण, शब्दन ये दो नाम शब्दकर्त्ताके हैं । नांदीवादिन् (इन्नन्त), नान्दीकर ये

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको नग्नोऽवासा दिगम्बरे ।
 निष्कासितोऽपकृष्ट स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥
 आत्तगर्वोऽभिभूतः स्यादापितः साधितः समौ ।
 प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥
 निकृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।
 मनोहतः प्रतिहतः प्रतिवद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥
 अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धे कीलितसयती ।
 आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कादिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
 आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते सक्कुकोऽस्थिरे ।
 व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ विद्वस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥
 विह्वलो विह्वल स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।
 कश्यः कशार्हः सनद्धे त्वाततायी बधोद्यते ॥ ४४ ॥

दो नाम स्तुतिविशेष करनेवालेके हैं । जड, अज्ञ ये दो नाम अत्यन्त मूढ़के हैं । एडमूक यह एक नाम गूंगे बहिरेका है ॥ ३८ ॥ तूष्णींशील, तूष्णीक ये दो नाम चुपके रहनेवालेके हैं । नग्न, अवासस् (सान्त), दिगम्बर ये तीन नाम नग्नके हैं । निष्कासित, अपकृष्ट ये दो नाम निकासे हुएके हैं । अपध्वस्त, धिक्कृत ये दो नाम झिडके हुए वा धिक्कार करे गयेके हैं ॥ ३९ ॥ आत्तगर्व, अभिभूत ये दो नाम भग्न हुए गर्ववालेके हैं । दापित, साधित ये दो नाम धनादि देकर वश किये गयेके हैं । प्रत्यादिष्ट, निरस्त, प्रत्याख्यात, निराकृत ये चार नाम त्यागे हुएके हैं ॥ ४० ॥ निकृत, विप्रकृत ये दो नाम निगले हुए वा विवर्णाकृतके हैं । विप्रलब्ध, वञ्चित ये दो नाम ठगे हुएके हैं । मनोहत, प्रतिहत, प्रतिवद्ध हत ये चार नाम टूटे मनवालेके हैं ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्त, प्रतिक्षिप्त ये दो नाम आक्षेप किये मनुष्यके हैं । बद्ध, कीलित, सयन ये तीन नाम रज्जु आदिसे बंधे हुएके हैं । आपन्न, आपत्प्राप्त ये दो नाम आपद्गमने पड़े हुएके हैं । कादिशीक, भयद्रुत ये दो नाम भयसे भागे हुएके हैं ॥ ४२ ॥ आक्षारित, क्षारित, अभिशस्त ये तीन नाम लोकापवादमें दूषित हुएके हैं । सक्कुज, अस्थिर ये दो नाम चञ्चल प्रकृतिवालेके हैं । व्यसनार्त, उपरक्त ये दो नाम व्यसनमें पीड़ित हुएके हैं । विह्वल, व्याकुल ये दो नाम व्याकुल हुएके हैं ॥ ४३ ॥ विह्वल,

द्वेष्ट्ये त्वक्षिगतौ वध्यः शीर्षिच्छेद्य इमौ समौ ।
 विष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥
 शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समौ ।
 दोषैकदृक् पुरोभागी निकृन्तस्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥
 कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः ।
 नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥
 अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयवालिशः ।
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥
 निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।
 वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

विह्वल ये दो नाम शोकआदिसे अंगभंगको प्राप्त हुएके हैं । विवश, अरि-
 छदुष्टधी ये दो नाम आसन्नमरणसे दुष्ट बुद्धि हो जानेवालेके हैं । कश्य,
 कशार्ह ये दो नाम वेतसे मारनेयोग्यके हैं । आततायिन् (इन्नन्त) यह
 एक नाम वर्म आदिसे सावधान हो मारनेकी इच्छावालेका है ॥ ४४ ॥
 द्वेष्ट्य, अक्षिगत ये दो नाम वैरके योग्यके हैं । वध्य, शीर्षिच्छेद्य ये दो नाम
 शिर काटनेके योग्यके हैं । विष्य यह एक नाम विषसे मारने योग्यका है ।
 मुसल्य यह एक नाम मुसलसे मारने योग्यका है ॥ ४५ ॥ शिश्विदान,
 अकृष्णकर्मन् (नान्त) ये दो नाम पुण्यकर्मवालेके हैं । चपल, चिकुर ये
 दो नाम विना विचारे शीघ्र वध करनेवालेके हैं । दोषैकदृक् (शान्त),
 पुरोभागिन् (इन्नन्त) ये दो नाम दोषमात्रको देखनेवालेके हैं । निकृन्त,
 अनृजु, शठ ये तीन नाम टेढ़े अन्तःकरणवालेके अर्थात् कपटीके हैं ॥ ४६ ॥
 कर्णेजप, सूचक ये दो नाम चुगलखोरके हैं । पिशुन, दुर्जन, खल ये तीन
 नाम आपसमें वैर करानेवालेके हैं । नृशंस, घातुक, क्रूर, पाप ये चार नाम
 द्रोही पुरुषके हैं । धूर्त, वञ्चक ये दो नाम धूर्तके हैं ॥ ४७ ॥ अज्ञ, मूढ,
 यथाजात, मूर्ख, वैधेय, वालिश ये पांच नाम मूर्खके हैं । कदर्य, कृपण,
 क्षुद्र, किंपचान, मितंपच ये पांच नाम स्त्री पुत्र आदिको पीडित कर लोभसे
 धन संचय करनेवालेके हैं ॥ ४८ ॥ निःस्व, दुर्विध, दीन, दरिद्र, दुर्गत ये
 पांच नाम दरिद्रके हैं । वनीयक, याचनक, मार्गण, याचक, अर्थिन् (इन्नन्त)

अहकारवानहयु* शुभंयुस्तु शुभाविन्त* ।

दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजा* ॥ ५० ॥

स्वेदजा* कृमिदशाद्या. पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।

इति प्राणिवर्ग* ।

उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

सुन्दर रुचिर चारु सुपमं साधु शोभनम् ।

कान्त मनोरमं रुच्य मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

तदासेचनक वृक्षेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।

अभीष्टेऽभीप्सित हृद्य दयित वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

निकृष्टप्रतिकृष्टावरेक्याप्यावमाधमाः ।

कुपूयकुत्सितावद्यत्वेदगर्हाणकाः समा ॥ ५४ ॥

मलीमस तु मलिन कच्चरं मलदूषितम् ।

पूतं पवित्र मेघ्य च वीध्र तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥

ये, पाँच नाम याचकके हैं ॥ ४९ ॥ अहकारवत् (मरन्त), अहयुस् ये दो नाम अहकारीके हैं । शुभयुस्, शुभान्वित ये दो नाम शुभसे युत हुएके हैं । दिव्योपपादुक यह एक नाम अपने माता पिताके बिना अपने भाग्यके गुणोंसे आकाशमे उत्पन्न होनेवालाका है । जरायुज यह एक नाम मनुष्य गौ घोडे आदिका है ॥ ५० ॥ स्वेदज यह एक नाम कीडे डाँस आदिका है । अण्डज यह एक नाम पक्षि सर्प आदिका है ॥ यहाँ प्राणिवर्ग समाप्त हुआ * ॥ उद्भिद् यह एक (५०) नाम वृक्ष वेल आदिका है । उद्भिद्, उद्भिज्ज, उद्भिद् ये तीन नाम उद्भिद्के हैं ॥ ५१ ॥ आगेसे अतिशोभनतरु सब शब्द (त्रि०) हैं । सुन्दर, रुचिर, चारु, सुपम, साधु, शोभन, कान्त, मनोरम, रुच्य, मनोज्ञ, मञ्जु, मञ्जुल ये बारह नाम सुन्दरके हैं ॥ ५२ ॥ आसेचनक यह एक नाम जिसको देखनेसे दृष्टि और मनकी वृत्तिका अन्त न हो और जो बहुत बार देखनेपरमी अधिक प्रीतिको उत्पन्न करे उस परम सुन्दरका है । अभीष्ट, अभीप्सित, हृद्य, दयित, वल्लभ, प्रिय ये छ नाम प्रियके हैं ॥ ५३ ॥ निकृष्ट, प्रतिकृष्ट, अवैर (नान्त), रेफ, याप्य, अवम, अधम, कुपूय, कुत्सित, अवद्य, खेद, गर्हा, अणक ये तेरह नाम दुष्टके हैं ॥ ५४ ॥ मलीमस, मलिन, कच्चर, मलदूषित ये चार नाम

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।

असारं फल्गु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥

ह्रीवे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥

पराध्याग्रपाग्रहरप्राग्याग्याग्रीयमग्रियम् ।

श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षमकुञ्जराः ।

सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥

अप्राग्यं द्वयद्दीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।

विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥

वङ्गोरुविपुलं पीनपीत्री तु स्थूलपीवरे ।

स्तोत्राल्पक्षुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥

मलवालेके हैं । पृत, पवित्र, मेध्य ये तीन नाम पवित्रके हैं । बोध यह एक नाम स्वभावसे निर्मलका है ॥ ५५ ॥ निर्णिक्त, शोधित, मृष्ट, निःशोध्य, अनवस्कर ये पांच नाम निर्मलके हैं । असार, फल्गु ये दो नाम निर्वलके हैं । शून्य, वशिक, तुच्छ, रिक्तक ये चार नाम रीतिके हैं ॥ ५६ ॥ प्रधान (न०), प्रमुख, प्रवेक, अनुत्तम, उत्तम, मुख्य, वर्य, वरेण्य, प्रवर्ह, अनवराध्य ॥ ५७ ॥ पराध्य, अग्र, प्राग्रहर, प्राग्य, अग्य, अग्रीय, अग्रिय ये सत्रह नाम प्रधानके हैं । श्रेयम् (सान्त), श्रेष्ठ, पुष्कल, सत्तम, अतिशोभन ये पांच नाम अत्यन्त शोभनके हैं ॥ ५८ ॥ व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नाग आदि शब्द श्रेष्ठ अर्थको कहनेवाले (पु०) हैं और उत्तरपदमें रहते हैं । जैसे—‘ पुरुषोऽयं व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः ’ अर्थात् पुरुषश्रेष्ठ है ॥ ५९ ॥ अप्राग्य (त्रि०), अप्रधान, उपसर्जन ये तीन नाम अप्रधानके हैं । तहां अप्रधान और उपसर्जन ये दो शब्द (न०) हैं । आगेके तनुशब्दतक (त्रि०) हैं । विशङ्कट, पृथु, बृहत्, विशाल, पृथुल, महत् ॥ ६० ॥ वङ्ग, उरु, विपुल ये नव नाम बड़ेके हैं । पीन, पीवत् (नान्त), स्थूल, पीवर ये चार नाम मोटेके हैं । स्तोत्र, अल्प, क्षुल्लक ये तीन नाम अल्पके हैं । सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, दभ्र, कृश, तनु ॥ ६१ ॥

द्विया मात्रा वृटिः पुसि लवलेशकणाणव ।

अत्यल्पेऽल्पमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुल बहु ।

पुरुहं पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

परःशताद्यास्ते येषा परा सख्या शतादिकात् ।

गणनीये तु गण्येय सख्याते गणितमथ सम सर्वम् ॥ ६४ ॥

विश्वमशेष कृत्स्न समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ।

समग्रं सकलं पूर्णमखण्ड स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्र पेलव विरलं तनु ।

समीपे निकटसन्नमनिकृष्टमनीडवत् ॥ ६६ ॥

सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।

उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।

नेदिष्ठमन्तिकतम स्याद्दूर विप्रकृष्टम् ॥ ६८ ॥

मात्रा, वृटि, लव, लेश, कण, अण ये ग्यारह नाम सूक्ष्मके हैं । तहां मात्रा और वृटि शब्द (स्त्री०) और लव आदि शब्द (पु०) औष (त्रि०) हैं । आगेके वर्णान्ततक सब शब्द (त्रि०) हैं । अल्पिष्ठ, अल्पीयस् (सान्त), कनीयस् (सान्त), अणीयस् (सान्त) ये चार नाम अत्यन्त अल्पके हैं ६२ प्रभूत, प्रचुर, प्राज्य, अदभ्र, बहुल, बहु, पुरुह, पुरु, भूयिष्ठ, स्फार, भूयस् (सान्त), भूरि ये बारह नाम बहुतके हैं ॥ ६३ ॥ पर शत यह एक नाम १०० से अधिक सख्यावालाका है । पर सहस्र यह एक नाम १००० से अधिक सख्यावालाका है । ऐसेही अन्यभी जानना । गणनीय, गण्येय ये दो नाम गिनने योग्यके हैं । सख्याते, गणित ये दो नाम गिने हुएके हैं ॥ ६४ ॥ विश्व, अशेष, कृत्स्न, समस्त, निखिल, अखिल, निःशेष, समग्र, सकल, पूर्ण, अखण्ड, अनूनक ये बारह नाम समग्रके हैं ॥ ६५ ॥ घन, निरन्तर, सान्द्र ये तीन नाम सघनके हैं । पेलव, विरल, तनु ये तीन नाम तिरल (अग्न २) के हैं । समीप, निकट, आसन्न, सनिकृष्ट, मनीट ॥ ६६ ॥ सदेश, अभ्याश, सविध, समर्याद, सवेश, उपकण्ठ, अतिर, अभ्यर्ण, अभ्यग्रा, अभितस् ये पंद्रह नाम समीपके हैं । तहां अभितस् यह अव्यय है ॥ ६७ ॥ संसक्त, अव्य

द्वीयश्च दविष्टं च सुदूरं दीर्घमायतम् ।
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥
 उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छिन्नास्तुङ्गेऽथ वामने ।
 न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युरवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥
 अरालं वृजिनं जिह्वामूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ।
 आविद्धं कुटिलं भुग्रं वेष्टितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥
 ऋजावजिह्वप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।
 शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥
 स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः ।
 कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥
 चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमङ्गं चराचरम् ।
 चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥

चहित, अपदांतर ये तीन नाम मिले हुएके हैं । नेदिष्ठ, अंतिकतम ये दो नाम अत्यंत निकटके हैं । दूर, विप्रकृष्टक ये दो नाम दूरके हैं ॥ ६८ ॥
 द्वीयस् (सान्त), दविष्ट, सुदूर ये तीन नाम अत्यंत दूरके हैं । दीर्घ, आयत ये दो नाम लंबेके हैं । वर्तुल, निस्तल, वृत्त ये तीन नाम गोलके हैं ।
 बंधुर यह एक नाम जो स्वभावसे ऊंचा हो और उपाधिके भेदसे कुछ नीचा हो जावे उसका है ॥ ६९ ॥ उच्च, प्रांशु, उन्नत, उदग्र, उच्छिन्न, तुंग ये छः नाम ऊंचेके हैं । वामन, न्यच्, नीच, खर्व, ह्रस्व ये पांच नाम बौनेके हैं । अवाग्र, अवनत, आनत ये तीन नाम नीचेको मुखवालेके हैं ॥ ७० ॥
 अराल, वृजिन, जिह्व, मूर्मिमत्, कुञ्चित, नत, आविद्ध, कुटिल, भुग्र, वेष्टित, वक्र ये ग्यारह नाम टेढ़ेके हैं ॥ ७१ ॥ ऋजु, अजिह्व, प्रगुण ये तीन नाम सीधेके हैं । व्यस्त, अप्रगुण, आकुल ये तीन नाम आकुलके हैं ।
 शाश्वत, ध्रुव, नित्य, सदातन, सनातन ये पांच नाम नित्यके हैं ॥ ७२ ॥
 स्थास्तु, स्थिरतर, स्थेयस् (सान्त) ये तीन नाम अत्यंत स्थिरके हैं ।
 कूटस्थ यह एक नाम एक स्वभाव करके कालके व्यापक आकाश आदिका है । स्थावर, जंगमेतर ये दो नाम अचरके हैं ॥ ७३ ॥ चरिष्णु, जंगम, चर, त्रस, अंग, चराचर ये छः नाम चरके हैं । चलन, कम्पन, कम्प ये तीन नाम कंपवालेके हैं । चल, लोल, चलाचल ॥ ७४ ॥

चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।
 अतिरिक्तं समधिको दृढसंधिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥
 कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।
 जठरं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमोधितम् ॥ ७६ ॥
 पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः ।
 प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥
 नूतनश्च सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।
 अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥
 प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।
 एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥
 अप्येकमर्गं एकाग्रोऽप्येकायनगतोऽपि सः ।
 पुंस्यादि पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अयास्त्रियाम् ॥ ८० ॥
 अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ।
 मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्लवणम् ॥ ८१ ॥

चञ्चल, तरल, पारिप्लव, परिप्लव ये सात नाम चल्के हैं । अतिरिक्त, समधिक ये दो नाम अधिकके हैं । दृढसंधि, संहत ये दो नाम दृढसंधान अर्थात् बड़े मिलापीके हैं ॥ ७५ ॥ कर्कश, कठिन, क्रूर, कठोर, निष्ठुर, दृढ, जठर, मूर्तिमत्, मूर्त ये नव नाम कठिनके हैं । प्रवृद्ध, प्रौढ, एधित ये तीन नाम प्रवृद्धके हैं ॥ ७६ ॥ पुराण, प्रतन, प्रत्न, पुरातन, चिरंतन ये पाँच नाम पुरातनके हैं । प्रत्यग्र, अभिनव, नव्य, नवीन, नूतन, नव ॥ ७७ ॥ नूतन ये सात नाम नवीनके हैं । सुकुमार, कोमल, मृदुल, मृदु ये चार नाम कोमलके हैं । अन्वच् (चान्त), अन्वक्ष, अनुग, अनुपद ये चार नाम पीछेके हैं । तहाँ अनुपद शब्द (न०) तथा अव्यय है ॥ ७८ ॥ प्रत्यक्ष, ऐन्द्रियक ये दो नाम इन्द्रियोंसे ग्राह्य प्रत्यक्षके हैं । अप्रत्यक्ष, अतीन्द्रिय ये दो नाम अप्रत्यक्ष अर्थात् इन्द्रियोंसे अग्राह्य धर्म आदिके हैं । एकतान, अनन्यवृत्ति, एकाग्र, एकायन ॥ ७९ ॥ एकसर्ग, एकाग्र्य, एकायनगत ये सात नाम एकाग्रके हैं । आदि, पूर्व, पौरस्त्य, प्रथम, आद्य ये पाँच नाम आद्यके हैं । तहाँ आदिशब्द (पु०) है ॥ ८० ॥ अंत, जघन्य, चरम, अन्त्य, पाश्चात्य, पश्चिम ये छ नाम अन्तके हैं ।

साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः ।

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥

उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् ।

अरुंतुदस्तु मर्मस्पृगबाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्टु च ।

वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥

संकटं ना तु संबाधः कलिलं गहनं समे ।

संकीर्णं संकुलाकीर्णं मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

ग्रंथितं संदितं दृब्धं विस्मृतं विस्तृतं ततम् ।

अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥

वेष्टितप्रेषिताधूतचलिताकम्पिता ध्रुते ।

नुत्तनुच्चास्तनिष्ठचूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

तहां अन्तशब्द (पु० न०) है । मोघ, निरर्थक ये दो नाम व्यर्थके हैं । स्पष्ट, स्फुट, प्रव्यक्त, उल्लवण ये चार नाम स्पष्टके हैं ॥ ८१ ॥ साधारण, सामान्य ये दो नाम साधारणके हैं । एकाकिन (इन्नन्त), एक, एकक ये तीन नाम अकेले अर्थात् असहायकके हैं । भिन्न, अन्यतर, एक, त्व, अन्य, इतर ये छः नाम भिन्नेके वाचक हैं ॥ ८२ ॥ उच्चावच, नैकभेद ये दो नाम बहुत प्रकारके हैं । उच्चण्ड, अविलम्बित ये दो नाम जल्दीके हैं । अरुंतुद, मर्मस्पृश (शान्त) ये दो नाम मर्मभेदीके हैं । अबाध, निरर्गल ये दो नाम निर्बाध (बेरोक) के हैं ॥ ८३ ॥ प्रसव्य, प्रतिकूल, अपसव्य, अपष्टु ये चार नाम विपरीतके हैं । सव्य यह एक नाम वाम शरीरका है । अपसव्य यह एक नाम दाहिने शरीरका है ॥ ८४ ॥ संकट, संबाध ये दो नाम अल्प अवकाशवाले मार्ग आदिके हैं । तहां संबाधशब्द (पु०) है । कलिल, गहन ये दो नाम दुःखसे अधिगम्यके हैं । संकीर्ण, संकुल, आकीर्ण ये तीन नाम अत्यन्त मिले हुएके हैं । मुण्डित, परिवापित ये दो नाम मुण्डितके हैं ॥ ८५ ॥ ग्रंथित, संदित, दृब्ध ये तीन नाम गुंफित अर्थात् पुहे हुएके हैं । विस्मृत, विस्तृत, तत ये तीन नाम फैले हुएके हैं । अन्तर्गत, विस्मृत ये दो नाम विस्मृत अर्थात् भूले हुएके हैं । प्राप्त, प्रणिहित ये दो नाम लब्धके हैं ॥ ८६ ॥ वेष्टित, प्रेषित, आधूत, चलित,

परिक्षितं तु निवृतं मृपितं मुषितार्थकम् ।
 प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तानिसृष्टे गुणिताहते ॥ ८८ ॥
 निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूपिते ।
 द्रुतावदीर्णे उद्गुर्णोद्यते काचितशिष्यिते ॥ ८९ ॥
 घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धते समे ।
 वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥
 रुग्ण भुग्नेऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ।
 स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ह्रीणहीनौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥
 वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ संयोजित उपाहित ।
 प्राप्यं गम्य समासाद्य स्यन्न रीण स्तुतं सुतम् ॥ ९२ ॥

आकषित, धुत ये छ नाम कुठ कषित हुएके है । तुत्त, तुम्भ, अस्त,
 निष्ठयन, आविद्ध, क्षित, ईरित ये सात नाम प्रेरितके है ॥ ८७ ॥ परिक्षित,
 निवृत ये दो नाम कोट आदिसे सब ओर घिरे हुएके है । मृपित, मुषित
 ये दो नाम चुराये हुएके है । प्रवृद्ध, प्रसृत ये दो नाम फैले हुएके हैं ।
 न्यस्त, निसृष्ट ये दो नाम फँके हुएके है । गुणित, आहत ये दो नाम
 गुणा किये हुएके हैं ॥ ८८ ॥ निदिग्ध, उपचित ये दो नाम समृद्ध हुएके
 हैं । गूढ, गुप्त ये दो नाम गुप्तके हैं । गुठिन, रूपिन ये दो नाम धूलिसे
 णित हुएके हैं । द्रुत, अवदीर्ण ये दो नाम पिबले हुएके है । उद्गूर्ण, उद्यत
 ये दो नाम उठाये हुए शत्रु आदिके हैं । काचित, शिष्यित ये दो नाम
 छाँकेपर धरे हुएके हैं ॥ ८९ ॥ घ्राण, घ्रात ये दो नाम सूचे हुएके है ।
 दिग्ध, लिप्त ये दो नाम विलिप्तके हैं । समुदक्त, उद्धृत ये दो नाम कुआ
 आदिसे निकाले हुए जल आदिके है । वेष्टित, वरयित, संवीत, रुद्ध,
 आवृत ये पाँच नाम घिरे हुएके ह ॥ ९० ॥ रुग्ण, भुग्न ये दो नाम टूटे
 हुएके हैं । निशित, क्ष्णुत, शात, तेजिन ये चार नाम शाण आदिसे
 तीक्ष्ण किये शस्त्र आदिके हैं । पक्वं यह एफ नाम पके हुएका है ।
 ह्रीण, ह्रीत, लज्जिन ये तीन नाम लज्जिन हुएके है ॥ ९१ ॥ वृत्त, वृत,
 व्यावृत्त ये तीन नाम किये हुए वरणवालके है । संयोजित, उपाहित ये
 दो नाम मिलाये हुएके है । प्राप्य, गम्य समासाद्य ये तीन नाम प्राप्त
 होनेके योग्यके हैं । स्यन्न, रीण, स्तुत, सुत ये चार नाम प्रसृत अर्थात्

संगूढः स्यात्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।

विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥

अवरीणो धिक्कृतश्चाप्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।

अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥

बद्धे संदानितं मृतमुद्धितं संदितं सितम् ।

निष्पक्वे कथितं पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ॥ ९५ ॥

निर्वाणो मुनिवद्व्यादौ निर्वातस्तु गतेऽनिले ।

पक्वं परिणते गूनं हन्ने मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥

पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्गान्तमुद्गते ।

दान्तस्तु दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥

वहते हुएके हैं ॥ ९२ ॥ संगूढ, संकलित ये दो नाम जोड़े हुए अंक आदिके हैं । अवगीत, ख्यातगर्हण ये दो नाम निन्दितके हैं । विविध, बहु-विध, नानारूप, पृथग्विध ये चार नाम अनेक प्रकारके हैं ॥ ९३ ॥ अवरीण, धिक्कृत ये दो नाम निन्दितमात्रके हैं । अवध्वस्त, अवचूर्णित ये दो नाम चूर्ण किये हुएके हैं । फाण्ट यह एक नाम विना परिश्रम किये कायका है । स्वनित, ध्वनित ये दो नाम शब्दितके हैं ॥ ९४ ॥ बद्ध, संदानित, मृत, उद्धित, संदित, सित ये छः नाम बंधे हुएके हैं । निष्पक्व, कथित ये दो नाम सकल रीतिसे पके हुए काय आदिके हैं । शृत यह एक नाम पके हुए दूध घृत आदिका है ॥ ९५ ॥ निर्वाण यह एक नाम मुनि और अग्निविषयमें मुक्त और बुझनेके अर्थमें है । जैसे—‘निर्वाणो मुनिः’ निर्मुक्त इत्यर्थः । ‘निर्वाणो वह्निः’ अर्थात् बुझी हुई अग्नि । निर्वात यह एक नाम वायुरहितका है । पक्वं, परिणत ये दो नाम पके हुएके हैं । गून, हन्न ये दो नाम विषा त्यागनेवालेके हैं । मीढ, मूत्रित ये दो नाम मूत्र कर चुकनेके हैं ॥ ९६ ॥ पुष्ट, पुषित ये दो नाम मोटेके हैं । सोढ, क्षान्त ये दो नाम क्षमाको प्राप्त हुएके हैं । उद्घात, उद्गत ये दो नाम वमन करके गेरे हुए अन्न आदिके हैं । दान्त, दमित ये दो नाम इन्द्रिय जीतेके हैं । शान्त, शमित ये दो नाम शान्त हुएके हैं । प्रार्थित, अर्दित ये दो नाम याचित अर्थात् मांगे हुएके हैं ॥ ९७ ॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञापिते उन्नश्रुतादिते पूजितेऽश्वितः ।

पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽवसिते सितः ॥ ९८ ॥

मुष्टप्लुष्टोपिता दग्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।

वेधितच्छिद्रितौ विद्धे विन्नविन्नौ विचारिते ॥ ९९ ॥

निष्प्रभे विगतारोकौ विलीने विद्रुतद्रुतौ ।

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ दारिते भिन्नभेदितौ ॥ १०० ॥

ऊत स्यूतमुतं चोति त्रितय तन्तुसन्तते ।

स्यादर्हिते नमस्यित नमसितमपचायितार्चितापचितम् ॥ १०१ ॥

वरिवासिते वरिवस्यितमुपायित उपचारित च ।

सतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥ १०२ ॥

हृष्टे मत्तस्त्वृत्तं प्रह्वन प्रमुदितः प्रीतः ।

छिन्न छातं लून कृत्त दात दित छित वृक्कणम् ॥ १०३ ॥

ज्ञप्त, ज्ञापित ये दो नाम जाने हुएके हैं । उन्न, उन्नश्रुतादित ये दो नाम ढके हुएके हैं । पूजित, अचित ये दो नाम पूजित प्रियेके हैं । पूर्ण, पूरित ये दो नाम पूर्णके हैं । क्लिष्ट, क्लिशित ये दो नाम क्लेशको प्राप्तहुएके हैं । अवसित, सित ये दो नाम समाप्तके हैं ॥ ९८ ॥ मुष्ट, प्लुष्ट, उपित, दग्ध ये चार नाम जले हुएके हैं । तष्ट, त्वष्ट, तनूकृत ये तीन नाम छीलकर अल्प बनाये हुएके हैं । वेधित, छिद्रित, विद्ध ये तीन नाम छेदे हुएके हैं । विन्न, विन्न, विचारित ये तीन नाम विचारे हुएके हैं ॥ ९९ ॥ निष्प्रभ, विगत, अरोक ये तीन नाम दीप्तिरहितके हैं । विलीन, विद्रुत, द्रुत ये तीन नाम द्रवीभूत अर्थात् पिघले हुए घृतादिके हैं । सिद्ध, निर्वृत्त, निष्पन्न ये तीन नाम सिद्ध हुएके हैं । दारित, भिन्न, भेदित ये तीन नाम फाड़े हुएके हैं ॥ १०० ॥ ऊत, स्यूत, उत ये तीन नाम तंतुओंके प्रबन्ध अर्थात् चीने हुएके हैं । आर्हित, नमस्यित, नमसित, अपचायित, अचित, अपचित ये छ नाम अचितके हैं ॥ १०१ ॥ वरिवासित, वरिवस्यित, उपासित, उपचारित ये चार नाम शुश्रूषितके हैं । सतापित, संतप्त, धूपित, धूपायित, दून ये पाँच नाम सतापितके हैं ॥ १०२ ॥ हृष्ट, मत्त, ह्वन, प्रह्वन, प्रमुदित, प्रीत ये छ नाम प्रमुदितके हैं । छिन्न, छात, लून, कृत्त, दात, दित, छित, वृक्कण ये आठ नाम खादित (कटे) के हैं ॥ १०३ ॥

स्वस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।

लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च ॥ १०४ ॥

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५ ॥

त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च ।

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितं च परिभूते ॥ १०६ ॥

त्यक्तं हीनं विधुनं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ।

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥ १०७ ॥

बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवासतावगते ।

उगीकृतमुगीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥

संगीर्णं विदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥

अपि गीर्णवर्णितमभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ।

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगिलितखादितपमातम् ॥ ११० ॥

स्वस्त, ध्वस्त, भ्रष्ट, स्कन्न, पन्न, च्युत, गलित ये सात नाम च्युत अर्थात्
 चुए हुएके हैं । लब्ध, प्राप्त, विन्न, भाविन, आसादित, भूत ये छः नाम
 प्राप्त हुएके हैं ॥ १०४ ॥ अन्वेषित, गवेषित, अन्विष्ट, मार्गित, मृगित ये
 पाँच नाम ढूँढे हुएके हैं । आर्द्र, सार्द्र, क्लिन्न, तिमित, स्तिमित, समुन्न,
 उत्त ये सात नाम गीले हुएके हैं ॥ १०५ ॥ त्रात, त्राण, रक्षित, अवित,
 गोपायित, गुप्त ये छः नाम रक्षितके हैं । अवगणित, अवमत, अवज्ञात,
 अवमानित, परिभूत ये पाँच नाम अवमानितके हैं ॥ १०६ ॥ त्यक्त, हीन,
 विधुत, समुज्झित, धूत, उत्सृष्ट ये छः नाम त्यागे हुएके हैं । उक्त, भाषित,
 उदित, जल्पित, आख्यात, अभिहित, लपित ये छः नाम कहे हुएके हैं
 ॥ १०७ ॥ बुद्ध, बुधित, मनित, विदित, प्रतिपन्न, अवसित, अवगत ये
 सात नाम अवगत (जाने हुए) के हैं । उगीकृत, उरगीकृत, अंगीकृत,
 आश्रुत, प्रतिज्ञात ॥ १०८ ॥ संगीर्ण, विदित, संश्रुत, समाहित, उपश्रुत,
 उपगत ये ग्यारह नाम अगीकार कियेके हैं । ईलित, शस्त, पणायित,
 पनायित, प्रणुत, पणित, पनित ॥ १०९ ॥ गीर्ण, वर्णित, अभिष्टुत, ईडित,
 स्तुत ये बारह नाम स्तुति कियेके हैं । भक्षित, चर्वित, लीढ, प्रत्यवसित,

अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशित भुक्ते ।

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठारिष्ठस्यविष्ठचंदिष्ठाः ॥ १११ ॥

क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्था ।

साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥

चाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ।

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ सकीर्णवर्गः २ ।

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यै सकीर्णै लिङ्गमुन्नयेत् ।

कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥

साकल्यासङ्गवचने पारायणसंगणे ।

यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥

गिलित, खादित, प्सात ॥ ११० ॥ अभ्यवहत, अन्न, जग्ध, ग्रस्त, ग्लस्त, अशित, भुक्त ये चोदह नाम खाये हुएके हैं । क्षेपिष्ठ, क्षोदिष्ठ, प्रेष्ठ, वरिष्ठ, स्यविष्ठ, चंदिष्ठ ॥ १११ ॥ ये शब्द क्रमसे अत्यन्त क्षिप्र, अत्यन्त क्षुद्र, अत्यन्त अभीप्सित, अत्यन्त पृथु, अत्यन्त पीवर इन अर्थोंके वाचक हैं । अर्थात् क्षेपिष्ठ यह एक नाम अत्यन्त क्षिप्रका है । ऐसे अन्यभी जानने । साधिष्ठ, द्राधिष्ठ, स्फेष्ठ, गरिष्ठ, हसिष्ठ, वृन्दिष्ठ ॥ ११२ ॥ ये शब्द क्रमसे बाढ, व्यायत, बहु, गुरु, वामन, वृन्दारक इन्हींके अतिशयमें वर्तते हैं । जैसे—‘अतिशयेन बाढ साधिष्ठ’ इत्यादि । इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ सकीर्णवर्गः । पूर्वकथित दोनों काण्डोंमें स्वर्ग आदि नाम अपने २ सजातीय वर्गमें कहे गये हैं और तीसरे काण्डमेंभी विशेष्यनिघ्नवर्गमें सुकृतित्र आदि शब्द विशेष्यनिघ्नके अनुसार कहे गये । अब पूर्वोक्त दोनों मिल न जाय इस आपत्तिके भयसे जो पहले नहीं कहे हैं उन्हेंके समग्रके लिये सकीर्णवर्गका आरम्भ है । इस वर्गमें वक्ष्यमाण लिंगसमग्रको उक्त रीतिसे प्रकृतिका अर्थ और प्रत्ययका अर्थ और कहीं २ रूपभेद करके लिंगका विचार करना । कर्मत्र (नांत न०), क्रिया (स्त्री०) ये दो नाम क्रियाके हैं । अपरस्पर यह एक (त्रि०) नाम क्रियाके निरन्तर होनेका है ॥ १ ॥ पारायण यह एक (न०) नाम साकल्य (सम्पूर्ण) वचनका है । परा

शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ।
 अवदानं कर्म वृत्तं काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥
 वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् ।
 विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥
 पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधारणमित्यपि ।
 सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥
 आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना न ना ।
 संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याच्चा भिक्षार्थनाऽर्दना ॥ ६ ॥
 वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसमाजने ।
 आपच्छन्नमथाम्नायः संप्रदायः क्षये-क्षिया ॥ ७ ॥

यण यह एक (त्रि०) नाम आसंग वचनका है । यदृच्छा, स्वैरिता ये दो (स्त्री०) नाम स्वतन्त्रताके हैं । विलक्षण यह एक (न०) नाम कारण-रहित स्थितिका है ॥ २ ॥ शमथ (पु०), शम (पु०), शान्ति (स्त्री०) ये तीन नाम चित्तकी शान्तिके हैं । दान्ति (स्त्री०), दमथ (पु०), दम (पु०) ये तीन नाम इन्द्रियोंके रोकनेके हैं । अवदान यह एक (न०) नाम पहिले हो गये चरित्रका है । प्रवारण यह एक (न०) नाम काम्य अर्थात् तुलापुरुष आदि दानका है ॥ ३ ॥ वशक्रिया (स्त्री०), संवनन (न०) ये दो नाम मणि मंत्र आदिकरके वशीकरणके हैं । कार्मण यह एक (न०) नाम ओषधियोंके मूलोंसे उच्चाटन आदि कर्मका है । विधूनन, विधुवन ये दो (न०) नाम कंपनके हैं । तर्पण, प्रीणन, अवन ये तीन (न०) नाम तृप्तिके हैं ॥ ४ ॥ पर्याप्ति (स्त्री०), परित्राण (न०), हस्तधारण (न०) ये तीन नाम मारनेके लिये उद्युक्त हुएके निवारणके हैं । सेवन (न०), सीवन (न०), स्यूति (स्त्री०) ये तीन नाम सुईके कर्म अर्थात् सीवनेके हैं । विदर (पु०) स्फुटन (न०), भिदा (स्त्री०) ये तीन नाम फूटनेके हैं ॥ ५ ॥ आक्रोशन (न०), अभीषंग (पु०) ये दो नाम गाली देनेके हैं । संवेद (पु०), वेदना (स्त्री० न०) ये दो नाम अतुभवके हैं । संमूर्च्छन (न०), अभिव्याप्ति (स्त्री०) ये दो नाम सब ओरसे व्याप्तिके हैं । याच्चा, भिक्षा, अर्थना, अर्दना ये चार (स्त्री०) नाम मांगनेके हैं ॥ ६ ॥ वर्धन, छेदन ये दो (न०) नाम काटनेके हैं ।

ग्रहे ग्राहो वशः कान्तौ रक्षणस्त्राणे रणः कणे ।
व्यधो वेधे पचा पाके हवो हृतौ वरो वृत्तौ ॥ ८ ॥
ओषः प्लोषे नयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ भ्रमो भ्रमौ ।
स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्यातौ स्पृष्टिः पृक्तौ स्तवः स्तवे ॥ ९ ॥
एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा ।
प्रसूतिः प्रसवे श्रयोति प्राधारः क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥
उत्कर्षोऽतिशये संधिः श्लेषे विषय आश्रये ।
क्षिपाया क्षेपण गीर्णिर्गिरी गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

आनन्दन, सभाजन, आप्रच्छन्न ये तीन (न०) नाम स्वागत आदि कुशल पूछनेसे उत्पन्न हुए आनन्दके हैं । आम्नाय, सप्रदाय ये दो (पु०) नाम गुरुकी परंपरासे प्राप्त हुए उपदेशके हैं । क्षय (पु०), क्षिया (स्त्री०) ये दो नाम क्षयके हैं ॥ ७ ॥ ग्रह, ग्राह ये दो (पु०) नाम ग्रहणके हैं । वश (पु०), कान्ति (स्त्री०) ये दो नाम इच्छाके हैं । रक्षण (पु०), त्राण (न०) ये दो नाम रक्षाके हैं । रण, कण ये दो (पु०) नाम शब्द करनेके हैं । व्यध, वेध ये दो (पु०) नाम वेधनेके हैं । पचा (स्त्री०), पाक (पु०) ये दो नाम पाकके हैं । हव (पु०), ह्राति (स्त्री०) ये दो नाम बुलानेके हैं । वर (पु०), वृत्ति (स्त्री०) ये दो नाम वरदानके हैं ॥ ८ ॥ ओष, प्लोष ये दो (पु०) नाम दाहके हैं । नय, नाय ये दो (पु०) नाम नीतिके हैं । ज्यानि, जीर्णि ये दो (स्त्री०) नाम जीर्णपनेके हैं । भ्रम (पु०), भ्रमि (स्त्री०) ये दो नाम भ्रान्तिके हैं । स्फाति, वृद्धि ये दो (स्त्री०) नाम वृद्धिके हैं । प्रथा, ख्याति ये दो (स्त्री०) नाम ख्यातिके हैं । स्पृष्टि, पृक्ति ये दो (स्त्री०) नाम स्पर्शके हैं । स्तव, स्तव ये दो (पु०) नाम प्रश्रवण (झरने) के हैं ॥ ९ ॥ एधा, समृद्धि ये दो (स्त्री०) नाम वृद्धिके हैं । स्फुरण (न०), स्फुरणा (स्त्री०) ये दो नाम फरकनेके हैं । प्रमिति, प्रमा ये दो (स्त्री०) नाम यथार्थ ज्ञानके हैं । प्रसूति (स्त्री०), प्रसव (पु०) ये दो नाम गर्भमोचनके हैं । श्रयोति, प्राधार ये दो (पु०) नाम धृत आदिके टपकनेमें हैं । क्लमथ, क्लम ये दो (पु०) नाम ग्लानिके हैं ॥ १० ॥ उत्कर्ष, अतिशय ये दो (पु०) नाम उत्कर्ष (बड़ाई) के हैं । संधि (स्त्री०), श्लेष (पु०) ये दो नाम मिलापके हैं । विषय, आश्रय ये दो (पु०) नाम आश्रयके हैं । क्षिपा

उन्नाय उन्नये श्रायः श्रयणे जयने जयः ।

निगादो निगदे मादो मद उद्देग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमलोऽभ्युपपत्तिः अनुग्रहः ।

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

मुष्टिवन्धस्तु संग्राहो डिम्बे डमग्विप्लवो ।

बन्धनं प्रसितिश्चारः स्पर्शः स्पष्टो रतपति ॥ १४ ॥

निकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।

परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥

अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ।

प्रत्याहार उपादानं विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥

(स्त्री०), क्षेपण (न०) ये दो नाम प्रेरणा (आज्ञा) के हैं । गीर्णि, गिरि ये दो (स्त्री०) नाम निगल्लेके हैं । गुरण (न०), उद्यम (पु०) ये दो नाम भार आदि उठानेके उद्यमके हैं ॥ ११ ॥ उन्नाय, उन्नय ये दो (पु०) नाम उठानेके हैं । श्राय (पु०), श्रयण (न०) ये दो नाम सेवाके हैं । जयन (न०), जय (पु०) ये दो नाम जयके हैं । निगाद, निगद् ये दो (पु०) नाम कथनके हैं । माद, मद ये दो (पु०) नाम मदके हैं । उद्देग, उद्भ्रम ये दो (पु०) नाम उद्देगके हैं ॥ १२ ॥ विमर्दन (न०), परिमल (पु०) ये दो नाम केसर आदिसे किये मर्दनके हैं । अभ्युपपत्ति (स्त्री०), अनुग्रह (पु०) ये दो नाम अनुग्रहके हैं । निग्रह यह एक (पु०) नाम अनङ्गीकारका है । अभियोग, अभिग्रह ये दो (पु०) नाम कलहमें पुकारनेके हैं ॥ १३ ॥ मुष्टिवन्ध, संग्राह ये दो (पु०) नाम मुट्टीसे दृढ पकड़नेके हैं । डिम्ब, डमर, विप्लव ये तीन (पु०) नाम प्रलयके हैं । बन्धन (न०), प्रसिति (स्त्री०), चार (पु०) ये तीन नाम बंधनके हैं । स्पर्श, स्पष्ट (ऋकारान्त), उपतप्त (ऋकारान्त) ये तीन (पु०) नाम उपताप नामक रोगविशेषके हैं ॥ १४ ॥ निकार, विप्रकार ये दो (पु०) नाम अपकारके हैं । आकार (पु०), इंग (पु०), इङ्गित (पु० न०) ये तीन नाम अभिप्रायके अनुरूप चेष्टित कियेके हैं । परिणाम, विकार ये दो (पु०) नाम प्रकृति बदलनेके हैं । विकृति, विक्रिया ये दो (स्त्री०) नाम विरुद्ध करनेके हैं ॥ १५ ॥ अपहार, अप-

अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हागोऽभ्यवकर्षणम् ।

अनुहारोऽनुकारः स्यादर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं वाहिः ।

वियामो वियमो यामो यमः सयामसयमौ ॥ १८ ॥

हिंसाकर्मोभिचारः स्याज्जागर्या जागरा द्वयोः ।

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपघ्नोऽन्तिवाश्रये ॥ १९ ॥

निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परित्रिया ।

विधुरः तु प्रविश्लेषेऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

सक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधनम् ।

परिसर्पा परीसारः स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥

वय ये दो (पु०) नाम अपहरण (ग्रान् लने) के हैं । समाहार, समु
 श्रय ये दो (पु०) नाम इन्द्रेय हैं । प्रत्याहार (पु०), उपादान (न०)
 ये दो नाम इन्द्रियों के स्वीचने के हैं । विहार, परित्रम ये दो (पु०) नाम
 सार करने के हैं ॥ १६ ॥ अभिहार (पु०), अभिग्रहण (न०) ये दो
 नाम चोरी करने के हैं । निर्हार (पु०), अभ्यवकर्षण (न०) ये दो नाम
 शिल्प आदि निरुत्तरे के हैं । अनुहार, अनुकार ये दो (पु०) नाम
 नकल करने के हैं । व्यय यह एक (पु०) नाम रचने का है ॥ १७ ॥ प्रवाह
 (पु०), प्रवृत्ति (स्त्री०) ये दो नाम पानी आदिकी निरंतर गति के हैं ।
 प्रवह यह एक (पु०) नाम बाहिर वह निरुत्तरे का है । वियाम, वियम,
 याम, यम, सयाम, संयम ये छ (पु०) नाम सयम के हैं ॥ १८ ॥ हिंसा
 कर्म (नात्तन०) यह एक नाम मारना आदि अभिचार का है ।
 जागर्या (स्त्री०), जागरा (पु० स्त्री०) ये दो नाम जागने के हैं । विघ्न,
 अन्तराय, प्रत्यूह ये तीन (पु०) नाम विघ्न के हैं । उपघ्न यह एक (पु०)
 नाम समीपभूत आश्रय का है ॥ १९ ॥ निर्वेश, उपभोग ये दो (पु०)
 नाम उपभोग के हैं । परिसर्प (पु०), परित्रिया (स्त्री०) ये दो नाम
 परिजन अगति से घिरे हुए हैं । विधुर (न०), प्रविश्लेष (पु०) ये
 दो नाम व्यय वियोग के हैं । अभिप्राय, छन्द, आशय ये तीन (पु०)
 नाम अभिप्राय के हैं ॥ २० ॥ सक्षेपण, समसन ये दो (न०) नाम सक्षे
 प के हैं । पर्यवस्था (स्त्री०), विरोधन (न०) ये दो नाम विरोध के हैं ।

विस्तारो विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः ।
 संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥
 संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ।
 नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्संनिधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ॥
 लवोऽभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः ।
 प्रस्तावः स्यादवसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
 प्रजनः स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौ समौ ।
 धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
 स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥

परिसर्या (स्त्री०), परीसार (पु०) ये दो नाम सब ओर फैले हुएके हैं ।
 आस्या, आसना, स्थिति ये तीन (स्त्री०) नाम आसनके हैं ॥ २१ ॥
 विस्तार, विग्रह, व्यास ये तीन (पु०) नाम विस्तारके हैं । विस्तर यह
 एक (पु०) नाम शब्दसंबंधी विस्तारका है । संवाहन, मर्दन ये दो
 (न०) नाम अंगमर्दनके हैं । विनाश (पु०), अदर्शन (न०) ये दो
 नाम लोपके हैं ॥ २२ ॥ संस्तव, परिचय ये दो (पु०) नाम परिचयके
 हैं । प्रसर (पु०), विसर्पण (न०) ये दो नाम घाव आदिके फैलनेके
 हैं । नीवाक, प्रयाम ये दो (पु०) नाम धन धान्य आदिके संग्रहके हैं ।
 सन्निधि (पु०), सन्निकर्षण (न०) ये दो नाम पड़ोसके हैं ॥ २३ ॥
 लव, अभिलाव, लवन ये तीन (पु०) नाम अन्न आदिको काटनेके हैं ।
 निष्पाव (पु०), पवन (न०), पव (पु०) ये तीन नाम अन्न आदिको
 पवित्र करनेके हैं । प्रस्ताव, अवसर ये दो (पु०) नाम प्रसंगके हैं ।
 त्रसर (पु०), सूत्रवेष्टन (न०) ये दो नाम जुलाहेके बनाये सूत्रवेष्टन-
 विशेषके हैं ॥ २४ ॥ प्रजन, उपसर ये दो (पु०) नाम गर्भग्रहणके हैं ।
 प्रश्रय, प्रणय ये दो (पु०) नाम प्रेमके हैं । धीशक्ति (स्त्री०), निष्क्रम ये
 दो नाम बुद्धिकी सामर्थ्यके हैं । तहां निष्क्रमशब्द (पु० न०) है । संक्रम,
 दुर्गसंचर ये दो (पु०) नाम दुर्गमार्गके हैं ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रम, प्रयोग ये
 दो (पु०) नाम युद्धके अर्थ अत्यंत उद्योगके हैं । प्रक्रम, उपक्रम ये दो
 (पु०) नाम प्रथमारंभके हैं । अभ्यादान (न०), उद्धात (पु०), आरंभ

प्रतिबन्ध. प्रतिष्टम्भोऽवनायस्तु निपातनम् ।
 उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥
 विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।
 विश्रावस्तु प्रतिख्यातिरवेक्षा प्रतिजागर. ॥ २८ ॥
 निपाठनिपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्दने ।
 आदीनवान्त्रवौ क्लेशे मेलके सङ्गसगमौ ॥ २९ ॥
 सवीक्षण विचयन मार्गणं मृगणा मृग. ।
 परिरम्भ परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥
 निर्वर्णनं तु निध्यान दर्शनालोकनेक्षणम् ।
 प्रत्याख्यान निरसन प्रत्यादेशो निराकृति ॥ ३१ ॥

(पु०) ये तीन नाम आरम्भमात्रके हैं । सभ्रम (पु०), त्वरा (स्त्री०) ये दो नाम सवेगके हैं ॥ २६ ॥ प्रतिबन्ध, प्रतिष्ठम्भ ये दो (पु०) नाम कार्यके रुकनेके हैं । अवनाय (पु०), निपातन (न०) ये दो नाम नीचेको गिरनेके हैं । उपलम्भ, अनुभव ये दो (पु०) नाम साक्षात्कारके हैं । समालम्भ (पु०), विलेपन (न०) ये दो नाम केसर आदिसे किये लेपके हैं ॥ २७ ॥ विप्रलम्भ, विप्रयोग ये दो (पु०) नाम प्रयोगके हैं । विलम्भ (पु०), अतिसर्जन (न०) ये दो नाम अत्यन्त दानके हैं । विश्राव (पु०), प्रतिख्याति (स्त्री०) ये दो नाम अत्यन्त प्रसिद्धिके हैं । अवेक्षा (स्त्री०), प्रतिजागर (पु०) ये दो नाम धम्तुओंको देखनेके हैं ॥ २८ ॥ निपाठ, निपठ, पाठ ये तीन (पु०) नाम पठनेके हैं । तेम (पु०), स्तेम (पु०), समुन्दन (न०) ये तीन नाम आद्राभाव (गीले करने) के हैं । आदीनव, आस्रव, क्लेश ये तीन (पु०) नाम क्लेशके हैं । मेलक, सग, सगम ये तीन (पु०) नाम सगम (मेल) के हैं ॥ २९ ॥ सवीक्षण (न०), विचयन (न०), मार्गण (न०), मृगणा (स्त्री०), मृग (पु०) ये पाँच नाम तात्पर्यमें धम्तुओंके दूढ़नेके हैं । परिरम्भ (पु०), परिष्वग (पु०), संश्लेष (पु०), उपगूहन (न०) ये चार नाम आँटानेके हैं ॥ ३० ॥ निर्वर्णन, निध्यान, दर्शन, अलोकन, ईक्षण ये पाँच (न०), नाम निग्नर देखनेके हैं । प्रत्याख्यान (न०), निरसन (न०), प्रत्यादेश (पु०), निराकृति (स्त्री०) ये चार नाम निगकरणके हैं ॥ ३१ ॥

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।

अर्तनं च ऋतीया च हणीया च घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।

पर्यायोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।

स संस्तावः ऋतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः ।

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥

आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे निघः ।

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षावाद्भासास्तु गरणादिषु ॥ ३७ ॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः ।

निष्ठ्यूनिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ॥ ३८ ॥

उपशाय, विशाय ये दो (पु०) नाम पहर आदिके अनुसार शयनके हैं । अर्तन (न०) ऋतीया (स्त्री०), हणीया (स्त्री०), घृणा (स्त्री०) ये चार नाम करुणाके हैं ॥ ३२ ॥ व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, विपर्यय ये चार (पु०) नाम, व्यतिक्रम (उलट पुलट) के हैं । पर्याय, अतिक्रम, अतिपात, उपात्यय ये चार (पु०) नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३३ ॥ प्रतिशासन यह एक (न०) नाम नौकर आदिको बुलाके प्रेरित करनेका है । संस्ताव यह एक (पु०) नाम यज्ञोंमें वेदको गानेवाले ब्राह्मणोंके स्तवन-देशका है ॥ ३४ ॥ उद्धन यह एक (पु०) नाम जिस काठपर काठको स्थापित कर छोला जावे उस काठका है । स्तम्बघ्न, स्तम्बघन ये दो (पु०) नाम खुरपेके हैं ॥ ३५ ॥ आविध यह एक (पु०) नाम जिस करके वेधा जावे उस शस्त्रविशेष अर्थात् वृमेका है । निघ यह एक (पु०) नाम सब ओरसे समानरूप वृक्षका है । उत्कार, निकार ये दो (पु०) नाम अन्नको ऊपर निकालनेके हैं ॥ ३६ ॥ निगार यह एक (पु०) नाम निगलनेका है । उद्गार यह एक (पु०) नाम वमनका है । विक्षाव यह एक (पु०) नाम छीकका है । उद्ग्राह यह एक (पु०) नाम ऊपरको करके ग्रहण करनेका है ॥ ३७ ॥ आरति, अवरति, विरति, उपराम ये चार नाम उप-

जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूतिं ।
उदजस्तु पशुमेरणमकराणिगित्यादयः शापे ॥ ३९ ॥
गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ।
आपृषिकं शाण्डुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥
माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता ।
हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥
द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठचमनुक्रमात् ।
खलानां खलिनीं खल्याप्ययं मानुष्यकं नृणाम् ॥ ४२ ॥
ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ।
अपि साहस्रकारीपवार्मणार्थवर्णादिकम् ॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्ग ॥ २ ॥

रामके हैं । उपराम (पु०) शेष (स्त्री०) है । निष्ठेव (पु० न०), नि-
ष्ठ्यति (स्त्री०), निष्ठेवन (न०), निष्ठीवन (न०) ये चार नाम
धूकनेके हैं ॥ ३८ ॥ जवन (न०), जूति (स्त्री०) ये दो नाम वेगके
हैं । साति (स्त्री०), अउसान (न०) ये दो नाम अतके हैं । ज्वर
(पु०), जूति (स्त्री०) ये दो नाम ज्वरके हैं । उदज यह एक (पु०)
नाम पशुओंके मेरणाका है । अकरणि (पु०), अजननि, अवग्राह,
निग्राह आदि शब्द शापके वाचक हैं ॥ ३९ ॥ अपत्यार्थं प्रत्ययान् औपगव
आदि शब्दोंसे “ उसका समूह ” इस अर्थमें औपगवक आदि जानने ।
जैसे-‘उपगोस्पत्यानि पुमांस औपगवास्तेषां समूह औपगवम्’ और यह
एक (न०) नाम उपगवकी सनानोंके समूहका है । आपृषिक यह एक (न०)
नाम जडरूप अपूप अर्थात् मालपुत्रे आदिके समूहका है । शाण्डुलिक
यह एक (न०) नाम शाण्डुली अर्थात् पुरियोंके समूहका है ॥ ४० ॥
माणव्य यह एक (न०) नाम माणव अर्थात् बालकोंके समूहका है ।
सहायता यह एक (स्त्री०) नाम सहायोंके समूहका है । हल्या यह एक
(स्त्री०) नाम हलोंके समूहका है । गदगण्य, वाडव्य ये दो (न०)
नाम ब्राह्मणोंके समूहके हैं ॥ ४१ ॥ पार्श्व यह एक (न०) नाम पार्श्वका
अर्थात् अम्बिदिशेनके समूहका है । पृष्ठ यह एक (न०) नाम पृष्ठके
समूहका है । खलिनी, खल्या ये दो (स्त्री०) नाम खलोंके समूहके हैं ।
मानुष्य यह एक (न०) नाम मनुष्योंके समूहका है ॥ ४२ ॥ ग्रामता

अथ नानार्थवर्गः ३ ।

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।

भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने ।

पद्ये यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ पृथुकौ चिपिटार्भकौ ।

आलोकौ दर्शनद्यौतौ भेरीपट्टहमानकौ ॥ ३ ॥

यह एक (स्त्री०) नाम ग्रामोंके समूहका है । जनता यह एक (स्त्री०) नाम जनोंके समूहका है । धूम्या यह एक (स्त्री०) नाम धूमोंके समूहका है । पाश्या यह एक (स्त्री०) नाम पाशोंके समूहका है । गल्या यह एक (स्त्री०) नाम गल अर्थात् बृहत्काशोंके समूहका है । साहस्य यह एक (न०) नाम सहस्रोंके समूहका है । कारीप यह एक (न०) नाम करीष अर्थात् सूखे हुए गोबरके आरनोंके समूहका है । वार्मण यह एक (न०) नाम वर्म अर्थात् कवचोंके समूहका है । आथर्वण यह एक (न०) नाम अथर्वणोंके समूहका है । चार्मण यह एक नाम चर्मोंके समूहका है ॥ ४३ ॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २-॥

अथ नानार्थवर्गः । जो यह कहो कि किसलिये अनेकार्थोंका आरंभ किया जाता है । क्योंकि वे शब्द तो पूर्वोक्त वर्गोंमें कहे गये हैं और जो यहांभी कहे जावेंगे तो पहले क्यों कहे हैं ? तहां कहते हैं कि यहां वक्ष्यमाण कांत आदि वर्गोंमें कितनेही अनेक अर्थवाले कहे हैं और प्रागुक्त पर्यायोंमें नहीं और बहुतसे प्रयोग कवियोंने काव्य आदिकोंमें अधिकतासे कहे हैं वेही पूर्वोक्त पर्यायोंमें दीखते हैं । जैसे नाकशब्द पूर्व कहे वर्गोंमें स्वर्ग और आकाशका वाची कहा है वह फिर यहां कहा जावेगा और जंबुक शब्द गीदड़के नामोंमें कहा है और वरुणके नामोंमें नहीं इसलिये यहां फिर कहा जावेगा ॥ १ ॥ नाक यह एक (पु०) नाम आकाश और स्वर्गका है । लोक यह एक (पु०) नाम स्वर्ग आदिका और जनका है । श्लोक यह एक (पु०) नाम अनुष्टुप् आदि पद्य और यशका है । सायक यह एक (पु०) नाम शर और तलवारका है ॥ २ ॥ जंबुक यह एक (पु०) नाम गीदड़ और वरुणका है । पृथुक यह एक (पु०)

उत्सङ्गचिह्नयोरङ्गः कलङ्कोऽङ्गापवादयोः ।
 तक्षको नागवर्धकयोरर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥
 मारुते वेधसि ब्रध्ने पुसि कः क शिरोम्बुनो ।
 स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तासिक्थके ॥ ५ ॥
 उल्लूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।
 कमण्डलौ च करकः सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥
 किष्कुर्हरते वितर्ता च शूककोटे च वृश्चिकः ।
 प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुस्तयम् ॥ ७ ॥
 स्याद्भूतिक तु भूनिम्बे कचृण भूतृणेऽपि च ।
 ज्योतिस्त्रिकाया च घोषे च कोशातक्यथ वदकूले ॥ ८ ॥
 सिते च खदिरे सोमवल्क स्यादथ मिह्लके ।
 तिलकल्के च पिण्याको बाह्लीक रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

नाम भूने चांशु और बालकका है । आलोक यह एक (पु०) नाम दीपना और प्रकाशका है । आनक यह एक (पु०) नाम भेरी और मृदगका है ॥ ३ ॥ अंज यह एक (पु०) नाम गोदू और चिह्नका है । कलङ्क यह एक (पु०) नाम चिह्न और अपवादका है । तक्षक यह एक (पु०) नाम नागका और बर्धका है । अर्क यह एक (पु०) नाम स्फटिकमणि और सूर्यका है ॥ ४ ॥ क यह एक (पु०) नाम वायु, ब्रह्मा, सूर्य इहोंका है और यही (न०) नाम शिर और जटका है । पुलाक यह एक (पु०) नाम तुच्छ अन्न और अन्नके अवयवका है ॥ ५ ॥ पेचक यह एक (पु०) नाम उल्लू और हाथीकी पुच्छके मूत्रके गुदान्तादङ्क मारुका है । करक यह एक (पु० न०) नाम कमण्डलु और चकारसे आकाशमे घंष हुए ओलेका है । विनायक यह एक (पु०) नाम वृद्धका और चकारमे गणेशका है ॥ ६ ॥ किष्कु यह एक (पु०) नाम हाथ और विस्तका है । वृश्चिक यह एक (पु०) नाम शूककोटा और चकारसे चिह्नका है । प्रतीक यह एक शब्द प्रतियुक्तका वाची (नि०) है और अवयवका वाची (पु०) है ॥ ७ ॥ भूतिक यह एक (न०) नाम निगा यना और गध तृणनिर्जेषका है । कोशातकी यह एक (स्त्री०) नाम वदक, तोरई और उगाका है ॥ ८ ॥ सोमवल्क यह एक (पु०) नाम

महेन्द्रगुग्गुलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।

लक्तापशङ्कास्वातङ्कः स्त्रलेपेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥

जैवातृकः शशाङ्केऽपि खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्चानः स्वर्णेऽपि गैरिकम् ।

पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥

शीलान्वयावनूके द्वे शल्के शकलवलकले ।

साष्टे शत सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥

दीनाभेऽपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ।

दम्भेऽप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

कायफल और सुपेद खैरका है । पिण्याक यह एक (पु० न०) नाम पण्यभेदका और स्नेहरहित तिलोंके चूर्णका है । वाङ्मोक यह एक (न०) नाम हींगका और चकारसे बाह्यीक देशका और घोंडेका है ॥ १ ॥ कौशिक यह एक (पु०) नाम इन्द्र, गुग्गुल, उल्लू, सर्पग्राही, विश्वामित्र और नौलेका है । आतंक यह एक (पु०) नाम रोग, ताप, शंका, भय इन्हींका है । क्षुल्लक यह एक (त्रि०) नाम खलपका और अपिशब्दसे नीच, दाद्रीका है ॥ १० ॥ जैवातृक यह एक (त्रि०) नाम चंद्रमाका और अपिशब्दसे दीर्घायु और कुशाका है । वर्तक यह एक (पु०) नाम अश्वके खुरका और अपिशब्दसे बतक पक्षीका है । पुण्डरीक यह एक (पु०) नाम वधेराका और अपिशब्दसे (न०) सुपेद कमलका है । दीपक यह एक (पु०) नाम अजमानका और अपिशब्दसे प्रकाशका है ॥ ११ ॥ शालावृक यह एक (पु०) नाम वानर, गीदड़, कुत्ता इन्हींका है । गैरिक यह एक (न०) नाम सोनेका और अपिशब्दसे गेरूका है । व्यलीक यह एक (न०) नाम अप्रियका और पीडाका है । अलीक यह एक (न०) नाम अप्रिय और झूठका है ॥ १२ ॥ अनूक यह एक (न०) नाम स्वभावका और वंशका है । शल्क यह एक (न०) नाम खंड और छालका है । निष्क यह एक (पु० न०) नाम सोनेके १०८ कर्पाँका, सुवर्णका, छातीके गहनेका, पलभर सोनेका ॥ १३ ॥ और व्यवहारके अनुसार द्रव्यभेदका है । कल्क यह एक (पु० न०)

धेनुका तु करेणा च मेघजाले च कालिका ।
 कारिका यातनावृत्त्यो* कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥
 करिहर्सेऽगुलौ पद्मबीजकोश्या त्रिपूत्तरे ।
 वृन्दारकौ रूपिमुख्यावेके मुख्यान्यकेवला. ॥ १६ ॥
 स्यादाग्निमिक. कौकुटिको यश्चाद्गैरितेक्षण* ।
 लालाटिक प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च य ॥ १७ ॥
 " भृशक्षितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम् ।
 सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टक* ॥
 पाकौ पक्तिशिशू मध्यान्त्र नेतारि नायक ।
 पर्यङ्क. स्यात्परिकरे स्याद्व्याघ्रेऽपि च लुब्धकः ॥

नाम विष्टा और पाप और पासडगा है । पिनाक यह एक (पु० न०)
 नाम त्रिशूल और महादेवके धनुषका है ॥ १४ ॥ धेनुका यह एक (स्त्री०)
 नाम हयनीका और चकारसे नजीक व्याई हुई गोका है । कालिका यह
 एक (स्त्री०) नाम मेघके समूहका और चकारमे कालिकादेवीका है ।
 कारिका यह एक (स्त्री०) नाम नरकयातनाका और विवरणश्लोकका
 है । कर्णिका यह एक (स्त्री०) नाम कानकी तरकी ॥ १५ ॥ हागी
 की सूडेर अग्रभाग, अगुला, कमलक बीजका गुच्छा इत्यादि हैं ।
 इससे आगे और खानशब्दीसे पहले सब शब्द (त्रि०) हैं । वृन्दारक
 यह एक नाम देवताका, रूपगालेका और मुखका है । एकशब्द मुख,
 अन्य और केवल इहोंका वाचक है ॥ १६ ॥ कौकुटिक यह एक नाम
 मायावीका और जो मभीष प्रेरित त्रिये नेत्रोंवाला हो उसका है ।
 लालाटिक यह एक स्वामीके मन्त्रकी देखनेवालेका और कार्य करनेमें
 असमर्थका है ॥ १७ ॥ " कटक यह एक (पु० न०) नाम पर्यंत, नित्य,
 तटा, चक्र इनका है । कटक यह एक (पु०) नाम सूईका अग्र, छोटा
 शत्रु, रोमोंका उगना इनका है । पाक यह एक (पु०) नाम पाक
 और बालक इनका है । नायक यह एक (पु०) नाम मध्यरत्न और
 प्रभुका है । पर्यङ्क यह एक (पु०) नाम पर्यङ्क और समूहका है । लुब्धक
 यह एक (पु०) नाम धेरा और लुब्धका है । पाठान्तरसे लुब्धक नाम
 चार्त्तान्तराभी है । पेशक यह एक (त्रि०) नाम समूह और मद्रका

पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिकः ।
 खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिकः ॥
 पुष्परेणौ च किञ्जलकः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च ।
 स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका वार्धकं भाववृन्दयोः ॥
 करिण्यां चापि गणिका दारकौ बालभेदकौ ।
 अन्धेऽप्यनेडमूकः स्यादृङ्गौ दर्पाश्मदारणौ ॥ ”

इति कान्ताः ।

मयूखस्तिवट्करज्वालाखलिबाणौ शिलीमुखौ ।
 शङ्खो निधौ ललाटास्थिन कर्म्बौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥
 घृणिज्वाले अपि शिखे-

इति खान्ताः ।

शैलवृक्षौ नगावगौ ।

आशुगौ वायुविशिखौ शर्कराविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

है । देशिक यह एक (पु०) नाम गुरु और देशमें होनेवालेका है । खेटक यह एक (पु०) नाम ग्राम और फलकका है । जालिक यह एक (पु०) नाम धीमर और जालीका है । किंजलक यह एक (पु०) नाम पुष्परेणुका और किंजलकका है । शुल्क यह एक (पु० न०) नाम स्त्रीधनका है । उत्कलिका यह एक (स्त्री०) नाम लहरियोंका है । वार्धक यह एक (न०) नाम भाव और समूहका हैं । गणिका यह एक (स्त्री०) नाम हथिनी और वेश्याका है । दारक यह एक (पु०) नाम बालक और भेदनेवालेका है । अनेडमूक यह एक (पु०) नाम आँधरेका है । टंक यह एक (पु०) नाम गर्व और टांकीका है । ” यहाँ ककारांत शब्द समाप्त हुए ॥ मयूख यह एक (पु०) नाम शोभा, किरण, ज्वाला इन्हींका है । शिलीमुख यह एक (पु०) नाम भौंरेका और बाणका है । शंख यह एक (पु०) नाम खजांना, मस्तककी हड्डी और शंख इन्हींका है, जब शंखवाची है तब (पु० न०) है । ख यह एक (न०) नाम इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्य, बिन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक, कल्याण इन्हींका वाची है ॥ १८ ॥ शिखा यह एक (स्त्री०) नाम किरणका और चोटीका है यहाँ खका-रान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नग, अग ये दोनों (पु०) नाम पर्वतके और

पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च पूगं क्रमुक्वृन्दयोः ।
 पशवोऽपि मृगा वेगः प्रवाहज्वयोरपि ॥ २० ॥
 परागं कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ।
 गजेऽपि नागमातङ्गावपाङ्गास्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥
 सर्गं स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।
 योगः संनहनोपायध्यानसगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥
 भोगः सुखे ह्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः ।
 चातके हरिणे पुंसि सारङ्ग शबले त्रिषु ॥ २३ ॥
 कपौ च पुवगं शापे त्वमिपङ्गं परामवे ।
 यानाद्यङ्गे युगं पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥

वृक्षके है । आशुग यह एक (पु०) नाम वायुका और बाणका है । खग यह एक (पु०) नाम बाण, पक्षी और सूर्यका है ॥ १९ ॥ पतग यह एक (पु०) नाम पक्षी, सूर्य और शालिचावलके भेदका है । पूग यह एक (पु०) नाम सुपारीके वृक्ष और समूहका है । मृग यह एक (पु०) नाम पशुका, मृगशिरका और दूधनेका है । वेग यह एक (पु०) नाम प्रवाहका और वेगका है और अपिशब्दसे विष्टाको गुदाके बाहिर निकासनेका है ॥ २० ॥ पराग यह एक (पु०) नाम फूलसबधी रेणु और स्नानके योग्य गन्धके चूर्णविशेषका है और अपिशब्दसे उपरागका है । नाग मातग ये दो (पु०) नाम हस्तीके और अपिशब्दसे सर्प, नागजैसर पानवेल आदिके है । अपांग यह एक (पु०) नाम तिलरुका और अपिशब्दसे नेत्रके अन्तभाग और अगहोनका है ॥ २१ ॥ सर्ग यह एक (पु०) नाम स्वभाव, त्याग, निश्चय, अध्याय, सृष्टि इन्हींका है । योग यह एक (पु०) नाम कवच, उपाय, ध्यान, सगति, युक्ति इन्हींका है ॥ २२ ॥ भोग यह एक (पु०) नाम सुख, पण्यस्त्री, हस्ती घोडे आदिका मूल्य, पालन वा भरना, सर्पके फण और शरीर इनका है । सारग यह एक (पु०) नाम पेया और हिरणका है । और शबलका वाची (त्रि०) है ॥ २३ ॥ श्वग यह एक (पु०) नाम वानर और चकारसे मँडक और सारथि आदिका है । अभिपग यह एक (पु०) नाम शापका और तिरस्कारका है । युग यह एक नाम रथ गाडे आदिके अवयवमें (पु०) है और जोडा और सत्ययुग

स्वर्गेषु पशुवाग्धज्रादिङ्नेत्रघृणिभूजले ।

लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्लिङ्गं चिह्नशेषसोः ॥ २५ ॥

गृह्णं प्राधान्यसान्वोश्च वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः ।

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

इति गान्ताः ।

परिधः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ।

मूल्ये पूजाविधावर्षोऽहोदुःखव्यसनेष्वधम् ॥ २७ ॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

इति घान्ताः ।

काचाः शिष्यमृद्देददभुजः ।

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके शुचिः ॥ २८ ॥

मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।

अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्ती च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

इति चान्ताः ।

आदिका वाची (न०) है ॥ २४ ॥ गो यह एक नाम स्वर्ग, बाण, पशु, बाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, पानी इन्हींका है और प्रयोगके अनुसार (स्त्री०) और (पु०) है । लिंग यह एक (न०) नाम चिह्नका और लिंगइन्द्रियका है ॥ २५ ॥ गृग यह एक (न०) नाम प्रधानपना, शिखर और चकारसे पशुके सींगका है । वरांग यह एक (न०) नाम शिरका और योनिका है । भग यह एक (न०) नाम लक्ष्मी, काम, ऐश्वर्य, वीर्य, यत्न, अर्क, कीर्ति इन्हींका है ॥ २६ ॥ यहाँ गकारांत शब्द समाप्त हुए ॥ परिघ यह एक (पु०) नाम लोहेकी लाठीका और अपि-शब्दसे योगभेदका है । ओघ यह एक (पु०) नाम समूह और पानीके प्रवाहका है । अर्व यह एक (पु०) नाम मोलका और पूजाके जलका है । अध यह एक (न०) नाम पाप, दुःख अर्थात् बुढ़ापा मरण आदि, व्यसन अर्थात् शिकार जूआ खेलने आदिका है ॥ २७ ॥ लघु यह एक (त्रि०) नाम मनोवांछित और अल्पका है ॥ यहाँ चकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ काच यह एक (पु०) नाम छाँक, काँच, नेत्ररोग इन्हींका है । प्रपञ्च यह एक (पु०) नाम विपरीतपनेका और विस्तारका है । शुचि यह एक नाम अग्निका ॥ २८ ॥ और आषाढ महीना, मंत्री तथा शुद्ध चित्तवालेका

“ प्रसन्ने भल्लुकैऽप्यच्छो गुच्छः स्तवकहारयोः ।
परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः ॥ १ ॥ ”

इति क्षेपकाश्रयान्ताः ।

केकिताक्ष्यावहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजा* ।
अजा विष्णुहरच्छागा गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥
धर्मराजौ जिनयमौ कुञ्जो दन्तेऽपि न द्वियाम् ।
वलजे क्षेत्रपृद्धारे वलजा वलगुदर्शना ॥ ३१ ॥
समे क्षमाशे रणेऽप्याजि* प्रजा स्यात्सन्ततौ जने ।
अब्जो शंखशङ्खौ च स्वके नित्ये निज त्रिषु ॥ ३२ ॥

इति जान्ता ।

है और (पु०) है । पवित्रमे और शुक्लवर्णमे (त्रि०) है । रुचि यह एक (स्त्री०) नाम मिलाप, बहुत इच्छा, किरण इन्हींका है और चकारसे शोभाका है ॥ २९ ॥ यहा चकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ “ अच्छ यह एक (पु०) नाम रीछ, प्रसन्न और अपिशब्दसे स्फटिकका है । गुच्छ यह एक (पु०) नाम गुच्छेका और हारका है । कच्छ यह एक नाम धोती आदि पहिरनेके वस्त्रका किनारा, नावना भगविशेष, जलप्रायदेश इन्हींका है । तहां वस्त्रवाची (पु०) है और तट नौकाद्वादिवाची (त्रि०) है । ” यही छकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ अहिभुज यह एक (पु०) नाम मोरका और गरुड (और नौले) का है । द्विज एक (पु०) नाम दांत, ब्राह्मण, पक्षी इन्हींका है । अज यह एक (पु०) नाम विष्णु, महादेव, बरुवा इन्हींका है । व्रज यह एक (पु०) नाम गौओंका स्थान, मार्ग, समूह इनका है ॥ ३० ॥ धर्मराज यह एक (पु०) नाम जिन अर्थात् बुद्धदेवता और यमदेवता और युधिष्ठिरका है । कुज यह एक (पु० न०) नाम हस्तीके दांतका और निकुञ्जका है । वलज यह एक (न०) नाम खेत और नगरके द्वारका है । वलजा यह एक (स्त्री०) नाम सुन्दर स्त्रीका है ॥ ३१ ॥ आजि यह एक (स्त्री०) नाम समानरूप पृथ्वीभागका और युद्धका है । प्रजा यह एक (स्त्री०) नाम सत्तानका और जनका है । अब्ज यह एक (पु०) नाम शंखना और चन्द्रमाका है । निज यह एक

पुंस्यात्मानि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः ।
संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्वर्यसूचना ॥ ३३ ॥

इति ज्ञान्ताः ।

काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटौ ।
शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥
देवशिलिपिन्यपि त्वष्टा दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ।
रसे कटुः कटुकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥
रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ।
मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥
अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।
सूक्ष्मलायां वृष्टिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संग्रहेऽपि सा ॥ ३७ ॥

(त्रि०) नाम अपना और नित्यका है ॥ ३२ ॥ यहाँ जकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ क्षेत्रज्ञ यह एक नाम आत्माका वाची (पु०) है और कुशलका वाची (त्रि०) है । संज्ञा यह एक (स्त्री०) बुद्धि, नाम और हाथ भौंह लोचन आदिसे अर्थकी सूचना करनेका है । गायत्री और सूर्यकी स्त्रीकोभी कहते हैं ॥ ३३ ॥ यहाँ जकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ करट यह एक (पु०) नाम काकका और हाथीके कपोलका है । कट यह एक (पु०) नाम हाथीके कपोलका और कटिका और चटाईका है । शिपिविष्ट यह एक (पु०) नाम वालोंसे रहित शिरवाला, दुष्टचामवाला और महादेवका है ॥ ३४ ॥ त्वष्ट (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम विश्वकर्माका और अपिशब्दसे सूर्यविशेष तथा खातीका है । दिष्ट यह एक नाम देवका वाची (न०) है और कालका वाची (पु०) है । कटु यह एक नाम रसका वाची (पु०) है और अकार्यका वाची (न०) है । मत्सर और तीक्ष्णका वाची (त्रि०) है ॥ ३५ ॥ रिष्ट यह एक (न०) नाम कुशल, अमंगल, अशुभके अभावका है । अरिष्ट यह एक (न०) नाम शुभ अशुभका है । सोवडका घर, मदिरा और मरणके चिह्नकाभी है ॥ ३६ ॥ कूट यह एक (पु० न०) नाम माया, निश्चलयन्त्र, कपट, झूठ, समूह, लोहेका समूह, पर्वतका शिखर, हलका अंग इन्हींका है । वृष्टि यह एक (स्त्री०) नाम छोटी इलायचीका है और कालभेद, लेश, सन्देह इन्हींका है ॥ ३७ ॥

आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा ।

व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्निर्दिष्टिर्दर्शने ॥ ३८ ॥

इष्टिर्यागेच्छयोः सृष्टे निश्चिते बहुनि त्रिषु ।

कष्टे तु कृच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥

पटुर्द्वौ वाच्यलिङ्गौ च—

इति ढान्ताः ।

नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठर कुसलोऽन्तर्गृह तथा ॥ ४० ॥

निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ता काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्पयो ॥ ४१ ॥

इति ठान्ताः ।

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्दण्डो गोलेक्षुपाकयोः ।

सर्पमासात्पशू व्याडौ गोभूवाचस्त्विडा इला ॥ ४२ ॥

कोटि यह एक (स्त्री०) नाम धनुषके अग्रभाग, प्रकर्ष, कोण, सख्यामेद इन्होंका है । जटा यह एक (स्त्री०) नाम मूल, मिले हुए बाल, जटमांसी इन्होंका है । व्युष्टि यह एक (स्त्री०) नाम फलका और समृद्धिका है । दृष्टि यह एक (स्त्री०) नाम ज्ञान, आँख, देखना इन्होंका है ॥ ३८ ॥ इष्टि यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञका और इच्छाका है । सृष्टि यह एक (त्रि०) नाम निश्चय और बहुतका है । कष्ट यह एक नाम दुःखका और दुःखसे प्राप्त हो सकनेवाली वस्तुका है ॥ ३९ ॥ पटु यह एक नाम चतुर, तीक्ष्ण, रोगहीन इन्होंका है । कष्ट और पटु ये दोनों शब्द वाच्यलिङ्गी है । यहाँ टकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नीलकण्ठ यह एक (पु०) नाम महादेवका और अपि शब्दसे मोरका है । कोष्ठ यह एक (पु०) नाम पेटके भीतर अन्नके मका नका, कठीलेका और भीतरके घरका है ॥ ४० ॥ निष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम सिद्धि, नहीं दीखना, नाश इन्होंका है । काष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम उत्कर्ष, स्थिति और दिशाका है । ज्येष्ठ यह एक (त्रि०) नाम अत्यंत उत्तमका है और अपिशब्दसे अत्यंत वृद्ध, बड़ा और जेठ महीनेका है । कनिष्ठ यह एक (त्रि०) नाम बालकका और अल्पका है ॥ ४१ ॥ यहाँ ठकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ दण्ड यह एक (पु० न०) नाम

क्षेडा वंशशलाकाऽपि नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ।
 काण्डोऽस्त्री दण्डवाणार्ववर्गवसरवारिषु ॥ ४३ ॥
 स्याद्वाण्डमश्वभरणेऽमत्रे मूलवाणिग्धने ।

इति डान्ताः ।

भृशप्रतिज्ञयोर्वाढं प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥
 शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।

इति ढान्ताः ।

भ्रूणोऽर्भके स्त्रिणगर्भे वाणो बलिमुते शरे ॥ ४५ ॥
 कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे गणः ।
 पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥

लाठीका और अपिशब्दसे मानभेद और दंडका है । गुड यह एक (पु०) नाम गोलेका और गुडका है । व्याड यह एक (न०) नाम सर्पके मांसको खानेवाले और पशुका है । इडा और इला ये दो (स्त्री०) नाम गौ, पृथ्वी, वाणी इन्हींके हैं और इला यह एक नाम बुधकी स्त्रीका भी है ॥ ४२ ॥
 क्षेडा यह एक (स्त्री०) नाम वंशकी सलाई और अपिशब्दसे विषका है । तर्हा विषका वाची (पु०) है । नाडी यह एक (स्त्री०) नाम नालका और छः क्षणपरिमित कालका अर्थात् घडीका है । कांड यह एक (पु० न०) नाम दंड, वाण, घोडा, वर्ग, अवसर, पानी इन्हींका है ॥ ४३ ॥
 भांड यह एक (न०) नाम घांटेके भूषण, पात्र, मूलरूप वैश्यके धनका है ॥ यहाँ डकारान्त शब्द समास हुए ॥ बाढ यह एक (न०) नाम अत्यंतका और प्रतिज्ञाका है । प्रगाढ यह एक (न०) नाम अत्यंतका और दुःखका है ॥ ४४ ॥ दृढ यह एक (त्रि०) नाम समर्थका और स्थूलका है । व्यूढ यह एक (त्रि०) नाम धरोहरका और समूहका है ॥ यहाँ ढकारान्त शब्द समास हुए ॥ भ्रूण यह एक (पु०) नाम बालकका और स्त्रीके गर्भका है । वाण यह एक (पु०) नाम बलिके पुत्रका और शरका है ॥ ४५ ॥ कण यह एक (पु०) नाम अत्यंत छोटेका और अन्नके अंशका है । गण यह का और महादेवके गणका है । पण यह एक की बाजी, वेतन मोल, धन और अपिशब्दसे एक (पु० न०) नाम

मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशीर्यसंध्यादिके गुणः ।
 निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयो क्षणः ॥ ४७ ॥
 वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाऽभरे ।
 अरुणो भास्करेऽपि स्यादर्णमेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥
 स्थाणुः शर्वोऽप्यथ द्रोणः कावेऽप्याजौ रवे रणः ।
 ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥
 ऊर्णा मेवादिलोम्नि म्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः ।
 हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥
 त्रिषु पाण्डौ च हरिणः स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।
 तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्सावरुणे घृणे ॥ ५१ ॥
 वणिक्पथे च विपणिः सुरा प्रत्यक् च वारुणी ।
 करेणुरिभ्या स्त्री नेमे द्रविण तु बल धनम् ॥ ५२ ॥

खरीदनेके योग्य शाक आदिका है ॥ ४६ ॥ गुण यह एक (पु०) नाम धनुषको डोरी, रस गंध आदि, सत्त्व रज, तम, चतुरपना, सधि विग्रह आदि इन्हींका है । क्षण यह एक (पु०) नाम चुपचाप रहना, काल विशेष, उत्सव इहोंका है ॥ ४७ ॥ वर्ण यह एक (पु०) नाम ब्राह्मण आदि वर्ण, सुपेद आदि रंग, स्तुति इहोंका है और अक्षरका वाची (पु० न०) है । अरुण यह एक (पु०) नाम सूर्यका और अपिशब्दसे सूर्यके सारथिका है और कपिल वर्ण, सव्याका राग इन्हींका वाचक (त्रि०) है ॥ ४८ ॥ स्थाणु यह एक (पु०) नाम महादेवका और स्तम्भ आदिका है । द्रोण यह एक (पु०) नाम द्रोणाचार्य, तोलविशेष, काक इन्हींका है । रण यह एक (पु०) नाम युद्धका और शब्दका है । ग्रामणी यह एक नाम नाईका वाची (पु०) है । अत्यंत उत्तम और गामके मालिकका वाची (त्रि०) है ॥ ४९ ॥ ऊर्णा यह एक (स्त्री०) नाम भेंडा आदिके रोम, भृशुदियोंके घेरका है । हरिणी यह एक (स्त्री०) नाम मृगी, सोनेकी मूर्ति, हरे वर्णवाली इहोंका है ॥ ५० ॥ हरिण यह एक (त्रि०) नाम पांडुर वर्णका और चमरसे मृगके भेदका है । स्थूणा यह एक (स्त्री०) नाम मजानके स्तम्भ और अपिशब्दसे लोहेकी प्रतिमाका है । तृष्णा यह एक (स्त्री०) नाम इच्छाका और तृपाका है । तृणा यह एक (स्त्री०) नाम निन्दाका और दयाका है ॥ ५१ ॥ विपणि यह

शरणं गृहरक्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।
 विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥
 प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृसु ।
 करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥
 प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधचमूगतौ ।
 वण्टापथेऽय वान्ताच्चे समुद्रिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥
 अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेमदन्तयोः ।
 प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रहे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥
 संकीर्णौ निचिताशुद्धौ विरिणं शून्यमृषरम् ।
 “ सेतौ च वरणो वेणी नदीभेदे कचोच्चये । ”

इति णान्ताः ।

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

एक (स्त्री०) नाम बाजारकी गली और दुकानका है । वारुणी यह
 एक (स्त्री०) नाम मदिराका और पश्चिम दिशाका है । करेणु यह एक
 नाम हथिनीका वाची (स्त्री०) और हाथीका वाची (पु०) है । द्रविण
 यह एक (पु० न०) नाम बलका और धनका है ॥ ५२ ॥ शरण यह
 एक (न०) नाम घरका और रक्षा करनेवालेका है । श्रीपर्ण यह एक
 (न०) नाम कमलका और चकारसे अरनीका है । तीक्ष्ण यह एक नाम
 विष, युद्ध, लोहा इन्हींका (न०) है और तीक्ष्णका वाची (त्रि०) है
 ॥ ५३ ॥ प्रमाण यह एक (न०) नाम हेतु, मर्यादा, शास्त्र, परिच्छेद,
 ज्ञाता इन्हींका है । कारण यह एक (न०) नाम क्रियाकी सिद्धिमें प्रकृष्ट
 कारणका है और क्षेत्र, अंग, इन्द्रिय इन्हींका है ॥ ५४ ॥ संसरण यह एक
 (न०) नाम प्राणियोंके जन्मका, निर्बाध सेनाके गमनका और चौहटका
 है । समुद्रिरण यह एक (न०) नाम उलटी किये अन्नका और जलके
 पात्र आदिको ऊपर लानेका है ॥ ५५ ॥ इससे आगे वक्ष्यमाण शब्द
 (त्रि०) हैं । विषाण यह एक नाम पशुके सींगका और हाथीके दंतका
 है । प्रवण यह एक नाम क्रमसे ढूँधी पृथ्वीका और नम्रका है और चौरा-
 हेका वाचक (पु०) है ॥ ५६ ॥ संकीर्ण यह एक नाम व्यापक और अशु-
 द्धका है । विरिण यह एक नाम शून्यका और ऊपर पृथ्वीका है । “ वरण

पक्षिताक्ष्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
 अम्बुत्पातौ धूमकेतू जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥
 हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ ।
 यन्ता हस्तिपके सूते भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥
 यानपात्रे शिशौ पोतः प्रेत प्राण्यन्तरे मृते ।
 ग्रहमेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥
 स्थपतिः कारुमेदेऽपि भृशद्रुमिधरे नृपे ।
 मूर्धाभिपिक्तो भूपेऽपि ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥
 विष्णावप्यजिताव्यक्तौ सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।
 व्यक्तः प्राज्ञेऽपि दृष्टान्तामुमौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥

यह एक (पु०) नाम पुल, वेणी, नदीका भेद और बालोंके समूहका है ॥
 यहाँ णकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ विवस्वत् (तान्) यह एक (पु०)
 नाम देवताका और सूर्यका है । सरस्वत् (मत्स्वन्त) यह एक (पु०) नाम
 नदका और समुद्रका है ॥ ५७ ॥ गरुत्मत् (मत्वन्त) यह एक (पु०)
 नाम पक्षीका और गरुटका है । शकुत् यह एक (पु०) नाम गीधका
 और पक्षीका है । धूमकेतु यह एक (पु०) नाम अग्निका और उत्ता
 तरा है । जीमूत यह एक (पु०) नाम मेघका और पर्वतका है ॥ ५८ ॥
 हस्त यह एक (पु०) नाम हाथका और हस्त नक्षत्रका है । महत् यह
 एक (पु०) नाम पवनका और देवताका है । यत् (ऋकारान्त पु०) यह
 एक नाम हाथीवात्रका और सारथिका है । भर्तृ (ऋकारान्त पु०) यह
 एक नाम धारकका और माणिक्यका है ॥ ५९ ॥ पोत यह एक (पु०)
 नाम यानके पात्र अर्थात् दूगी आदिका और बालकका है । प्रेत यह एक
 (पु०) नाम भूतका और मरे हुएका है । केतु यह एक (पु०) नाम
 केतु ग्रहका और ध्वजाका है । सुत यह एक (पु०) नाम राजाका और
 पुत्रका है ॥ ६० ॥ स्थपति यह एक (पु०) नाम शिल्पीका और अपि
 शब्दसे जीवोष्टि यज्ञको करनेवालेका है । भृशद्रुम यह एक (पु०) नाम
 पर्वतका और राजाका है । मूर्धाभिपिक्त यह एक (पु०) नाम राजाका
 और अपिशब्दसे प्रधानका है । ऋतु यह एक (पु०) नाम स्त्रीको पूर
 आनेका और हेमत आदि ऋतुओंका है ॥ ६१ ॥ अग्नि, व्यक्त ये

क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ।

वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः ।

कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ।

इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।

कासू सामर्थ्ययोः शक्तिर्मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥

विस्तारवल्ल्योर्ब्रततिर्वसती रात्रिवेश्मनोः ।

क्षयार्चयोरपचितिः सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

दो (पु०) नाम विष्णुके और महादेवके हैं । सूत यह एक (पु०) नाम खातीका और सारथिका है । व्यक्त यह एक (त्रि०) नाम पांडितका और स्फुटका है । दृष्टांत यह एक (पु०) नाम न्याय आदि शास्त्रका और उदाहरणका है ॥ ६२ ॥ क्षत्त (ऋकारान्त पु०) यह एक नाम सारथी, द्वारपाल और क्षत्रियकी स्त्रीमें शूद्रसे उत्पन्न बालकका है । वृत्तान्त यह एक (पु०) नाम प्रकरण, प्रकार, सकलपना, वार्त्ता इन्हींका है ॥ ६३ ॥ आनर्त यह एक (पु०) नाम युक्त, नाचनेका स्थान, द्वारकापुर इन्हींका है । कृतान्त यह एक (पु०) नाम धर्मराज, सिद्धान्त, प्राक्तन कर्म, पाप इन्हींका है ॥ ६४ ॥ धातु यह एक (पु०) नाम कफ आदि, रस रक्त आदि, पृथ्वी पानी अग्नि वायु आकाश इन्हींके गंध आदि गुण, आंख आदि इन्द्रियां, मनशिल आदि, शब्दयोनि इन्हींका है ॥ ६५ ॥ शुद्धान्त यह एक (पु०) नाम स्थानके भीतरकी कक्षा, राजधानीविशेष, रनवास और आशोचिके अन्तका है । शक्ति यह एक (स्त्री०) नाम बरछीका और सामर्थ्यका है । आगेके वार्त्ताशब्दतक सब शब्द (स्त्री०) हैं । मूर्ति यह एक नाम कठिनपनेका और शरीरका है ॥ ६६ ॥ ब्रतति यह एक (स्त्री०) नाम विस्तारका और वेलका है । वसति यह एक नाम रात्रिका और मकानका है । अपचिति यह एक नाम क्षयका और पूजाका है । साति यह एक नाम दानका और अन्तका है ॥ ६७ ॥

अर्तिः पीडाधनुष्कोट्योर्जाति सामान्यजन्मनो ।
 प्रचारस्यन्दयो रीतिरीतिर्द्विम्बप्रवासयो ॥ ६८ ॥
 उदयेऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ।
 वीणाभेदेऽपि महती भूतिर्भस्मनि सपदि ॥ ६९ ॥
 नदीनगर्योर्नागाना भोगवत्यथ संगरे ।
 सङ्गे सभाया समिति क्षयवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥
 रवेर्गर्चश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।
 जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥
 पक्तिश्छन्दोऽपि दशम स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ।
 पत्तिर्गती च मूले तु पक्षति पक्षमेदयोः ॥ ७२ ॥
 प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कौशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।
 सिकताः स्युर्बालुकापि वेदे श्रवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

अर्ति यह एक नाम पीडाका और धनुषकी कोटिका है । जाति यह एक नाम सामान्यका और जन्मका है । रीति यह एक नाम प्रचारका और क्षिरनेका है । ईति यह एक नाम विप्लव याने अतिवृष्टि आदिका और प्रवासका है ॥ ६८ ॥ प्राप्ति यह एक नाम उदयका और लाभका है । त्रेता यह एक नाम तीनों अग्निका और त्रेतायुगका है । महती यह एक नाम नारदकी वीणा और बड़े गुणसे युक्त स्त्रीका है । भूति यह एक नाम भस्मका और सपत्नका है ॥ ६९ ॥ भोगवती यह एक नाम नदीका और नागोंकी नगरीका है । समिति यह एक नाम युद्ध, संग, सभा इन्हींका है । क्षिति यह एक नाम क्षय, वास, पृथ्वी इन्हींका है ॥ ७० ॥ हेति यह एक नाम सूर्यकी प्रभा, शस्त्र, अग्निकी ज्वाला इन्हींका है । जगती यह एक नाम लोकका, जगतिच्छन्दका और पृथ्वीका है ॥ ७१ ॥ पक्ति यह एक नाम पक्तिच्छन्दका और पक्तिका है । आयति यह एक नाम प्रभावका, उत्तरकालका और लवाईका है । पत्ति यह एक नाम गतिका और वीरभेदका है । पक्षति यह एक नाम पक्षकी आदिकी तिथिका और पिच्छके मूलका है ॥ ७२ ॥ प्रकृति यह एक नाम लिंगका और योनिका है । वृत्ति यह एक नाम दिशामित्रकी बहनकी बनाई कौशिकी नदी और आरभटी और

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।

गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥

बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदो महत्यपि ।

वासिता स्त्रीकारिण्योश्च वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥

वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते ।

कलधौतं रूप्यहेम्नोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥

श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगपर्याप्तयोः कृतम् ।

अत्याहितं महामीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥

युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।

वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥

जीविका आदिका है । सिकता यह एक नाम वालू, वालूकामय प्रदेश, शकर इन्हींका है । श्रुति यह एक नाम वेदका और कानका है ॥ ७३ ॥ वनिता यह एक नाम बहुत प्यारी स्त्रीका है । गुप्ति यह एक नाम पृथ्वीके छिद्रका और रक्षाका है । धृति यह एक नाम धारणका और धैर्यका है ॥ ७४ ॥ बृहती यह एक नाम कटेलीविशेषका, छन्दोभेदका और मोटी वस्तुका है । वासिता यह एक नाम स्त्रीका और हथिनोका है । वार्ता यह एक नाम वृत्तिका और मनुष्योंकी बात सुननेका है । यहाँतक (स्त्री०) हैं ॥ ७५ ॥ वार्तं यह एक नाम असारका वाची (न०) है, रोगरहितका वाची (त्रि०) है । घृत यह एक (न०) नाम घी और जलका है । अमृत यह एक (न०) नाम जल, घी, अमृत और यज्ञशेषका है । कलधौत यह एक (न०) नाम चाँदीका और सोनेका है । निमित्त यह एक (न०) नाम कारणका और चिह्नका है ॥ ७६ ॥ श्रुत यह एक (न०) नाम शास्त्रका और निश्चयका है । कृत यह एक (न०) नाम सत्ययुगका और पूर्णताका है । अत्याहित यह एक (न०) नाम बहुत भयका और साहसकर्मका है ॥ ७७ ॥ भूत यह एक (न०) नाम न्याय्य, पृथ्वी आदि पञ्चमहाभूत, सत्य, प्राणी, अतिक्रान्त और समान इन्हींका है और समान वाचक (त्रि०) है । वृत्त यह एक नाम श्लोक और चरित्रका वाचक (न०) है । अतीतकाल, दृढ और गोलका वाचक (त्रि०) है ॥ ७८ ॥

महद्वाज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु ।
 श्वेतं रूप्येऽपि रजतं द्वेऽपि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥
 त्रिष्वतो जगदिद्वेऽपि रक्तं नील्यादिरागि च ।
 अवदातं सिते पीते शुद्धे वद्वार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥
 युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽय सस्कृतम् ।
 कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्यनन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥
 ख्याते हृष्टे प्रतीतोऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।
 विविक्तौ पृतविजनौ मूर्छितौ मूढसोऽच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥
 द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ शिती धवलमेचकौ ।
 सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥
 पुरस्कृतं पूजितेऽगात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ।
 निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥

महद् यह एक (न०) नाम राज्यका और बडेका है । बडेका वाची (त्रि०) है । अवगीत यह एक नाम जनोंके अपवादका और निदितका (त्रि०) है । श्वेत यह एक (न०) नाम चादीका और सुपेद रंगका है । रजत यह एक (न०) नाम सोना और चादीका है । शुभ्रका वाची (त्रि०) है ॥ ७९ ॥ इससे आगे तकान्त शब्द (त्रि०) है । जगद् यह एक नाम जगमका और लोकका है । रक्त यह एक नाम नीले आदिसे रंगे हुए और लालरंगका है । अवदात यह एक नाम सुपेद, पीरा, शुद्ध इन्हींका है । सित यह एक नाम सुपेद और बद्धका है ॥ ८० ॥ अभिनीत यह एक नाम योग्य, बहुत उत्तम, भूषित किया और क्षमावालेका है । सस्कृत यह एक नाम बनाये हुए घाट आदिका और शास्त्रके लक्षणसे युक्तका है । अनत यह एक नाम मर्यादासे रहितका और शेषनागका है ॥ ८१ ॥ प्रतीत यह एक नाम प्रसिद्धका और आनन्दितका है । अभिजात यह एक नाम कुलीनका और पंडितका है । विविक्त यह एक नाम पवित्रका और एकान्तका है । मूर्छित यह एक नाम मूढका और वृद्धिसे युत हुएका है ॥ ८२ ॥ शुक्त यह एक नाम खट्टेका और कठोरका है । शिती यह एक नाम सुपेदका और कालेका है । सत् (तान्त) यह एक नाम सत्य, साधु, विद्यमान, बहुत उत्तम, योग्य इन्हींका है ॥ ८३ ॥ पुरस्कृत्य यह एक नाम पूजित, शत्रुओंसे पीडित और अगाडी

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छिन्ना उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आदृतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥

इति तान्ताः ।

अर्थोऽभिधेयैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।
निषानागमयोस्तीर्थसृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥
समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संवद्धार्थे हितेऽपि च ।
दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥
आस्थानीयत्रयोरास्था प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ।
“ शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ । ”

इति थान्ताः ।

अभिप्रायवशौ छन्दावन्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥

किये हुएँका है । निवात यह एक नाम आश्रयका और वातसे रहित स्थानका है और जो शस्त्रोंसे नहीं कट सके उस कवचकामी है ॥ ८४ ॥
उच्छिन्नत यह एक नाम उत्पन्न, गर्वित, प्रवृद्ध, इन्होंका है । उत्थित यह एक नाम वृद्धिवाला, अधिक उद्यत हुआ, उत्पन्न इन्होंका है । आदृत यह एक नाम आदरसहितका और सत्कार किये हुएँका है ॥ ८५ ॥ यहाँ तकारान्त और (त्रि०) शब्द समाप्त हुए ॥ अर्थ यह एक (पु०) नाम वाच्य, धन, चीज, प्रयोजन, निवर्तन इन्होंका है । तीर्थ यह एक (न०) नाम कूपके पासका जलाशय, बौद्धशास्त्रसे अन्य शास्त्र और मुनियोंसे सेवित किये जल तथा गुरु इन्होंका है ॥ ८६ ॥ समर्थ यह एक (त्रि०) नाम शक्तिवाला, सर्वधयुक्त अर्थ, हितकारी इन्होंका है । दशमीस्थ यह एक (पु०) नाम क्षीण हुए रसवालेका और अत्यंत बूढेका है । वीथी यह एक (स्त्री०) नाम मार्गका और पंक्तिका है ॥ ८७ ॥ आस्था यह एक (स्त्री०) नाम सभा और यत्नका है । प्रस्थ यह एक (पु० न०) नाम पर्वतकी शिखरका और परिमाणविशेषका है । “ ग्रंथ यह एक (पु०) नाम शास्त्रका और द्रव्यका है । संस्था यह एक (स्त्री०) नाम आधार, स्थिति, मरना इन्होंका है ” ॥ यहाँ तकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥
छन्द यह एक (पु०) नाम अभिप्रायका और आधीनका है ।
अब्द यह एक (पु०) नाम बादलेका और वर्षका है ॥ ८८ ॥

अपवादो तु निन्दाज्ञे दायादौ सुतवान्धवौ ।
 पादा रश्म्यग्निनूर्याशाश्चन्द्राभ्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥
 निर्वादो जनवादेशपि शादो जम्बालशष्पयोः ।
 आरावे रुदिते त्रातर्यार्कन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥
 स्यात्प्रमादोऽनुरागेऽपि सूद स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ।
 गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥
 प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृत्ताङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् ।
 स्त्री मविज्ञानसभापाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥
 धर्म रहस्युपनिषत्प्यादृती वत्सरे शरत् ।
 पद व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माघ्निरस्तु ॥ ९३ ॥
 गोष्पद सेविते माने प्रतिष्ठाकृत्यमास्पदम् ।
 त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू चानीक्षणकोमलौ ॥ ९४ ॥

अपवाद यह एक (पु०) नाम निन्दाका और आज्ञाका है। दायाद यह एक (पु०) नाम पुत्रका और भाईका है। पाद यह एक (पु०) नाम क्रिण, पैर, चौथाई भाग इन्हींका है। तमोनुद यह एक (पु०) नाम चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि इन्हींका है ॥ ८९ ॥ निवाद यह एक (पु०) नाम लोककी निन्दा और सिद्धान्त अर्थात् निर्णय कियेका है। शाद यह एक (पु०) नाम, कीचड़का और बालतृणका है। आरुन्द यह एक (पु०) नाम आर्त शब्द, रुदित, रक्षक, दारुण कर्म, भयानक युद्ध इन्हींका है ॥ ९० ॥ प्रमाद यह एक (पु०) नाम अनुग्रह, प्रसन्नता और काव्यगुण इन्हींका है। सूद यह एक (पु०) नाम व्यञ्जनका और रसोदयका है। गोविन्द यह एक (पु०) नाम गोपाल, वृहस्पति, कृष्ण इन्हींका है। अमोद, मद ये दो (पु०) नाम न्यानन्दके और अत्यन्त निर्हार गंधके हैं ॥ ९१ ॥ ककुद यह एक (पु० न०) नाम प्रधान, राजाचिह्न, बेलका अंग इन्हींका है। सविद (दान्त) यह एक (स्त्री०) नाम ज्ञान, सभापण, कर्मका नियम, युद्ध, सत्ता इन्हींका है ॥ ९२ ॥ उपनिषद् (दान्त स्त्री०) यह एक नाम वेदान, धर्म और एकान्तका है। शरद् यह एक (स्त्री०) नाम ऋतु, सवत्सर इन्हींका है। पद यह एक (न०) नाम व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर, वस्तु इन्हींका है ॥ ९३ ॥ गोष्पद यह एक (न०) नाम गौओंसे सेवित नियो

मृदालपापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युर्द्वौ तु शारदौ ।
प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥

इति दान्ताः ।

व्यामो वटश्च न्यग्रोधानुत्सेधः काय उन्नतिः ।
पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥
परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।
बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥
स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ।
दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥
प्रगल्भान्तराणि त्रिशौ प्रकृतस्यानुवर्त्तने ।
विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे विलेखाधिः ॥ ९९ ॥

देशका और खुरके प्रमाणका है । आस्पद यह एक (न०) नाम स्थानका और कृत्यका है । इससे आगे वर्गकी समाप्तिपर्यंत दकारान्त शब्द (त्रि०) हैं । स्वादु यह एक नाम मनोवांछितका और मधुरका है । मृदु यह एक नाम अतीक्ष्णका और कोमलका है ॥ ९४ ॥ मन्द यह एक नाम मृदु, अल्प, मूर्ख, निर्भाग्य इन्हींका है । शारद यह एक नाम नवीनका और अप्रगल्भका है । विशारद यह एक नाम पण्डितका और प्रगल्भका है ॥ ९५ ॥ यहाँ दकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ न्यग्रोध यह एक (पु०) नाम व्याम अर्थात् पसारी हुई दोनों भुजाओंका और वटवृक्षका है । उत्सेध यह एक (पु०) नाम शरीरका और उन्नतिका है । विवध, वीवध ये दो (पु०) नाम ध्यान आदिके और मार्गके हैं ॥ ९६ ॥ परिधि यह एक (पु०) नाम यज्ञमें वर्त्तनेके यज्ञियशाखाका और उपसूर्यका है । आधि यह एक (पु०) नाम गहने धरी चीज, व्यसन, चित्तकी पीडा, अध्यास इन्हींका है ॥ ९७ ॥ समाधि यह एक (पु०) नाम समर्थन अर्थात् शंकाका परिहार वा समाधान, वचनका प्रभाव, अंगीकार इन्हींका है । अनुबन्ध यह एक (पु०) नाम दोषके उत्पादनका और इत्संज्ञक याने लोप करके अदर्शनशील अक्षरका ॥ ९८ ॥ मुख्य अर्थात् माता पिता और गुरुकी आज्ञा पालन करनेवाला बालक और प्रकृतिके पदकी निवृत्तिका अभाव इन्हींका है । विधु यह एक (पु०) नाम विष्णु और चन्द्रमाका है ।

विधिर्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि स्क्वन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥

देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति त्रियाम् ।

विधा विधौ प्रकारे च साधु रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्तुषा स्त्री च सुधा लेपोऽमृतं स्तुही ।

संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्यय स्पृहा ॥ १०२ ॥

मधु मधे पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं तमस्यापि ।

अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥

ब्रह्मबन्धुराधिक्षेपे निर्देशेऽथावलम्बितः ।

अविदूरोऽप्यवष्टब्धः प्रमिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥

इति धान्ताः ।

अवधि यह एक (पु०) नाम परिच्छेद, बिल और कालका है ॥ ९९ ॥
विधि यह एक (पु०) नाम विधानका और देवका है । प्रणिधि यह एक
(पु०) नाम प्रार्थनाका और चरका है । बुध और वृद्ध ये दो (पु०) नाम
पंडितके हैं और बुध यह नाम ग्रहका नाम और बुद्ध बूढेका नाम ऐसेभी हैं ।
स्क्वन्ध यह एक (पु०) नाम समूहका और राजाका है ॥ १०० ॥ सिंधु यह
एक (पु०) नाम देश, नदविशेष अटक आदि और समुद्रका वाची (पु०)
है और नदीका वाची (स्त्री०) है । विधा यह एक (स्त्री०) नाम विधि
का और प्रकारका है । साधु यह एक (त्रि०) नाम सज्जनका और रम-
णीकका है ॥ १०१ ॥ वधू यह एक (स्त्री०) नाम भार्याका, पुत्रकी
पत्नीका और स्त्रीमात्रका है । सुधा यह एक (स्त्री०) नाम अमृतका और
थोहरके वृक्षका है । संधा यह एक (स्त्री०) नाम प्रतिज्ञा और मर्यादाका
है । श्रद्धा यह एक (स्त्री०) नाम श्रद्धाका और इच्छाका है ॥ १०२ ॥
मधु यह एक (न०) नाम मदिरा, पुष्पोंका रस, शहद इन्होंका है । अध
यह एक (न०) नाम अधरेका और अधे पुस्पका है । इससे परे धका
रान्त वर्गपर्यंत शब्द (त्रि०) है । समुन्नद्ध यह एक नाम आपेकी पंडित
माननेवालेका और गर्ववालेका है ॥ १०३ ॥ ब्रह्मबधु यह एक नाम
निंदाके प्रयोगका और ब्राह्मणोंकी आज्ञाका है । अवष्टब्ध यह एक
नाम आश्रितका और सन्निहितका है । प्रसिद्ध यह एक नाम विख्यातका

सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू गश्मिदिवाकरौ ।
 भूनात्मानो धातुदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥
 ग्रावाणौ शैलपावाणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ ।
 तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वद्विर्वह्निणौ ॥ १०६ ॥
 प्रतिपत्तावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ ।
 द्वौ सागधिद्रयागेहौ वाजिनोऽश्वेषु पक्षिणः ॥ १०७ ॥
 कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः ।
 वर्षाचित्रीहिमेनाथ चन्द्राश्रयर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥
 क्लृशऽपे वृजिनो विश्वकर्माकसुगशिल्पिनोः ।
 आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥
 शक्रो धातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ।
 घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ॥ ११० ॥

और भूपित हुका है ॥ १०४ ॥ यहां धकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ आगे-
 के शब्द राजा शब्दतक (पु०) हैं । चित्रभानु यह एक नाम सूर्यका और
 अग्निका है । भानु यह एक नाम किरणका और सूर्यका है । भूनात्मन्
 (नात्) यह एक नाम ब्रह्माजीका और देहका है । पृथग्जन यह एक
 नाम मूर्खका और नीचका है ॥ १०५ ॥ ग्रावन् (नात्) यह एक नाम
 पर्वत और पत्थरका है । पत्रिन् (इन्नन्त) यह एक नाम शरका और
 पक्षीका है । शिखरिन् (इन्नन्त) यह एक नाम वृक्षका और पर्वतका
 है । शिखिन् यह एक नाम अग्निका और मोरका है ॥ १०६ ॥ प्रतिपत्त
 यह एक नाम इच्छाका और अनुकूलका है । सादिन् (इन्नन्त) यह एक
 नाम सारथिका और घोड़ेके सवारका है । वाजिन् यह एक (इन्नन्त)
 नाम घोड़ेका और पक्षीका है ॥ १०७ ॥ अभिजन यह एक नाम कुलका
 और जन्मभूमिका है । हायन यह एक नाम वर्ष, किरण, व्रीहिभेद
 इन्हींका है । विरोचन यह एक नाम चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य इन्हींका है
 ॥ १०८ ॥ वृजिन यह एक नाम क्लेशका और पापका है । विश्वकर्मान्
 (नात्) यह एक नाम सूर्यका और देवताओंके शिल्पीका है । आत्मन्
 (नात्) यह एक नाम यत्न, धीरजपना, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर
 इन्हींका है ॥ १०९ ॥ घनाघन यह एक नाम इन्द्र, उन्मत्त हुआ खनी

अभिमानाऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ।
 इनः सूर्ये प्रमौ राजा मृगाङ्गे क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥
 वाणिन्यौ नर्तकीदृत्यौ स्रवन्त्यमपि बाहिनी ।
 हादिन्यौ वज्रनाडितौ वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥
 त्वग्देहयोरपि तनुः सुनाऽधोजिह्विकापि च ।
 क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितान त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥
 मन्देऽथ केतन कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।
 वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्र प्रजापति ॥ १४ ॥
 उत्साहने च हिंसाया सूचने चापि गन्धनम् ।
 आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्ययनार्थकम् ॥ ११५ ॥

हाथी, वर्षनेशाला बादल इन्हींका है । घन यह एक नाम मेघ, कठिनपना इन्हींका वाचक (पु०) है । कठिनपना और निरन्तरका वाचक (त्रि०) है ॥ ११० ॥ अभिमान यह एक नाम द्रव्य पशु मूल और गुण आदिसे उपजा गर्व, ज्ञान, नरमाई, हिंसा इन्हींका है । इन यह एक नाम सूर्य और मालिकका है । राजन् (नान्त) यह एक नाम चन्द्रमा, क्षत्रिय, राजा इन्हींका है ॥ १११ ॥ वाणिनी यह एक (स्त्री०) नाम नाचने-वालीनारी और दूतीका है । बाहिनी यह एक (स्त्री०) नाम नदीका और सेनाका है । हादिनी यह एक (स्त्री०) नाम वज्रका और बिजलीका है । कामिनी यह एक (स्त्री०) नाम वशवृक्षका और सुन्दर स्त्रीका है ॥ ११२ ॥ तनु यह एक (स्त्री०) नाम रालका और देहका है । सूना यह एक (स्त्री०) नाम गलघटिकाका और घघस्थानका है । वितान यह एक (पु० न०) नाम यज्ञ और विस्तारका है । तुच्छका और मन्दका वाचक (त्रि०) है ॥ ११३ ॥ केतन यह एक (न०) नाम कृत्य, ध्वजा, निवास, मित्रोंका नौता इन्हींका है । ब्रह्मन् (नान्त न०) यह एक नाम वेद, चैतन्य, तप इन्हींका है । ब्रह्मन् (नान्त पु०) यह एक नाम ब्राह्मण और ब्रह्माका वाचक है ॥ ११४ ॥ गघन यह एक (न०) नाम उत्साह, हिंसा और आशयके प्रकाशका है । आतचन यह एक (न०) नाम दूध आदिमें तक्र आदिका जामन देना, वेग, पुष्टाई इन्हींका

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।

स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।

अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥

उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च ।

व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ।

निर्वर्त्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥

निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।

व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥

पक्ष्माक्षिलोम्नि किञ्चलके तत्त्वाद्यंशेऽप्यणीयांसि ।

तिथिभेदे क्षणे पर्वे वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

है ॥ ११६ ॥ व्यञ्जन यह एक (न०) नाम चिह्न, डाढ़ी, मूँछ, शाक आदि, अंग अवयव इन्हींका है । कौलीन यह एक (पु०) नाम लोकका अपवाद, सर्प पक्षी पशु आदिका युद्ध, कुलीनपना इन्हींका है ॥ ११६ ॥ उद्यान यह एक (न०) नाम ग्रह आदिका निकसन, उपवन और प्रयोजनका है । स्थान यह एक (न०) नाम अवकाशका और स्थितिका है । देवन यह एक (पु० न०) नाम क्रीडाका व्यवहार, जीतनेकी इच्छा इन्हींका है ॥ ११७ ॥ आगेके शब्द वनतक (न०) हैं । उत्थान यह एक नाम पौरुष, तंत्र, बैठे हुएको उठाना और मलरोग इन्हींका है । व्युत्थान यह एक नाम तिरस्कार, विरोधका करना, अपने आधीन कृत्य इन्हींका है ॥ ११८ ॥ साधन यह एक नाम मारण अर्थात् पारेका साधन, मृतसंस्कार, अग्निदाह, गमन, धन, धनका देना, धनका निष्पादन, उपाय, अनुगमन इन्हींका है ॥ ११९ ॥ निर्यातन यह एक नाम वैरकी शुद्धि, त्याग, धरोहरका देना इन्हींका है । व्यसन यह एक नाम विपद, नाश, पतन, कामज दोष, क्रोधज दोष इन्हींका है ॥ १२० ॥ पक्ष्मन् (नांत) यह एक नाम आँखोंके रोग, केसर, बहुत अल्प सूत्र आदिका अंश इन्हींका है । पर्वन् (नान्त) यह एक नाम तिथियोंका भेद अर्थात् अष्टमी, अमावस आदिका और उत्सवका है । वर्त्मन् (नान्त) यह एक नाम ढकनेका

अकार्यगुहो कौपीन मैथुन सगतौ स्ते ।
 प्रधानं परमात्मा धी प्रज्ञान बुद्धिचिद्वयोः ॥ १२२ ॥
 प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधन कुलनाशयो ।
 क्रन्दने रोदनाद्धाने वर्ष्म देहप्रमाणयो ॥ १२३ ॥
 गृहदेहत्विद्प्रभावा धामान्यथ चतुष्पदे ।
 संनिवेशे च संस्थान लक्ष्म चिद्वप्रधानयो ॥ १२४ ॥
 आच्छादने सपिधानमपवाणमित्युमे ।
 आराधन साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥
 अधिष्ठानं चक्रपुरप्रमावाध्यासनेऽपि ।
 रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥
 तलिन विरले स्तोके वाच्यलिङ्ग तथोत्तरे ।
 समानास्सत्समैके स्थु पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

और मार्गका है ॥ १२१ ॥ कौपीन यह एक नाम अकार्यका और गुदा
 लिंगका है । मैथुन यह एक नाम भार्या आदिके सबधका और स्त्रीसगका
 है । प्रधान यह एक नाम परमात्मा और बुद्धिका है । प्रज्ञान यह एक
 नाम बुद्धिका और चिद्वका है ॥ १२२ ॥ प्रसून यह एक नाम फूलका
 और फलका है । निधन यह एक नाम रुलका और नाशका है । क्रन्दन
 यह एक नाम रोनेका और बुलानेका है । वर्ष्म (नान्त) यह एक नाम
 शरीरका और प्रमाणका है ॥ १२३ ॥ धाम (नान्त) यह एक नाम
 शरीर, किरण, प्रभाव इन्हींका है । संस्थान यह एक नाम चौराहेका और
 अवयवके विभागका है । लक्ष्म (नान्त) यह एक नाम चिद्वका
 और प्रधानका है ॥ १२४ ॥ सपिधान, अपवाण ये दो नाम आच्छादन
 के हैं । आराधन यह एक नाम साधन, लाभ, सतोष इन्हींका है ॥ १२५ ॥
 अधिष्ठान यह एक नाम रखका पहिया, नगर, प्रभाव, आक्रमण इन्हींका
 है । रत्न यह एक नाम अपनी जातिमें श्रेष्ठका और मणि आदिका है ।
 वन यह एक नाम जगका और वनका है । यहाँतक (न०) है ॥ १२६ ॥
 आगे नान्तवर्गतक (त्रि०) है । तलिन यह एक नाम विरलका और
 बहुत अल्पका है । तलिनशब्द वाच्यलिङ्गी है । समान यह एक नाम पड़ित,
 समान, एक इन्हींका है । पिशुन यह एक नाम खलका और निन्दकका

तवूनगह्यौ वेगिशूरी तरस्विनौ ।
अभिपन्नौऽपराद्धाभिग्रस्तव्यापद्रतावपि ॥ १२८ ॥

इति नान्ताः ।

कलापो भूषणे बर्हे तूणी रे संहतावपि ।
परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥
गोधुगगोष्ठपती गोपौ हरविष्णू वृषाकपी ।
बाष्पसूष्माश्रु कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥
तल्पं शय्यादृदोषु स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ।
प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥
मेघलिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।
“ कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमेऽशके । ”

इति पान्ताः ।

खर्णं पुंसि रेफः स्यात्कुत्तिसते वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥

इति फान्ताः ।

है ॥ १२७ ॥ हीन, न्यून ये दो नाम अल्पके और निन्दाके योग्यके हैं ।
तरस्विन (इन्नन्त) यह एक नाम वेगवालेका और शूरवीरका है । अभि-
पन्न यह एक नाम अपराधवाला, शत्रुसे आक्रांत हुआ और विपत्तवाला
इन्होंका है ॥ १२८ ॥ यहां नकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ कलाप यह
एक (पु०) नाम गहना, मोरकी पंख, तरकस, समुदाय, आभूषण इन्होंका
है । परीवाप यह एक (पु०) नाम वस्त्रमंडप आदिकी सामग्री, सब
ओरसे वपन, पानीकी स्थिति इन्होंका है ॥ १२९ ॥ गोप यह एक (पु०)
नाम गौको दोहनेवालेका और गोशालाके मालिकका है । वृषाकपि यह
एक (पु०) नाम महादेवका और विष्णुका है । बाष्प यह एक (पु०)
नाम ऊष्माका और आसूका है । कशिपु यह एक (पु० न०) नाम
अन्नका और आच्छादनका है ॥ १३० ॥ तल्प यह एक (पु० न०)
नाम शय्या, अटारी, स्त्री इन्होंका है । विटप यह एक (पु० न०) नाम
तृणोंका गुच्छा, विस्तार, शाखा इन्होंका है । प्राप्तरूप, स्वरूप, अभिरूप
ये तीन नाम पंडितके और मनोहरके हैं । ये सब वाच्यलिङ्गी हैं ॥ १३१ ॥
कच्छपी यह एक नाम कछवीका और वीणाके भेदका है । “ कुतप यह

अन्तरामवसस्त्रेऽश्वे गन्धर्वो द्विव्यगायने ।

कम्बुर्ना वलये शङ्खे द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंवहुत्वेऽपि पूर्वजान् ।

इति वा ता ।

कुम्भौ घटेममूर्धाशीं डिभौ तु शिशुनालिशौ ॥ १३४ ॥

स्वम्भौ स्थूणाजडोभावौ शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।

कुक्षिभ्रूणार्मका गर्मा विस्तम्भ प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

स्याद्वेर्ग्यो दुन्दुभि पमि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ।

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करकं पुमान् ॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना सुगमिर्गवि च स्त्रियाम् ।

समा सप्तदि सभ्ये च त्रिष्यध्यक्षेऽपि बह्वम् ॥ १३७ ॥

इति भान्ता ।

एक नाम मृगके रोमोसे बने वस्त्रका और दिनके आठवे अंशका है । ॥
यहाँ प्रकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ रेफ यह एक नाम खर्वणका वाचक
(पु०) और दुर्गस्तनका वाची (त्रि०) है ॥ १३२ ॥ यहाँ फान्त शब्द
समाप्त हुए ॥ गधर्व यह एक (पु०) नाम मरणजन्मके बीचमें स्थित हुआ
प्राणी, घोड़ा, विश्वात्सु आदि, गायन इन्होंका है । ययु यह एक (पु०)
नाम वट्टणका और शयका है । द्विजिह्व यह एक (पु०) नाम सर्पका
और चुगलखोरका है ॥ १३३ ॥ पूर्व यह एक नाम पूर्व दिशाका वाची
(त्रि०) है और पितामह आदि पूर्व लोगोंका वाची (पु०) और बहु
वचनान्त है ॥ यहाँ भान्त शब्द समाप्त हुए ॥ कुम्भ यह एक (त्रि०)
नाम घट, हस्तीने शिखा भाग इन्होंका है । डिभ यह एक (पु०) नाम
अत्यंत बालका और मूर्खका है ॥ १३४ ॥ स्तम्भ यह एक (पु०) नाम धरने
धमेका और जड़पनेका है । शम्भु यह एक (पु०) नाम नन्दाका और
महादेवका है । गर्भ यह एक (पु०) नाम कुक्षि, गर्भमें स्थित प्राणी,
बालक इन्होंका है । विस्तम्भ यह एक (पु०) नाम गायका और विश्वा
त्सुका है ॥ १३५ ॥ दुन्दुभि यह एक नाम भेगीका वाचक (पु०) और बाल
ककी डफटी आदिका वाचक (स्त्री०) है । कुसुम्भ यह एक नाम कसूमका
वाचक (न०) और कम्बुदण्डका वाचक (पु०) है ॥ १३६ ॥ नाभि यह

६१८

प्रहो रश्मी कपिभेकौ पुवंगमौ ।

ल्लामनोभवौ कामौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ।

उपायपूर्वं आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो नागरो वणिक् ।

नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्तौ च विक्रमः ।

स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥

एक नाम क्षत्रियका वाचक (पु०) और मुख्य, राजा, चक्रका मध्य-
भाग, प्राणीका अंग इन्होंका वाचक (पु० स्त्री०) है । सुरभि यह
एक नाम गौका वाचक (स्त्री०) और वसंत चमेलीके फूल आदिका
वाचक (न०) है । सभा यह एक (स्त्री०) नाम सभाका और सभ्यका
है । वल्लभ यह एक (त्रि०) नाम मालिकका और कुलीन घोडेका है
॥ १३७ ॥ यहां भांत शब्द समाप्त हुए ॥ रश्मि यह एक (पु०) नाम
किरणका और घोडे आदिके बांधनेकी रस्ती अर्थात् लगामका है । पुवंग-
म यह एक (पु०) नाम वानरका और मेंढकका है । काम यह एक
(पु०) नाम इच्छाका और कामदेवका है । पराक्रम यह एक (पु०)
नाम शूरवीरपनेका और उद्योगका है ॥ १३८ ॥ धर्म यह एक (पु०)
नाम पुण्य, धर्मराज, न्याय, स्वभाव, आचार, सोमको पीनेवाला इन्होंका
है । उपक्रम यह एक (पु०) नाम, उपायपूर्वक आरंभ, नौकरका शील
और परीक्षाका उपाय, चिकित्सा इन्होंका है ॥ १३९ ॥ निगम यह एक
(पु०) नाम व्यवहार, नगर, वेद, इन्होंका है । नैगम यह एक (पु०)
नाम नगरमें होनेवालेका और वैश्यका है । राम यह एक नाम बलदेव-
जीका वाचक (पु०) और नील, सुन्दर, सुपेद इन्होंका वाचक (त्रि०)
है और राम यह नाम रामचंद्र परशुरामकाभी है ॥ १४० ॥ ग्राम यह
एक (पु०) नाम गांवका, शब्दादिपूर्वक ग्रामशब्द समूहका और
स्वरविशेषका है । विक्रम यह एक (पु०) नाम क्रांतिका और पराक्रमका
है । स्तोम यह एक (पु०) नाम स्तोत्र, यज्ञ, समूह इन्होंका है ।
जिह्व यह एक (पु०) नाम कुटिलका और आलसका है ॥ १४१ ॥

“ उष्णेऽपि घर्मश्चेग्रलङ्कारे भ्रान्तौ च विभ्रमः । ”

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामि. स्वसृकुलस्त्रियोः ।

क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षम शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छाखा निशा ।

ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषापाधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ।

वामौ बल्लुप्रतीपौ द्वाधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ।

इति मान्ताः ।

तुरङ्गगरुडौ ताक्ष्यौ निलयापचयौ क्षयौ ॥ १४५ ॥

श्वश्रुयौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विपौ ।

पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्यादर्यं स्वामिवैश्ययोः ॥ १४६ ॥

“ घर्म यह एक (पु०) नाम घामका और पसीनेका है । विभ्रम यह एक (पु०) नाम गहनेका और भ्रातिका है । ” गुल्म यह एक (पु०) नाम गु-
ल्मरोग, तिळीरोग, तृणगुच्छा, सेना इन्होंका है । जामि यह एक (स्त्री०)
नाम घहनरा और कुलकी स्त्रीका है । क्षमा यह एक (स्त्री०) नाम
पृथ्वीका और सहनशीलताका है । क्षम यह एक नाम योग्यका वाचक
(न०) है और समर्थका और हितका वाचक (त्रि०) है ॥ १४२ ॥
श्याम यह एक (त्रि०) नाम हरे और काले रंगका है । श्यामा यह एक
(स्त्री०) नाम शतापरीका और रात्रिका है । ललाम यह एक (न०)
नाम पूउ, घोडा आदिकोंके मस्तकका चित्र, घोड़ेका गहना, प्रधानपना,
ध्यजा इन्होंका है ॥ १४३ ॥ सूक्ष्म यह एक (न०) नाम लिंगदेह और
अल्पका है । प्रथम यह एक नाम आदिमें होनेवालेका और प्रधानका है
और इसको लेकर वर्गसमाप्तिपर्यंत सब शब्द (त्रि०) हैं । वाम यह
एक नाम टेढ़का और विपरीतका है । अधम यह एक नाम न्यूनका
और नीचका है ॥ १४४ ॥ यातयाम यह एक नाम पुरानेका और भोजन
करके बचे हुएका है ॥ यहाँ मान्त शब्द समाप्त हुए ॥ ताक्ष्य यह एक
नाम घोड़ेका और गरुडका है । इसको लेकर विषयशब्दतक (पु०) हैं ।
क्षय यह एक नाम घरका और नाशका है ॥ १४५ ॥ श्वश्रुय यह एक

कलियुगे पर्यायोऽवमरे क्रमे ।

आधीनशपथज्ञानविश्वाभहेतुषु ॥ १४७ ॥

शब्देऽथानुशयो दीर्घद्वेषानुनापयोः ।

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

समयाः शपथाचारालभिद्धान्तसंविदः ।

व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि ।

युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ।

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥

विस्मययाच्चाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ।

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

नाम देवका और श्यालेका है । भ्रातृव्य यह एक नाम भाईके पुत्र अर्थात् भतीजेका और शत्रुका है । पर्जन्य यह एक नाम शब्द करते हुए बादलका और इन्द्रका है । अर्य यह एक नाम मालिकका और वंशका है ॥ १४६ ॥ तिष्य यह एक नाम पुण्यनक्षत्रका और कलियुगका है । पर्याय यह एक नाम अवसरका और क्रमका है । प्रत्यय यह एक नाम आधीन, शपथ, ज्ञान, विश्वास, हेतु, छिद्र, शब्द इन्हींका है ॥ १४७ ॥ अनुशय यह एक नाम बहुत दिनसे वैरका और पश्चात्तापका है । स्थूलोच्चय यह एक नाम न्यूनका और हाथियोंकी मध्यम गतिका है ॥ १४८ ॥ समय यह एक नाम शपथ (सौगंध), आचार, काल, सिद्धान्त, श्रेष्ठ भाषा इन्हींका है । अनय यह एक नाम व्यसन, अशुभदैव, विपत्त इन्हींका है ॥ १४९ ॥ अत्यय यह एक नाम अतिक्रम, कष्ट, दोष, दंड इन्हींका है । संपराय यह एक नाम आपत्, युद्ध, उत्तरकाल इन्हींका है । पूज्य यह एक नाम पूजाके योग्यका और समुरेका है ॥ १५० ॥ अवस्थायि यह एक नाम सेनाके पृष्ठभागमें जो सेना स्थित हो उसके पीछे स्थित हुई सेनाका है । समवाय यह एक नाम समूहका और सन्नायका है । संस्त्याय यह एक नाम समूह, स्थान, विस्तार इन्हींका है । प्रणय यह एक नाम विश्वास, याच्चा, प्रेम इन्हींका है ॥ १५१ ॥ समुच्छ्रय यह एक नाम

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री ममाया च प्रतिश्रयः ।

प्रायो भूम्यन्तगमने मन्थुर्देन्ये कतौ कृषि ॥ १५३ ॥

रहस्योपस्थयोगुह्य सत्य शपथतथ्ययो ।

वीर्यं बले प्रभावे च द्रव्यं मव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥

धिष्ण्य स्थाने गृहे भेऽग्नौ माग्यं कर्म शुभाशुभम् ।

कशेरुहेन्द्रोर्गाङ्गेय विशल्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥

वृषाकपायी श्रीगौर्योर्गभिरुया नामशोभयोः ।

आरम्भो निष्कृति शिक्षा पूजनं सम्प्रधारणम् ॥ १५६ ॥

उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रिया ।

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

वैरका और उन्नतिका है । विषय यह एक नाम मच्छ आदि तथा जल आदि जाना हुआ वस्तु और शब्द, रपरी, रूप, रस गन् इन्हींका है ॥ १५२ ॥ कषाय यह एक (पु० न०) नाम कायके रसका और विलेपन आदिका है । प्रतिश्रय यह एक (पु०) नाम सभाका और समीप गमनका है । प्राय यह एक (पु०) नाम बहुतका और अन्रत्यागका है और बहुवचनान्त है । मन्थु यह एक (पु०) नाम दीनपना, यज्ञ, क्रोध इन्हींका है ॥ १५३ ॥ गुह्य यह एक (न०) नाम गुप्तका और गुदा लिंगका है । सत्य यह एक (न०) नाम सौगन्धका और सचका है । वीर्य यह एक (न०) नाम बलका और प्रभावका है । द्रव्य यह एक (न०) नाम सत्वका और गुणोंके आश्रयका है ॥ १५४ ॥ धिष्ण्य यह एक (न०) नाम स्थान, स्त्री, नक्षत्र, अग्नि इन्हींका है । माग्य यह एक (न०) नाम शुभ अशुभ कर्मका और ऐश्वर्यका है । गांगेय यह एक (न०) नाम कशेरुका और जमालगोटेकी जडका है । विशल्या यह एक (स्त्री०) नाम जमालगोटेकी जडका और गिलोयका है ॥ १५५ ॥ वृषाकपायी यह एक (स्त्री०) नाम रक्ष्मीका और गौरीका है । अभिन्या यह एक (स्त्री०) नाम नामका और शोभाका है । क्रिया यह एक (स्त्री०) नाम आरम्भ, निष्कृति, शिक्षा, पूजन, सम्प्रधारण ॥ १५६ ॥ उपाय, कर्म, चेष्टा, चिकित्सा ये नव प्रकारकी क्रियाका है । छाया यह एक (स्त्री०) नाम सूर्यप्रिया, कान्ति, प्रतिबिम्ब, अनातप इन चारो अर्थोंका

कक्ष्या प्रकोष्ठ हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभवन्धने ।

कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ॥ १५८ ॥

जन्यं स्याज्जनवादेऽपि जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ।

गर्ह्याहीनौ च वक्तव्यौ कल्यौ सज्जनिरामयौ ॥ १५९ ॥

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यो पुण्यं तु चार्वापि ।

रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि वदान्यो बलगुवागपि ॥ १६० ॥

न्याय्येऽपि मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ।

इति यान्ताः ।

निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ॥ १६१ ॥

गुरु गीष्पतिपित्राद्यौ द्वापरो युगसंशयौ ।

प्रकारौ भेदसादृश्ये आकाराविद्धिनाकृती ॥ १६२ ॥

वाची है ॥ १५७ ॥ कक्ष्या यह एक (स्त्री०) नाम हवेली आदिके भीतरका मकान, तागडी, हस्तिबंधनका मध्यभाग इन्हींका है । कृत्या यह एक (स्त्री०) नाम क्रिया, देवता इन्हींका वाचक (त्रि०) है और धन, स्त्री, पृथ्वी आदिसे भेदन करनेके योग्य जो परदेशगत पुरुष आदि उसका वाचक वाच्यलिङ्गी है । आगेके शब्द वर्गान्ततक (त्रि०) हैं ॥ १५८ ॥ जन्य यह एक नाम निन्दित वादका और युद्ध आदिका है । जघन्य यह एक नाम चंडाल आदि और नीचका है । वक्तव्य यह एक नाम निन्दाके योग्यका और आधीनका है । कल्य यह एक नाम सामग्रीसहितका और आरोग्यका है ॥ १५९ ॥ अर्थ्य यह एक नाम बुद्धिमानका और प्रयोजनसे युक्त पुरुषका है । पुण्य यह एक नाम सुन्दरका और सुकृतधर्मका है । रूप्य यह एक नाम सुन्दर रूपका और रुपैया तथा अशरफी आदिका है । वदान्य यह एक नाम टेढा बोलनेवालेका और दाताका है ॥ १६० ॥ न्याय्य यह एक नाम उचितका और अवलग्नका है । सौम्य यह एक नाम सुन्दर, मृगशिर, नक्षत्र, बुध इन्हींका है । यहाँ यान्त शब्द समाप्त हुए ॥ आगे वारसे दुरोदरशब्दतक (पु०) हैं । जहाँ भेद है दिखावेंगे । वार यह एक नाम समूहका और अवसरका है । संस्तर यह एक नाम डाभकी शय्या और यज्ञका है ॥ १६१ ॥ गुरु यह एक नाम बृहस्पतिका और पिता आदिका है । द्वापर यह एक नाम युगका और संशयका है । प्रकार यह

किंशारु सस्यशूकेषु मरु धन्वधराधरौ ।
 अद्रयो हुमशैलार्का* स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥
 ध्वान्तारिदानवा वृत्रा बलिहस्ताशवः कराः ।
 प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणा अस्ता* कचा अपि ॥ १६४ ॥
 अजातशत्रो गौ* कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूधरौ ।
 स्वर्णेऽपि राः परिकर* पर्यङ्कपरिवारयो* ॥ १६५ ॥
 मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु ।
 कर्बुरेऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु सगरः ॥ १६६ ॥
 वेदमेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो खावपि ।
 मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्कर* ॥ १६७ ॥

एक नाम भेदका और सदृशनेका है। आकार यह एक नाम चेष्टाका और आकृतिका है ॥ १६० ॥ किंशारु यह एक नाम खेतीके तुषाविशेषका, बाणका और क्वक्पक्षीका है। मरु यह एक नाम बागडदेशका और पर्वतका है। अद्रि यह एक नाम वृक्ष, पर्वत, सूर्य इन्हींका है। पयोधर यह एक नाम स्त्रियोंकी छूचियोंका और बादलका है ॥ १६३ ॥ वृत्र यह एक नाम अधेरा, शत्रु, दानव इन्हींका है। कर यह एक नाम बलि, हाथ, किरण इन्हींका है। प्रदर यह एक नाम भग, स्त्रीका प्रदररोग, बाण इन्हींका है। अस्ता यह एक नाम बालोंका और कोणका है ॥ १६४ ॥ तूधर यह एक नाम समयमें नहीं उपजे सींगोंवाले बैलका और समयमें नहीं उपजी मूछ दाढ़ीवाले पुरुषका है। रे यह एक नाम धनका और सोनेका है। परिकर यह एक नाम पलगका और कुट्टबका है ॥ १६५ ॥ तार यह एक नाम मोतियोंकी शुद्धिका, तिरना, ऊँचा शब्द और चाँदीका है। शार यह एक नाम वायुका वाचक (पु०) और कर्बुरखण्डका वाचक वाच्यलिंगी है। सगर यह एक नाम प्रतिज्ञा, युद्ध, क्रियाका करना, हु रा इन्हींका है ॥ १६६ ॥ मन्त्र यह एक नाम वनविशेषका, गुप्तचात और देव आदिको साधने और वेदभेदका है। मित्र यह एक नाम सूर्यका वाचक (पु०) है और प्रियका वाचक (न०) है। स्वरु यह एक नाम यज्ञके धमके खंडका और वज्रका है। अवस्कर यह एक नाम गुप्तका और मलका

न्याजटांशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ।

मुखाग्रे क्रोडहृत्तयोः पोत्रं गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८० ॥

सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ।

अजिरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि ॥ १८१ ॥

चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीरमप्सु च ।

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥

गुहादुम्भौ गह्वरे द्वे रहोऽन्तिकमुपह्वरे ।

पुगेऽधिकमुपर्यग्राण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥

मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ।

दोऽस्त्रियां भये श्वश्रे वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥ १८४ ॥

हे । शास्त्र यह एक नाम आज्ञाका और शास्त्र अर्थात् व्याकरण आदि-
शास्त्रका है । शस्त्र यह एक नाम हथियारका और लोहेका है ॥ १७९ ॥
नेत्र यह एक नाम वृक्षकी जड़का और वस्त्रके भेद तथा आँखका है ।
क्षेत्र यह एक नाम भार्याका और शरीरका है । पोत्र यह एक नाम शूकर
और हलके अग्रभागका है । गोत्र यह एक नाम कुलका और नामका है
॥ १८० ॥ सत्र यह एक नाम आच्छादन, यज्ञ, सदावर्त्त, वन इन्हींका है ।
अजिर यह एक नाम विषय, शरीर, चौराहा इन्हींका है । अंबर यह एक
नाम आकाशका और वस्त्रका है ॥ १८१ ॥ चक्र यह एक नाम देशका और
रथके पहियेका है । अक्षर यह एक नाम मोक्षका और परब्रह्मका है ।
क्षीर यह एक नाम पानीका और दूधका है । भूरि, चन्द्र ये दो (पु०)
नाम सोनेके और अपिशब्दसे भूरि यह नाम बहुतका और चन्द्र यह नाम
कपूर आदिका है । गोपुर यह एक (न०) नाम द्वारमात्रका और मो-
थेका है ॥ १८२ ॥ गह्वर यह एक (न०) नाम गुफाका और पाखंडका
है । उपह्वर यह एक (न०) नाम एकांतका और समीपका है । अग्र
यह एक (न०) नाम अगाड़ी, अधिक, ऊपर इन्हींका है । पुर यह एक
(न०) नाम नगरका और मन्दिरका है ॥ १८३ ॥ राष्ट्र यह एक (पु०
न०) नाम देशका और उपद्रवका है । दर यह एक (पु० न०) नाम
भयका और छिद्रका है । वज्र यह एक (पु० न०) नाम हीरेका और

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ।
 औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीर शयनामने ॥ १८५ ॥
 पुष्करं करिहस्ताग्र वाद्यमाण्डमुखे जले ।
 व्योम्नि सङ्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयो ॥ १८६ ॥
 अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्यं ।
 छिद्रात्मीयविनावाहिरवसरमध्येऽन्तरात्मानि च ॥ १८७ ॥
 मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् ।
 शार्वरं त्वन्यतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् ॥ १८८ ॥
 गीरोऽरुणे सिते पीते व्रणकार्येऽप्यरुष्करं ।
 जठरं कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चाधरः ॥ १८९ ॥
 अनाकुलेऽपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले ।
 उपर्युदीच्य श्रेष्ठेऽप्युत्तरं स्यादनुत्तरः ॥ १९० ॥

इन्द्रके वत्रका हे ॥ १८४ ॥ तत्र यह एक (न०) नाम प्रधान, सिद्धान्त, सूत्रको बुननेका अंजार, परिच्छद इन्होंका है। औशीर यह एक नाम चमरका और दण्डका वाचा (पु०) और शय्याका, आसनका वाची (न०) है ॥ १८५ ॥ पुष्कर यह एक (न०) नाम हाथीकी सूडके अग्रभाग, बाजा, वर्तनका मुख, पानी, आकाश, तलवारका मध्यभाग, कमल, तीर्थ, औषधिविशेष इन्होंका है ॥ १८६ ॥ अतर यह एक (न०) नाम अवकाश, अवधि, परिधान, अन्तर्धि, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, आत्मीय, विना, बाहिर, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा इन्होंका है ॥ १८७ ॥ पिठर यह एक (न०) नाम नागरमायेका और दधि मथनेकी खाईका है। नागर यह एक (न०) नाम राजकशेरुका और सोंठका है। शार्वर यह एक नाम गाढे अंगरेजा और मारनेवालेका है और वाच्यलिङ्गी है। आगेके वगान्तरु तब शब्द (त्रि०) है ॥ १८८ ॥ गार यह एक नाम अरुण, सुपेद, पीला इन्होंका है। अरुष्कर यह एक नाम घाव करनेवालेका और भिलवेका है। जठर यह एक नाम कठिनका और पेटका है। अधर यह एक नाम नीचेका और होठका है ॥ १८९ ॥ एकाग्र यह एक नाम स्वस्थका और एकताका है। व्यग्र यह एक नाम बिगड़े हुए चित्तवालेका और आकुलका है। उत्तर यह एक नाम ऊपर, उदीच्य, श्रेष्ठ इन्होंका है। अनुत्तर यह एक नाम ऊपर आदि उन तीनोंसे विपरीतपनेका

प्रकाशः ।

दूरानात्मोत्तमाः पराः ।

मधुरी क्रूरी कठिननिर्दयो ॥ १९१ ॥

महतोरितरस्त्वन्यनीचयोः ।

सुन्दयोः स्वैरः शुभ्रमुदीप्तशुक्लयोः ॥ १९२ ॥

इति रान्ताः ।

किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ।

दुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः क्षालथतुर्येऽपि युगे कलिः ।

स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ।

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।

भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

और श्रेष्ठका है ॥ १९० ॥ पर यह एक नाम दूर, दूसरा, उत्तम इन्होंका है । मधुर यह एक नाम स्वादुका और प्रियका है । क्रूर यह एक नाम कठोरका और निर्दयका है ॥ १९१ ॥ उदार यह एक नाम दाताका और बडेका है । इतर यह एक नाम अन्यका और नीचका है । स्वैर यह एक नाम मन्दका और स्वाधीनका है । शुभ्र यह एक नाम प्रकाशितका और सुषेदका है ॥ १९२ ॥ यहां रान्त शब्द समाप्त हुए ॥ मौलि यह एक (त्रि०) नाम चौटी, मुकुट, बंधे हुए बाल इन्होंका है । पीलु यह एक (पु०) नाम वृक्षविशेष, हस्ती, बाण, पुष्प इन्होंका है ॥ १९३ ॥ काल यह एक (पु०) नाम धर्मराजका और समयका है । कलि यह एक (पु०) नाम कलियुगका और कलहका है । कमल यह एक (पु० न०) नाम मृगविशेष, जलकर्मल इन्होंका है । कम्बल यह एक (पु०) नाम कम्बल नाम ऊनके कपडेका और नागराजका है ॥ १-४ ॥ बलि यह एक नाम बलिदैत्यका, करका और भेडका वाची (पु०) है आर त्वचाके संकोचका वाची (स्त्री०) है । बल यह एक नाम स्थूलपना, सामर्थ्य, सेना इन्होंका वाची (न०) है और काकका और हलका वाची (पु०) है ॥ १९५ ॥ वातूल यह एक नाम वातके समूहका वाची (पु०) और

मलोऽघ्नी पापविद्विष्टान्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ।

शङ्खावपि द्वयोः कीलं पालं रुग्णश्वद्विपत्तिषु ॥ १९७ ॥

कला शिल्पे कालमदेऽप्याली सख्यावली अपि ।

अवध्यम्बुविकृता वला कालमर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥

बहुला कृत्तिका गावो बहुलोऽग्रा शिर्ता त्रिषु ।

लीला विनामक्रियोरुपला शर्करापि च ॥ १९९ ॥

शोणितेऽम्भासि कीलालं मूलमाद्ये शिफामयोः ।

जाल समूह आनायगवाक्षक्षारकेश्वपि ॥ २०० ॥

शील स्वभावे सदृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम् ।

छदिर्नेत्ररुजोः क्लीव समूहे पटल न ना ॥ २०१ ॥

घातके विकारको नहीं सहनेवाले प्राणीका वाची (त्रि०) है । व्याल यह एक नाम शठका वाची वाच्यालगी और सिंह, भेटिया आदिका और सर्पका वाची (पु०) है ॥ १९६ ॥ मल यह एक (पु० न०) नाम पाप, मिष्टा, पसीना आदि इन्हींका है । शूल यह एक (पु० न०) नाम रोग, हथियार इन्हींका है । कील यह एक (पु० स्त्री०) नाम शरुका और अग्निके तेनका है । पाल यह एक (स्त्री०) नाम कानकी लत्ता, पत्ति, चिह्न इन्हींका है ॥ १९७ ॥ कला यह एक (स्त्री०) नाम शिल्पका और कालके भेदका है । आली यह एक (स्त्री०) नाम सखीका और पत्तिका है । वला यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमाके उदय आदिसे समुद्रके पानीकी शुद्धि और अशुद्धि अर्थात् ज्वारभाटा, कालमर्यादा इन्हींका है ॥ १९८ ॥ बहुला यह एक (स्त्री०) नाम कृत्तिकाओंका और गोओंका है । बहुल यह एक नाम अग्निका वाची (पु०) और कृष्णवर्णका वाची (त्रि०) है । लीला यह एक (स्त्री०) नाम भोगका और प्रियाका है । उपरा यह एक (स्त्री०) नाम राउंडका और पत्यरका है ॥ १९९ ॥ कीलाल यह एक (पु० न०) नाम रक्तका और पानीका है । आगेके नाम कुशलशब्दतर (न०) है । मूल यह एक नाम पहला, जड़, मूलनक्षत्र इन्हींका है । जाल यह एक नाम समूह, सन, सूतका बना रज्जुबन्ध, झगेला, बिना गिरी कर्षिता इन्हींका है ॥ २०० ॥ शाल यह एक नाम स्वभाष, सस्त इन्हींका है । पट यह एक नाम रत्न आदिके

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं स्याच्चाभिपे पलम् ।

और्वानलेऽपि पानालं चैलं वस्त्रधमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

कुक्कूलं शंकुभिः कीर्णं श्वश्रे ना तु तुपानले ।

निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृतस्त्रयोः ॥ २०३ ॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे चागौ दसे च पेशलः ।

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्याल्लोलश्चलसतृष्णयोः ॥ २०५ ॥

इति लान्ताः ।

द्वदावौ वनारण्यवह्नी जन्महरौ भवौ ।

मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशाखिनरा धवाः ॥ २०६ ॥

फलका और कार्यके फलका और त्रिफल आदिका है । पटल यह एक नाम घरका छादन, नेत्रकी पीडा इन्हींका वाचक (न०) है और समूहका वाची पटलशब्द (पु०) नहीं है ॥ २०१ ॥ तल यह एक (पु० न०) नाम नीचेका और स्वरूपका है । पल यह एक नाम पलभरका और मां सका है । पाताल यह एक नाम बडवाग्निका और पानालका है । चैल यह एक (न०) नाम वस्त्रका और नीचका है और नीचका वाची (त्रि०) है ॥ २०२ ॥ कुक्कूल यह एक नाम कीलोंसे आच्छादित छिद्रका और तुपकी अग्निका है । केवल यह एक नाम निश्चितका वाची (न०) और एकका और संपूर्णका वाची (त्रि०) है ॥ २०३ ॥ कुशल यह एक नाम सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य इन्हींका वाची (न०) और शिक्षाका वाची (त्रि०) है । प्रवाल यह एक (पु० न०) नाम अंकुरका और मूगेका है । स्थूल यह एक (त्रि०) नाम जडका और मोटेका है ॥ २०४ ॥ कराल यह एक (त्रि०) नाम उंचे दातोंवालेका और ऊंचेका है । पेशल यह एक (त्रि०) नाम शत्रुका और चतुरका है । बाल यह एक (त्रि०) नाम मूर्खका और बालकका है । लोल यह एक (त्रि०) नाम चञ्चलका और तृष्णावालेका है ॥ २०५ ॥ यहाँ लांत शब्द समाप्त हुए ॥ द्व, दाव ये दो (पु०) नाम वनके और वनकी अग्निके हैं । भव यह एक (पु०) नाम जन्मका और महादेवका है । सचिव यह एक (पु०) नाम मंत्रीका,

अवय' शैलमेषार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ।
 भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥ १५ ॥
 स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ।
 अविश्वासेऽपह्नेऽपि निकृताशपि निह्व' ॥ २०८ ॥
 उत्तेकामर्षयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सव' ।
 अनुभाव' प्रभावे च सता च मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥
 स्याज्जन्महेतु' प्रभवः स्थान चाद्योपलब्धये ।
 शूद्राया विप्रतनये शस्त्रे पारशवी मत' ॥ २१० ॥
 ध्रुवो भमेदे स्त्रीच तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।
 स्वो ज्ञातागत्मनि स्व त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रिया धने ॥ २११ ॥
 स्त्रीकटीवस्त्रवन्वेऽपि नीवी परिपणोऽपि च ।
 शिवा गौरीफेरवयोर्द्वेन्द्र कलहयुग्मयोः ॥ २१२ ॥

और सहायता है । धव यह एक (पु०) नाम पति, धववृक्ष, मनुष्य
 इन्होंका है ॥ २०६ ॥ अवि यह एक (पु०) नाम पर्वत, मैदा, सूर्य
 इन्होंका है । हव यह एक (पु०) नाम आज्ञा, आह्वान, यज्ञ इन्होंका
 है । भाव यह एक (पु०) नाम सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा,
 जन्म इन्होंका है ॥ २०७ ॥ प्रभव यह एक (पु०) नाम उत्पत्ति, फल,
 पुष्प, गर्भमोचन इन्होंका है । निह्व यह एक (पु०) नाम अविश्वास,
 अपलाप (वज्रवाद), शठपना इन्होंका है ॥ २०८ ॥ उत्सव यह एक
 (पु०) नाम उत्पत्ति (ऊपरको उठाना), कोप, इच्छाका वेग, आन
 न्दका अवसर इन्होंका है । अनुभव यह एक (पु०) नाम प्रभाव, सत्पु
 र्षोंकी बुद्धिका निश्चय इन्होंका है ॥ २०९ ॥ प्रभव यह एक (पु०)
 नाम जन्मका हेतु और प्रथम ज्ञानका स्थान इन्होंका है । पारशव यह एक
 (पु०) नाम शूद्रकी स्त्रीमे ब्राह्मणसे उपजे पुत्रका और शस्त्रका है ॥ २१० ॥
 ध्रुव यह एक नाम ध्रुव तारेका वाची (पु०) है, निश्चयका वाची (न०)
 है और निश्चयका वाची (त्रि०) है । स्व यह एक नाम सगोत्रीका और
 आत्माका वाची (पु०) है । अपने सबधजालेका वाची (त्रि०) है
 और धनका वाची (पु० १०) है ॥ २११ ॥ नीवी यह एक (स्त्री०)
 नाम स्त्रीकी कटोरे वस्त्रबधनका और मूलद्रव्यका है । शिवा यह एक

द्रव्यामुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।
 स्त्रीवं नपुंसकं पण्डे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः ।

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ।
 द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥ २१४ ॥
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशौ भृतिभोगयोः ।
 कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥
 पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुशमप्सु च ।
 दशाऽवस्थानेकविधाप्याशा तृष्णापि चायता ॥ २१६ ॥
 वशा स्त्री करिणी च स्याद् दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ।
 स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१७ ॥

(स्त्री०) नाम पार्वतीका और गोदडीका है । द्वन्द्व यह एक- (न०) नाम कलहका और जोडेका है ॥ २१२ ॥ सत्त्व यह एक नाम वस्तु, प्राण, वीर्यकी अधिकता इन्होंका वाची (न०) और प्राणीका वाची (पु० न०) है । स्त्रीव यह एक नाम हीजडेका वाची (न०) और अलसका वाची वाच्यलिङ्गी है ॥ २१३ ॥ यहां वान्त शब्द समाप्त हुए ॥ विंश (शान्त) यह एक (पु०) नाम वैश्यक और मनुष्यका है । स्पश यह एक (पु०) नाम गूढ पुरुषका और युद्धका है । राशि यह एक (पु०) नाम समूहका और मेष आदि राशिका है । वंश यह एक (पु०) नाम कुलका और वांसका है ॥ २१४ ॥ वीकाश यह एक (पु०) नाम एकान्त और प्रकाशका है । निर्वेश यह एक (पु०) नाम तनखाका और भोगका है । कीनाश यह एक नाम यमका वाची (पु०) है । क्षुद्र रोगका और किसानका वाची (त्रि०) है ॥ २१५ ॥ अपदेश यह एक (पु०) नाम पद, लक्ष्य, निमित्त इन्होंका है । कुश यह एक (पु० न०) नाम लाभका और रामचन्द्रके पुत्रका है । दशा यह एक (स्त्री०) नाम अनेक प्रकारकी बाल्य आदि अवस्थाका और बध्नके अतका है । आशा यह एक नाम (स्त्री०) नाम बडी तृष्णाका और दिशाका है ॥ २१६ ॥ वशा यह एक (स्त्री०) नाम स्त्रीका और हथिनीका है । दृश् (शान्त) यह एक नाम ज्ञानका और ज्ञाताका वाची (त्रि०) है, दृष्टिका वाची

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि शिशावज्ञे च बालिशः । २१९ ॥
कोशोऽस्त्री कुङ्कुमले खड्गपिधानेऽर्धोघादिष्वयोः ॥ २१८ ॥
इति शान्ताः ।

सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१९ ॥
काकमत्स्यात्खगौ ध्वाक्षौ कक्षौ तु तृणवीरुधौ ।
अमीषुः प्रगहे रश्मौ प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २२० ॥
पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ।
शुक्रले मृषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषमे वृषः ॥ २२१ ॥
द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽप्याक्षमिन्द्रिये ।
ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥ २२२ ॥
कर्षूर्वात्ता करीषामिः कर्षूः कुल्याभिधायिनी ।
दुभावे तत्क्रियाया च पौरुष विषमस्तु च ॥ २२३ ॥

(स्त्री०) है । कर्कश यह एक (त्रि०) नाम विषेकरहित, कठोर, दुष्ट
स्पर्शवाला इन्होंका है ॥ २१७ ॥ प्रकाश यह एक (त्रि०) नाम अत्यंत
प्रसिद्धता और घामका है । बालिश यह एक (त्रि०) नाम बालकका
और मूर्खका है । कोश यह एक (पु० न०) नाम फूलकी कली, तल-
वारका घर, घनसमूह, शयनभेद इन्होंका है ॥ २१८ ॥ यहाँ शान्त शब्द
समाप्त हुए ॥ अनिमिष यह एक (पु०) नाम देवताका और मच्छका
है । पुष्प यह एक (पु०) नाम आत्माका और मनुष्यका है ॥ २१९ ॥
ध्वाक्ष यह एक (पु०) नाम काकका और बगला आदिका है । कक्ष
यह एक (पु०) नाम तृणका और वेलका है । अमीषु यह एक (पु०)
नाम घोड़े आदिकी रस्सीका और किरणका है । प्रैष यह एक (पु०)
नाम प्रेषणका और मर्दनका है ॥ २२० ॥ पक्ष यह एक (पु०) नाम
सहायका और पन्द्रह दिनोंका है । उष्णीष यह एक (पु० न०) नाम
शिरका पगडा आदिका और मुकुटका है । वृष यह एक (पु०) नाम
वीर्यवाला, मृषा, श्रेष्ठ, सुकृत, बल इन्होंका है ॥ २२१ ॥ आकर्ष यह
एक (पु०) नाम जूता, पाशा, जूताकी पीठिका इन्होंका है । अक्ष यह
एक नाम इन्द्रियका बाची (न०) है और जूवाका अंग, कर्ष (तोल),
चक्र, व्यवहार, बहेडा इन्होंका बाची (पु०) है ॥ २२२ ॥ कर्षू यह

उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि किल्विषम् ।

स्याद्दृष्टौ लोकधातवंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ॥ २२४ ॥

प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना भूतिः ।

त्विद् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्न्यनिकृष्टयोः ॥ २२५ ॥

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो रूक्षस्त्वप्रेम्यचिक्वणे ॥ २२६ ॥

इति पान्ताः ।

रविश्वेतच्छदौ हंसौ सूर्यवह्नी विभावसू ।

वत्सौ तर्पणवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥ २२७ ॥

शृंगारादौ विषे दीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।

पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ॥ २२८ ॥

एक नाम बात और अरनेकी अग्निका धाची (पु०) और कर्षू नदीका वाची (स्त्री०) है । पौरुष यह एक (न०) नाम पुरुषपनेका और पुरुषके कर्मका है । विष यह एक (न०) नाम पानीका और जहरका है ॥ २२३ ॥ आमिष यह एक (पु० न०) नाम उपादानका और उत्कोच (रिश्वत) का है । किल्विष यह एक (न०) नाम अपराधका और रोगका है । वर्ष यह एक (पु० न०) नाम वर्षा, जम्बूद्वीपका अंश भरतखंड-आदि, संवत्सर इन्हींका है ॥ २२४ ॥ प्रेक्षा यह एक (स्त्री०) नाम नाच देखनेका और बुद्धिका है । भिक्षा यह एक (स्त्री०) नाम सेवा, मांगना, तनखा इन्हींका है । त्विप् (पान्त) यह एक (स्त्री०) नाम शोभाका और कांतिका है । वक्ष्यमाण तीन शब्द वाच्यलिगी हैं । न्यक्ष यह एक नाम संपूर्णपनेका और नीचेका है ॥ २२५ ॥ अध्यक्ष यह एक नाम प्रत्यक्ष और अधिकृतका है । रूक्ष यह एक नाम प्रेमरहितका और रूखेका है ॥ २२६ ॥ यहां पान्त शब्द समाप्त हुए ॥ हंस यह एक (पु०) नाम सूर्यका और हसविशेषका है । विभावसु यह एक (पु०) नाम सूर्यका और अग्निका है । वत्स यह एक (पु०) नाम गौके बच्चेका और वर्षका है । दिवौकस यह एक (पु०) नाम पपैयका और देवताओंका है ॥ २२७ ॥ रस यह एक (पु०) नाम जृगार आदि, विष, वीर्य, गुण, प्रीति, द्रव इन्हींका है । उत्तस, अवतंस ये दो (पु०) नाम कानके गहनेके और शिरके गहनेके हैं ॥ २२८ ॥

देवमेदेऽनले रश्मौ वसू गन्धे धने वसु ।

विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाशीर्हिंसाशंसाहिंस्रयोः ॥ २२९ ॥

लालसे प्रार्थनीत्सुक्ये हिंसा चौर्यादिकर्म च ।

प्रसूश्वापि श्रूयात्री रोदस्यौ रोदसा च ते ॥ २३० ॥

ज्वालाभासी न पुस्यर्चिज्योतिर्भवातदृष्टिषु ।

पापापराधयोरागः खगवाल्यादिनोर्वयः ॥ २३१ ॥

तेजःपुरीषयोर्वर्षो महस्सूतसवतेजसोः ।

रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे राहौ ध्वान्ते गुणे तमः ॥ २३२ ॥

छन्दः पद्येऽभिलाषे च तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।

सहो बलं सह मार्गो नमः खं श्रावणो नमः ॥ २३३ ॥

वसु यह एक नाम देवता (वसुदेवता), आग्नि, किरण इन्होंका वाची (पु०) है । रत्नका और धनका वाची (न०) है । वेधस् (सान्त) यह एक (पु०) नाम विष्णुका और ब्रह्माका है । आशिस् यह एक (स्त्री०) नाम हितकी चाहनाका और सर्पकी डाढ़का है ॥ २२९ ॥ लालसा यह एक (स्त्री०) नाम प्रार्थनाका और आनन्दका है । हिंसा यह एक (स्त्री०) नाम चोरी और मारना आदि कर्मका है । प्रसू यह एक (स्त्री०) नाम माताका और घोड़ीका है । रोदस् (सान्त न०), रोदसा (स्त्री०) ये दो नाम पृथ्वी आकाशके हैं ॥ २३० ॥ आँचस् यह एक नाम ज्वालाका और प्रकाशका है और (पु०) नहीं है । ज्योतिस् यह एक (न०) नाम नक्षत्र, प्रकाश, दृष्टि इन्होंका है । आगस् यह एक (न०) नाम पापका और अपराधका है । वयस् यह एक (न०) नाम पक्षीका और वारय यौवन अवस्था आदिका है ॥ २३१ ॥ वर्षस् यह एक (न०) नाम तेजका और विष्ठाका है । महस् यह एक (न०) नाम उत्सवका और तेजका है । रजस् यह एक (न०) नाम रजोगुणका और स्त्रीके फूलका है । तमस् यह एक (न०) नाम राहु, अंधेरा, तमोगुण इन्होंका है ॥ २३२ ॥ छन्दस् यह एक (न०) नाम गायत्री आदि छन्दका और इच्छाका है । तपस् यह एक (न०) नाम सातपन और चान्द्रायण आदि व्रतका है । सहस् यह एक नाम बलका वाची (न०) है और मार्गका वाची (पु०) है । नमस् यह एक नाम स्वाकाशका वाची (न०)

ओकः सद्वाश्रयश्चायम् । पयः क्षीं पयांस्तु च ।

ओजो दीप्तौ बले स्रोतः इन्द्रिये निम्नगारये ॥ २३४ ॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुभेऽप्यतस्त्रिषु ।

विद्वान्विदंश्च बीभत्समां हिंस्रेऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३५ ॥

वृद्धप्रगस्थयोऽर्ग्यायान्कनीयांस्तु युवालपयोः ।

वरीयांस्तुलवरयोः सार्धायान्साधुबाढयाः ॥ २३६ ॥

इति सान्ताः ।

दलेऽपि वर्धं निर्वन्धो गगर्वादयो ग्रहाः ।

द्वार्यापीडे क्वाथामे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥ २३७ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिर्हमौ प्रग्रहः प्रग्रोऽपि च ।

पत्नीपरिजनाशनमूलजागः परिग्रहाः ॥ २३८ ॥

और आश्रयका वाची (पु०) है ॥ २३३ ॥ ओकस् यह एक नाम मकानका वाची (न०) और आश्रयका वाची (पु०) है । पयस् यह एक (न०) नाम दूधका और पानीका है । ओजन् यह एक (न०) नाम कांतिका और बलका है । स्रोतस् यह एक (न०) नाम इन्द्रियका और नदीके वेगका है ॥ २३४ ॥ तेजस् यह एक (न०) नाम प्रभाव, तेज, बल, वीर्य इन्हींका है । इमसे आगे सकागन्त शब्दों की समाप्तिपर्यन्त सब शब्द (त्रि०) हैं । विद्वस् यह एक न म जाननेवाले का आर आत्मज्ञानीका है । बीभत्स यह एक नाम क्रमका और समभेदका है । ये वक्ष्यमाण (आगे कहे जानेवाले) ज्यायस्ने लेकर सार्धायस् शब्द पर्यन्त अनिशयके वाची हैं ॥ २३५ ॥ ज्यायस् यह एक नाम अत्यन्त वृद्धका आर अत्यन्त स्तुतिके योग्यका है । कनीयस् यह एक न म अत्यन्त जवानका आर अत्यन्त अल्पका है । वरीयस् यह एक नाम अत्यन्त बड़ेका और अत्यन्त श्रेष्ठका है । सार्धायस् यह एक नाम अत्यन्त साधुका आर अत्यन्त प्रतिज्ञाशलेका है ॥ २३६ ॥ यहाँ सांत शब्द समाप्त हुए ॥ वर्धं यह एक (पु० न०) नाम पत्तेका और मोरके पंखका है । ग्रह यह एक (पु०) नाम आग्रहविशेष, ग्रहण, सूर्य आदि ग्रह इन्हींका है । आगेके वर्गनामक सत्र शब्द (पु०) हैं । निर्व्यूह यह एक नाम दार, मुकुट, क्वाथका रस, घर आदिकी भीतमें गाड़ी हुई दो कीलें इन्हींका है ॥ २३७ ॥ प्रग्रह, प्रग्रह ये दो नाम तराजूकी दोरी

दोषेषु च गृहाः श्रेण्यामप्यागेदो वगधिया ।

व्यूहो वृन्देऽप्यर्चिर्वृत्राप्यग्नौर्वास्तमोऽगहाः ॥ २३९ ॥

परिच्छदे नृपाहोऽर्थे पारिवर्हो-

इति हान्ताः ।

ऽव्ययाः परे ।

आह्वीपदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमां धातुयोगजे ॥ २४० ॥

आ प्रगृह्य स्मृती वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कापपीडयो ।

पापकुत्सेपदर्थे कु धिङ् निर्मत्सैननिन्दयोः ॥ २४१ ॥

चान्वाचयसमाहारेत्तरेतरममुच्ये ।

स्वस्त्याशी क्षेपपृण्यादौ प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति २४२ ॥

और घोड़े आदि की गस्ता इन्होना है । पारग्रह यह एक नाम भार्या, बुद्धि, अंगिकार, मूल, शप इन्होना है ॥ २३९ ॥ गृह यह एक नाम स्त्री या बहवचनान्न (पु०) है और मकानका वाची (न०) है । आरोह यह एक नाम उत्तम स्त्री की रटि और हाथीके चढ़नेका है । व्यूह यह एक नाम समूह या और सेनाके स्थित करनेका है । आह यह एक नाम वृत्रासुर या और सर्प या है । तमोपह यह एक नाम आग्न, चन्द्रमा, सूर्य इहोना है ॥ २३९ ॥ पारिवर्ह यह एक नाम राजाके योग्य सुपेद छत्र आदि या और चदेवा वृत्र आदिका है ॥ यहाँ हान्त शब्द समाप्त हुए ॥ इसमें आगे अव्यय हैं । आङ्ग्रह एक नाम इपदय अथात् थाड़ा, अभिव्याप्ति सामर्थ्य, धातुयोगज इन्होना वाचा अन्यय है और इसका डकार अन्त्यके लिये है । ईयर्धमें अपिगल अर्थात् एछापगल है । अभिव्याप्तिमें जने- ' आ सत्प्रेयसात् ' अर्थात् सत्प्रेयसों को अभि व्वाप्त होने । सीमार्धमें जसे- ' आसमुद्रगज, ट ' अथात् समुद्रतट राज दह है । धातु योगमें जमे- ' आहृति ' अर्थात् आक्रमण करना है ॥ २४० ॥ जो प्रगृह्यसज्ञा आ है वह स्मरणन और वाचके प्रत्यये है । आ यह कापमें और पीडाम प्रत्यय है । कु यह पाप, निन्दा, थोड़ा इन्होमें वर्तता है । धिङ् यह शिङ्कनेम और नि दामें वर्तता है ॥ २४१ ॥ च यह चान्वाचय, सम हार, इतरेतर, समुचय इन्होमें वर्तता है । स्थोति यह आशीर्वाद, कुशल, पुण्य आदि इन्होमें वर्तता है । अति यह अत्यन्तमें और

स्वित्प्रश्ने च विनर्के च तु स्याद्भेदेऽवधारणे ।

सकृत्सहैकवारे चाप्यारादूरसमीपयोः ॥ २४३ ॥

प्रतीक्यां चरमे पश्चादुताप्यर्थविकल्पयोः ।

पुनःसहार्थयोः शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४४ ॥

खेदानुकम्पासंतोषविस्मयामंत्रणे वत ।

हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ॥ २४५ ॥

प्रति प्रतिनिधी वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ।

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ॥ २४६ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुनरर्थेऽप्रत इत्यपि ।

यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे ॥ २४७ ॥

मङ्गलानन्तरागमप्रश्नकात्स्न्येष्वथो अथ ।

वृथा निरर्थकाविध्योर्नानाऽनेकोभयार्थयोः ॥ २४८ ॥

लंघनमें वर्त्तता है ॥ २४२ ॥ स्वित् यह प्रश्नमें और तर्कमें वर्त्तता है । तु यह निश्चयमें और भेदमें वर्त्तता है । सकृत् यह सहार्थमें और एकवारमें वर्त्तता है । आरात् यह एक नाम दूरका और समीपका है ॥ २४३ ॥ पश्चात् यह एक नाम पश्चिम दिशाका और अन्त्यका है । उत यह एक नाम समुच्चयका और विकल्पका है । शश्वत् यह एक नाम बारंबारका और सहार्थका है । साक्षात् यह एक नाम प्रत्यक्षका और तुल्यका है ॥ २४४ ॥ वत यह एक नाम खेद, दया, संतोष, आश्चर्य, गुप्त बोलना इन्हींका है । हन्त यह एक नाम आनन्द, दया, वाक्प्रका आरंभ, विषाद इन्हींका है ॥ २४५ ॥ प्रति यह एक नाम प्रतिनिधि, व्याप्त होनेकी इच्छा, लक्षणा, इत्यभूत आख्यान आदि इन्हींका शिष्टप्रयोगके अनुसार है । इति यह एक नाम हेतु, प्रकरण, प्रकाश, निश्चय, समाप्ति इन्हींका है ॥ २४६ ॥ पुरस्तात् यह एक नाम पूर्वदिशा, प्रथम, वीता हुआ, अगाड़ी इन्हींका है । यावत्, तावत् ये दो नाम सकलपना, अवधि, परिमाण, निश्चय इन्हींका है ॥ २४७ ॥ अतो, अतः ये नाम मंगल, अनन्तर, आरंभ, प्रश्न, सकलपना इन्हींका है । वृथा यह एक नाम निरर्थकका और विधिसे हीनका है । नाना यह एक नाम अनेकार्थका और उभयार्थका है ॥ २४८ ॥

नु पृच्छाया विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु ।
 प्रश्नावधारणाऽनुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु ॥ २४९ ॥
 गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वापि ।
 उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २५० ॥
 अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्धनि ।
 इवेत्यमर्थयोरेवं नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ॥ २५१ ॥
 तूष्णीमर्थे सुखे जोष किं पृच्छाया जुगुप्सने ।
 नाम प्रकाशसमाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥ २५२ ॥
 अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ।
 हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५३ ॥
 पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ।
 स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५४ ॥

नु यह एक नाम पृच्छनेका और विकल्पका है । अनु यह एक नाम पीछेका और सदृशनेका है । ननु यह एक नाम प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, सान्त्वन, संबोधन इन्हींका है ॥ २४९ ॥ अपि यह एक नाम निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शङ्का, संभावना इन्हींका है । वा यह एक नाम उपमाका और विकल्पका है । सामि यह एक नाम आधेका और निन्दाका है ॥ २५० ॥ अमा यह एक नाम साथका और समीपका है । क यह एक नाम पानीका और शिरका है । एव यह एक नाम सदृशनेका और निश्चयका है । नून यह एक नाम तर्कका और अर्थके निश्चयका है ॥ २५१ ॥ तूष्णीं यह एक नाम मौनका है । जोष यह एक नाम सुरका है । किं यह एक नाम पृच्छनेका और निन्दाका है । नाम यह एक नाम प्रकाशना, कथाचिदर्थ, क्रोध, वैरसहित अंगीकार, निन्दा इन्हींका है ॥ २५२ ॥ अल यह एक नाम परिपूर्णता, गहना, सामर्थ्य, निवारण इन्हींका है । हुं यह एक नाम वितर्कका और प्रश्नका है । समया यह एक नाम समीपका और मध्यका है ॥ २५३ ॥ पुनर यह एक नाम वाग्वार और भेदका है । निरु यह एक नाम निश्चयका और निषेधका है । पुरा यह एक नाम प्रबन्ध, मृत दिनोंका बीता हुआ, समीप आनेवाला इन्हींका है ॥ २५४ ॥

ऊर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।

स्वर्गे परे च लोके स्ववार्तासंभाव्ययोः किल ॥ २५५ ॥

निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ।

समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमूखेऽभितः ॥ २५६ ॥

नामप्रकाशययोः प्रादुर्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ।

तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे हा विषादशुगर्तिषु ॥ २५७ ॥

अहहेत्यद्भुते खेदे हि हेतावधारणे ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

अथ अव्ययवर्गः ४ ।

चिरायचिररात्रायचिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।

मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्तममाः ॥ १ ॥

स्नाग्वाटित्यञ्जसाह्वाय द्राक् मङ्क्षु सपदि हुते ।

बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यनीव च निर्भरे ॥ २ ॥

ऊररी, ऊरी, उररी ये तीन नाम विस्तारके और अगाकारनेके हैं । स्वर यह एक नाम स्वर्गका और परलोकका है । किल यह एक नाम वार्ताका और संभाव्यका है ॥ २५५ ॥ खलु यह एक नाम निषेध, वाक्यकी शोभा, जाननेकी इच्छा, नम्रपना इन्हींका है । अभितस् यह एक नाम समीप; दोनों तरफसे, शीघ्र, सकल्पना, सन्मुख इन्हींका है ॥ २५६ ॥ प्रादुर् यह एक नाम नामका और प्रकाशपनेका है । मिथस् यह एक नाम आपसका और एकान्तका है । तिरस् यह एक नाम अन्तर्धानका और तिरछेपनेका है । हा यह एक नाम विषाद, शोक पीडा इन्हींका है ॥ २५७ ॥ अहह यह एक नाम अद्भुतका और खेदका है । हि यह एक नाम हेतका और निश्चयका है ॥

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

अथ अव्ययवर्गः । चिराय चिररात्राय, चिरस्य, चिरेण, चिरात्, चिरं ये छः चिर अर्थात् बहुत देरके नाम हैं । मुहुस्, पुनः, पुनर्, शश्वत्, अभीक्ष्णं, असकृत् ये पाँचों नाम वाग्वारके हैं और अर्थसे समान हैं ॥ १ ॥ स्नाक्, झटिति, अंतर्सा, अह्वाय, द्राक्, मङ्क्षु, सपदि ये सात नाम शीघ्रके हैं । बलवत्, सुष्ठु, किमुत, सु, अति, इव ये छः नाम अतिशयके हैं ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणते हिरुङ् नाना च वर्जने ।
यत्तद्यनस्ततो हेतावसात्रल्ये तु चिच्चन ॥ ३ ॥
कणाचिजातु सार्धं तु साकं सत्रा सम सह ।
आनुकूल्यार्थकं प्राच्यं व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥
आ.। उताहो किमुत विमले किं किमुत च ।
तु हि च स्म ह वै पादपूरणे पूजने स्वति ॥ ५ ॥
दिवाद्दीप्त्यथ दोषा च नक्तं च रजनाश्रिति ।
निर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ सवोधनार्थकाः ॥ ६ ॥
स्यु प्याद् पाडङ्ग हे है भोः समया निकषा हिरुक् ।
अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥
स्वाहा देवहविर्दाने श्रीपद् वीपद् वपद् स्वधा ।
किंचिदीपन्मनागल्पे प्रत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥
व वा यथा तयेवैव साम्येऽहो ही च विस्मये ।
मौने तु तूष्णीं तूष्णीका सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋने, हिरुङ्, नाना ये छ नाम वर्जनेके अर्थमें
हैं। यत्, तत्, यत, तत ये चारों नाम कारणवाचक हैं। चित्, चन ये दो नाम अर्सपूर्णवाचक हैं ॥ ३ ॥ रुदाचित्, जातु ये दो नाम किसी
कालके हैं। सार्धं, साकं, सत्रा, सम, यह ये पांच नाम साथके हैं। प्राच्य
यह एक नाम अनुकूलनेका है। वृथा, मुधा ये दो नाम व्यर्थके हैं ॥ ४ ॥
आहो, उताहो, किमुत, किं, किमु, उत ये छ नाम विरुल्लेखके हैं। तु, हि,
'च, स्म, ह, वै ये छ नाम श्लोकके पादको पूरण करनेमें वसते हैं। सु,
अति ये दो नाम पूजनके हैं ॥ ५ ॥ दिवा यह एक नाम दिनका है। दोषा,
नक्त ये दो नाम रात्रिके हैं। साचि, तिरस् ये दो नाम तिरछेके हैं ॥ ६ ॥
प्याद्, पाद्, अग, हे, है, भोस् ये छ नाम सवोधनके हैं। समया, निक
षा, हिरुङ्, ये तीन नाम समीपनेके हैं। सहसा यह एक नाम नहीं तर्कित
किये (अस्मात्) का है। पुर, पुरत, अग्रत ये तीन नाम अगादीके
हैं ॥ ७ ॥ स्वाहा, श्रीपद्, वीपद्, वपद्, स्वधा इन्होंने आदिके चार नाम
देवताओंके अर्थ हविर्दानविशेषके हैं और स्वधा यह एक नाम पितरोंके अर्थ
देनेमें प्रसिद्ध है। किञ्चित्, ईपत्, मनाक् ये तीन नाम अल्पके हैं। प्रेत्य,
अनुग्र ये दो नाम अन्यत्र मने हैं ॥ ८ ॥ व, वा, यथा, तथा, इय, एवं ये

दिष्ट्या समुपजीवं चैत्यानन्देऽयान्तरेऽन्तरा ।

अन्तरेण च मध्ये स्युः प्रसह्य तु दृढार्थकम् ॥ १० ॥

युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।

अभावे नह्य नो नापि मास्म मालं च वारणे ॥ ११ ॥

पक्षान्तरे चैद्यादि च तत्त्वे त्वद्धाऽञ्जसा द्वयम् ।

प्राकाश्ये प्रादुराविः स्यादोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।

अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कञ्चित्कामप्रवेदने ।

निःषमं दुःषमं गर्ह्ये यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥

मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ।

स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥

छः नाम तुल्यके हैं । अहो, ही ये दो नाम आश्चर्यके हैं । तूष्णीं, तूष्णीकां ये दो नाम मौन अर्थात् चुपकेके हैं । सद्यः, सपदि ये दो नाम तत्कालके हैं ॥ १० ॥ दिष्ट्या, समुपजीवं ये दो नाम आनन्दके हैं । अंतरे, अंतरा, अंतरेण ये तीन नाम मध्यके हैं । प्रसह्य यह एक नाम हठका है ॥ १० ॥ साम्प्रत, स्थाने ये दो नाम युक्तके हैं । अभीक्ष्णं, शश्वत् ये दो नाम निरंतरके हैं । नहि, अ, नो, न ये चार नाम अभावके हैं । मास्म, मा, मालं ये तीन नाम मने करनेके हैं ॥ ११ ॥ चेत्, यदि ये दो नाम अन्यपक्षके हैं । अद्धा, अंजसा ये दो नाम तत्त्वके हैं । प्रादुस्, आविस् ये दो नाम स्पष्टपनेके हैं । अँ, एवं परमं ये तीन नाम अंगीकारके हैं ॥ १२ ॥ समततः, परितः, सर्वतः, विष्वक् ये चार नाम सब ओरके हैं । कामं यह एक नाम विना इच्छा अनुमत्तिका है । अस्तु यह एक नाम गुणोंमें दोष आरोपण करनेका और अंगीकारका है ॥ १३ ॥ ननु यह एक नाम विरोधवचनका है । कञ्चित् यह एक नाम बांछितको पूछनेका है । निःषम, दुःषमं ये दो नाम निन्दाके योग्यके हैं । यथास्वं, यथायथं ये दो नाम यथायोग्यके हैं ॥ १४ ॥ मृषा, मिथ्या ये दो नाम असत्यके हैं । यथार्थं, यथातथं ये दो नाम सत्यके हैं । एवं, तु, पुनर्वै, वै, वा ये पाँच नाम निश्चयके हैं ॥ १५ ॥

प्रागतौतार्थकं नूनमवश्य निश्चये द्वयम् ।

सवर्षेऽप्यरे त्वर्वागमेवं स्वयमात्मना ॥ १६ ॥

अल्पे नीचैर्महद्युच्चैः प्रायो भूभ्यदुते जनैः ।

सना नित्ये बहिर्वाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥

अस्ति सत्त्वे रुपोक्तायु ऊं प्रश्नेऽनुनये त्वयि ।

हुं तर्के स्यादुपा रात्रेरवसाने नमो नतौ ॥ १८ ॥

पुनरर्थेऽङ्ग निन्दाया दुष्ट सुष्टु प्रशंसने ।

साय साधे प्रगे प्रातः प्रभाते निकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥

परुत्परार्यैषमोऽन्दे पूर्व पूर्वतरे यति ।

अद्यात्राहचय पूर्वोऽङ्गीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥

प्राक् यह एक नाम बीते हुका है । नून, अवश्य ये दो नाम निश्चयके है । सवर्ष यह एक नाम वर्षका है । अर्वाक् यह एक नाम पीछेका है । आ, एव ये दो नाम अगीकारके हैं । स्वय यह एक नाम अपनेका है ॥ १६ ॥ नीचैस् यह एक नाम अल्पका है । उच्चैस् यह एक नाम बडेका और ऊंचेका है । प्राय यह एक नाम बहुतका है । शनैस् यह एक नाम हो लेका है । सना यह एक नाम नित्यका है । बहिस् यह एक नाम बाहरका है । स्म यह एक नाम बीते हुका है । अस्त यह एक नाम दर्शनके अभावका है ॥ १७ ॥ अस्ति यह एक नाम सत्त्वका और प्राप्तिद्वका है । उ यह एक नाम कोपके वचनका है । ऊ यह एक नाम प्रश्नका है । अथि यह एक नाम अनुनयका है । हु यह एक नाम तर्कका है । उपा यह एक नाम रात्रिके अन्तका है । नमस् यह एक नाम प्रणामका है ॥ १८ ॥ अग यह एक नाम बारवारका है । दुष्ट यह एक नाम निन्दाका है । सुष्टु यह एक नाम प्रशंसाका है । साय यह एक नाम साक्षका है । प्रगे, प्रातः ये दो नाम प्रभातके हैं । निकषा यह एक नाम समीपका है ॥ १९ ॥ परत् यह एक नाम पहले वर्षका है । पराग् यह एक नाम पहलेसे पहले वर्षका है । ऐषम यह एक नाम वर्तमान वर्षका है । अद्य यह एक नाम इस दिनका है । पूर्वं ह्यस् यह एक नाम पहले दिनका है । उत्तरेद्युस् यह एक नाम अगले दिनका है । अपरेद्युस् यह एक नाम अपर दिनका है । अधरेद्युस् यह एक नाम नीचे दिनका है । अथेद्युम् यह एक नाम अथ दिनका है । अन्य

तथाऽधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।

उभयद्युश्चोभयेद्युः परे त्वहि परेद्यवि ॥ २१ ॥

ह्यो गतेऽनागतेऽहि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि ।

तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा ।

दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

अथ लिंगादिसंग्रहवर्गः ५ ।

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ।

अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

तरेद्युस् यह एक नाम अन्यतर दिनका है । इतरेद्युस् यह एक नाम इतर अर्थात् अन्य दिनका है ॥ २० ॥ उभयद्युस्, उभयेद्युस् ये दो नाम दोनों दिनोंके हैं । परेद्यवि यह एक नाम परदिनका है ॥ २१ ॥ ह्यस् यह एक नाम बीते हुए दिनका है । श्वस् यह एक नाम अगले दिनका है । परश्वस् यह एक नाम परसों दिनका है । तदा, तदानीं ये दो नाम तिस कालके हैं । युगपत्, एकदा ये दो नाम एक कालके हैं । सर्वदा, सदा ये दो नाम सब कालके हैं ॥ २२ ॥ एतर्हि, संप्रति, इदानीं, अधुना, सांप्रतं ये पाँच नाम इस कालके हैं । तथा यह समुच्चयार्थक है । प्राक् यह एक नाम पूर्वदिशा, पूर्वदेश, पूर्वकाल इन्हींका है । उदक् यह एक नाम उत्तर दिशा, उत्तर देश, उत्तर कालका है । प्रत्यक् यह एक नाम पश्चिम दिशा, पश्चिम देश, पश्चिम काल इन्हींका है । अर्वाक् यह एक नाम दक्षिण दिशा, दक्षिण देश, दक्षिण काल इन्हींका है ॥ २३ ॥

इति अव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

अथ लिंगादिसंग्रहवर्गः । लिंगशास्त्र अर्थात् पाणिनिआदिसे कहे हुए लिंगानुशासनसहित सूत्र आदि प्रत्ययोंसे बने हुए चिकीर्षा आदि शब्दोंसे और कृदंतसे बने हुए श्वपाक आदि शब्दोंसे और तद्धित प्रत्ययोंसे बने हुए अण् आद्यंत शब्दोंसे और समाससे उपजे अदंतोत्तरपद द्विगु आदिसे कहे हुए शब्दोंसे और बहुधा करके पहले नहीं कहे हुए शब्दोंसे यह संग्रह किया जाता है । इस संग्रहवर्गमें संकीर्णवर्गकी तरह लिंगको विचारना ।

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

स्त्रियामीदृष्टिरामैकाच्च सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीहियाम् ।

अदन्तैर्द्विगुरेकार्था न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

तत्तु वृन्दे येनिकट्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुत् ।

स्त्रीभावादावनित्तिष्ठण्वुल्लणच्चण्वुच्चक्यव्युजिजङ्गनिशा ॥ ४ ॥

उनमें प्रकृतिके अर्थसे जैसे—“ अर्द्धर्चा पुंसि च ” और प्रत्ययके अर्थसे यथा—“ स्त्रियां क्तिन् ” और “ प्रकृत्यर्थ्याद्यै ” इस आद्यशब्दसे क्रिया विशेषण सर्वदा नपुंसकालग और एकवचनमें रहता है । जैसे—“ शोभन पचति ” आदि ॥ १ ॥ सन् आदि, कृत्, तद्धित, समास इन्हांसे उत्पन्न विषयवाला पूर्वोक्त शब्दोंके लिंगसे जो अन्यलिंग है वह लिंग शेष है । उसकी विधिव्यापी अर्थात् अपने विषयकी व्यापक है । जो पहले कहीं गई और यहाँ कहीं गई विशेषविधियोंसे बाधित न हो तबही व्यापी हो सक्ता है । क्योंकि अपवादविषय छोड़कर उत्सर्ग सब स्थानोंमें होता है । इसलिये लिंग विशेषविधिरूप उत्सर्गभूतके स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद जानने उचित है । ईकारान्त, उकारान्त, एकस्वरवाला (थ) और योनि अर्थात् भगसहित प्राणियोंका नाम ये सब (स्त्री०) हैं । जैसे—“ धी, श्री, भू, भू, माता, दुहिता, धेनु ” इत्यादि शब्द जानने और दारशब्द तो विशेषवचनके बलसे (पु०) वाची है ॥ २ ॥ विद्युत् अर्थात् तद्धित, निशा अर्थात् रात्रि, वल्ली अर्थात् व्रतति, वीणा अर्थात् विपची, दिग् अर्थात् दिशा, भू अर्थात् पृथ्वी, नदी अर्थात् तरंगिणी, द्वी अर्थात् रज्जा इन शब्दोंके नाम और मूल आदि अदत्त शब्दोंकरके जो समाहार अर्थवाला द्विगुसमास ये (स्त्री०) हैं । जैसे—“ पञ्चानां मूलानां समाहार पञ्चमूली ” आदि जानने । पात्र और युग ये दोनों उत्तरपदमें हैं जिन्हांके ऐसा अदत्त द्विगु (स्त्री०) नहीं है । जैसे—“ पञ्चानां पात्राणां समाहार पञ्चपात्रम्, चतुर्णां युगानां समाहारश्चतुर्युगम् ” इत्यादि अन्यभी जानने । जैसे—“ त्रिभुवनम् ” ॥ ३ ॥ भाव आदि अर्थमें तत् प्रत्यय है वह (स्त्री०) है । जैसे—“ शुष्टता, ग्राह्यता ” ये हैं । समूहअर्थमें य, इन्, कट्यन्, त्र ये चार प्रत्यय (स्त्री०) हैं । जैसे—“ पाश्या, खलिनी, रयकट्या, गोत्रा ” ऐसे जानने । वैरअर्थमें और भैथुनअर्थमें जो एन् प्रत्यय है वह (स्त्री०) है ।

उणादिषु निरूरीश्च ऊचाबूढन्तं चलं स्थिरम् ।
 तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्वा ण दिक् ॥ ५ ॥
 घञो जः सा स्त्रियाऽस्यां चेदाण्डपाता हि फाल्गुनी ।
 श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥
 स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि ।
 लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥
 सिध्रका सारिका हिका प्राचिकोल्का पिपीलिका ।
 तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गामूचिमाढयः ॥ ८ ॥

जैसे—“अश्वमहिपिका, काकोल्लिका, अत्रिभरद्वाजिका” ऐसे जानने ।
 आदिशब्दसे वीप्साअर्थमें वृत्तका ग्रहण है । स्त्रियां इसका अधिकार कर
 भाव आदिमें जो अनि, क्तिन्, ण्वुल्, णच्, ण्वुच्, क्यप्, युञ्, इच्, अङ्,
 निश् ये प्रत्यय विहित हैं वे (स्त्री०) हैं । जैसे—“अंकराणि, कृत्ति, प्रच्छादिका,
 व्यावक्रोशी, शायिका, ब्रज्या, कारणा, आसना, वापि, आजिपचा, ग्लानि,
 क्रिया” आदि शब्द (स्त्री०) हैं ॥ ४ ॥ उणादिकोंमें नि, ऊ, ई ये तीन प्रत्यय
 (स्त्री०) होते हैं । जैसे—“श्रेणि, श्रोणि, चमू, कर्पू, तंत्री” आदि अन्यभी
 जानने । ङीप्, आप्, ऊङ् प्रत्ययांत जो जंगम और स्यावर हो वह
 (स्त्री०) हैं । जैसे—“नारी, शिवा, ब्रह्मवधू, कदली, माला, कर्कन्धू” आदि
 जानने । ब्रह्मष्टि आदि प्रहरण जो क्रीडामें हो उस अर्थमें विहित ण-प्रत्यय
 (स्त्री०) होता है । जैसे—दांडा, मौसला, मौष्टा, पाल्वा ऐसे अन्यभी
 जानने ॥ ५ ॥ वह घञन्तवाच्य दंडपाताका आदि, क्रिया फाल्गुनिका-
 याम् इस अर्थमें घञन्तसे विहित जो ज प्रत्यय है वह (स्त्री०) होता है ।
 जैसे—दांडपाता फाल्गुनी, श्यैनपाता मृगया, तैलंपाता स्वधा ऐसे अन्यभी
 जानने ॥ ६ ॥ जो अल्पपनेमें कहनेकी इच्छा हो तब मृणाली आदि
 शब्द (स्त्री०) होते हैं । जैसे—मृणाली, वंशी आदि अन्यभी जानने ।
 लंका अर्थात् राक्षसकी पुरी, शेफालिका अर्थात् शंभालू, टीका अर्थात्
 विषमपदोंका आख्यान करना, धातकी अर्थात् धववृक्ष, पंजिका अर्थात्
 निःशेष पदव्याख्या, आढकी अर्थात् अरहर ॥ ७ ॥ सिध्रका अर्थात्
 वृक्षभेद, सारिका अर्थात् मैना, हिका अर्थात् हिचकी, प्राचिका
 अर्थात् वनकी माखी, उल्का अर्थात् तेजका समूह, पिपीलिका अर्थात्

पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्रूणिः शाणी दृणी दस्त ।

सातिः कन्या तथाऽऽसन्दी नामी राजसमापि च ॥ ९ ॥

झहरी चर्चरी पारी होरा लङ्का च सिध्मला ।

लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

पुस्त्वे समेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिहुकालासिशरायः ॥ ११ ॥

करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।

अह्लाहान्ता. क्षेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

कीडी, तिदुकी अर्थात् टैमरनी वृक्ष, कणिका अर्थात् परिमाण, भगि अर्थात् कुटिलपनेका भेद, सुरगा अर्थात् सुरग, भूचि अर्थात् सुई, माढि अर्थात् पत्रशिरा ॥८॥ पिच्छा अर्थात् शमलका निर्यास, वितडा अर्थात् वादभेद, काकिणी अर्थात् दमडी, श्रूणि अर्थात् श्रूणिका, शाणी अर्थात् सनका वस्त्रविशेष, दृणी अर्थात् कानकी जलीका, दस्त अर्थात् म्रेच्छ जाति, साति अर्थात् दान और अन्त, कथा अर्थात् वस्त्रविशेष और माटीकी भीत, आसदी अर्थात् आसनभेद वेतका आसन, नाभि अर्थात् सूडी, राजसभा अर्थात् राजाओंकी सभा ॥ ९ ॥ झहरी अर्थात् बाजाविशेष, चर्चरी अर्थात् हाथोंका शब्द अथवा आनन्दकी क्रीडा, पारी अर्थात् हाथीके पैरकी रज्जु, होरा अर्थात् राशिका आधा माग, लङ्का अर्थात् गामका चिडा, सिध्मला अर्थात् मखी मछली, लाक्षा अर्थात् लार, लिक्षा अर्थात् लीग, गण्डूषा अर्थात् पानी आदिसे मुखको पूरना, गृध्रसी अर्थात् वातरोगभेद, चमसी अर्थात् यज्ञपात्रभेद प्रणीतापात्र, मसी अर्थात् म्याही ॥ १० ॥ यहाँ स्त्रीलगावाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ तुपित, साध्य आदि अनुचर इन्होंसहित देवता और दैत्योंके पर्यायवाची शब्द (पु०) हैं । स्वर्गके नाक, त्रिदिव आदि पर्याय, यागके यज्ञ, मर आदि पर्याय, अद्रिके पर्वत, अद्रि आदि पर्याय, मेघके घन आदि पर्याय, अब्धिके समुद्र आदि पर्याय, हुके शरणा आदि पर्याय, कालके दिष्ट, समय आदि पर्याय, असिके सङ्ग आदि पर्याय, शरके बाण आदि पर्याय, अरिके शत्रु आदि पर्याय ॥ ११ ॥ करके रश्मि, पाणि आदि पर्याय,

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।

कशेरुजतुवस्तुनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ ।

पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाद्वया ॥ १४ ॥

गंडके कपोल आदि पर्याय; ओष्ठके दन्तच्छन्द आदि पर्याय; दोष्के बाहु आदि पर्याय; दन्तके रद आदि पर्याय; कंठके गल आदि पर्याय; केशके कच आदि पर्याय; नखके कररुह आदि पर्याय; स्तनके कुच आदि पर्याय ये सब भेदोंसहित शब्द (पु०) हैं । अह और अह ये हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द (पु०) वाची हैं । जैसे—पूर्वाह्ण, अपराह्ण, द्युह आदि जानने । क्ष्वेड अर्थात् विपविशेषके वाची सौराष्ट्रिक आदि शब्द (पु०) हैं । रात्र हे अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और आदिमें नहीं हैं संख्यावाचक शब्द जिन्होंके वे शब्द (पु०) हैं । जैसे—अहोरात्र, सर्वरात्र आदि जानने और संख्या है आदिमें जिन्होंके वे पञ्चरात्र आदि शब्द (न०) हैं ॥ १२ ॥ श्रीवेष्ट आदि शब्द निर्यास (गोंद वा सार) वाचक हैं वे और अस् अन् ये प्रत्यय हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और विशेषवचनसे नहीं बाधित किये ऐसे ये सब शब्द (पु०) हैं । जैसे—श्रीवेष्ट, सरल, चन्द्रमाः कृष्णवर्त्मा आदि अन्यभी जानने । कशेरु, जतु, वस्तु इन शब्दोंको छोड़ तु और रुये हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द (पु०) हैं । जैसे—सेतु, धातु आदि अन्यभी जानने ॥ १३ ॥ क, ष, ण, भ, म, र ये छः अक्षर अन्त्यके समीप हैं जिन्होंके वे और नहीं बाधित किये अदंत शब्द (पु०) हैं । जैसे—अंक, लोक, स्फटिक आदि और ओष, प्लोष, माष, प्लक्ष आदि और पाषाण, गुण, किरण आदि और कौस्तुभ, दर्भ, शलभ आदि और होम, ग्राम, गुल्म, व्यायाम आदि और झंझर, सीकर, कर आदि ये सब शब्द (पु०) वाची हैं और शुल्क वल्क आदि, वर्षा आदि, विषाण आदि, कुसुंभ आदि, पद्म आदि, अजिर आदि ये सब शब्द विशेषवचनसे बाधित हुए (पु०) नहीं हैं । प, थ, न, य, स, ट ये छः वर्ण हैं अन्त्यके समीप जिन्होंके वे शब्द नहीं बाधित किये (पु०) वाची हैं । जैसे—यूप, बाष्प, कलाप आदि और वेपथु, रोमंथ आदि और इन, धन, भानु आदि और आय, व्यय, जायु, तंतुवाय आदि और रस, हास आदि और पट आदि ये सब शब्द (पु०) हैं और कुतप आदि, वन आदि, मृगया आदि, विस आदि, किरीट आदि ये शब्द विशेषमूर्तोंसे

नाम्यकर्तरि भावे च घञजवृन्द्वाधुचः ।

ल्युः कर्तरि मनिञ् भावे को घोः किः प्राटितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहते ।

कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयं पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥

वटकश्चानुवाकश्च रत्नकश्च कुडङ्गकः ।

पुत्रो न्यूङ्गः समुद्रश्च विटपट्टधटाः खटाः ॥ १७ ॥

बाधित हैं । गोत्र अर्थात् वंश उसमें है सज्ञा जिन्होंकी वे गोत्रके आदि पुरुष जो प्रवराध्यायमें पठित हैं और जो अन्यभी अपत्यप्रत्ययक विना गोत्रबाधित्वकरके लोकमें प्रसिद्ध हैं वे सब (पु०) हैं । जैसे-भरद्वाज, कश्यप, वत्स आदि जानने । वेदकी शाखाकी सज्ञावाले शब्द (पु०) हैं । जैसे-कठ, बहुच आदि शब्द जानने ॥ १४ ॥ सज्ञा, कारक, भाव इन्हेंमें विहित किये घञ्, अच्, अप्, नङ्, ण, घ, अथुच् ये सात प्रत्यय (पु०) हैं । जैसे-प्राप्त, वेद, प्रपात, भाव, माघ, पाक, त्याग आदि, जय, चय, नय आदि, कर, गर, एष, प्लष आदि, यज्ञ, प्रश्न आदि, न्याद, रस आदि, चरश्चद आदि और वेपथु आदि ये सब शब्द (पु०) हैं । कर्त्तामें नन्द्यादिसे हुआ रपुप्रत्यय (पु०) है । जैसे-नन्दन, रमण, मधुसूदन आदि अन्यभी जानने । भावमें पृथु आदिसे हुआ इमनिच् प्रत्यय (पु०) है । जैसे-प्रथिमा, महिमा आदि अन्यभी जानने । भावमें हुआ कप्रत्यय (पु०) है । जैसे-मारुत्य, प्रस्थ आदि, अन्यभी जानने । प्रादिकोंसे और अन्यसे परे जो घुसज्ञक धातु उससे विहित किया कि प्रत्यय (पु०) है । जैसे-प्रधि, निधि आदि, जलधि आदि अन्यभी जानने ॥ १५ ॥ समाहारसे अन्य द्वन्द्वसमासमें अश्ववडवौ शब्द (पु०) है । सूर्य और चन्द्रमाका पर्यायपूर्वक का तशब्द और अयस् अर्थात् लोहका वाचक शब्द है पूर्व जिसके ऐसा कान्त शब्द (पु०) है । जैसे-सूर्यकान्त, अर्ककान्त, चन्द्रकान्त, इन्दुकान्त, सोमकान्त, अयस्कान्त, लोहकान्त आदि अन्यभी जानने ॥ १६ ॥ वटक अर्थात् पीठीका वडा, अनुवाक अर्थात् वेदका अयपक, रत्नक अर्थात् कयल, कुडङ्गक अर्थात् वृक्षरताका वन, पुस्त अर्थात् बाणका अयपक, न्यूङ्ग अर्थात् सामवेदमें निपातिन अङ्कार, समुद्र अर्थात् सपुङ्ग, विट अर्थात् धूर्त, पट्ट अर्थात् पट्टा, घट्ट अर्थात् तुला, खट्ट अर्थात्

कौटारखट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।

गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्वीयबुद्बुदाः ।

कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः ।

पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ।

कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

इति पुँल्लिङ्गशेषः ।

द्विहीनेऽन्यच्च स्वारण्यपर्णश्चभ्राहिमोदकम् ।

शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं वलम् ॥ २२ ॥

अंघा कृवा आदि ॥ १७ ॥ कौट्ट अर्थात् किलेकी भीत, अरघट्ट अर्थात् अरहट्टका कूया, हट्ट अर्थात् दुकान, पिण्ड अर्थात् माटी आदिका गोला, गोण्ड अर्थात् नाभि, पिचण्ड अर्थात् पेट, गडु अर्थात् गलगंड, करंड अर्थात् बीस आदिकी बनाई हुई करंडी, लगुड अर्थात् लाठी, वरण्ड अर्थात् मुख-रोग, किण अर्थात् मांसकी ग्रंथिका भेद, घुण अर्थात् घुन ॥ १८ ॥ दृति अर्थात् चाम, सीमन्त अर्थात् केशोंका वेश, हरित् अर्थात् पालाशवर्ण, रोमन्थ अर्थात् पशुओंके चर्वितका चावना, उद्वीय अर्थात् सामवेद, बुद्बुद अर्थात् जलविकार, कासमर्द अर्थात् कसौंदी, अर्बुद अर्थात् दशकरोड, कुन्द अर्थात् शिल्पभांड, फेन अर्थात् झाग, स्तूप अर्थात् वड आदि, यूप अर्थात् यज्ञस्तंभ, पूष अर्थात् मालपुत्रा ॥ १९ ॥ आतप अर्थात् घाम, क्षत्रियका वाची नाभि, कुणप अर्थात् मुर्दा, क्षुर अर्थात् उरतरा, केदर अर्थात् व्यवहार पदार्थ, पूर अर्थात् जलका प्रवाह, क्षुरप्र अर्थात् बाण-भेद, चुक्र अर्थात् चूका शाक, गोल अर्थात् गोला, हिङ्गुल अर्थात् सिंग-रफ, पुद्गल अर्थात् आत्मा ॥ २० ॥ वेताल अर्थात् भूतोंसे अधिष्ठित किया मुर्दा, भल्ल अर्थात् रीछ, मल्ल अर्थात् बाहुओंसे युद्ध करनेवाला, पुरोडाश अर्थात् हविर्भेद, पट्टिश अर्थात् हथियारविशेष, कुल्माष अर्थात् आधा सिजाया जव, रभस अर्थात् आनन्द, कटाह अर्थात् कडाही, पतद्ग्रह अर्थात् पीकदानी ये सब शब्द (पु०) वाची हैं ॥ २१ ॥ यहां पुँल्लिङ्गशेष समाप्त हुआ ॥ अब (न०) का अधिकार है । वाधि-

फलहेमशुल्बलोहसुखदु खशुभाशुभम् ।

जलपुष्पाणि लवण व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

कोट्या शतादिसख्याभ्या वा लक्षा नियुत च तत् ।

द्व्यचकमसिसुसन्नन्त यदनान्तमकर्तारि ॥ २४ ॥

त्रान्न सलोपध शिष्टे रात्र प्राक्संख्ययान्वितम् ।

पात्राद्यदन्तिरेकाथो द्विगुल्लक्ष्यानुसारत ॥ २५ ॥

तसे जो अन्य है वही (न०) वाची है । ख अर्थात् आकाश, अरण्य अर्थात् वन, पर्ण अर्थात् पत्ता, श्वभ्र अर्थात् छिद्र, हिम अर्थात् जाड़ा, उदक अर्थात् जल, शीत अर्थात् सीला, उष्ण अर्थात् गर्म, मास अर्थात् कनाव, रुधिर अर्थात् लोह, मुख अर्थात् मुँह, अक्षि अर्थात् आँख, द्रविण अर्थात् घन, वरु अर्थात् सेना ॥ २२ ॥ फल अर्थात् केय आदि, हेम अर्थात् सोना, शुल्ब अर्थात् ताँबा, लोह अर्थात् लोहा, सुख, दुःख, शुभ, अशुभ, जलपुष्प अर्थात् कमलके फूल आदि, लवण अर्थात् नमक, व्यञ्जन अर्थात् दधि तक्र आदि पदार्थ, अनुलेपन अर्थात् केसर आदिका तिलक ॥ २३ ॥ कोटिशब्दके बिना जो शत आदि सरयावाचक शब्द है वे (न०) हैं और लक्षशब्द विकल्पमे (न०) है इसलिये (स्त्री०) में लक्षा बनता है । लक्षका पर्याय नियुत है । असत, इसत, उसत और अन्नन्त ऐसे शब्द दो स्वरवाले (न०) वाची हैं । जैसे-पयस्, सर्पिस्, वपुस्, शर्मन् अदि शब्द (न०) हैं । कर्त्तासे अन्यमे जो अनात है वह (न०) है । जैसे-गमन, मरण, दान आदि अन्यभी जानने । और कर्त्तामे रमण आदि (पु०) है ॥ २४ ॥ त्रात शब्द (न०) है । जैसे-गात्र, पात्र, वस्त्र आदि अन्यभी जानने । स और उपधामें हैं जिन्होके वे शब्द (न०) हैं । जैसे-विस, कुल, आदि अन्यभी (न०) जानने और जो प्रागुक्त अर्थात् पूर्वमे कहे हुआसे शेष है वेही (न०) है और जो बाधित हैं वे पुत्र, वृक्ष, हस, कस, शिथ, काल आदि (पु०) और (स्त्री०) है । सखा है पूर्व जिसके ऐसा रात्रशब्द (न०) है । जैसे-त्रिरात्र, पञ्चरात्र ये (न०) हैं । और सखासे रहित पूर्ववाले अक्षरात्र आदि शब्द (पु०) हैं । पात्र आदि अदन्त शब्दोंसे एकार्थ द्विगु शिष्टप्रयोगके अनुसारसे जानना । इसपास्ते पचमूली, त्रिलोकी येभी ठीक

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।

षष्ठ्याश्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ समा ॥ २६ ॥

शालार्थापि पराराजामनुष्यार्थादराजकात् ॥

दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।

कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

भावे नणकचिद्भ्रचोऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ।

अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्त्यतोदके ।

चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योजनम् ॥ ३० ॥

वनं सक्ते हैं ॥२६॥ द्वन्द्वसमासका एकत्व और अव्ययीभाव (न०) होता है । जैसे-पाणिपादं, शिरोग्रीव आदि और अधिस्त्रि, उपसंग आदि । संख्यासे और अव्ययसे परे पथि नशब्द (न०) होता है । जैसे-द्विपथ, त्रिपथ, विपथ, कपथ आदि । समासमें षष्ठीविभक्त्यन्तसे परे छायाशब्द (न०) है जो छाया बहुतोंकी हो तो । जैसे विच्छाय अर्थात् पक्षियोंकी छाया है यहाँ वि नाम पक्षियोंका है । समूहके विषयमें सभाशब्द (न०) है । जैसे-दासीसभ, स्त्रीसभ आदि हैं ॥ २६ ॥ शालानामवाली और अपिशब्दसे समूह नामवाली जो सभा है वह राजशब्दके पर्यायोंसे वर्जित और मनुष्यके पर्यायसे वर्जित शब्दके संग (न०) है । जैसे-इनसभ, प्रभुसभ, रक्षःसभ, पिशाचसभ आदि शब्द (न०) हैं ॥ २७ ॥ उपज्ञा और उपक्रमके आदिपनेको प्रकाशित करनेमें उपज्ञान्त और उपक्रमान्त समास (न०) है । जैसे-कोपज्ञ, क अर्थात् ब्रह्माकी उपज्ञा अर्थात् प्रजा, कोपक्रम अर्थात् लोक उशीनरोंके नामोंके मध्यमें षष्ठी विभक्तिसे परे कथाशब्द (न०) है । जैसे-सौशमिकंथ आदि हैं ॥ २८ ॥ न, ण, क, चित् इन प्रत्ययोंसे अन्य जो तव्य आदि अदन्त धातुप्रत्यय हैं वे भावमें विहित किये (न०) हैं । जैसे-भवितव्य, भाव्य, सहित, भुक्त आदि हैं । समूह, भाव, कर्म इन अर्थोंमें विहित किये अदन्त प्रत्यय (न०) वाची हैं । जैसे-भेक्ष अर्थात् भिक्षाओंका समूह, गोत्व अर्थात् गौओंका समूह, चौर्य अर्थात् चोरका कर्म आदि । पुण्य और सुदिन शब्दसे परे अहंशब्द (न०) है । जैसे-पुण्याह सुदिनाह ये हैं ॥ २९ ॥ क्रियाओंके और

गजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।

माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालबाह्लिकम् ।

इति नपुंसकसग्रहः ।

पुंनपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

मोदकस्तण्डकष्टकः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः ।

पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्ड शीघ्रं बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् ।

सगमं शतमानार्मशम्बलान्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

अव्ययोंके विशेषण शब्द (न०) और एकवचन है । जैसे-मन्द पचाति सुखद प्रात आदि अन्यभी जानने । उक्थ अर्थात् सामभेद, तोटक अर्थात् वृत्तभेद, चोच अर्थात् उपभुक्त किये फलसे बचा हुआ, पिच्छ अर्थात् मोरकी पाँख, गृहस्थूण अर्थात् घरमे थाभ, तिरीट अर्थात् वेष्टन, मर्म अर्थात् संधिस्थान, योजन अर्थात् चार कोश ॥ ३० ॥ राजसूय अर्थात् यज्ञविशेष, वाजपेय अर्थात् यज्ञविशेष, गद्य अर्थात् पदसमूह, पद्य अर्थात् श्लोक, माणिक्य अर्थात् माणिकरत्न, भाष्य अर्थात् पदार्थका विवरण, सिन्दूर अर्थात् लालचूर्ण, चीर अर्थात् वस्त्र, चीवर अर्थात् मुनिवास, पिञ्जर अर्थात् पिंजरा ॥ ३१ ॥ लोकायत अर्थात् चावीक शास्त्र, हरिताल अर्थात् हरताल, विदल अर्थात् बाँसके छिलकोंका बनाया पात्रविशेष, स्थाल अर्थात् पात्र भेद, बाह्लिक अर्थात् केशर आदि ॥ यहाँ (न०) वाची शब्दोंका सग्रह समाप्त हुआ ॥ उक्तसे शेष रहे शब्द (पु० न०) हैं । अर्धर्च अर्थात् ऋचाका आधा भाग, पिण्याक अर्थात् तिलोंका कल्क, कटक अर्थात् कांय ॥ ३२ ॥ मोदक अर्थात् लड्डू, तण्डक अर्थात् उपताप, टक अर्थात् टांकी, शाटक अर्थात् शाटीविशेष, कर्पट अर्थात् वस्त्रभेद, अर्बुद अर्थात् सर्पामेद, पातक अर्थात् ब्रह्महत्या आदि, उद्योग अर्थात् उत्साह, चरक अर्थात् वैद्यकशास्त्र, तमाल अर्थात् वृक्षभेद, आमलक अर्थात् आवला, नड अर्थात् नरसल ॥ ३३ ॥ कुष्ठ अर्थात् कौटुरोग, मुण्ड अर्थात् शिर, शीघ्र अर्थात् मदिरी, बुस्त अर्थात् भुना हुआ मांस, क्ष्वेडित अर्थात् धीर पुरुषका किया सिटनाद, क्षेम अर्थात् कुशल, कुट्टिम अर्थात् भीतिका भेद, सगम

कवियं कन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम् ।
 यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्सौ ॥ ३५ ॥
 अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।
 तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यरतु शेषवत् ॥ ३६ ॥
 इति पुंनपुंसकसंग्रहवर्गः ।

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विवतुःषट्पदोरगाः ।
 जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥
 ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ।
 मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥
 इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहवर्गः ।

अर्थात् संयोग, शतमान अर्थात् तोलविशेष, अर्म अर्थात् नेत्ररोगका भेद, शंवल अर्थात् वर्णभेद, अवग्रय अर्थात् स्वर आदि निपात, तांडव अर्थात् नृत्यभेद ॥ ३४ ॥ कविय अर्थात् लगाम, कन्द अर्थात् कमलिनीकी मूल आदि, कार्पास अर्थात् कपास, पारावार अर्थात् जलसमूह, युगंधर अर्थात् लहोदर, यूप अर्थात् यज्ञस्तम्भ, प्रग्रीव अर्थात् वृक्षका शिरः, पात्रीव अर्थात् यज्ञपात्रभेद, यूप अर्थात् मांड, चमस अर्थात् चमसा, चिक्स अर्थात् पात्रभेद ॥ ३५ ॥ इस अर्धर्चादि वर्गमें जो घृत आदि शब्द (पु०) वाची पाणिनि आदिने कहे हैं वह रीति वैदिक है अर्थात् वेदमें प्रसिद्ध है । इस कारण यहां नहीं कहे । वे लोकमें भी हैं तो शिष्टप्रयोगसे जानना उचित है ॥ ३६ ॥ यहा (पु० न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ अपत्यप्रत्यान्त शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-औपगव, औपगवी । दो चार छः पैंगोवाले प्राणी और सर्पवाची ऐसे जातिभेद (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-मानुष मानुषी, ब्राह्मण ब्राह्मणी, मृग मृगी, भृंग भृगी, उरग उरगी, नाग नागी । स्त्रियोंके साथ पुरुषवाचक शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-इन्द्र इन्द्राणी, मातुल मातुली । मल्लक आदि शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-मल्लक मल्लिका ॥ ३७ ॥ ऊर्मि अर्थात् तरंग, वराटक अर्थात् कौडी, स्वाति अर्थात् नक्षत्र, वर्णक अर्थात् चन्दन, झाटलि अर्थात् मोखावृक्ष, मनु अर्थात् मंत्र, मूषा अर्थात् घड़िया, सृपाटी अर्थात् परिमाणभेद, कर्कन्धू अर्थात् बड़वेरी, यष्टि अर्थात् लाठी, शाटी अर्थात् धोती, कटी अर्थात् कड, कुटी अर्थात्

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः प्यञ् कचिच्च बुञ् ।
 औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्य बुञ् प्रागुदाहतः ॥ ३९ ॥
 पष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाद्याशालासुरानिशाः ।
 स्याद्वा नृमेन श्वनिश गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥
 आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुसि नश्च लृप् ।
 त्रिखट्व च त्रिखट्ठी च त्रितक्ष च त्रितक्षपि ॥ ४१ ॥
 इति स्त्रीनपुंसकशेषः ।
 त्रिपु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदादिमौ ।
 इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः ।
 परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥
 अर्थान्ताः प्राचलप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ।
 तद्धितार्था द्विगुः सरूपासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

घरका कोठा ये सब शब्द (स्त्री० पु०) हैं ॥ ३८ ॥ यहाँ (स्त्री० पु०)
 वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ भावमें और कर्ममें वर्तमान
 प्यञ् प्रत्यय और बुञ् प्रत्यय नहीं २ (स्त्री० पु०) है । जैसे-औचित्य
 औचिती, मै य मैत्री, मैथुनक मैथुनिना ॥ ३९ ॥ तत्पुरुष समासमें पष्ठी
 विभक्त्यन पठ है पूर्व जिहोंके ऐसे सेना, न्याया, शाला, सुरा, निशा ये
 शब्द (स्त्री०) आर (न०) हैं । जैसे-नृसेन नृमेना, कुडयच्छाय कुडय
 च्याया, गोशाल गोशाला, यमसुर यमसुरा, श्वनिश श्वनिशा आदि
 अन्यमी जानने ॥ ४० ॥ आवत शब्द और अवन्त शब्द हैं उत्तरपदमें
 जिसने ऐसा द्विगु समास (स्त्री० न०) है । जैसे-त्रिखट् त्रिखट्ठी, त्रितक्ष
 त्रितक्षी । तक्षत्रशब्दके अन्तका नकार लुप्त हो रहा है ॥ ४१ ॥ यहाँ (स्त्री०
 न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ पात्र, पुट, वाट, पेड, कुवल,
 दादिम ये शब्द (त्रि०) हैं । जैसे-पात्र पात्री पात्रम्, पुट पुटी पुटम्,
 वाट वाटी वाटम्, पेड पेटी पेडम्, कुवल कुवली कुवलम्, दादिम दादिमी
 दादिमम् ॥ यहाँ (त्रि०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ उभय
 पदप्रधान समासमें जो इतनेतने द्वन्द्वसमासमें अग्रिम पदका लिंग होता
 है । जैसे-कुम्भमयूरी, मयूरीकुम्भगी, धार्यार्थ, सपर्याति आदि अग्रमी
 जानने ॥ ४२ ॥ अर्थान्ति अर्थान्ति अर्थ शब्द है अन्तमें जिसने और आदि

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् ।

गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अलं, प्राप्त, आपन्न ये हैं पूर्वमें जिन्होंके वे शब्द विशेष्यके लिंगको प्राप्त होते हैं । जैसे—‘द्विजार्थः सूपः’ अर्थात् द्विजके लिये दाल है, ‘द्विजार्था यवागूः’ अर्थात् द्विजके लिये यवागू है, ‘द्विजार्थं पयः’ अर्थात् द्विजके लिये दूध है । ‘अतिमालो हारः’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाला यह हार है, ‘अतिमाला इयम्’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाली यह माला है, ‘अतिमालमिदम्’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है । ‘अलंकुमारिरयम्’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह पुरुष है, ‘अलंकुमारी इयम्’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाली यह स्त्री है, ‘अलंकुमारि इदम्’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है । ‘प्राप्तजीविको द्विजः’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, ‘प्राप्तजीविका स्त्री’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, ‘प्राप्तजीविकं कुलम्’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला कुल है । ‘आपन्नजीविको द्विजः’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, ‘आपन्नजीविका स्त्री’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, ‘आपन्नजीविकं कुलम्’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला कुल है । तद्धित है अर्थ जिसका ऐसा द्विगु समास वाच्य-लिंगी है । जैसे—‘पञ्चकपालः पुरोडाशः’ अर्थात् पांच कपालोंमें संस्कृत किया पुरोडाश है, ‘पञ्चकपालं हविः’ अर्थात् पांच कपालोंमें संस्कृत किया घृत है । संख्यावाचिशब्द, सर्वनामसंज्ञक शब्द, संख्यांत शब्द ये सब विशेष्यके लिंगके समान होते हैं । जैसे—‘एकः पुमान्’ अर्थात् एक पुरुष है, ‘एकं कुलम्’ एक कुल है । ‘द्वौ पुमांसौ’ अर्थात् दो पुरुष हैं, ‘द्वे स्त्रियौ’ अर्थात् दो स्त्री हैं । ‘सर्वो देशः’ अर्थात् संपूर्ण देश है, ‘सर्वा नदी’ अर्थात् संपूर्ण नदी है, ‘सर्वं जलम्’ अर्थात् संपूर्ण पानी है । ‘परमसर्वः पुमान्’ अर्थात् परमसर्व पुरुष है, ‘परमसर्वा स्त्री’ अर्थात् परमसर्वरूप स्त्री है, ‘परमसर्वं कुलम्’ अर्थात् परमसर्वरूप कुल है ॥ ४३ ॥ दिशशब्दसे वर्जित नामवालोंका बहुव्रीहि अन्यके लिंगके समान होता है । जैसे—‘वृद्धभार्य्यः’ अर्थात् बूढ़ी है भार्या जिसकी वह पुरुष है । गुणके योग-करके, द्रव्यके योगकरके और क्रियाके योगकरके जो उपाधि विशेषण है उसकरके धर्ममें प्रवृत्त हुए धर्मलिंगभाज होते हैं । जैसे—‘गंधवती पृथिवी’

कृतः कर्तर्यसज्ञायां कृत्या कर्तरि कर्मणि ।

अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

पट्सज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् ।

पर विरोधे शेष तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसग्रहवर्ग ॥ ५ ॥

अर्थात् गधवाली पृथिवी है, 'गधवानश्मा' अर्थात् गधवाला पर्वत है, 'गधवत् कुसुमम्' अर्थात् गधवाला फूल है । 'दडिनी स्त्री' अर्थात् दडवाली स्त्री है । 'पाचिका स्त्री' अर्थात् पाक करनेवाली स्त्री है ॥ ४४ ॥ कर्त्तामें और असज्ञामे कृत्प्रत्यय विशेष्यके लिंगको भजते है । जैसे—'कर्त्ता पुमान्' अर्थात् करनेवाला पुरुष है, 'कर्त्री स्त्री' अर्थात् करनेवाली स्त्री है, 'कर्तृ कुलम्' अर्थात् करनेवाला कुल है । कर्ममें और कर्त्तामें वर्त्तमान हुए कृत्यप्रत्यय परके लिंगके समान होते है । जैसे—'कर्त्तव्या भक्ति' अर्थात् करने योग्य भक्ति है, 'कर्त्तव्यो धर्मस्त्वया' अर्थात् तुझको धर्म करना योग्य है । 'वास्तव्योऽयम्' अर्थात् यह वसनेके योग्य है, 'वास्तव्या सा' अर्थात् वह स्त्री वसनेके योग्य है, 'वास्तव्य तत्' अर्थात् वह कुल वसनेके योग्य है । "तेन रक्तम्" आदि अर्थमें अण् आदि तद्धितप्रत्ययात् अनेकार्थविशेषणभूत विशेष्यके लिंगके समान होते है । जैसे—'कौसुमी शाटी' अर्थात् कुसुभासे रंगी हुई धोती है, 'कौसुम पट' अर्थात् कुसुभासे रंगा हुआ वस्त्र है, 'कौसुम वास' अर्थात् कुसुभासे रंगा हुआ वासस् अर्थात् वस्त्र है ॥ ४५ ॥ पट्सज्ञक अर्थात् पान्त और नांत सख्यावाले शब्द कतिशब्द, युष्मदशब्द, अस्मदशब्द, तिङ्प्रत्यय, अव्यय ये सब तीनों लिंगोंमें समान है । जैसे—'पडिमे' अर्थात् ये छ पुरुष है, 'पटिमा' अर्थात् ये छ स्त्री हैं, 'पडिमानि' अर्थात् ये छ कुल है । ऐसे अन्यभी जानने । 'कति पुरुषा' कितने पुरुष है, 'कति स्त्रिय' अर्थात् कितनी स्त्रियां है, 'कति कुलानि' अर्थात् कितने कुल है । 'त्वं पुमान्' अर्थात् तू पुरुष है, 'त्वं स्त्री' अर्थात् तू स्त्री है, 'त्वं कुलम्' अर्थात् तू कुल है । 'अह स्त्री' अर्थात् मैं स्त्री हूँ, 'अह पुरुष' अर्थात् मैं पुरुष हूँ, 'अह कुलम्' अर्थात् मैं कुल हूँ । 'स्थाली भवति' अर्थात् स्थाली है, 'घटो भवति' अर्थात् घट है, 'पात्रं भवति' अर्थात् पात्र है । 'उच्चै पुरुष' अर्थात् ऊचा पुरुष है, 'उच्चै स्त्री' अर्थात्

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशामने ।

सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीअमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने

तृतीयं काण्डं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अर्थात् ऊंची स्त्री है, 'उच्चैः कुलम्' अर्थात् ऊंचा कुल है । विप्रातिपेधमें परका लिंग होता है । जैसे—'मानुषीयम्' अर्थात् यह मनुष्यकी स्त्री है, 'मानुषोऽयम्' अर्थात् यह मनुष्य है । यहां नहीं कहा हुआ शिष्ट अर्थात् महाकवि भाष्यकार आदिके प्रयोगोंसे जानना उचित है ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

इस प्रकार अमरसिंहके किये नामलिङ्गानुशासनमें अंगोंसहित सामान्य कांड तीसरा निरूपित किया ॥ १ ॥

इति रौहृतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासिगौडवंशावतंसविविधशास्त्रपरमपंडित-
श्रीशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायामागरानगरवास्तव्य-ज्यो-
तिर्विद्वालयमुकुन्दभट्टसूरिसूनु-पंडितरामेश्वरभट्टेन संशोधितायां अमरको-
शार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां तृतीयकांडः समाप्तः ॥ ३ ॥



सभाषामरकोशस्य

अकारादिवर्णानुक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
अ	अ		अक्षान्ति	७	२४	अभिपय	१४	६६
अक्ष	२४	११	अक्षि	{ १६	९३	अभिमुखी	१४	४२
अक्ष	१९	८९		{ २५	२२	अभिशिख	१६	१२४
अक्षु	३	३३	अक्षिकूटक	१८	३८	अभिशिखा	{ १४	१९८
अक्षुक	१६	११५	अक्षिगत	२१	४५		{ १४	१३६
अक्षुमती	१४	११५	अक्षीर	{ १४	३१	अभ्युरपात	{ ४	१०
अक्षुमरफला	१४	११३		{ १९	४१		{ २३	५८
अक्ष	१६	७८	अक्षोट	१४	२९	अभ	{ २१	५८
अक्षल	१६	४४	अक्षौहिणी	१८	८१		{ २३	१८३
अक्षति	१७	३०	अखट	२१	६५	अभज	१६	४३
अक्षु	४	२३	अखात	१०	२७	अभजन्	१७	४
अक्षणि	२२	३९	अक्षिल	२१	६५	अमत सा	१८	७२
अक्षुपार	८	१	अग	२३	१९	अमतस्	{ २३	२४७
अक्षुण्णकर्मन्	२१	४६	अगद	१६	५०		{ २४	७
	{ १४	५८	अगदकार	१६	५७	अममांस	१६	६४
अक्ष	{ १९	४३	अगम	१४	५	अमिय	{ १६	४३
	{ १९	८६	अगस्त्य	३	२०		{ २१	५८
	{ २०	४५	अगाध	१०	१५	अमीय	२१	५८
	{ २३	२२२	अगार	१२	५	अमेदिधिषू	१६	७३
अक्षत	१९	४७	अगव	१६	१२६	अमेसर	१८	७२
अक्षदर्शक	१८	५	अगुर्विशेषा	१४	६२	अग्य	२१	५८
अक्षदेविन्	२०	४४	अमायी	१७	२१	अघ	{ ४	७३
अक्षपूर्त	२०	४४	अमि	१	५६		{ २३	७७
अक्षर	२३	१८२	अमि	१	५६	अघमर्षण	१७	४८
अक्षरचुग	१८	१५	अमि	१	६०	अघ्या	१९	६७
अक्षरवण	१८	१५	अमिचित	१७	१२	अंक	{ ३	१७
अक्षरसम्पान	१८	१६	अमिज्वाला	१४	१०४		{ २३	४
अक्षवती	२०	४५	अमिअय	१७	२०	अक्षु	१४	४
अक्षामदीलक	१८	५६	अमिभू	१	४७	अक्षु	१८	४१

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अंकोट ...	१४	२९	अच्छभा... १५	४		अभालि	१६	८५
अंश्य	७	५	अच्युत	१	१९	अअसा....	{ २४ २	
अंग....	{ १६ ७०		अच्युतायज. १	२८		अटनी	१८	८४
	{ २४ ७		अज....	{ १९ ७६		अटग... ..	१४	१०३
	{ २४ १९			{ २३ २०		अटगी ...	१४	१
अंगण ...	१०	१३	अजगयिका. १४	१३१		अटा . .	११	३६
अंगद	१६	१०७	अजग... ..	८	५	अट्ट	{ १२ १२	
अंगना....	{ ३ ५		अजग... ..	१	२७		{ २३ १३१	
	{ १६ ३		अजन्य	१८	१०९	अट्या	१७	३६
अंगविक्षेप.	७	१६	अजमोदा....	१४	१४५	अणक	२१	५४
अंगसंस्कार.	१६	१२१	अजभृंगी....	१४	११९	अणव्य	१९	७
अंगहार	७	१६	अजस्र	१	६९	अणि	१८	५६
अंगार	१९	३०	अजहा ...	१४	८६	अणिमन्	१	३८
अंगारक....	३	२५	अजा	१९	७६	अणीयस्	२१	६२
अंगारधानिका. १९	२९		अजाजी	१९	३६	अणु	{ १९ २०	
अंगारवल्ली. १४	४८		अजाजीव. २०	११			{ २१ ६२	
अंगारवल्ली. १४	९०		अजित	२३	६२	अण्ड	१५	३७
अंगारशकटी. १९	२९		अजिन	१७	४७	अण्डकोश....	१६	७६
अंगीकार ५	५		अजिनपत्रा. १५	२६			{ १० १७	
अंगीकृत ...	२१	१०८	अजिनयोनि. १५	८		अण्डज. { १५ ३६		
अगुली	१६	८२	अजिर....	{ १२ १३			{ २१ ५१	
अगुलीमान. १९	८५			{ २३ १८१		अतट ...	१३	४
अगुलीमुद्रा. १६	१०८		अजिह्व	२१	७२	अतर्कित....	२४	७
अगुलीयक. १६	१०७		अजिह्वग... १८	८६		अतलस्पर्श. १०	१५	
अंगुष्ठ	१६	८२	अज्जुका....	७	११	अतसी ...	१९	२०
अंग्रि	१६	७१	अज्झटा ...	१४	१२७		{ २३ २४२	
अंग्रिनामक. १४	१२		अज्ञ	{ २१ ३८		अति	{ २४ २	
अंग्रिवल्लिका. १४	९२			{ २१ ४८			{ २४ ५	
अचंडी	१९	७०	अज्ञान	५	७	अतिक्रम. { २२ ३३		
अचल	१३	१	अश्रित	२१	९८		{ २३ १५०	
अचला	११	२	अअन	३	३	अतिचरा....	१४	१४६
अचिक्रण....	२३	२२६	अअनकेशी. १४	१३०		अतिच्छत्र. १४	१६७	
अच्छ	१०	१४	अअनावती. ३	५		अतिच्छत्रा. १४	१५२	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
अतिजन	१८	७३	अत्यय	{ १८	११६	अधिरूपका	१३	७
अतिथि	१७	३४		{ २३	१५०	अधिप	२१	११
अतिनिर्हारिन्	५	१०	अत्यय	१	७०	अधिभू	२१	११
अतिनु	१०	१४	अत्यल्प	२१	६२	अधिग्राहिणी	१२	१८
अतिपयिन्	११	१६	अत्याहित	२३	७७	अधिवासन	१६	१३४
अतिपात	{ १७	३७	अनि	३	२७	अधिविद्या	१६	७
	{ २२	३३	अय	२३	२४८	अधिश्रवणी	१९	२९
अतिप्रसिद्ध	२३	२१८	अयो	२३	२४८	अधिष्ठान	२३	१२६
अतिमात्र	१	७०	अदभ्र	२१	६३	अधीन	२१	१६
अतिमुक्त	१४	७२	अदर्शन	२२	२२	अधीर	२१	२६
अतिमुक्तक	१४	२६	अदितिनदन	१	८	अधीश्वर	१८	२
अतिरिक्त	२१	७५	अदृश	१६	६१	अधुना	२४	२३
अतिवस्तु	२१	३५	अदृष्ट	१८	३०	अष्ट	२१	३६
अतिवाद	६	१४	अदृष्टि	७	३७	अधोशुक्र	१६	११७
अतिविषा	१४	९९	अद्वा	२४	१२	अधोक्षज	१	२१
अतियेष्ठ	१	७०	अद्भुत	{ ७	१७	अधोमुखन	८	१
अतिशक्तिता	१८	१०२		{ ७	१९	अधोमुख	२१	३३
अतिशय	{ १	६९	अग्र	२१	२०	अध्यक्ष	{ १८	६
	{ २२	११	अघ	२४	२०		{ २३	२६
अतिशरत्	२३	४१	अदि	{ १३	१	अध्वरसाय	७	२०
अतिशोभन	२१	५८		{ २३	१६३	अध्वरतम	२१	१४४
अतिसंस्तुत	२३	८१	अद्वयवादिन्	१	१४	अध्वरपत्र	१०	७
अतिसर्जन	२२	२८	अधम	{ २१	५४	अध्याहार	५	३
अतिसारकिन्	१६	५९		{ २३	१४४	अध्यूता	१६	७
अतिसौरभ	१४	३३	अधमर्ग	१९	५	अध्येषणा	१७	३२
अतीरण	२३	९४	अधर	{ १६	९०	अध्वग	१८	१७
अतीत	२४	१७		{ २३	१८९	अध्वन्	११	१५
अतीतनीच	१०	१४	अपोरुम्	२४	२१	अध्वनीन	१८	१७
अतीदिय	२१	७९	अग्निदि	२१	११	अध्वय	१८	१७
अतीव	२४	२	अधिकीग	१८	६३	अध्वर	१७	१३
अतिषा	७	१५	अधिकार	१८	३१	अध्वु	१७	१७
अत्यंतपेन	२१	३२	अहित	१८	६	अध्वर	६	२१
अत्यन्तीन	१८	७६	अभिगम	२१	४२	अध्वर	१	२६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अनच्छ	१०	१४	अनीक. {	१८	७८	अनुभाव. {	७	२१
अनद्ध	१९	६०		१८	१०४		२३	२०९
अनत. {	२	१	अनीकस्य. १८	६		अनुमति	४	८
	८	४	अनीकिनी {	१८	७८	अनुयोग ...	६	१०
	०३	८१		१८	८१	अनुगोध	१८	१२
अनंता. {	११	२	अनु	२३	२४९	अनुलाप ...	६	१६
	२३	१२	अनुक	२१	२३	अनुलेपन ...	२५	२३
	२३	११२	अनुकंपा	७	१८	अनुवर्तन. १८	१२	
	२३	१३६	अनुकर्ष	१८	५७	अनुवाक ...	२५	१७
	२३	१५८	अनुकल्प	१७	४०	अनुशय	२३	१४८
अनन्यज	१	२७	अनुकामीन १८	७६		अनुष्ण	२०	१८
अनन्यवृत्ति. २१	७९		अनुकार	२२	१७	अनुहार	२२	१७
अनय	२३	१४९	अनुक्रम	१७	३७	अनुक	२३	१३
अनर्थक	६	२०	अनुक्रोश	७	१८	अनुचान ...	१७	१०
अनल	१	५७	अनुग	२१	७८	अनुाक	२१	६५
अनवधानता. ७	३०		अनुग्रह	२२	१३	अनूप	११	१०
अनवरत	१	६९	अनुचर	१८	७१	अनुव ...	३	३२
अनवस्कार २१	५६		अनुज	१६	४३	अवृजु	२१	४६
अनवरार्थ २१	५७		अनुजीविन्. १८	९		अवृत. {	६	२१
अनस् ...	१८	५२	अनुतर्पण	२०	४३		१९	२
अनागतार्तवा. १६	८		अनुताप {	७	२५	अनेकप	१८	३४
अनातप	२३	१५७		२३	१४७	अनेहस्	४	१
अनादर	७	२२	अनुत्तम	२१	५७	अनोकह ...	१४	५
अनामय ...	१६	५०	अनुत्तर	२३	१९०	अंत.... {	१८	११६
अनामिका. १६	८२		अनुनय	२४	१८		२१	८१
अनायासकृत. २१	९४		अनुषद ...	२१	७८	अंत.पुर	१२	११
अनारत	१	६९	अनुपदीना. २०	३१		अंतक ...	१	६२
अनार्यतित्त. १४	१४३		अनुपमा	३	४	अंतर ...	२३	१८७
अनाहत	१६	११२	अनुलव	१८	७१	अंतरा	२४	१०
अनिमिष. २३	२१९		अनुबंध ...	२३	९८	अंतराभवसत्त्व २३	१३२	
अनिश्च ३	२८		अनुबांध	१६	१२२	अंतराय	२२	१९
अनिल.... {	१	१०	अनुभव	२२	२७	अंतराल	३	६
	१	६५				अंतरिक्ष	२	१
अनिश	१	६९						

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
तरीप	१०	८	अन्येषु	२४	२१	अपराजिता	{ १४ १०४	
तरीय	१६	११७	अन्वक्	२१	७८		{ १४ १४१	
तरे	२४	१०	अवस	२१	७८	अपराद्धपृक्	१८	६८
तरेण	{ २४ ३		अन्वय	१७	१	अपराध	१८	२६
	{ २४ १०		अन्ववाय	१७	१	अपराह	४	३
तर्गत	२१	८६	अन्वाहार्य	१७	३१	अपरेषु	२४	२०
तथा	३	१२	अन्विष्ट	२१	१०५	अपर्णा	१	३९
तथि	३	१२	अन्वेष्टा	१७	३२	अपलाप	६	१७
तद्गार	१२	१४	अन्वेष्टित	२१	१०५	अपवर्ध	५	७
तर्मनस्	२१	८	अप् (आप)	१०	३	अपवर्जन	१७	३०
तर्वन्नी	१६	२२	अपकारगी	६	१४	अपवाद	{ ६ १३	
तर्वाणी	२१	६	अपक्रम	१८	१११		{ २३ ८९	
तवशिक	१८	८	अपघन	१६	७०	अपवारण	{ ३ १२	
तापसायिन्	२०	१०	अपचय	२२	१६		{ २३ १२५	
सिक	२१	६७	अपचायित	२१	१०१	अपशब्द	६	२
सिकतम	२१	६८	अपचित	२१	१०१	अपहृ	२१	८४
सिका	१९	२९	अपचिति	{ १७ २५		अपसद	२०	१६
तेवासिन्	{ १७ २०	{ ११ २०		{ २३ ६७		अपसर्प	१८	१३
त्य	२१	८१	अपद्	१६	५८	अपसव्य	२१	८४
त्र	१६	६६	अपरय	१६	२८	अपस्कार	१८	५५
दुक्त	१८	४१	अपत्रपा	७	२३	अपलात	२१	१९
प	{ १६ २३	{ ६१ १०३	अपत्रविष्णु	२१	२८	अपहार	२०	१६
धफारिषु	१	३६	अपय	११	१७	अपापति	१०	२
धफार	८	३	अपायिन्	११	१७	अपाग	{ १६ २३	{ १४ २१
घतमध	८	३	अपदातर	२१	६८	अपान	{ १ १६	{ ६७ ७३
पसु	१९	४८	अपदिश	३	५	अपामार्ग	१४	८८
धु	१०	२६	अपदेश	{ ७ २३	{ ३३ २१६	अपावृत्त	२१	१५
प्र	{ १९ २१	{ ४८ १११	अपधस्त	२१	३९	अपासन	१८	११३
प्रम	२१	८२	अपधंश	६	२	अपि	२३	२५०
प्रयतर	२१	८२	अपधान	१८	१११	अपिधान	३	१३
प्रयतरेषु	२४	२१	अपरस्पर	२२	१	अपिनद्ध	१८	६५

शब्दानुक्रमणिका.

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अपूप	१९	४८	अभिग्रहण.	२२	१७	अभिशास्त.	२१	४३
अपोगण्ड.	१६	४६	अभिधातिन्.	१८	११	अभिशास्ति.	१७	३२
अप्पति	१	६४	अभिचर	१८	७१	अभिशाप....	६	११
अप्पित्त	१	५९	अभिचार.	२२	१९	अभिषंग	२३	२४
अप्रकांड....	१४	९	अभिजन. {	१७	१	अभिषव. {	१७	४७
अप्रगुण	२१	७२		२३	१०८		२०	४२
अप्रत्यक्ष ...	२१	७९	अभिजात.	२३	८२	अभिषेणन.	१८	९५
अप्रधान ...	२१	६०	अभिज्ञ	२१	४	अभिष्टुत	२१	१११
अप्रहत	११	५	अभितस् {	२१	६७	अभिसंपात	१८	१०५
अप्राप्य	२१	६०		२३	२५६	अभिपारिका.	१६	१०
अप्सरस्. {	१	११	अभिधान....	१२	८	अभिहार. {	२२	१७
	१	५५	अभिध्या ...	७	२४		२३	१६८
अफल	१४	७	अभिनय....	७	१६	अभिहित.	११	१०७
अवद्ध	६	२०	अभिनव	२१	७७	अभीक	२१	२४
अवद्धमुक्ष.	२१	३६	अभिनवोद्भिद्.	१४	४	अभीक्षणम्. {	२४	१
अवला	१६	२	अभिनिर्मुक्त.	१७	५५		२४	११
अवाध	२१	८३	अभिनिर्माण.	१८	९५	अभीप्सित {	२१	५३
अञ्ज.... {	३	१४	अभिनीत. {	१८	२४		२१	११२
	२३	३२		२३	८१	अभीरु	१४	१००
अञ्जयोनि.	१	१७	अभिपन्न	२३	१२८	अभीरुपत्री.	१४	१०१
अव्द.... {	४	२०	अभिप्राय.	२२	२०	अभीषग	२२	६
	२३	८८	अभिभूत.	२१	४०	अभीषु	२३	२२०
	२३	१४६	अभिमर.	२६	२१४	अभीष्ट	२१	५३
अधि.... {	१०	१	अभिमान. {	७	२२	अभ्यग्र	२१	६७
	२३	१०१		२३	१११	अभ्यंतर	३	६
अधिकफ.	१९	१०५	अभियोग....	२२	१३	अभ्यमित.	१६	५८
अब्रह्मण्य.	७	१४	अभिरूप	२३	१३१	अभ्यमित्रीण.	१८	७५
अभय	१४	१६४	अभिलाव.	२२	२४	अभ्यमित्रीय.	१८	७५
अभया	१४	५९	अभिलाष	७	२८	अभ्यमित्र्य.	१८	७५
अभाषण....	१७	३६	अभिलाषुक	२१	२२	अभ्यर्ण	२१	६७
अभिक ...	२१	२४	अभिवादक.	२१	२८	अभ्यर्हित.	२३	८३
अभिक्रम.	१८	९६	अभिवादन.	१७	४१	अभ्यवकर्षण.	२२	१०
अभिहया....	२३	१५६	अभिव्याप्ति.	२२	६	अभ्यवस्कंदन	१८	११०
अभिग्रह	२२	१३						

शब्द	उर्मि	श्लोक	शब्द	उर्मि	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
अभ्यवहत	२१	१११	अमात्रस्या	४	८	अम्मय	१०	५
अभ्याख्यान	६	१०	अमात्रास्या	४	८	अम्ल	५	९
अभ्यागम	१८	१०५	अमित्र	१८	११	अम्ललोणिका	१४	१४०
अभ्यागारिक	२१	१०	अमुत्र	२४	८	अम्लप्रेतस	१४	१४१
अभ्यादान			अमृणाल	१८	११	अम्लान	१८	७३
अभ्यात	१	५८		१	१	अम्लिका	१४	४०
अभ्यामर्द	१८	१०				अय	४	२७
अभ्याश	२१	६७	अमृत	{	१० ३	अयन	{	४ १३
अभ्यासादन	१८	११०			१७ २८			११ १५
अभ्युत्थान	१७	३४			१९ ३	अयस्	१९	९८
अभ्युदित	१७	५५			२३ ७६	अय प्रतिमा	२०	३५
अभ्युपगम	५	५	अमृता	{	१४ ५९	अयाचित	१९	३
अभ्युपपत्ति	२२	१३			१४ ८०	अयि	२४	१८
अभ्युष	१९	४७	अमृतांघ्रि	१	८	अयोध	१९	२५
अभ्र	{	२ १	अमोघा	{	१४ ५४	अयोधन	२३	३७
		३ ६			१४ १०६	अर	१	६८
अभ्रक	१९	१००	अघर	{	२ १	अरघट्ट	२५	१८
अभ्रपुष्प	१४	३०			२३ १८१	अरणि	१७	१९
अभ्रसात्तग	१	४९	अघरीष	१९	३०	अरण्य	{	१४ १
अभ्रमु	३	४	अघष्ठ	२०	२			२५ २२
अभ्रमुवल्लभ	१	४९	अघठा	{	१४ ७१	अरण्यानी	१४	१
अभि	१०	१३			१४ ८४	अरति	१६	८६
अभिय	३	८			१८ १४०	अरर	१२	१७
अभ्रेष	१८	२४	अवा	७	१४	अरल	१४	५७
अमत्र	१९	३३	अर्विका	१	३९	अरार्दि	१०	३९
अमर	१	७	अयु	१०	४	अराति	१८	११
अमरावती	१	४८	अनुकृणा	३	११	अराल	२१	७१
अमरर्ष	१	८	अनुज	१४	६१	अरि	१८	१०
अमर्य	७	२६	अनुभूत	३	७	अरित्र	१०	१३
अमरण	२१	३२	अनुप्रेतस	१८	३०	अरिपेद	१४	५०
अमा	२३	२५१	अनुवरण	१०	११			
अमास	१६	४४	अनूत	६	२०	अरिष्ट	{	१२ ८
अमात्य	१८	४	अमर्	१०	४			१४ ३१
			अमर्देह	१०	४१			१४ ६२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अविलंबित	{ १ ६८		अश्व १८	४३	असूया ७	२४
	{ २१ ८३		अश्वकर्णक.	१४	४४	असृग्धरा	... १६	६२
अविस्पष्ट....	६ २१		अश्वत्थ १४	२१	असृज १६	६४
अवीचि ...	९ १		अश्वयुग् ३	२१	असौम्यस्वर.	२१	३७
अवीरा	१६ ११		अश्ववडव....	२५	१६	अस्त....	{ १३ २	
अवेक्षा	२२ २८		अश्वा १८	४६		{ २१ ८७	
अव्यक्त ...	२३ ६२		अश्वाभरण.	२३	४३	अस्तम् २४	१७
अव्यक्तराग.	५ १५		अश्वारोह....	१८	६०	अस्ति २४	१८
अव्यडा	१४ ८६		अश्विन् १	५४	अस्तु २४	१३
अव्यया.	{ १४ ५९		अश्विनी ...	३	२१	अस्त्र १८	८२
	{ १८ १४६		अश्विनीसुत.	१	५४	अस्थि १६	६८
अव्यय	२५ ३४		अश्वीय १८	४८	अस्थिर २१	४३
अव्यवहित.	२१ ६८		अपडक्षिण.	१८	२२	अस्फुटवाच.	२१	३७
अज्ञानाया....	१९ ५४		अष्टापद.	{ १९ ९५			{ ३ ३३	
अज्ञानायिता.	२१ २०			{ २० ४६		अस्त्र....	{ १६ ६४	
अज्ञानि	१ ५०		अष्टीवत् ...	१६	७२		{ १६ ९३	
अज्ञित	२१ १११		असकृत् २४	१		{ २३ १६४	
अज्ञिष्ठी	१६ ११		असती १६	१०	अक्षप १	६२
अज्ञाभ २५ २३		असतीसुत.	१३	२६	अक्षु १६	९३
अज्ञेय २१ ६५		असन	... १४	४४	अखच्छन्द.	२१	१६
अज्ञोक १४ ६४		असमीक्ष्यकारिन्.	२१	१७	अखम १	८
अज्ञोक्रोहिणी	१४ ८५		असार २१	५६	अखर	... २१	३७
अज्ञमर्ग १९ ९२		असि १८	७९	अस्वाध्याय.	१७	५४
अज्ञमज	... १९ १०४		असिकी १६	१८	अहंयु २१	५०
अज्ञमन्	... १३ ४		असित ५	१४	अहंकार ७	२२
अज्ञमंत	... १९ २९		असिधावक.	२०	७	अहंकारवान्.	२१	५०
अज्ञमपुष्पा....	१४ १२२		असिधेनुका.	१८	९२	अहन् ४	२
अज्ञमरी १६ ५६		असिपुत्री ...	१८	९२	अहमहमिका.	१८	१०१
अज्ञमसार.	१९ ९८		असिहेति....	१८	७०	अहंपूर्विका.	१८	१००
अज्ञात	१ ६९		असु	... १८	११९	अहंमति ५	७
अज्ञि १८ ९३		असुधारण.	१८	११९	अहर्पति ३	३०
अज्ञु	... १६ ९३		असुर १	१२	अहर्मुख ४	२
अज्ञील ६ १९		असूक्ष्ण ७	२३	अहस्कर ३	२८

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
अहह	२३	२५८	आक्षेप	६	१३	आजीव	१९	१
अहार्य	१३	१	आखण्डक	१	४७	आज	९	३
अहि	{ ८ २३	६ २३९	आरु	१५	१२	आज्ञा	१८	२६
अहित	. १८	११	आखुमुञ्ज	१५	६	आज्य	११	५२
अहितुष्टिक	८	११	आखेट	. २०	२३	आत्रि	१५	२५
अहिभय	१८	३०	आख्या	६	८	आटवर	{ १८ २३	{ १०८ १६८
अहिमुञ्ज	. २३	३०	आख्यात.	२१	१०७	आदि	१५	२५
अदेव	. १४	१०१	आख्यायिका	६	५	आटक	१९	८८
अहो	२४	९	आगतु	१७	३४	आटकिक	१९	१०
अहोरात्र	. ४	१२	आमम	१४	५	आडकी	{ १४ २५	{ १३० ७
अहाय	२४	२	आगम्	{ १८ २३	{ २६ २३१	आद्य	. २१	१०
आ			आम्	५	५	माणवीन	१९	७
आ (आ)	२३	२४१	आमीध	१७	१७	मातक	२३	१०
आ	. २४	१६	आमदायणिक	४	१४	मातचन	२३	११५
आकापित	२१	८७	आमदायणी	३	२३	मततायिन्	२१	४४
आकर .	१३	७	आङ्	२३	२४०	आतप	{ ३ २५	{ ३४ २०
आकर्ष	२३	२२२	आंगिक	७	१६	आतपत्र	. १८	३२
आकर्षण	. १६	९९	आगिरस	३	२४	आतर	१०	११
आकार	{ २२ २३	{ १५ १६२	आचमन	१७	३६	आताभिन्	१५	२१
आकारगुति	७	३४	आचाम	१९	४९	आतिथेय	१७	३३
आकारणा	६	८	आचार्य	१७	७	आतिथ्य	१७	३३
आकाश	२	२	अचार्या	१६	१४	आतर	१६	५८
आकीर्ण	२१	८५	आचार्यानी	१६	१५	आतोद्य	॥	५
आकुल	२१	७२	आचित	१९	८७	आत्तर्ग	२१	४०
आकृति	२३	१६२	आच्छादन	{ ३ १६	{ ९३ ११५	अ रमगुता	१४	८६
आक्रब	२३	९०	आच्छुरितक	७	३४	आरमघोष	१५	२०
आमीढ	१४	३	आच्छेदन	२०	२३	आत्मज	१६	२७
आमोश	६	१५	आजक	१९	७७	आत्मन्	{ ४ २३	{ २९ १०९
आमोशन	२२	६	आजानय	१८	४४	आत्मभू	{ १ १	{ १६ २७
आक्षाणा	४	१५	आजे	{ १४ २३	{ १०६ ३०			
आक्षारित	२१	४३						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
आत्मभरि.	२१	२१	आनाय्य....	१७	२१	आभीरपक्षी.	१२	२०
आत्रेयी	१६	२०	आन ह . .	१६	५५	आभीरी	१६	१३
आथर्वण	२२	४३	आनुपूर्वी.	१७	३७	आभील	९	४
आदर्श	१६	१४०	आधसिक.	१९	२८	आभोग	१६	१३७
आदि	२१	८०	आन्वीक्षिकी.	६	५	आमगधिन्.	५	१२
आदिकरण.	४	२८	आपक्व ...	१९	४७	आमनस्य.	९	३
आदितेय....	१	८	आपगा	१०	३०	आमय	१६	५१
आदित्य. {	१	८	आपण ...	१२	२	आमयाधिन्.	१६	५८
	१	१०	आपगिक.	१९	७८	आमलक.	२५	३३
	३	२८	आपत्प्राप्त.	२१	४२	आमलकी.	१४	५७
आदिनव.	२२	२९	आपद्	१८	८२	आमिक्षा....	१७	२३
आदृत	२३	८५	आपन्न ...	२१	४२	आमिष. {	१६	६३
आद्य	२१	८०	आपन्नपत्त्या.	१३	२२		२३	२२४
आद्यमापक.	१९	८५	आपमिष्यक.	१९	४	आमिषाशिन्.	३१	१९
आद्यून	२१	२१	आपन	२०	४३	आमुरु	१८	६५
आद्योत ...	२३	३	आपीट	१६	१३६	आमोद. {	४	२४
आधार	१०	२९	आपीन	१९	७३		५	१०
आधारण.	१८	५९	आपिपिक {	१९	२८		२३	९१
आधि. {	७	२८		२२	४०	अमोदिन्	५	११
	२३	९७	आप्त	१८	१३	आम्राय. {	६	३
आवृत्त ...	२१	८७	आप्य	१०	५		२२	७
आध्यान....	७	२९	आप्यायन.	२३	११५	आम्र	१४	३३
आनक. {	७	६	आप्रच्छन्न	२२	७	आम्रातक.	१४	२७
	२३	३	आप्रपद	१६	११९	आम्रेडित.	६	१२
आनकदेदुभि.	१	२३	आप्रपदीन.	१६	११९	आयत	२१	६९
आनत	२१	७०	अल्ला	१६	१२१	आयतन ...	१२	७
आनद्ध ...	७	४	आप्लवत्र तन्	१७	४३	आयति. {	१८	२९
आनन	१६	८९	आप्लव	१६	१२१		२३	७२
आनद	४	२५	आवव ...	१९	१३	आयत्त	२१	१६
आनद्यु	४	२५	आभाण	१६	१०१	अ.याम ...	१६	११४
आनदन.	२२	७	अभाषण ...	६	१५	अ.युध	१८	८२
आनर्त	२३	६४	आभास्व	१	१०	आयुधिक.	१८	६७
आनाय	१०	१६	आभीर ...	१९	५७	आयुधीय. ..	१८	६७
						अ.युग्मन.	२१	६

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
आयुस्	१८	१२०	जालान	१८	४१	आशय	२२	२०
आये घन	१८	१०३	जालाप	६	१५	आशर	१	६२
आयुट	१९	९७	जालि	{ ११ २१		आशा	{ ३ १	
आरगध	१४	२३		{ १४ ४			{ २३ २१६	
आरनालक	१९	३९		{ १५ १०		आशितगरीन	१९	५९
आरति	२२	३८	आलैय	७	५	आशीविष	८	७
आरभ	२२	२६	आली	२३	१९८	आशीस्	२३	२०९
आर	६	२३	आलीढ	१८	८५	आशु	{ १ ६८	
आरा	२०	३५	आल	१९	३१		{ १९ १५	
आरात	२३	२४३	आलोय	२३	३	आशुग	{ १ ६५	
आराधन	२०	१२५	आलोवन	२०	३१		{ १८ ८५	
आराम	१८	२	आरण	१९	३३		{ २३ १९	
आरालिक	१९	२८	आरत	१०	६	आशुशुक्षणि	१	५८
आराव	६	२३	आरलि	१४	८	आश्वर्य	७	१९
आरेवत	१४	२८	आरसिन	१९	२३	आश्रम	१७	४
आरोग्य	१६	१०	आराप	१०	२९	आश्रय	{ १८ १८	
आरोह	{ १६ ११४		आरापत	१६	१०७		{ २२ ११	
	{ २३ २३९		आराल	१०	२९	आश्रयाश	१	५७
आरोहण	१०	१८	आमिन्न	१४	६७	आश्रव	{ ५ ५	
आतगल	१४	७४	आमिन्न	{ २१ ७१			{ २१ २८	
आर्तव	१६	२१	आमिन्न	{ २१ ८७		आश्रुत	२१	१०८
आद्	२१	१०५	आमिन्न	२०	३६	आश्व	१८	४८
आर्द्ध	१९	३७	आमिल	१०	१४	आश्वर्य	१४	१८
अ य	{ ७ १४		आमिन्न	२१	९	आश्वयुज	४	१७
	{ १७ ३		आमिन्न	२४	१२	आश्विन	४	१७
आर्या	१	४०	आमिन्न	७	१०	आश्विनेय	१	५४
आर्यात	११	८	अमुत्त	७	१२	आश्वीन	१८	४७
आपभ्य	१९	६२	आश्वर	१७	३७	आपाट	{ ४ १६	
आल	१९	१०३	आश्वत	२१	९०		{ १७ ४५	
आलभ	१८	११५	आश्वी	१४	१३७	आसक्त	२१	९
आलय	१२	५	आश्विन	१२	७	आसन	{ १६ १३८	
आलयाल	१०	२०	आश्विशर	१७	३४		{ १८ १८	
आलय	२०	१८	आश्विष्ट	२१	२७		{ १८ ३९	
			आश्वमु	२१	२७	आसना	२२	२१

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
आसदी	२५	९	आह्वान	६	८	इन्द्र....	{ १ ४४	
आसन्न	२१	६६	इ.				{ ३ २	
आसव	२०	४२	इक्षु	१४	१६३	इन्द्र....	१४	४५
आसादित.	२१	१०४		१४	९८	इन्द्रयव	१४	६७
आसार. { ३ ११			इक्षुगंधा. { १४ १०४			इन्द्रवारुणी.	१४	१५६
	{ १८ ९६			{ १४ ११०		इन्द्रसरस	१४	६८
आसुरी	१९	१९		{ १४ १६३		इन्द्राणिका... ..	१४	६८
आसेचनक.	२१	५३	इक्षुर	१४	१०४	इन्द्राणी	१	४८
आस्कंदन.	१८	१०४	इक्ष्वाकु	१४	१५६	इन्द्रायुध	३	१०
आस्कंदित.	१८	४८	इंग....	{ २१ ७४		इन्द्रारि ...	१	१२
आस्तरण.	१८	४२		{ २२ १५		इन्द्रावरज	१	२०
आस्था	२३	८८	इंगित ...	२२	१५	इन्द्रिय. { ५ ८		
आस्थान.	१७	१५	इंगुदी ...	१४	४६		{ १६ ६२	
आस्थानी.	१७	१५	इच्छा	७	२७	इन्द्रियार्थ.	५	८
आस्पद	३३	९४	इच्छावती.	१६	९	इंधन	१४	१३
आस्फोट.	१४	८०	इज्याशील.	१७	८	इभ ...	१८	३५
आस्फोटनी.	२०	३४	इट्चर	१९	६२	इभ्य	२१	१०
आस्फोटा. { १४ ७०			इडा	२३	४२	इरंमद	३	१०
	{ १४ १०४							
आस्य	१६	८९	इतर....	{ २० १६		इरा....	{ २० ४०	
आस्या	२२	२१		{ २१ ८२			{ २३ १७६	
आस्यथ	२२	२९		{ २३ १९२		इला	२३	४२
आहत. { ६ २१			इतरेद्युस्	२४	२१	इल्वलाः	३	२३
	{ २१ ८८		इति	२३	२४६	इव ...	२४	९
आहव	१८	१०५	इतिह	१७	१२	इष	४	१७
आहवनीय.	१७	१९	इतिहास	६	४	इषु	१८	८७
आहार	१९	५६	इत्तरी	१६	१०	इषुधि	१८	८८
आहार्य	१०	२६	इदानीम्	२४	२३	इष्ट....	{ १७ २८	
आहितलक्षण.	२१	१०	इध्म	१४	१३		{ १९ ५७	
आहेय	८	९	इन	२३	१११	इष्टकापथ	१४	१६५
आहो ...	२४	५	इंदिरा	१	२९	इष्टगंध	५	११
आहोपुष्पिका.	१८	१०१	इंदीवर	१०	३७	इष्टाद्योयुक्त.	२१	९
आह्वय	६	७	इंदीवरी	१४	१००	इष्टि	२३	३९
आह्वा	६	८	इंदु	३	१३	इष्ट्वास	१८	८३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
ईक्षण	{ १६ २३	९३ ३१	उग्र .	{ १ ७	३४ २०	उत्कलिका	७	२९
ईक्षणिका	१६	२०	उग्रगवा	{ १४ १४	१०२ १४५	उत्कार	२२	३६
ईदित	२१	११०	उच्च	२१	७०	उत्क्रोष	१५	२३
ईति	२३	६८	उच्चटा	१४	१६०	उत्त	२१	१०५
ईरित	२१	८७	उच्चठ	२१	८३	उत्तंस	२३	२२८
ईर्म	१६	५४	उच्चार	१६	६७	उत्तप्त	१६	६३
ईर्याक	१४	१५५	उच्चापच	२१	८३	उत्तम	२१	५७
ईर्या	७	२४	उच्चैः अवस्	१	४८	उत्तमर्ण	१९	५
ईलित	२१	१०९	उच्चैर्धुष्ट	६	१२	उत्तमा	१६	४
ईली	१८	९१	उच्चैस्	२४	१७	उत्तमान	१६	९५
ईश	{ १ ३	३२ ३	उच्चैः	१४	१०	उत्तर	{ ६ २३	१० १९०
ईशान	१	३२	उच्चैः	१४	१०	उत्तरा	३	२
ईशित	२१	१०	उच्चैः	१४	१०	उत्तरासग	१६	११७
ईश्वर	{ १ २१	२२ १०	उच्चैः	१४	१०	उत्तरीय	१६	११८
ईश्वरी	१	३८	उच्चैः	१४	१०	उत्तरोद्युस्	२४	२०
ईषत्	२४	८	उच्चैः	१४	१०	उत्तान	१०	१५
ईषरपादु	५	११	उच्चैः	१४	१०	उत्तानशय	१६	४१
ईषा	१९	१४	उच्चैः	१४	१०	उत्तान	२३	११८
ईषिका	{ १८ २०	३८ ३३	उच्चैः	१४	१०	उत्तियत	२३	८५
ईहा	७	२७	उच्चैः	१४	१०	उत्पतित	१६	२९
ईहामृग	१५	७	उच्चैः	१४	१०	उत्पत्ति	४	३०
उ	२४	१८	उच्चैः	१४	१०	उत्पत्तिष्णु	२१	२९
उक्त	२१	१०७	उच्चैः	१४	१०	उत्पन्न	२३	८५
उत्ति	६	१	उच्चैः	१४	१०	उत्पल	{ १० १४	३७ १२६
उत्तप	२५	३०	उच्चैः	१४	१०	उत्पलशारिया	१४	११२
उक्षम्	१९	५९	उच्चैः	१४	१०	उत्पात	१८	१०९
उद्या	१९	३१	उच्चैः	१४	१०	उत्फल	१४	७
उद्य	१९	४५	उच्चैः	१४	१०	उत्स	१३	५
			उच्चैः	१४	१०	उत्सर्जन	१७	२९
			उच्चैः	१४	१०	उत्स	{ ७ २३	३८ २०९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
उत्सादन ...	१६	१२१	उदीच्य.	{ ११ ७		उद्यत	२१	८९
उत्साह.	{ ७ २९			{ १४ १२२		उद्यम	२२	११
	{ १८ १९		उदुबर.	{ १४ २२		उद्यान.	{ १४ ३	
उत्साहन.	२३	११५		{ १९ ९७			{ २३ ११७	
उत्साहवर्धन.	७	१८	उद्वारपणी.	१४	१४४	उद्युक्त	२१	९
उत्सुक	२१	९	उद्वखल	१९	२५	उद्योग	२५	३३
उत्सृष्ट	२१	१०७	उद्गत	२१	९७	उद्ग	१०	२०
उत्सेध.	{ १४ १०		उद्गम-नीय.	१७	११२	उद्गर्तन....	१६	१२१
	{ २३ ९६		उद्गाढ	१	७०	उद्गन्त.	{ १८ ३६	
उदक्	२४	२३	उद्गाढ	१७	१७		{ २१ ९७	
उदक.	{ १० ४		उद्गार	२२	३७	उद्गातन	१८	११५
	{ २५ २२		उद्गीथ	२५	१९	उद्गाह ...	१७	५७
उदक्या	१६	२१	उद्गूर्ण ...	२१	८९	उद्गेग.	{ १४ १६९	
उदम	२१	७०	उद्ग्राह	२२	३७		{ २२ १२	
उदज	२२	३९	उद्घ	४	२७	उदुक् ...	१५	१२
उदादि	१०	१	उद्घन	२२	३५	उन्नत	२१	७०
उदत	६	७	उद्घाटन.	२०	२७	उन्नतानत	२१	६९
उदन्या	१९	५५	उद्घात	२२	२६	उन्नद्ध	२३	८५
उदन्यन् ...	१०	१	उद्धान	१८	२६	उन्नय	२२	१२
उदपान	१०	२६	उद्दाल	१४	३४	उन्नाय	२२	१२
उदय	१३	२	उद्दित ...	२१	९५	उन्मत्त.	{ १४ ७७	
उदर	१६	७७	उद्दिव ...	२१	९५		{ १६ ६०	
उदर्क	१८	२९	उद्दिव ...	७	३८	उन्मदिणु.	२१	२३
उदासित.	१२	४	उद्दिव ...	७	३८	उन्मनस्	२१	८
उदन्वित्	१९	५३	उद्दिव ...	७	३८	उन्माथ { १८ ११५		
उदात्त ...	६	४	उद्दिव ...	२२	९६		{ २० २६	
उदान	१	६७	उद्धान ...	१९	२९	उन्माद ...	७	२६
उदार.	{ २१ ८		उद्धार ...	१९	४	उन्मादवन.	१६	६०
	{ २३ १९२		उद्धार ...	२१	९०	उपाकण्ठ	२१	६७
उदासीन.	१८	१०	उद्धार ...	४	३०	उपाकारिका.	१२	१०
उदाहार.	६	९	उद्धार ...	२१	५१	उपाकार्या.	१२	१०
उदित	२१	१०७	उद्धार ...	२१	५१	उपाकुचिका { १४ १२५		
उदीप्ति	२	२	उद्धार ...	२१	५१		{ १९ ३७	
			उद्धार ...	२२	१२	उपभुक्त्या.	१८	९६

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
उपक्रम	{ १७ १३ २२ २६ २३ १३९		उपमात्र	२३	१७६	उपस्पर्श	१७	३६
उपक्रोश	६	१३	उपमान	२०	३६	उपहार	{ १८ २८ २३ १९५	
उपगत	२१	१०९	उपयम	१७	५६	उपहर	२३	१८३
उपगृहन	२०	३०	उपयाम	१७	५७	उपांशु	१८	२३
उपग्रह	१८	११९	उपरक्त	{ ४ १० २१ ४३		उपाकरण	१७	४१
उपग्राह्य	१८	२८	उपरक्षण	१८	३३	उपाकृत	१७	२५
उपग्र	२०	१९	उपराग	४	९	उपाख्य	{ १७ ३७ २२ ३३	
उपश्रित	२१	१०२	उपराम	२०	३८	उपादान	{ २२ १६ २३ २२४	
उपचाध्य	१७	२०	उपरि	२३	१८३	उपाधि	{ ७ २८ २१ १२	
उपक्षित	२१	८९	उपल	१३	४	उपाध्याय	१७	७
उपक्षिन्ना	१४	८७	उपलब्धार्थी	६	५	उपाध्याया	१६	१४
उपजाप	१८	२१	उपलब्धि	५	१	उपाध्यायानी	१६	१५
उपज्ञा	१७	१३	उपलभ	२०	२७	उपाध्यायी	{ १६ १४ १६ १५	
उपतप्त	२२	१४	उपला	२३	११९	उपानह	२०	३१
उपताप	१६	५१	उपवन	१४	२	उपायचतुष्टय	१८	२०
उपर्यका	१३	७	उपवर्तन	११	८	उपायन	१८	७८
उपदा	१८	२८	उपग्रह	१६	१३७	उपालभ	६	१४
उपधा	{ १८ २१ ३ १३९		उपवास	१७	३८	उपावृत्त	१८	५०
उपधान	१६	१३७	उपविषा	१४	९९	उपासग	१८	८८
उपधि	७	३०	उपजीत	१७	५०	उपासन	१८	८६
उपनाह	७	७	उपशस्त्र	१०	२०	उपासना	१७	३५
उपनिधि	१९	८१	उपशाय	२२	३०	उपासित	२१	१०२
उपनिषद्	२३	९३	उपश्रुत	२१	१०९	उपाहित	{ ४ १० २१ ९२	
उपनिष्कर	११	१८	उपसंयाम	१६	११७	उपेद	१	२०
उपन्यास	६	९	उपसपन्न	{ १७ २६ १९ ४१		उपोदिका	१४	१५७
उपपाति	१६	२५	उपसर	२२	२५	उपोद्गात	६	९
उपग्रह	१६	१३७	उपसर्ग	१८	१०९	उत्तट्ट	१९	८
उपभृत्	१७	२५	उपसर्जन	२१	६०			
उगभोग	२२	२०	उपसर्ग्या	१९	७०			
उपमा	{ २० ३६ २० २८		उपसूर्यक	३	३२			
			उपस्कर	१९	३५			
			उपस्थ	१६	७५			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
उभयद्युस्.	२२	२१	उल्लाघ	१६ ५७	ऊषपर्वन् ...	१६	७२
उभयेद्युस्.	२४	२१	उल्लोच	१६ १२०	ऊर्ज	...	४ १८
उमा.	{ १ ३८		उल्लोल	...	१० ६	ऊर्जस्वल ...	१८	७५
	{ १९ २०		उशनस्	३ २५	ऊर्जसिन्.	१८	७५
उमापति	१	३६	उशीर	१४ १६४	ऊर्णनाभ	१५	१३
उम्य	१९ ७	उषणा	१४ ९७	ऊर्णा	...	२३ ५०
उरःसूत्रिका.	१६	१०४	उषर्धुघ	१ ५७	ऊर्णायु.	{ १९ ७६	
उरग	८ ८	उपस्	४ २		{ १९ १०७	
उरण	१९ ७६	उषा	२४ १८	ऊर्ध्वक	७ ५
उरणाख्य....	१४	१४७	उषापति	१ २८	ऊर्ध्वजानु.	१६	४७
उरभ्र	१९ ७६	उषित	२१ ९९	ऊर्ध्वज्ञ	१६ ४७
उररी	...	२३ २५५	उष्ट्र	१९ ७५	ऊर्मि.	{ १० ५	
उररीकृत	२१	१०८		{ ४ १९			{ २५ ३८	
उरश्छद	१८ ६४	उष्ण.	{ २० १९		ऊर्मिका	१६ १०७
उरस्	१६ ७८		{ २५ २२		ऊर्मिमत्	२१ ७१
उरसिल	१८ ७६	उष्णरश्मि.	३	२९	ऊष	११ ४
उरस्य	१६ २८	उष्णिका	...	१९ ५०	ऊषण	१९ ३६
उरस्वान्	...	१८ ७६	उष्णीष	२३ २२१	ऊषर	११ ५
उरु	२१ ६१	उष्णोपगम.	४	१९	ऊषवत्	११ ५
उरुवृक्	१४ ५१	उष्मक	४ १८	ऊष्मागम....	४	१९
उर्वरा	११ ४	उस्त्र	३ ३३	ऊह	५ ३
उर्वशी	...	१ ५५	उस्त्रा	१९ ६६	ऊह.		
उर्वी	...	११ ३	ऊ.			ऊक्थ	१९ ९०
उर्वीष	१४ १५५	ऊत	२१ १०१		{ ३ २१	
उलप	१४ ९	ऊधस्	१९ ७३	ऊक्ष.	{ १४ ५७	
उलूक	१५ १५	ऊन	२३ १२८		{ १५ ४	
उलूखल	...	१९ २५	ऊम्	...	२४ १८	ऊक्षगन्धा.	१४	१३७
उलूखलक.	१४	३४	ऊररी	२३ २५५	ऊक्षगन्धिका.	१४	११०
उलूपिन्	...	१० १८	ऊरव्य	१९ १	ऊच	६ ३
उल्का	२५ ८	ऊरी	...	२३ २५५	ऊजीष	१९ ३२
उल्मुक	१९ ३०	ऊरीकृत	२१ १०८	ऊजु	२१ ७२
उल्ब	१६ ३८	ऊरु	१६ ७३	ऊजुरोहित.	३	१०
उल्बण	२१ ८१	ऊरज	१९ १	ऊण	...	१९ ३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
अत	{ ६ २२		एकधृतिण	१९	६५	एलावाटुक	१४	१२१
अतीया	{ १९ २		एकपदी	११	१५		{ २३ २५१	
	२२ ३२		एकापिग	१	७३	एवम्	{ २४ ९	
अतु	{ ४ १३		एकयष्टिका	१६	१०६		{ २४ १२	
	{ ४ २०		एकसर्ग	२१	८०		{ २४ १५	
अतुमती	{ २३ ६१		एकहायनी	१९	६८		{ २४ १६	
अते	{ १६ २१		एकाकिन्	२१	८२	एवणिक	२०	३२
अतिवज्	{ २४ ३		एकाम	{ २१ ७९		ये		
	१७ १७			{ २३ १९०		एकागारिक	२०	२४
अद्व	१९ २३		एकान्य	७१	८०	ऐगुद	१४	१८
अद्वि	१८ ११२		एकांत	१	७०	ऐण	१५	८
अधु	१ ८		एकादा	१९	६८	ऐण्य	१५	८
अधुक्षिन्	१ ४७		एकायन	२१	७९	एतिहा	१७	१२
अश्य	१५ १०		एकायनगत	२१	७०	ऐदियक	७१	७९
	{ ७ १		एकावली	१६	१०६	एराण	१	४९
अषभ	{ १४ ११६		एकाठील	१६	८१		{ १ ४९	
	{ १९ ५९		एकाठीला	१६	८५	ऐराणत	{ ३ ३	
	{ २१ ४३		एड	१६	४८		{ १४ ३८	
अपि	१७ ४३		एडक	१९	७६	ऐरावती	३	९
अप्यकेतु	१ २८		एडगज	१४	१४७	ऐलविल	१	७३
अप्यमोक्ता	{ १४ ८७		एडमूक	२१	३८	ऐलेय	१४	१२१
	{ १४ १०१		एडूरु	१२	४	ऐश्वर्य	१	३८
ए			एण	१२	४	ऐयमस्	२४	२०
	{ २१ ८२		एण	१५	१०	ओ		
एरु	{ २१ ८२		एत	५	१७	ओरस्	२३	२३४
	{ २३ १६		एतर्हि	२४	२३	ओघ	{ ७ ९	
एकक	२१ ८२		एघ	१४	१३		{ १५ ३९	
एकगुघ	१७ १२		एघस्	१४	१३		{ २३ २७	
एकतान	२१ ७९		एघा	२२	१०	ओंकार	६	४
एकताल	७ ३		एधित	२१	७६	ओजस्	२३	२३४
एकदत	१ ४१		एनस्	४	२३	ओंडूगुण	१४	७६
एकदा	{ २४ २२		एल	१४	५१	ओष्ठ	१५	६
एकधुर	१९ ६५		एला	१८	१२५	ओदन	१९	४८
एकधुरावह	१९ ६५		एलापणी	१४	१४०	ओम्	२४	१२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
ओष ...	२२	९	कक्ष्या.	{ १८ ४२		कटिप्रोथ ...	१६	७५
ओषधी	१४	६		{ २३ १५८		कटि	२५	३८
ओषधीश.	३	१४	कक ...	१५	१६		{ ५ ९	
ओष्ठ ...	१६	९०	ककटक	१८	६४	कटु.	{ १४ ८५	
औ.			कंकण	१६	१०८		{ २३ ३५	
औक्षक	१९	६०	कंकतिका.	१६	१३९	कटुतुंबी	१४	१५६
औचित्ति	२५	३९	कंकाल ...	१६	६९	कटुगहिणी.	१४	८५
औचित्य ...	२५	३९	ककोलक.	१६	१३०	कटफल	१४	४०
औत्तानपादि	३	२०	कगु ...	१९	२०	कटग	१४	५६
औत्सुक्य.	२३	२३०	कच . .	१६	९५	कठिजर	१४	७९
औदनिक	१९	२८	कच्चर	२१	५५	कठिन	२१	७६
औदरिक ...	२१	२१	काञ्चित्	२४	१४	कठिष्ठक ...	१४	१५४
औपगवक.	२२	४०	कच्छ.	{ ११ १०		कठार	२१	७६
औषयिक.	१८	२४		{ १४ १२८		कडंगर	१९	२२
औमीन ...	१९	७	कच्छप	१०	२१	कडंब ...	१९	३५
औरध्रक	१९	७७	कच्छर्पा	२३	१३२	कडार	५	१६
औरस	१६	२८	कच्छ	१६	५३	कण.	{ २१ ६२	
और्ध्वदेहिक.	१७	३०	कच्छुर	१६	५८		{ २३ ४६	
और्ध्व ...	१	५९	कच्छुरा	१४	९२	कणा.	{ १८ ९६	
औशीर	२३	१८५	कचुक.	{ ८ ९			{ १९ ३६	
औषय.	{ १४ १३५			{ १८ ६३		काणिका.	{ १४ ६६	
	{ १६ ५०		कचुकिन्.	१८	८		{ २४ ८	
औटक	१९	७७		{ १६ ७४		काणिश ...	१९	२१
क.			कट.	{ १८ ३७		कंटक	२५	३२
क ...	२३	५		{ १९ २६		कंटकारिका.	१४	९३
कम	१९	३२		{ २३ ३४		कंटकिफल.	१४	६१
कसारान्ति.	१	२१	कटुक.	{ १३ ५		कंठ	१६	८८
ककुद	२३	९२		{ १६ १०७		कंठभूषा	१६	१०४
ककुन्नती	१६	७४	कटुभी	१८	१५०	कटुरा	१४	८६
ककुम्	३	१	कटुभा.	{ १८ ८५		कटु ...	१६	५३
ककुम्भ.	{ ७ ७			{ १४ १५३		कट्टया	१६	५३
	{ १८ ४५		कटाक्ष	१६	९४	कंडोल	१९	२६
कक.	{ १६ ७९		कटाह	२५	२१	कंडोलव्रीणा.	२०	३२
	{ २३ २००		कटि	१६	५४			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
करंड	२५	१८	कर्करी	१९	३१	कर्मण्या	२०	३८
करतोया	१०	३३	कर्करेडु	१५	१९	कर्मदिन्	१७	४२
करपत्र	२०	३५	कर्कश. {	१४	१४६	कर्मशील ...	२१	१८
करभ. {	१६	८१	कर्कश. {	२१	७६	कर्मशूर	२१	१८
करभूषण	१६	७५	कर्कश. {	२३	२१७	कर्मसचिव. १८	४	
करमर्दक	१४	६७	कर्काव	१४	१५५	कर्मार	१४	१६०
करंभ	१९	४८	कर्चूर	१४	१५४	कर्मद्रिय	५	४
कररुह	१६	८३	कर्चूरक ...	१४	१३५	कर्ष	१९	८६
करवाल	१८	८९	कर्ण	१६	९४	कर्षक	१९	६
करवालिका. १८	९१		कर्णजलौकम्. १५	१३		कर्षफल	१४	५८
करवीर	१४	७७	कर्णधार	१०	१२	कर्ष	२३	२२३
करशाखा. १६	८२		कर्णपूर	२३	२२८	कल	७	२
करशीकर. १८	३७		कर्णवेष्टन ...	१६	१०३	कलकल	६	२५
करहाट	१०	४३	कर्णिका. {	१६	१०३	कलंक. {	३	१७
करहाट	१४	५२	कर्णिका. {	२३	१५	कलंक. {	२३	४
कराल	२३	२०५	कर्णिकार ..	१४	६०	कलत्र	२३	१७८
करिगर्जित. १८	१०७		कर्णिरथ	१८	५२	कलघात	२३	७६
करिगी	१८	३६	कर्णेजप	२१	४७	कलंव. {	१८	८७
करिन्	१८	३४	कर्तरी ...	२०	३४	कलंव. {	१९	३५
करिपिप्पली. १४	९७		कर्दम	१०	९	कलभ	१८	३५
करिशावक. १८	३५		कर्पट. {	१६	११५	कलम	१९	२४
करीर. {	१४	७७	कर्पट. {	२५	३३	कलंबी ...	१४	१५७
करीप	१९	५१	कर्पर	१६	६८	कलरव ...	१५	१४
करुण	७	१७	कर्पराश	२३	१७५	कलल	१६	३८
करुणा	७	१८	कर्परी	१९	१०१	कलविक	१५	१८
कोरेडु	१५	१९	कर्पूर	१६	१३०	कलश	१९	३१
कोरेणु	२३	५२	कर्षुर. {	१	६३	कलशी	१४	९३
कोरोटि	१६	६९	कर्षुर. {	५	१७	कलहंस	१५	२३
कर्क	१८	४६	कर्षुर. {	१९	९४	कलह	१८	१०४
कर्कटरु ...	१०	२१	कर्मकर. {	२०	१५	कला. {	३	१५
कर्कटी	१८	१५५	कर्मकर. {	२१	१९	कला. {	४	११
कर्क्यू. {	१४	३६	कर्मकार	२१	१९	कला. {	२३	१९८
कर्क्यू. {	२५	३८	कर्मक्षम ...	२१	१८	कलाद	२०	८
			कर्मठ	२१	१८	कलानिधि. ३	१४	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
कलाप	२३	१२९	कणिका	१८	४९	काकुद	१६	९१
कलाप	१९	१६	कविय	२५	३५	काकेंदु	१४	३९
कालि	{ १८ १०५		कवोष्ण	३	३५	काकोदुवरिका	१४	६१
	{ २३ १९४		कन्य	१७	२४	काकोदर	८	७
कलिका	१४	१६	कशा	२०	३१	काकोल	{ ८ १०	
कलिंग	{ १४ ६७		कशार्ह	२१	४४		{ १५ २१	
	{ १५ १६		काशिपु	२३	१३०	काक्षा	७	२७
कलिद्रुम	१४	५८	कशेव	२५	१३	काक्षी	१४	१३१
कलिमारक	१४	४८	कशेवका	१६	६९		{ १९ ९९	
कलिल	२१	८५	कश्मल	१८	१०९	काच	{ २० ३०	
कलुष	{ ४ २३			{ १८ ४७			{ २३ २८	
	{ १० १४		कश्य	{ २० ४०		काचस्थाली	१४	५४
कलेवर	१६	७०		{ २१ ४४		काचित	२१	८९
कलरु	२३	१४	कष	२०	३२	काचिन	१९	९५
	{ ४ २१			{ ५ ९		काचनाह्वय	१४	६५
	{ ४ २२		कषाय	{ २३ ११०		काचनी	१९	४१
कल्का	{ १७ ४०			{ ९ ४		काची	१६	१०८
	{ १८ २४		कष्ट	{ २३ ३९		काजिरु	१९	३९
कल्पना	१८	४३	कस्तूरी	१६	१२९	काट	२३	४३
कल्पवृक्ष	१	५३	कह	१५	२२	काटपृष्ठ	१८	६७
कल्पित	४	२०	काश्यताल	७	४	काटित	१८	६९
कल्मष	४	२३	काक	१५	२०	काटार	१८	६९
कल्माष	५	१७	काकचिन्धी	१४	९८	काटिष्ठ	१४	१०४
	{ ४ २		काकतिदुक	१४	३९	कातर	२१	२६
कल्प	{ १६ ५७		काकनासिका	१४	११८	कात्यायनी	{ १ ३८	
	{ २३ १५९		काकपक्ष	१६	९६		{ १६ १७	
कल्या	६	१८	काकपीलुग	१४	३९	कादव	१५	२३
कल्याण	४	२५	काकमाची	१४	१५१	कादवरी	२०	४०
कलील	१०	६	काकमुदा	१४	११३	कादबिनी	३	८
कल्हार	१०	३६	काकलो	७	२	कादोय	८	४
कलत्र	१८	६४	काकानी	१४	११८	कानन	१४	१
कल्ल	१९	५४	काकरीजी	२५	९	कानीन	१०	२४
कनि	{ ३ २५		काकु	५	१२	कात	२१	५२
	{ १७ ५							

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कातलक	१४	१२८	काय.	{ १६ ७१		कार्षिक	१९	८८
काता	१६	३		{ १७ ५१			{ १ ६२	
कांतार. {	११ १७		कायस्था	१४ ५९		काल. {	४ १	
	{ २३ १७२		कारण	४ २८			{ ५ १४	
कांतारक ...	१४ १६३		कारणा	९ ३			{ २३ १९४	
कांतार्थिनी. १६	१०		कारणिक. २१	७		कालक	१६ ४९	
कांति. {	३ १७		कारंढव	१५ ३४		कालकठक. १५	२१	
	{ २२ ८		कारंभा . .	१४ ५६		कालकूट ...	८ १०	
कांदविक. १९	२८			{ १४ १११		कालखंड	१६ ६६	
कांदिशीक. २१	४२		कास्वी. {	१४ १५२		कालधर्म	१८ ११६	
कापथ	११ १६			{ १९ ३७		कालघृष्ट	१८ ८३	
कापोत. {	१५ ४३			{ १९ ४०		कालमेषिका {	१४ ९०	
	{ १९ १०९		कास्वेल	१४ १५४			{ १४ १०९	
कापोर्ताजन. १९	१००		कासा	१८ ११९		कालमेषी	१४ ९६	
	{ १ २६		कारिका	२३ १५		कालशेष	१९ ५३	
काम. {	७ २८		कारीष	२२ ४३		कालसूत्र. ९	२	
	{ १९ ५७		काव	२० ५		कालस्कंध. {	१४ ३८	
	{ २३ १३८		कारणिक. २१	१५			{ १४ ६८	
कामंगामिन्. १८	७६		कारण्य	७ १८			{ १४ ९४	
कामन	२१ २४		कारोत्तर	२० ४३		काला. {	१४ १०९	
कामपाळ. १	२४		कार्तस्वर	१९ ९५			{ १९ ३७	
कामम्	२४ १३		कार्त्तितिक. १८	१४		कालागृह	१६ १२७	
कामयित	२१ २४		कार्तिक ...	४ १७		कालानुसार्य {	१४ १२२	
कामिनी. {	१६ ३		कार्तिकिक. ४	१८			{ १६ १२६	
	{ २३ ११२		कार्तिकेय. १	४१		कालायस. १९	९८	
कामुक	२१ २३		कारस्त्र्य	२३ १७८		कालिका. २३	१५	
कामुका	१६ ९		कार्षास. {	१६ १११		कालिंदी	१० ३२	
कामुकी	१६ ९			{ २५ ३५		कालिंदीभेदन. १	२५	
कांपिल्य	१४ १४६		कार्षासी	१४ ११६		काली	१ ३८	
कांवल	१८ ५४		कार्म	२१ १८		कालीयक. {	१४ १०१	
कांवविक ...	२० ८		कार्मण	२२ ४			{ १६ १२६	
कांबोज	१८ ४५		कार्मुक	१८ ८३		काल्पक	१४ १३५	
कांबोजी	१४ १३८		काश्य	१४ ४४		काल्या ...	१९ ७०	
काम्यदान. २२	३		कार्षाषण	१९ ८८		कावचिक. १८	६६	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
कापेरी	१०	३५	मिष्ट	१६	६१	कार	११	२१
काव्य	३	२५	मिण	२५	१८	कारि	६	११
काश	१४	१६२	मिणिही	१४	८९	कील	{ १	६०
काश्मरी	१४	३५	मिण	२०	४२	कील	{ २३	१९७
काश्मर्य	१४	३६	मिणव	{ १४	७७	कीलक	१९	७३
काश्मीर	१४	१४५	मिणव	{ २०	४४	कीलाल	{ १०	३
काश्मीरजमन्	१६	१२४	मिणव	{ १	११	कीलाल	{ २३	२००
काश्यपि	३	३२	मिणव	{ १	७४	कीलित	२१	४२
काश्यपी	११	२	मिणव	{ १	७२	कीश	१५	३
काष्ठ	१४	१३	मिण	{ २३	२५२	कु	{ ११	३
काष्ठकुद्दाल	१०	१३	मिण	{ २४	५	कु	{ २३	२४१
काष्ठतक्ष	२०	९	मिण	२४	५	कुशर	१६	४८
काष्ठा	{ ३	१	मिण	{ २०	२	कुकुदर	१६	७१
काष्ठा	{ ४	११	मिण	{ २४	५	कुशर	२३	२०३
काष्ठा	{ २३	४१	मिण	२१	४८	ककट	१५	१७
काष्ठा	१०	११	मिण	१	७४	कुक्रम	१५	३५
काष्ठा	१४	११३	मिण	३	३३	कुक्र	{ १५	१३२
कास	१६	५२	मिण	२०	२०	कुक्र	{ २०	२१
कासमर्द	२५	१९	मिण	१४	१४३	कुक्षि	१६	७७
कासर	१५	४	मिण	१५	२	कुक्षिभरि	२१	२१
कासार	१०	२८	मिण	१६	१०२	कुक्रम	१६	१०३
कामू	२३	६६	मिण	५	१७	कुग	१६	८७
कामदती	६	७	मिण	२३	२५५	कुचदन	१६	१३२
किशाव	{ १९	२१	मिण	१६	५३	कुचर	२१	२७
किशाव	{ २३	१६३	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किशु	१४	२९	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किशु	१५	१६	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किशर	२०	१७	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किकिणी	१६	११०	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किचित्	२४	८	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किचुलक	१०	२२	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किचुलक	१०	४०	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७
किटि	१५	२	मिण	१६	६१	कुचर	२१	२७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कुट....	{ १४	५	कुत् ...	१९	३३	कुमुदिनी....	१०	३९
	{ १९	३२	कुतूहल	७	३१	कुमुद्वत्	११	९
कुटक	१९	१३	कुत्सा ...	६	१३	कुमुद्वती	१०	३८
कुटज	१४	६६	कुत्सित	२१	५४	कुवा	१७	१८
कुटन्नट. { १४	५७		कुय.... { १४	१६६		कुंभ. { १४	३४	
	{ १४	१३१		{ १८	४२		{ १८	३७
कुटिल	२१	७१	कुदाल	१४	२२		{ २३	१३४
कुटि ... { १२	६		कुनटी ...	१९	१०८	कुभकार....	२०	६
	{ २५	३८	कुनाशक	१४	९१	कुंभसंभव.	३	२०
कुटंब्यापृत. २१	११		कुंत ...	१८	९३	कुंभिका	१०	३८
कुटंबिनी....	१६	६	कुंतल ...	१६	९५	कुभी	१४	४०
कुट्टनी	१६	१९				कुंभीर	१०	२१
कुट्टिम ...	२५	३४	कुंद... { १४	७३		कुंमोलूखलक. १४	३४	
कुठर	१९	७४		{ १४	१२०	कुंग	१५	८
कुठार	१८	९२		{ २३	१९	कुंगक	२०	२४
कुठेरक	१४	७९	कुदुरु	१४	१२१	कुंगक	२०	२४
कुडंगक	२५	१७	कुंदुकी ...	१४	१२४	कुंगक. { १४	७४	
कुट्टा	१९	८९	कुपूय	२१	५४		{ १४	७५
कुडमल	१४	१६	कुप्य	१९	९१	कुवक	१४	७५
कुड्य	१२	४	कुपेर.... { १	७१		कुरर	१५	२३
				{ ३	३	कुरुविद	१४	१५९
कुप. { १८	११८		कुवेरक	२०	१२७	कुरुविस्त....	१९	८६
	{ २६	२०	कुवराक्षी....	१४	५५		{ १५	४१
कुणि. { १४	१२८		कुञ्ज ...	१६	४८	कल. { १७	१	
	{ १६	४८	कुमार. { १	४३			{ १४	३९
कुंठ	२१	१७		{ ७	१२	कुलक. { १४	१५५	
कुड... { १६	३६		कुमारक	१४	२५		{ २०	५
	{ १९	३१	कुमारी. { १४	७३		कुलटा	१६	१०
कुंडल	१६	१०३		{ १६	८	कुलथिका. १९	१०२	
कुंटलिन्	८	७	कुमुद. { ३	३		कुलपालिका. १६	७	
कुटी ...	१७	४६		{ १०	३७	कुलश्रेष्ठिन् २०	५	
कुतप	१७	३१	कुमुदप्राय ..	११	९	कुलसंभव... १७	२	
कुतक	७	३१	कुमुदबाधन. ३	१३		कुलखी ...	१६	७
कुतप	१९	३३	कुमुदिका....	१४	४०	कुलाय	१५	३७

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
कुलाल	२०	६	कुसति	७	३०	कृतपुत्र	१८	६८
कुलाली	१९	१०२	कुस्तुबुध	१९	३८	कृतमाल	१४	२४
कुलिश	१	५०	कहना	१७	५३	कृतमन्त्र	२१	४
कली	१४	९४	कुहर	८	१	कृतलक्षण	२१	४०
कुलीन	१७	३	कुह	८	०	कृतसापत्निका	१६	७
कुलार	१०	२१	कुद	२१	१४	कृतहस्त	१८	६८
कुत्साप	{ १९ १८		कुट	{ १४ ४		कृतांत	{ १ ६१	
	{ २५ २१			{ १५ ८२			{ २३ ६४	
कुत्सापाभिपुत	१९	३९		{ २३ ३७		कृताभिषेका	१६	५
कुल्य	१६	६८	कुटयत्र	२०	२६	कृतिन्	{ १७ ६	
कुल्या	१०	३४	कुटशालमलि	१४	४७		{ २१ ४	
कुल	{ १४ ३६		कुटस्थ	२१	७३	कृत	२१	१०३
	{ २५ ४०		कूप	१०	२६	कृति	१७	४७
कुलप	१०	३७		{ १० १०		कृतिगासस्	१	३०
कुनाद	२१	३७	कूपक	{ १० १२		कृत्या	२३	१५८
कुविद	२०	६		{ १६ ७२		कृत्रिमधूपक	१९	१२८
कुवेणी	१०	१६	कूबर	१८	५७	कृत्त	२१	६५
कुश	{ १४ १६६		कूर्च	१६	९०	कृपण	२१	४८
	{ २३ २१६		कचशीष	१४	१४२	कृपा	७	१८
कुशल	{ ४ २६		कृत्रिका	१९	४४	कृपाण	१८	८९
	{ २१ ४		कूर्दन	७	३३	कृपाणी	२०	३४
	{ २३ २०४		कूर्पर	१६	८०	कृपाटु	२१	१५
कुशी	१९	९९	कूर्पासक	१६	११८	कृपीटयोनि	१	५६
कुशीलप	२०	१२	कूर्म	१०	२१	कृमि	१५	१३
कुशेशप	१०	४०	कूल	१७	७	कृमिकोशोत्प	१६	१११
कुष्ठ	{ १४ १२६		कुम्भांड	१४	१५५	कृमिप्र	१४	१०६
	{ १६ ५४		कृष्ण	१५	१९	कृमिज	१६	१२६
	{ २५ ३४		कृत्वास	१५	१२	कृश	२३	६१
कुसीद	१९	४	कृत्वाक	१५	१७	कृशानु	१	५७
कुसीदिफ	१९	५	कृत्वाटिका	१६	८८	कृशानुरेतस्	१	३५
कुसुम	१४	१७	कृत्वा	{ ९ ४		कृशाधिन्	२०	१२
कुसुमांजन	१९	१०३		{ १७ ५२		कृपक	१९	१०
कुसुमेपु	१	२७	कृत	२३	७०	कृति	१९	२
कुसुभ	{ १९ १०६							
	{ २३ १३६							

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
काशफल	१६	१३	कथन	१८	११९	कोटु	१५	५
कोशातकी	२३	८	कदन	{ १८	१०७	कोष्टवित्रा	१४	९३
कोष्ठ	२३	४०		{ २३	१२३	कोष्टी	१४	११०
कोष्ण	३	३५	कदित	७	३५	कोच	१५	२२
कौकुटिक	२३	१७	कम	१७	४०	कोचदारण	१	४३
कौक्षेयक	१८	८९	कमुक	{ १४	४१	कुम	२२	१०
कौटतक्ष	२०	९		{ १४	१६९	कुमय	१६	१०
कौटिक	२०	१४	कमेलक	१९	७५	कुम्भ	२१	१०५
कौणप	१	६२	कणिक्रियिक	१९	७८	कुम्भाक्ष	१६	६०
कौतुक	७	३१	कणिक	१९	७९	कुक्षित	२१	९८
कौतूहल	७	३१	कण्य	१९	८१	कुष्ठ	{ ६	१९
कौद्रवीण	१९	८		१६	६३		{ २१	९८
कौत्ति	१४	१२०	कव्यात्	१	६२	कृतिक	१४	१०९
कौतिक	१८	७०	कव्याद	१	६२	कृतिकिक	१४	९४
कौपीन	२३	१२२	कणिक	१९	७९	कृबि	{ १६	२९
कौमुदी	३	१६		{ ५	२		{ २३	२१३
कौमोदकी	१	३०	किया	{ २३	१५७	केश	२२	२९
कौलदिनेय	१६	२७	क्रियान्त	२१	१८	कोम	१६	६५
कौलटेय	{ १६	२६		{ ७	३२	कण	{ ६	२४
	{ १६	२७	क्रीडा	{ ७	३३		{ २०	८
कौलटेर	१६	२६	कुच	१५	२२	कणन	६	२४
कौलीन	२३	११६	कुच	१६	२२	कथित	२२	९५
कौलेय	२०	२१	कुध	७	२६	कण	६	२४
कौशिक	{ १४	३४	कुष्ट	७	३५	क्षण	{ ४	११
	{ २३	१०		{ २१	४७		{ ७	३८
कौशेय	१६	१११	कूर	{ २१	७६		{ २३	४७
कौस्तुभ	१	३०		{ २३	१९१	क्षणदा	४	४
ककच	२०	३५	कृतव्य	१९	८१	क्षणन	१८	११४
ककर	{ १४	७७	कृत्य	१९	८१	क्षणप्रभा	३	९
	{ १५	१९	क्रीड	{ १५	२	क्षतज	१६	६४
कतु	१७	१३		{ १६	७७	क्षतप्रत	१७	५५
कतुधसि	१	३६	क्रीध	७	२६	क्षत्	{ १८	५९
कतुभन्	१	९	क्रीधन	२१	३०		{ २०	३
			क्रीशयुग	११	१८		{ २३	६३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
क्षत्रिय.	{	१७ २	क्षीवन्	२१ २३	क्षेत्र.	{	१९ ११	
	{	१८ १		{	१० ४		{	२३ १८०
क्षत्रिया	१६ १४	क्षीर.	{	१९ ५१	क्षेत्रज्ञ	{	४ २९	
क्षत्रियो	१६ १५		{	२३ १८२		{	२३ ३३	
क्षत्रियाणी.	१६ १४	क्षीरविकृति.	१९ ४४	क्षेत्रार्जीव....	१९ ६			
क्षपा	४ ४	क्षीरविहारि.	१४ ११०	क्षेपण	२२ ११			
क्षपाकर	३ १५	क्षीरशुक्ला....	१४ ११०	क्षेपर्णा	१० १३			
क्षम	२३ १४२	क्षीरावी	१४ १००	क्षेपिष्ठ	२१ १११			
क्षमा	२३ १४२	क्षीरिका	१४ ४५					
क्षमित्	२१ ३१	क्षीरोद	१० २	क्षेम.	{	४ २६		
क्षमिन्	२१ ३१	क्षीरोदतनया.	१ २९		{	१४ १२८		
क्षन्त	२१ ३१	क्षत	१६ ५२		{	२५ ३४		
	{	४ २२	क्षत	१६ ५२	क्षोणि	११ २		
	{	१६ ५१	क्षताभिजनन.	१९ १९	क्षोद	१८ ९९		
क्षय.	{	१८ १९			क्षोदिष्ठ	२१ १११		
	{	२२ ७	क्षुद्र.	{	२१ ४८	क्षाद्र.	१९ १०७	
	{	२३ १४५		{	२१ ११२	क्षौम	{	१२ १२
				{	२३ १७७		{	१६ ११३
क्षव.	{	१६ ५२	क्षुद्रघटिका.	१६ ११०	क्षणुत	२१ ९१		
	{	१९ १९	क्षुद्रशस्त्र	१० २३	क्षमा	११ ३		
क्षत्रथु	१६ ५२	क्षुद्रा.	{	१४ ९४	क्षमाभृत्.	{	१३ १	
क्षांत	२१ ९७		{	२३ १७७		{	१८ १	
क्षांति	७ २४	क्षुद्रांडमत्स्यसघात.	१०११९	क्ष्वेड ...	८ ९			
क्षार	१९ ९९	क्षुब्ध	१९ ५४	क्ष्वेडा.	{	१८ १०७		
क्षारक	१४ १६	क्षुधित	२१ २०		{	२३ ४३		
क्षारमृत्तिका	११ ४	क्षुप	१४ ८	क्ष्वेडित	२५ ३४			
क्षारित	२१ ४३	क्षुमा	१९ २०	ख.				
क्षिति.	{	११ २	क्षुर.	{	१४ १०४			
	{	२३ ७०		{	२५ २०	ख.	{	२ १
क्षिपा	२२ ११	क्षरक	१४ ४०				{	२३ १८
क्षिप्त	२१ ८७	क्षुप्र	२५ २०				{	२५ २२
क्षिप्तु	२१ ३०	क्षुरिन्	२० १०	खग.	{	१५ ३२		
	{	१ ६८			{	१८ ८६		
क्षिप्र.	{	२१ ११२	क्षुद्रक.	{	२० १६		{	२३ १९
				{	२१ ६१	खगेश्वर ...	१ ३१	
क्षिया	२२ ७			{	२३ १०	खजाका	१९ ३४	

शब्द	वग	श्लोक	शब्द	वग	श्लोक	शब्द	वग	श्लोक
रज	१६	४९	खली	१८	४९	गडुल	१६	४८
खजन	१५	१५	खलु	२३	२५६	गण	{ १५	४०
रजरीट	१५	१५	खलेदाघ	१९	१५	गण	{ १८	८१
खट	२५	१७	खल्या	२२	४२	गण	{ २३	४६
खट्टा	१६	१३८	खात	१०	२७	गणक	१८	१४
खट्ट	{ १५	४	खादित	२१	११०	गणदेउता	१९	१०
खट्ट	{ १८	८९	खारी	१९	८८	गणनीय	२१	६४
खट्टिम्	१५	४	खारीक	१९	१०	गणरात्रि	४	६
खट	{ ३	१६	खारीगप	१९	१०	गणरूप	१७	८०
खट	{ १०	४२	खिल	११	५	गणहासक	१४	१२८
खटपरशु	१	३०	खुर	{ १४	१३०	गणाधिप	१	४१
खडविकार	१९	४३	खुर	{ १८	४९	गणिका	{ १४	७१
खदिर	१४	४९	खुरणस्	१६	४७	गणिका	{ १६	१९
खदिरा	१४	१४१	खुरणस	१६	४७	गणिकारिन्	१४	६६
खद्योत	१५	२८	खेट	२१	५४	गणित	२१	६४
खानि	१३	७	खेय	१०	२९	गणेष	२१	६४
खानिन्न	१९	१२	खेला	७	३३	गड	{ १६	९०
खपुर	१४	१६९	खोड	१६	४९	गड	{ १८	२७
खा	{ ३	३५	रयात	२१	९	गडक	१५	४
खा	{ १९	७७	रयातगहण	२१	९३	गडकारी	१४	१४१
खरणस्	१५	४६	रयाति	२०	९	गडशैल	१३	६
खरणस	१६	४६	ग			गडाली	१४	१५९
खरपुष्पा	१४	१३९	गगन	२	१	गडौर	१४	१५७
खरमजरी	१४	८९	गगा	१०	३१	गडपद	१०	२२
खराखा	१४	१११	गगाधर	१	३६	गडपदी	१०	२४
खर्ज	१६	५३	गज	१८	३४	गड्या	२५	१०
खर्जर	{ १४	१७०	गजता	१८	३६	गतनासिक	१६	४६
खर्जरी	{ १९	९६	गजबन्नी	१८	४३	गद	१६	५१
खर्जू	१४	१७०	गजभक्ष्या	१४	१२३	गद्य	२५	३१
खर्ब	{ १६	४६	गजानन	१	४१	गत्री	१८	५०
खर्ब	{ २१	७०	गजा	१२	८	गध	५	७
खल	२१	४७	गक	१०	१०	गडुशी	१४	१२३
खल्प	२१	१७	गदू	२१	१८	गधन	२३	११५
खलिनी	२०	४०				गधनाशुली	१४	११४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
गंधफली.	{ १४	५६	गरुडायज.	३	३२	गवाक्षी ...	१४	१५६
	{ १४	६४	गरुत	१५	३६	गवीश्वर	२९	५८
गंधमादन....	१३	३	गरुतमत्.	{ १	३१	गंधेधु	१९	२५
गंधमूली	१४	१५४		{ १५	३४	गंधेधुका	१९	२५
गंधरस	१९	१०४		{ २३	५८	गंधेधुणा	१७	३२
	{ १	११	गर्गरी	१९	७४	गंधेषित	२१	१०५
	{ १	५५	गर्जित.	{ ३	८	गव्य	१९	५०
गंधर्व.	{ १५	११		{ १८	३६	गव्या	१९	६०
	{ १८	४४	गर्त ...	८	२	गव्युत्ति	११	१८
	{ २३	१३३	गर्दभ	२९	७७	गहन.	{ १४	१
गंधर्वहस्तक.	१४	५०	भर्दभांड	१४	४३		{ २१	८५
गंधवह	१	६५	गर्दन ...	२१	२२	गहर.	{ १३	६
गंधवहा	१६	८९	गर्भ.	{ १६	३९		{ २३	१८३
गंधवाह	१	६५		{ २३	१३५	गांगेय.	{ १९	९४
गंधसार	१६	१३१	गर्भक	१६	१३५		{ २३	१५५
गंधाश्मन्.	१९	१०२	गर्भागार ...	१२	८	गांगेक्षी....	१४	११७
गंधिक	१९	१०२	गर्भाशय	१६	३८	गाढ	१	७०
गंधिनी	१४	१२३	गर्भिणी	१६	२२	गाणिवय	१६	२२
गंधोत्तमा....	२०	४०	गर्भोपधातिनी.	१९	६९	गांडिव	१८	८४
गंधोली ...	१५	२७	गर्भुत ...	१४	१६५	गांडीव	१८	८४
गभस्ति	३	३३	गर्व	७	२२		{ १६	७०
गभीर	१०	१५	गर्वित ...	२३	१०३	गात्र.	{ १८	४०
गम ...	१८	९५	गर्हण	६	१३	गात्रानुलेपनी.	१६	१३३
गमन	१८	९५	गर्ह्य	२१	५४	गान	६	२५
गंभारी	१४	३५	गर्ह्यमादिन्.	२१	३७	गांधार	७	१
गंभीर	१०	१५	गल	१६	८८	गायत्री.	{ १४	४९
गम्य	२१	९२	गलकंबल.	१९	६३		{ १७	२२
गरण	२२	३७	गलातिका.	१९	३१	गारुत्मत	१९	९२
गरल	८	९	गलित	२१	१०४	गार्भिण	१६	२२
गरा	१४	६९	गलोद्देश ..	१८	४८	गार्हपत्य	१७	१९
गरिष्ठ ...	२१	११२	गल्या	२२	४३	गालव	१४	३३
गरी ...	१४	६९	गयय ..	१५	११	गिर	६	१
गरुड	१	३१	गवल	१९	१००	गिरे	{ १३	१
गरुडध्वज.	१	१९	गवाक्ष	१२	९		{ २२	११

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
गिरिखणी	१४	१०४	गुद	१६	७३	गृध्रसी	२५	१०
गिरिका	१५	१२	गुद्	१४	१६२	गृष्टि	१४	१५१
गिरिज	१९	१०४	गुदा	{ १४	५५	गृह	{ १२	४
गिरिजा	१	४०		{ १४	१६०		{ १२	५
गिरिजामल	१९	१००	गुत	{ २१	८९		{ ३	२३९
गिरिमल्लिका	१४	६६		{ २१	१०६	गृहगोधिका	१५	१२
गिरिश	१	३३	गुतराद	२३	१६७	गृहपति	१८	१५
गिरीश	१	३३	गुति	२२	७४	गृहगालु	२१	२७
गिलित	२१	११०	गुरण	२२	११	गृहगृण	२५	३०
गीत	६	२५	गुह	{ ३	२४	गृहगत	१७	३४
गीर्ण	२१	११०		{ १७	७	गृहाराम	१४	१
गीर्णि	२२	११	गुर्विणी	१६	२२	गृहावमहणी	१२	१३
गीर्वाण	१	९	गु फ	१६	७२	गृहिन	१०	३
गीर्वापति	३	२४		{ १४	९	गृह्यरु	{ १५	४३
गुग्गुलु	१४	३४		{ १६	६६		{ २१	१६
	{ १६	१०५	गुल्फ	{ १८	८१	गेंदुरु	१६	१३८
गुच्छ	{ १९	२१		{ २३	१४९	गह	१२	४
गुच्छक	१४	१६	गुल्मनी	१४	९	गरिक	{ १४	८
गुच्छार्ध	१६	१०५	गुगारु	१४	१६९		{ २२	१२
गुजा	१४	९८	गुह	१	६२	गिरय	१९	१०४
गुड	२३	४२	गुहा	{ १३	६		{ १९	६०
गुटपुष्प	१४	२७		{ १४	९३	गो	{ १९	६६
गुडफल	१४	२८	गुह्य	२३	१५४		{ २३	२५
गुडा	१४	१०५	गुहाक	१	११	गोक्तक	१४	९९
गुह्यी	१४	८७	गुहाश्वर	१	७१	गोक्वण	{ १५	१०
	{ ४	२९	गुह	२१	८९		{ १९	८३
	{ १८	१९	गुहपाद	८	७	गोखणी	१४	८४
गुण	{ १८	८५	गुहपुष्प	१८	१३	गोकुल	१९	५८
	{ १९	२८	गुह्य	१६	६८	गोभक्त	१४	९९
	{ २०	२७	गुह	२१	९६	गोचर	५	८
	{ २३	४७	गुजन	१४	१४८	गोहिता	१४	११९
गुह्यक्षर	१०	१२	गुह	२१	२२	गोह्या	१४	१५६
गुणित	२१	८८	गुह	१५	२१	गोट	२५	१८
गुठित	२१	८९						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
गोत्र....	{ १३ १७ २३	१ १ १८०	गोमिन् ...	१९	५८	गोरी.	{ १ १६	३८ ८
गोत्रभिद् ...	१	४५	गोरस	१९	५३	गौष्टीन ...	११	१३
गोत्रा.	{ ११ १९	३ ६०	गोर्द	१६	६५	ग्रंथ ..	२३	१७९
गोदारण	१९	१८	गोल	२५	२०	ग्रंथि	१४	१६२
गोदुह्.	{ १९ २३	५७ १३०	गोलक	१६	२६	ग्रंथिक	१९	११०
गोधन	१९	५८	गोला .	१९	१०८	ग्रथित	२१	८६
गोघा	१८	८४	गोलीढ	१४	३९	ग्रंथिपर्ण	१४	१३२
गोघापदी	१४	११९	गोलोमी.	{ १४ १४ १९	१०२ १५९ १११	ग्रंथिल.	{ १४ १४	३७ ७७
गोधी	१६	९२	गोवदनी	१४	५५	ग्रस्त.	{ ६ २१	२० १११
गोधिका	१०	२२	गोविड्	१९	५०	ग्रह.	{ ४ २२ २३	९ ८ २३७
गोधिकात्मज. १५	६		गोविद.	{ १ २३	१९ ९१	ग्रहणीरुज्.	१६	५५
गोधूम	१९	१८	गोशाल	२५	४०	ग्रहपाति	३	३०
गोनर्द	१४	१३२	गोशीर्ष	१६	१३१	ग्रहीत ...	२१	२७
गोनस	८	४	गोष्ठ	११	१३	ग्राम.	{ १२ २३	१९ १४१
गोण.	{ १८ १९ २३	७ ५७ १३०	गोष्ठपाति	२३	१३०	ग्रामणी ...	२३	४९
गोपाति	१९	६२	गोष्ठी	१७	१५	ग्रामतक्ष	२०	९
गोपरस	१९	१०४	गोष्टीन	१४	१३	ग्रामता	२२	४३
गोपानसी....	१२	११	गोष्पद	२३	९४	ग्रामाधीन.	२०	९
गोपायित....	२१	१०६	गोसंह्य	१९	५७	ग्रामांत	१२	२०
गोपाल	१९	५७	गोस्तन	१६	१०५	ग्रामीणा	१४	९४
गोपी	१४	११२	गोस्तनी	१४	१०७	ग्राम्य	६	१९
गोपुर.	{ १२ १४ २३	१६ १३२ १८२	गोस्थानक. ११	१३		ग्राम्यधर्म.	१७	५७
गोप्यक ...	२०	१७	गौतम ...	१	१५	ग्रावन्.	{ १३ १३ २३	१ ४ १०६
गोमत	१९	५८	गौधार	१५	६	ग्रास	१९	५४
गोमय	१९	५०	गौधेय ...	१५	६	ग्राह.	{ १० २२	२१ ८
गामायु	१५	५	गौधेर	१५	६			
			गौर.	{ ५ ५ २३	१३ १४ १८९			
			गौरय ...	१७	३४			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
आहिन्	१४	२१	धातुक	{ २१ २८	चक्रकारक	१४	१२९	
आवा	१६	८८	घास	{ २१ ४७	चक्रपाणि	१	२०	
आष्म	४	१८	घास	१४ १६७	चक्रमर्दक	१४	१४७	
अपेयेक	१६	१०४	घुटिका	१६ ७२	चक्रयान	१८	५१	
गलस्त	२१	१११	घुण	२५ १८	चक्रला	१४	१६०	
गलह	२०	४५	घूर्णित	२१ ३२	चक्रवर्तिन्	१८	२	
गलान	१६	५८	घृणा	{ ७ १८	चक्रवर्तिनी	१४	१५३	
गलास्तु	१६	५८	घृणा	{ २२ ३२	चक्रवाक	१५	२२	
गलो	३	१४	घृणा	{ २३ ८१	चक्रवाल	{ ३ ६		
प्र			घृणि	३ ३३		{ १३ ६५		
घट	१९	३२	घृत	{ १९ ५२	चक्रांग	१५	२३	
घटना	१८	१०७	घृष्ट	{ २३ ७६	चक्रांगी	१८	८६	
घटा	१८	१०७	घृष्टि	१५ २	चक्रिन्	८	७	
घटीयत्र	२०	२७	घोटक	१८ ४३	चक्रवित्	१९	७७	
घटा	१४	३९	घोणा	१६ ८९	चक्ष अवसू	८	७	
घटापय	११	१८	घोणिन्	१५ २	चक्षुष	१६	९३	
घटापाटलि	१४	३९	घोटा	{ १४ ३७	चक्षुष्या	१९	१००	
घटारवा	१४	१०७	घोर	{ १४ १६९	चक्षल	२१	७५	
	{ ३ ७		घोष	७ २०	चक्षला	३	९	
	{ ७ ४		घोषक	१२ २०				
	{ ७ ९		घोषणा	१४ ११७	चक्षु	{ १४ ५१		
घन ..	{ १८ ९१		घोष	६ १३		{ १५ ३६		
	{ २१ ६६		घोष	{ १६ ८९	चटक	१८	११	
	{ २३ ११०		घोष	{ २१ ९०	चटका	१५	१८	
घनरस	१०	५	घोष	५ ११	चटिकाशिरम्	१०	११०	
घनसार	१६	१३०	घोष	२१ ९०	चणक	१९	१८	
घनाघन	२३	११०	घोष	न	चढ	२१	३२	
घम	{ ७ ३३		घोष	{ २३ २४२	चढा	१४	१०८	
	{ २३ १८२		घोष	{ २४ ५	चढांगु	३	३१	
घम्भर	२१	२०	घोष	१५ ३५	चढांत	१४	७६	
घम्र	४	२	घोष	{ १ २९	चढांतक	१६	११९	
घाटा	१६	८८	घोष	{ १० ७	चढाल	{ २० ४		
घाटि	१८	९७	घोष	{ १५ २२		{ २० १९		
घास	१८	११५	घोष	{ १८ ५६	चढालाहकी	२०	६२	
			घोष	{ १८ ७८				
			घोष	{ २३ १८१				

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	
चटिका	१	३९	चपनी	२५	१०	चलाचल.	२१	७४	
चतु.शाल.	१२	६	चम् ...	{ १८	७८	चलित.	{ १८	९६	
चतुर	२०	१९		{ १८	८१		{ २१	८७	
चतुरगुल.	१४	२३	चमूक	१५	९	चयिका	१४	९८	
चतुरानन.	१	१६	चपक	१४	६३	चय्य ...	१४	९८	
चतुर्भद्र	१७	५८	चय ...	{ १२	३	चपक ...	२०	४३	
चतुर्भज	१	२०		{ १५	४०	चपाल	१७	१८	
चतुर्वर्ग	१७	५८	चर....	{ १८	१३	चाक्रिक	१८	९७	
चतुष्पा .	११	१७		{ २१	७४	चांगेरी	१४	१४०	
चतुर्हावणी	१९	६८	चरक	२५	३३	चाटकर	१५	१८	
चत्वर.	{ १३	१३	चरण	१६	७१	चाटल	२०	२०	
	{ १७	१८	चाण युध	१५	१७	चाटालिका.	२०	३२	
चन	२४	३	चाम	२१	८१	चातक	१५	१७	
चदन ..	१६	१३१	चरमक्षमाभूत	१३	०	चतुर्वर्ण्य....	१७	२	
चंद्र ..	{ ३	१३	चराचर ..	२१	७४	चाप	१८	८३	
	{ १४	१८६	चरिण	२१	७४	चामर	१८	३१	
	{ २३	१८२	चरु	१७	२२	चामीकर ...	१९	४५	
चद्रक	१५	३१	चर्चरी	२५	१०	चापेय.	{ १४	६३	
चद्रभागा....	१०	३४	चर्चा	{ ५	२		{ १४	६५	
चद्रमस् ...	३	१३		{ १६	१२२	चार.	{ १८	१३	
चंद्रशाला	१४	१२५	चर्चिन्	{ १७	४७		{ २२	१४	
चद्रशेखर ...	१	३२		{ १८	९०	चागटी ...	१४	१४६	
चदनज	१६	१३०	चर्मकाषा	१४	१४३	चारण	२०	१२	
चद्रहात ..	१८	८९	चर्मकार	२०	७	चार	२१	५२	
चद्रिका ...	३	१६	चर्मप्रमेदिका	२०	३५	चारिण्य ..	१६	१२२	
चपल.	{ १	६८	चर्मप्रलेपिका	२०	३३	चालनी	१९	२६	
	{ १२	९९	चर्मिन्	{ १४	४६	चाप	१५	१६	
	{ २१	४३		{ १८	७१	चिकित्सक.	१६	५७	
चपला.	{ ३	९	चर्मा	१७	३६	चिकित्सा.	१६	५०
	{ १४	९६	चर्वित	२१	११०	चिकु.	{ १६	९५	
चपेट	१६	८४	चल ..	२१	७४		{ २१	४६	
चमा ..	११	१०	चलदल	१४	२०	चिकण	१९	४६	
चमारेक ...	१४	२२	चलन	२१	७४	चिकस	२५	३५	
चमत ...	२५	३५							

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
छल	१८ १०८	जघन्यज.	{ १६ ४३		जनश्रुति	६ ७
छवि.	{ ३ १७			{ २० १		जनार्दन	...	१ १९
	{ ३ ३४		जगम	२१ ७४	जनाश्रय	१२ ९
छाग	१९ ७६	जंगमेतर	२१ ७३	जनि	...	४ ३०
छागी	१९ ७६	जंघा	...	१६ ७२	जनी	{ १४ १५३	
	{ १६ ४४		जघाकीक	१८ ७३			{ १६ ९	
छात.	{ २१ १०३		जंघाल	१८ ७३	जनुस्	४ ३०
छात्र	१७ ११		{ १४ ११		जत्	...	४ ३०
छादित	२१ ९८	जरा	{ १६ ९७		जंतुफल	१४ २२
छादस	१७ ६		{ २३ ३८		जन्मन्	४ ३०
छाया	...	२३ १५७	जटाजूट	१ ३७	जन्मिन्	४ ३०
छित	२१ १०३	जटामासी	१४ १३४		जन्य.	{ १७ ५८	
छिद्र	८ २	जटिन्	१४ ३२		{ १८ १०३	
छिद्रित	२१ ९९	जाटिला	१४ १३४		{ २३ १५९	
छिन्न	२१ १०३		{ १६ ७७		जन्यु	४ ३०
छिन्नरुहा	१४ ८२	जठर.	{ २१ ७६		जप	१७ ४७
छुरिका	...	१८ ९२		{ २३ १८९		जपापुष्प	१४ ७६
छेक	१५ ४३	जड.	{ ३ १९		जंपती	१६ ३८
छेदन	२२ ७		{ २१ ३८		जशाल	१० ९
	ज.		जडल	१६ ४९	जंवीर.	{ १४ २४	
			जतु	१६ १२५		{ १४ ७९	
जगत्.	{ ११ ६		जतुक	...	१९ ४०	जंबु	१४ १९
	{ २३ ८०		जतुका	...	१५ २६	जंबुक.	{ १५ ५	
जगती.	{ ११ ६		जतुकृत	१४ १५३		{ २३ ३	
	{ २३ ७१		जतूका	१४ १५३	जंबू	१४ १९
जगत्प्राण	१	६५	जत्रु	१६ ७८	जभ	१४ २४
जगर	१८ ६४	जनक	१६ ०८	जंभमेदिन.	१	४६
जगल	२० ४२	जनगम	२० १९	जंभल	१४ २४
जग्ध	२१ १११	जनता	...	२२ ४३	जभीर	१४ २४
जग्धि	...	१९ ५५	जनन.	{ ४ ३०			{ १४ ६६	
जघन	१६ ७४		{ १७ १		जय.	{ १८ ११०	
जघनेफला.	१४	६१	जननी	१६ २९		{ २३ १२	
जघन्य.	{ २१ ८१		जनपद	११ ८	जयन	२३ १२
	{ २३ १५९		जनयित्री.	१६ २९		जयंत	१ ४९

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
जयती	१४	६५	जयनिका	१६	१२०	जार	१६	३५
जया	१४	६५	जहुननया	१०	३१	जाल	{ १० १६	
जय्य	१८	७४	जागरा	२२	१९		{ २३ २००	
जरण	१९	३६	जागारित	२१	३२	जालक	१४	१६
जरत्	११	८०	जागरुक	२१	३२	जालिका	२०	१४
जरद्व	१९	६१	जागर्ग	२२	१९	जाली	१४	११८
जरा	१९	४१	जामुलिक	१०	११	जात्म	{ २० १६	
जरायु	१६	२८	जाधिक	१८	७३		{ २१ १७	
जरायुज	२१	५०	जात	{ ४ ३१		जिघत्सु	२१	२०
जल	१०	३		{ २३ ८४		जिगी	१४	९०
जलजतु	१०	२०	जातरप	१९	९५	जितार	१८	७७
जलधर	३	७	जातयेदस्	१	५६	जिन	१	१३
जलनिधि	१०	२	जातापाया	१६	१६	जिष्णु	{ १ ४५	
जलनिर्गम	१०	७		{ ४ ३१			{ १८ ७७	
जलनीली	१०	३८	जाति	{ १४ ७०		जिज्ञ	{ २१ ७१	
जलपुष्प	२५	२०		{ २३ ६८			{ २३ १४१	
जलमाय	११	१०	जाती	१४	१९	जिह्वग	८	८
जलमुक्	३	७	जातीकोश	१६	१३२	जिह्वा	१६	९१
जलयाल	८	५	जातीफल	१६	१३२	जीन	१६	४२
जलशायिन्	१	२३	जातु	२४	४	जीमूत	{ ३ ७	
जलशक्ति	१०	२३	जातुष	२०	२९		{ १८ ६९	
जहाधार	१०	२१		{ २३ ५८			{ २३ ५८	
जहाशय	{ १० २५		जातोक्ष	१९	६१	जीरक	१९	३६
	{ १४ १६४		जनु	१९	७०	जीर्ण	१५	४२
जलोच्छ्वास	१०	१०	जावाल	२०	११	जीणरस	१५	११५
जलास्त्र	१०	२०	जामात	१६	३०	जीर्ण	२०	९
जलोष्ठा	१०	२२	जामि	२३	१४०	जीव	{ ३ २४	
जलपाक	२१	३६	जाबि	१४	१९		{ १८ ११९	
जलिमत	२१	१०७	जावनद	१९	९५	जीरक	{ १४ ४४	
ज	{ १ ६८		जायक	१६	१०५		{ १४ १४३	
	{ १८ ७०		जाया	१६	६	जीरजाय	१५	३५
ज	{ १८ ४१		जायाजाय	२०	१२	जायन	{ १० ३	
	{ १८ ७१		जायापती	१९	३८		{ १९ १	
ज	{ २२ ३९		जायु	१९	५०	जीयनी	१४	१४२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
जीवनीया.	१४	१४२	ज्ञातृ	२१	३०	ज्ञातृक	१४	४०
जीवनौषध	१८	१२०	ज्ञातेय	१६	३५	ज्ञिटी. {	१४	७४
जीवंतिका {	१४	८२	ज्ञान	५	६	ज्ञिटी. {	१४	७५
जीवंतिका {	१४	८३	ज्ञानिन् ...	१८	१४	ज्ञिहिका	१५	२८
जीवन्ती.	१४	१४२	ज्य... {	११	२	ज्ञिषका	१५	२८
जीवा	१४	१४२	ज्य... {	१८	८५	ज्ञि.		
जीवातु	१८	१२०	ज्याघातवारण.	१८	८४	ज्ञि. {	२०	३४
जीवातक.	२०	१४	ज्यानि	२२	९	ज्ञि. {	२५	३३
जीविका.	१९	१	ज्यायस् {	१६	४३	ज्ञिदृभ	१५	३५
जीवितकाल.	१८	१२०	ज्यायस् {	२३	२३६	ज्ञिका	२५	७
जुगुप्सा	६	३	ज्येष्ठ. {	४	१६	जुटुक	१०	५६
जुग	१४	१३७	ज्येष्ठ. {	२३	४१	जु.		
जुहू	१७	२५	ज्योतिरिगण	१५	२८	जुमर	२२	१४
जुति	२२	३९	ज्योतिषिक	१८	१४	जुमर	७	८
जूर्ति	२२	३९	ज्योतिष्मती.	१४	१५०	जुयन	१८	५२
जृम्भ	७	३५	ज्योतिस् ...	२३	२३१	जुहु	१४	६०
जृम्भण	७	३५	ज्योत्स्ना	३	१६	जुडिम ...	७	८
जेट. {	१८	७४	ज्योत्स्नी ...	४	५	जुडीर	१९	१०५
जेट. {	१८	७७	ज्वर. {	१६	५६	जुव	२२	१४
जैमन	१९	५६	ज्वर. {	२२	३९	जुम. {	१५	३८
जेष	१८	७४	ज्वलन	१	५३	जुम. {	२३	१३४
जैत्र	१८	७४	ज्वाल ...	१	१६०	जुभा	१६	४१
जैवदक. {	३	१४	ज्ञ.			जुहुभ	८	५
जैवदक. {	२१	६	ज्ञावात.	१	६६	जुलि	१०	२४
जैवदक. {	२३	११	ज्ञातमला.	१४	१२७	जु.		
जोगक ...	१६	१२६	ज्ञाति ...	२४	२	जुका	७	६
जोषम् ...	२३	२५२	ज्ञर	१३	५	जु.		
ज्ञ ...	१७	५	ज्ञर्षर	७	८	तक ...	१९	५३
ज्ञापित	२१	९८	ज्ञररी ...	२५	१०	तक्षक	२३	४
ज्ञप्त ...	२१	९८	ज्ञष	१०	१७	तक्षन् ...	२०	९
ज्ञाति	५	१	ज्ञषा	१४	११७	तट	१०	७
ज्ञातसिद्धान्त.	१८	१५	ज्ञाटल	१४	३९	तादिनी ...	१०	३०
ज्ञाति	१६	३४	ज्ञाटल ...	२५	३८	तटाग ...	१०	२८

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
तडित्	३	९	तत्र	२३	१८४	तरपण्य	१०	११
तडित्वत्	३	७	तत्रक	१६	११२	तरल	{ १६ १०२	
तडक	२५	३३	तत्रिका	१४	८२	तरला	{ २१ ७५	
तडुल	१४	१०६	तद्वा	{ ७ ३७		तरस	{ १९ ८०	
तडुलीय	१४	१३६	तप	{ २३ १७६		तरस	{ १ ६७	
तत्	{ ७ ४		तप	{ ४ १९		तरस	{ १८ १०२	
तत्त	{ २१ ८६		तप क्लेशसह	१७	४३	तरस	१६	६३
तत्तस्	२४	३	तपन	{ ३ ३१		तरस्विन्	{ १६ ७३	
तत्काल	१८	२९	तपनीय	{ ९ १		तरस्विन्	{ २३ १२८	
तत्त्व	७	९	तपनीय	१९	९४	तरि	१०	१०
तत्पर	२१	९	तपस	{ ४ १५		तरु	१४	५
तथा	२४	९	तपस	{ २३ २३३		तरुण	१६	४२
तथागत	१	१३	तपस्य	४	१५	तरुणी	१६	८
तथ्य	६	२२	तपस्विन्	१७	४२	तर्क	५	३
तद्	२४	३	तपस्विनी	१४	१३४	तर्कविद्या	६	५
तदा	२४	२२	तम	३	२६	तर्कारी	१४	६५
तदाश्च	१८	२९	तम	{ ४ २९		तर्जनी	१६	८१
तदानीम्	२४	२२	तमस्	{ ८ ३		तर्जनी	१९	६१
तनय	१६	२७	तमस्	{ २३ २३२		तर्जनी	१९	३४
तनु	{ १६ ७१		तमाल	{ १४ ६८		तर्जनी	{ १७ १४	
तनु	{ २१ ६१		तमाल	{ २५ ३३		तर्जनी	{ १९ ५६	
तनु	{ २१ ६६		तमालपत्र	१६	१२३	तर्जनी	{ २२ ४	
तनु	{ २३ ११३		तमिष	८	३	तर्जनी	१७	१९
तनुत्र	१८	६४	तमिषा	४	४	तर्जनी	{ ७ २८	
तन्	१६	७१	तमी	४	५	तर्जनी	{ १९ ५५	
तनुष्ठ	२१	९९	तमोनु	२३	८९	तल	{ १८ ८४	
तनुनपाद्	१	५६	तमोपह	२३	२३९	तल	{ २३ २०२	
तनुष	{ १५ ३६		तरहु	१९	१	तलिन	२३	१२०
तनुष	{ १६ ९९		तरण	१०	५	तन्प	२३	१३१
तनु	{ १६ १७		तरणिणी	१०	३०	तल्लज	४	२७
तनु	{ २० २८		तपणि	{ ३ ३०		तल्ल	२१	९९
तनुम	१९	१७	तपणि	{ १० १०		तल्लकर	२०	२४
तनुम	{ १५ १३		तपणि	{ १४ ७३		तल्ल	{ ७ १०	
तनुम	{ २० ६					तल्ल	{ २५ ३४	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
तात	१६	२८	ताली.	{ १४	१२७		{ १४	४०
तांत्रिक	१८	१५		{ १४	१७०	तिलक.	{ १६	४९
तापस	१७	४२	तालु	१६	९१		{ १६	६५
तापसतरु	१४	४६	तावत् ...	२३	२४७		{ १६	१२३
तापिच्छ	१४	६८	तिक्त	५	९		{ १९	४३
तामरस	१०	४०	तिक्तक	१४	१५५	तिलकालक.	१६	४९
तामलकौ...	१४	१२७	तिक्तशाफ.	१४	२५	तिलपर्णी ...	१६	१३२
तामसी	४	५	तिग्म	३	३५	तिलर्पिज....	१९	१९
तांबूलवल्ली.	१४	१२०	तिद्बुधंतचय.	६	२	तिलपेज ...	१९	१९
तांबूली	१४	१२०	तितल	१९	२६	तिलिरस ...	८	५
ताम्रक	१९	९७	तितिक्षा ...	७	२४	तिल्य	१९	७
ताम्रकर्णी.	३	५	तितिक्षु	२१	३१	तिल्व	१४	३३
ताम्रकटुक.	२०	८	तित्तिरि	१५	३५	तिष्य.	{ ३	२२
ताम्रचूड	१५	१७	तियि	४	१		{ २३	१४७
तार.	{ ७	२	तिनिश	१४	२६	तिष्यफला.	१४	५७
	{ २३	१६६	तितिडी	१४	४३	तीक्ष्ण.	{ ३	३५
तारकजित.	१	४२	तितिटीक...	१९	३५		{ १९	९८
ताम्बा.	{ ३	२१	तिदुक	१४	३८		{ २३	५३
	{ १६	९२	तिदुकी	२५	८	तीक्ष्णगंधक.	१४	३१
ताग	३	२१	तिमि	१०	१९	तीर	१०	७
ताकण्य	१६	४०	तिमिगिल.	१०	२०	तीर्थ.	{ १७	५१
तादर्थ्य { १	३१		तिमित	२१	१०५		{ २३	८६
	{ २३	१४५	तिमिर	८	३	तीव्र	१	७०
तादर्थ्यशैल....	१९	१०२	तिरस्.	{ २३	२५७	तीव्रवेदना.	९	३
	{ ७	९		{ २४	६	तु.	{ २३	२४३
ताल.	{ १४	१६८	तिरस्कारीणी.	१६	१२०		{ २४	५
	{ १६	८३	तिरस्क्रिया.	७	२२	तुग.	{ १४	२५
	{ १९	१०३	तिरीष्ट.	{ १४	२३		{ २१	७०
तालपत्र	१६	१०३		{ २५	३०	तुंगी ...	१४	१३९
तालपर्णी ...	१४	१२३	तिरोधान....	३	१३	तुच्छ ...	२१	५६
तालमलिका.	१४	११९	तिरोहित	१८	११२	तुंड	१६	८९
तालवृतक...	१६	१४०	तिर्यञ्च	२१	३४	तुंडिकेरी.	{ १४	११६
तालार्क	१	२५					{ १४	१३९

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
तुल्या	{ १४	१५	तृण	१८	८८	तेजित	२१	९१
	{ १४	१२५	तृणी	१८	८९	तेम	२०	२९
तुल्याजन	१९	१०१	तृणीर	१८	१८	तेमन	१९	४४
तुद	१६	७७	तृद्	१४	४१	तजस	१९	९९
तुदपरिमृज	२०	१८	तृर्ण	१	६८	तेजसवर्तनी	२०	२३
तुदिम्	१६	४४	तृल	{ १४	४२	तैत्तिरि	१५	४३
	{ १६	४४		{ १९	१०६	तैलपर्णिक	१६	१३१
तुदिम	{ १६	६१	तृलिका	२०	३३	तैलपायिका	१५	२६
	{ १६	४४	तृवर	२३	१६५	तैलपाता	२५	६
तुदिल	{ १६	६१	तृर्णोशील	२१	३९	तैलान	१९	७
तुध	१४	१०७	तृष्णीक	२१	३९	तैय	४	१५
तुधवाय	२०	६	तृष्णीकम्	२	९	ताङ्ग	१६	२८
तुमुळ	१८	१०६	तृष्णीम्	२४	९	तोकक	१५	१७
तुनी	१४	१५६	तृण	१४	१६७	तोकम	१९	१६
तुण	१८	४३	तृणद्रुम	१४	१७०	तोटक	२५	३०
तुण	१८	४३	तृणधान्य	१९	२५	तोत्र	{ १८	४१
तुणम	१८	४३	तृणध्वज	१४	१६०		{ १९	१२
तुणमदन	१	७४	तृणराज	१४	१६८	तोदन	१९	१२
तुरासाह	१	४७	तृणगूय	१४	६९	तोमर	१८	९३
तुष्क	१६	१२८	तृण्या	१४	१६८	तोय	१०	४
तुल	१९	८७	तृतीयाष्टत	१९	९	तोयपिप्पली	१४	१११
तुलाकोटि	१६	१०९	तृतीय प्रष्टाति	१६	३९	तोरण	१२	१६
तुलामान	१९	८५	तृन	२१	१०३	तौर्यत्रिक	७	१०
तुन्य	२०	३७	तृति	१९	५६	त्यक्त	२१	१०७
तुन्यपान	१९	५५	तृष्	{ ७	२७	त्याग	१७	२९
तुनर	५	९		{ १९	५५	अपा	१४	२३
तुनीरिका	१४	१३१	तृष्णक	२१	२२	अपु	१९	१०५
	{ १४	५८	तृष्णा	२३	५१	अपी	६	३
तुष	{ १९	२०	तेज	१८	२०	अस	२१	७४
	{ ३	१८	तेजन	१४	१६१	अरु	२०	२४
तुषार	{ ३	१९	तेजनक	१४	१६०	अस्त	२१	२६
			तेजनी	१४	८३			
तुषित	१	१०	तेजम्	{ १६	६२	प्राण	{ २१	१०९
तुदिन	३	१८		{ २२	३५		{ २०	८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
त्रात	२१	१०६	त्रिवृता	१४	१०८	दंश	१५ २७
त्रापुष	२०	२९	त्रिमंध्य	४	३	दंशन	१८ ६४
त्रायंती	१४	१५०	त्रिभीत्य	१९	९	दंशित	१८ ६५
त्रायमाणा.	१४	१५०	त्रिस्तोतस् ...	१०	३१	दंशी	१५ २७
त्रास ...	७	२१	त्रिहल्य	१९	९	दंष्ट्रिन्	१५ २
त्रिक. {	७ १६	७६	त्रिहायणी....	१९	६८	दक्ष	२० १९
त्रिककुह	१३	२	त्रुटि. {	२१ २३	६२ ३७	दक्षिण	२१ ८
त्रिकट्ट	१९	१११	त्रेता. {	१७ २३	२० ६९	दक्षिणस्थ....	१८	६०
त्रिका ...	१०	२७	त्रोटि	१५	३६	दक्षिणा	३	१
त्रिकुट ...	१३	२	त्र्यवक	१	३५	दक्षिणाग्नि.	१७	१९
त्रिगद्ग	२५	४१	त्र्यवकसख.	१	७१	दक्षिणाव ...	२०	२४
त्रिखट्टी	२५	४१	त्र्यषण	१९	१११	दक्षिणार्ह....	२१	५
त्रिगुण कृत.	१९	९	त्व	२१	८२	दक्षिणीय ...	२१	५
त्रितक्ष	२५	४१	त्वक्षीरी ...	१९	१०९	दक्षिणर्मन्.	२०	२४
त्रितक्षी	२५	४१	त्वक्षत्र	१४	१३४	दक्षिण्य	२१	५
त्रिटश	१	७	त्वक्षसार ...	१४	१६०	दग्ध	२१	९९
त्रिदशालय	१	६	त्वच्. {	१४ १६	१२ ६२	दग्धिका ...	१९	४९
त्रिदिव ...	१	६	त्वच	१४	१३४	दंड.... {	३ ३१	
त्रिदिवेश	१	७	त्वचिसार....	१४	१६०		१८ २०	
त्रिपथगा ...	१०	३१	त्वरा	२२	२६		१८ २१	
त्रिपृठा. {	१४ १४	१०८ १२५	त्वारित. {	१ १८	६८ ७३		२३ ४२	
त्रिप्रांतक.	१	३५	त्वारितोदित.	६	२०	दंडधर ...	१	६२
त्रिफला	१९	१११	त्वष्ट	२१	९९	दंडनीति	६	५
त्रिमंडी	१४	१०८	त्वष्ट. {	२० २३	९ ३५	दंडविष्कम्भ.	१९	७४
त्रियामा	४	४	त्रिष्पू {	३ ५३	३४ २२५	दंडाहत	१९	५३
त्रिलोचन....	१	३४	त्रिपांपति.	३	३०	दद्रुघ्न ...	१४	१४७
त्रिवर्ग. {	१७ १८	५८ १९	त्सह	१८	९०	दद्रुघ्न	१६	५९
त्रिविक्रम ..	१	२०				दहुरोगिन्.	१६	५९
त्रिविष्टप	१	६				दधित्य	१४	२१
त्रिवृत्	१४	१०८				दधिफल	१४	२१
						दधिसक्त	१९	४८
						दनुज ...	१	१२

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
दत्त	१६	९१	दर्शिकर	८	८	दानगारि	१	९
दत्तघातन	१४	४९	दर्श	{	४ ८	दानशौठ	२१	६
दत्तभाग	१८	४०	दर्शन	२२	३१	दात	{	१७ ४३
दत्तशठ	{	१४ २१	दल	१४	१४	दाति	{	२१ ९७
दत्तशठा	१४	१४०	दव	२३	२०६	दापित	२१	४०
दत्तावल	१८	३४	दविष्ठ	२१	६९	दाम	१९	७३
दतिका	१४	१४०	दवीयस्	२१	६९	दामनी	१९	७३
दतिन्	१८	३४	दशन	१६	९१	दामोदर	१	१८
ददशक	८	८	दशनरासस्	१६	९०	दामिक	२३	१७
दध्र	२१	६१	दशबल	१	१४	दायाद	२३	८९
दम	{	१८ २१	दशमिन्	१६	४३	दारद	८	११
दमय	२२	३	दशमीस्थ	२३	८७	दारा	१६	६
दमित	२१	९७	दशा	{	१६ १४४	दारित	२१	१००
दमुनस्	१	५९	दशानीकिनी	१८	८१	दाय	{	१४ १३
दपती	१६	३८	दस्यु	{	१८ ११	दायण	७	२०
दभ	७	३०	दस	१	५४	दायहृदिदा	१४	१०२
दभोली	१	५०	दहन	१	५८	दायहस्तक	१९	३४
दम्य	१९	६२	दाक्षायणी	{	१ ४०	दावाघ ट	१५	१७
दया	७	१८	दाक्षाय्य	१५	२१	दाविका	१४	११९
दयालु	२१	१५	दाडिम	{	१४ ६४	दावी	१४	१०२
दापित	२१	५३	दाडिम	{	२५ ४२	दाव	२३	२०६
दर	{	७ २१	दाडिमपष्पक	१४	४९	दाविक	१०	३६
दरत्	२५	९	दाटपाता	२५	६	दाश	१०	१५
दारद	२१	४९	दात	२१	१०३	दाशपुर	१४	१३१
दरी	१३	६	दात्यूह	१५	२१	दास	२०	१७
दट्टर	१०	२४	दात्र	१७	१३	दासी	१४	७४
दर्पक	१	२६	दान	{	१७ २९	दासीसभ	२५	२७
दर्पण	१६	१४०	दान	{	१८ २०	दासेय	२०	१७
दभ	१४	१६६	दान	{	१८ ३७	दासेर	२०	१७
दावि	१९	३४	दान	१	१२	दिबर	२१	३९
						दिग्गज	३	४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
दिग्घ.	{ १८ ८८		दीप	... १६	१३८	दुर्जन २१	४७
	{ २१ ९०		दीपक २३	११	दुर्दिन ३	१२
दित २१	१०३	दीप्ति ३	३४	दुर्नामक १६	५४
दितिमुत....	१	१२	दीप्य १४	१११	दुर्नामन् १०	२५
दिधिषु १६	२३	दीर्घ २१	६९	दुर्बल १६	४४
दिधिप् १६	२३	दीर्घकोशिका. १०	२५		दुर्मनस् २१	८
दिन ४	२	दीर्घदर्शिन	१७	६	दुर्मन्त्र २१	३६
दिनांत	... ४	३	दीर्घपृष्ठ ८	८	दुर्वर्ण	... १९	९६
दिघ.	{ १ ६		दीर्घवृत्त १४	५७	दुर्विध २१	४९
	{ २ १		दीर्घसूत्र २१	१७	दुर्हृद् १८	१०
दिवस ४	२	दीर्घिका १०	२८	दुःश्रयन १	४७
दिवस्पाति ..	१	४५	दुःख.	{ १ ३		दुष्कृत ४	२३
दिवा २४	६		{ २५ २३		दुष्ट २४	१९
दिवाकर ३	२८	दुःप्रवर्षिणी.	१४	११४	दुष्पत्र १४	१२८
दिवाकीर्ति { २० १०			दुःषमम्	... २४	१४	दुहित	... १६	२८
	{ २० १९		दुःस्पर्श १४	९१	दुत १८	१६
दिशिषद् १	८	दुःस्पर्शा १४	९४	दूती १६	१७
दिवाकस्.	{ १ ७		दुकूल १६	१३१	दूत्य	... १८	१६
	{ २३ २२७		दुग्ध १९	५१	दून २१	१०२
दिव्यगायन.	२३	१३३	दुग्धिका १४	१००	दूर २१	६८
द्विव्यपादुक.	२१	५०	दुद्रुम १४	१४८	दूरदर्शिन १७	६
द्विश ३	१	दुंदुभि.	{ ७ ६		दूर्वा १४	१५८
द्विश्य ३	२		{ २३ १३६		दूषिका १६	६७
	{ ४ १		दुग्ध	... ११	१६	दूष्य १६	१२०
दिष्ट	{ ४ १८		दुगालभा १४	९२	दूष्या १८	४२
	{ २३ ३५		दुरित ४	२३			
दिष्टात १८	११६	दुरोदर	... २३	१७१	दृढ.	{ १ ७०	
दिष्टया २४	१०	दुर्ग १८	१७		{ २१ ७६	
दीक्षात १७	२७	दुर्गत २१	४९		{ २३ ४६	
दीक्षित १७	८	दुर्गति ९	१	दृढसंधि २१	७५
दीदित्रि १९	४८	दुर्गध ५	१२	दृति २५	१९
दीधिति ३	३३	दुर्गसचर २२	२५	दृव्य २१	८६
दीन २१	४९	दुर्गा १	३९		{ १६ ९३	
दीनात	... २३	१४					{ २३ २१७	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
दृष्ट	१३	४	देवी	{ ७ १३ १४ ८३ १४ १३३		द्युम्न	१९	९०
दृष्ट	१८	३०	देव	१६	३२	द्युत	२०	४५
दृष्टरणस्	१६	८	देश	११	८	द्युतकारक	२०	४४
दृष्टांत	२३	६२	देशरूप	१८	२४	द्युनकृत	२०	४४
दृष्टि	{ १६ ९३ २३ ३८		देह	१६	७१	द्योस्	{ १ ६ २ १	
दृष्टे	४	९	देहली	१२	१३	द्येत	३	३४
दे	{ १ ७ ७ १३		देहतेय	१	१२	द्रप्स	१९	५१
देयकीनदन	१	२१	दत्त	१	१२	द्रव	{ ७ ३३ १८ १११	
देयकुसुम	१६	१२५	देत्यगुह	३	२५	द्रवती	१४	८५
देयत्वात्क	१०	२७	देत्या	१४	१२३		{ १८ १०२ १९ ९०	
देयत्वात्तबिल	१३	६	देत्यारि	१	१९	द्रविण	{ २३ ५२ २५ २२	
देवच्छद	१६	१०५	देन्य	२३	१५३		{ १९ ९० २३ १५४	
देवजगधक	१४	१६६	देर्घ	१६	११४	द्रव्य	{ २३ १५४	
देवतक	१	५३	दे	{ ४ २८ १७ १४ १७ ५१		द्राक्	२४	२
देवता	१	९	देवज्ञ	१८	१४	द्राक्षा	१४	१०७
देवताड	१४	६९	देवज्ञा	१६	२०	द्राघिष्ठ	२१	११२
देवत्व	१७	५२	देवत	{ १ ९ ४ २१		द्राघिष्ठक	१४	११५
देवदाय	१४	५४	दोला	{ १४ ९५ १८ ५३		द्रु	१४	५
देवद्वय	२१	३४	दोषज्ञ	१७	५	द्रुकिलिम	१४	५३
देवन	{ २० ४५ २३ ११७		दोषा	२४	६	द्रुघज	१८	९१
देवगुह	१४	२५	दोषा	२४	६	द्रुणी	२५	९
देवभूय	१७	५२	दावेकदृष्ट	२१	४६		{ १ ६८ २१ ८९	
देवमातृक	११	१२	दोस्	१६	८०	द्रुत	{ २१ १०० २४ २	
देवयज्ञ	१७	१४	दोहद	७	२७		{ १ ६८ २१ ८९	
देवयोनि	१	११	दोहदयती	१६	२१	द्रुम	१४	५
देवर	१६	३२	द्युस्	२	२	द्रुमामय	१६	१२५
देवल	२०	११	द्युति	{ ३ १७ ३ २४		द्रुमात्पल	१४	६०
देवशिखिन्	२३	३५	द्युति	{ ३ १७ ३ २४		द्रुवय	१९	८५
देवसभा	१	५१	द्युति	{ ३ १७ ३ २४		द्रुविण	१	१४
देवसायुज्य	१७	५२	द्युति	{ ३ १७ ३ २४				
देवाजीय ...	२०	११	द्युति	{ ३ १७ ३ २४				

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
द्रोण.	{ १५ १९ २३	१४ ८८ ४९	द्विरेफ १५	२९	घन्वयास ...	१४	९१
द्रोणकाक....	१५	२१	द्विप् १८	११	घन्विन्	१८	६९
द्रोणक्षीरा....	१९	७२	द्विपत् १८	१०	घमन ...	१४	१६२
द्रोणदुग्धा....	१९	७२	द्विसात्थ १९	९	घनानि	१६	६५
द्रोणी.	{ १० १४	११ ९५	द्विहल्य १९	९	घमनी	१४	१३०
द्रोहचिन्तन.	५	४	द्विहायनी....	१९	६८	घम्भिल १६	९७
द्रौणिक	१९	१०	द्वीप १०	८	घर ...	१३	१
द्वंद्व.	{ १५ २३	३८ २१२	द्वीपवती १०	३०	घराणि ...	११	२
द्वयातिग	१७	४५	द्वीपिन् १५	१	घरा ...	११	२
द्वाःस्य	१८	६	द्वेषण	... १८	१०	घरित्री	११	२
द्वाःस्यित....	१८	६	द्वेष्य २१	४५	धर्म.	{ ४ ६ २३	२४ ३ १३९
द्वादशांगुल.	१६	८४	द्वेष १८	१८	धर्मचिन्ता ...	७	२८
द्वादशात्मन्.	३	२८	द्वैप	... १८	५३	धर्मध्वजिन्.	१७	५४
द्वापर.	{ ५ २३	३ १६२	द्वैमातुर १	४१	धर्मपत्तन....	१९	३६
द्वास् १२	१६	द्व्य.			धर्मराज	{ १ १ २३	१३ ६१ ३१
द्वास् १२	१६	घट २५	१७	धर्मसंहिता.	६	६
द्वास्पाल १८	६	घत्ता १४	७७	धर्मिणी ...	१६	१०
द्विगुणाकृत.	१९	९	घन १९	९०	धव.	{ १६ २३	३५ २०६
द्विज.	{ १५ २३	३२ ३०	घनजय	... १	५६	धवल ...	५	१३
द्विजराज	३	१५	घनद	... १	७२	धवरा ...	१९	६७
द्विजा १४	१२०	घनहरी १४	१२८	धवित्र	१७	२२
द्विजाति	१७	४	घनाविष १	७२	धातकी.	{ १४ २५	१२४ ७
द्विजिह्व	२३	१३३	घनिन् २१	१०	धात.	{ १३ २३	८ ६५
द्वितीया ...	१६	५	घनिष्ठा ३	२२	धानुपुष्पिका.	१४	१२४
द्वितीयाकृत	१९	९	घनु	... १४	३५	धातु	१	१७
द्विप १८	३४	घनुःपट १४	३५	धात्री	२३	१७६
द्विपाद्य	१८	२७	घनुर्धर १८	६९	धाना	१९	४७
द्विरद	... १८	३४	घनुष्माण्....	१८	६९			
			घनुम् १८	८३			
			घन्य	... २१	३			
			घन्व १८	८३			
			घन्वम् ११	५			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
धानुष्क	१८	६९	धुरीण	१९	६५	ध्रुव	{ ३ २०	
धान्य	१९	२१	धुर्य	१९	६५		{ १४ ८	
धान्यत्वच्	१९	२२	धृ	२१	१०७		{ २१ ८२	
धान्याक	१९	३८	धृषायित .	२१	१०२		{ २३ २११	
धान्यांश ..	२३	४५	धृषित	२१	१०२	ध्रुवा	{ १४ ११५	
धान्याम्ल	१९	३९	धूमकेतु	२३	५८		{ १७ २५	
धामन् ..	२३	१२४	धूमयोनि	३	७	ध्वज	१८	९९
धामार्गव {	१४ ८८		धूमल	५	१६	ध्वजिनी	१८	७८
	१४ ११७		धूम्या	२२	४३	ध्वनि	६	२२
धाव्या	१७	२२	धूम्याट	१५	१६	ध्वनित	२१	९४
धारणा	१८	२६	धूम्र	५	१६	ध्वस्त	२१	१०४
धारा	१८	४९	धूर्जटि	१	३५	ध्वाक्ष	{ १५ २०	
धाराधर	३	७					{ २३ २२०	
धारासताप	३	११		{ १४ ७७		ध्वान	६	२२
धार्तराष्ट्र	१५	२४	धूर्त	{ २० ४४		ध्वात	८	३
धावनी ...	१४ ९३			{ २१ ४७		न		
धिक्	१०३	२४१	धूर्वह	१९	६५	न	२४	११
धिकृत {	२१ ३९		धालि	१८	९८	नकुलेष्ट	१४	११५
	{ २१ ९४		धूसर	५	१३	नक्तक	१६	११५
धिषण	३	२४	धूति	२३	७४	नक्तम्	२४	६
धिषणा	५	१	धृष्ट	२१	२५	नक्तमाल	१४	४७
धिष्ण्य	२३	११५	धृष्णञ्	२१	२५	नक्र	१०	२१
धी	५	१	धेनु	१९	७१	नक्षत्र	३	२१
धीद्विष	५	८				नक्षत्रमाला	१६	१०६
धीमत्	१७	६	धनुका	{ १८ ३६		नक्षत्रेश	३	१५
धीमती	१६	१२		{ २३ १५		नक्ष	{ १४ १३०	
धीर	{ १६ १२४		धनुष्या	१९	७२		{ १६ ८३	
	{ १७ ५		धनुक	१९	६०	नक्षर	१६	८३
धीर	१०	१५	धवत	७	१	नम	२३	१९
धीशक्ति	२२	२५	धोरण	१८	५८	नगरी	१२	१
धीसावित्र	१८	४	धातकीशेय	१६	११३	नगोकस्	१५	३३
धुनी	१०	३०	धौरितक	१८	४८	नम	२१	३९
धुर	१८	५५	धौर्य	१९	६५	नमद्	२०	४२
धुधर ...	१९	६५	ध्याम	१४	१६६	नमिया	१६	८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नट.	{ १४	५६	नभरय	४	१७	नवोद्धृत	१९	५२
	{ २०	१२	नभस्वत्	१	६६	नव्य	२१	७७
नदन ...	७	१०	नमस्	२४	१८	नष्ट	१८	११२
नदी ...	१४	२९	नमासित	२१	१०१	नष्टचेष्टता.	७	३३
	{ १४	१६२	नमस्कारी.	१४	१४१	नष्टाग्नि	१७	५३
नड.	{ १४	१६५	नमस्या	१७	३५	नष्टेदुकला...	४	९
	{ २५	३३	नभस्थित ...	२१	१०१	नस्तित	१९	६३
नडप्राय	११	९	नमुचिसूदन.	१	४६	नस्योत ...	१९	६३
नडसंहति	१४	१६८	नय	२२	९	नाहि	२४	११
नङ्गा	१४	१६८	नयन	१६	९३	ना	२४	११
नङ्गत्	११	९	नर	१६	१		{ १	६
नङ्गुल	११	९	नरक	८	१	नाक.	{ २	२
नत	२१	७१	नरकांतक....	१	२२		{ २३	२
नतनासिक.	१६	४५	नरवाहन	१	७२	नाकु	१०	१४
नद	२३	५७	नर्तक	७	११	नाकुली	१४	११४
नदी	१०	२९	नर्तकी	७	८		{ ८	४
नदीमालक.	११	१२	नर्तनी	७	१०	नाग.	{ १९	१०५
नदीसर्ज	१४	४५	नर्मन	१०	३२		{ २१	५९
नग्री	२०	३१	नर्मदा	१०	३२		{ २३	२१
ननाद	१६	२९	नर्मन्	७	३२	नागकेशर.	१४	६५
	{ २३	२४९	नलकूवर....	१	७३	नागजिहिका.	१९	१०८
नगु.	{ २४	१४	नलद	१४	१६४	नागवला	१४	१५७
नंदक	१	३०	नलमीन	१०	१८	नागर.	{ १९	३८
नंदन	१	४८	नलिन ...	१०	३९		{ २३	१८८
नदिक	१	४३	नलिनी	१०	३९	नागरंग	१४	३८
नदिकेश्वर....	१	४३	नली	१४	१२९	नागलोक ...	८	१
नदिवृक्ष	१४	५२८	नल्व	११	१८	नागवली	१४	१२०
नद्यावर्त	१२	१०	नव	२१	७७	नागसंभव....	१९	१०५
नपुंसक	१६	३९	नवदल	१०	४३	नागांतक	१	३१
नपत्री	१६	२९	नवनील	१९	५२	नाव्य	७	१०
	{ २	१	नवमालिका.	१४	७२	नाडिधम	२०	८
नभस्.	{ ४	१६	नवसूतिका.	१६	७१		{ १६	६५
	{ २३	२३३	नवावर	१६	११२	नाडी.	{ १९	२२
नभसंगम	१५	३४	नवीन	२१	७७		{ २३	४३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
नाडीव्रण	१६	५४	नाढ्य	१०	१०	निम्नति	७	३०
नाथपद	२१	१६	नाश	१८	११६	निरुद्ध	२१	५४
नाथ	६	२३	नासत्य	१	५४	निकेतन	१२	४
नादेयी	{ १४	३०	नासा	{ १०	१३	निमोचक	१४	२९
	{ १४	३८		{ १६	८९	निकण	६	२४
	{ १४	६५	नासिका	१६	८९	निकण	६	२४
	{ १४	११८	नास्तिकता	५	४	निखिञ्च	२१	६५
नाना	{ २३	२४८	नि शलाक	१८	२२	निगद	१९	४१
	{ २४	३	नि शेष	२१	६५	निगद	२०	१२
नानारूप	२१	९३	नि शोधय	२१	५६	निगम	{ १२	१
नादीकर	२१	३८	नि मेणि	१२	१८		{ २३	१००
नादीवादिन्	२१	३८	नि श्रेयस	५	६	निगाद	२९	१०
नापित	२०	१०	नि पमम्	२४	१४	निगाद	२२	३७
नाभि.	{ १८	५६	नि सरण	१२	१९	निगल	१९	४८
	{ २३	१३७	नि रज	२१	१९	निग्रह	२२	१३
	{ २५	९	निकट	२१	६६	निग	२२	३६
	{ २५	२०	निकर	१५	३९	निघास	१९	५६
नाम	{ ६	८	निरुपण	१०	१९	निग्र	२१	१६
	{ २३	१५२	निकष	२०	३०	निचुल	१४	६१
नामधेय	६	८	निकषा	{ २४	७	निचोल	{ १६	{ ११६
नामन्	६	८		{ २४	१९		{ २३	{ ३०
नाथ	२०	९	निकषारमज	१	६३	नितय	{ १३	{ ५
नाथक	२१	११	निकामम्	१९	५७	नितयिनी	{ १६	{ ७४
नारक	९	१	निकाय	१५	४२		{ १६	{ ३
नारद	१	५१	निकाय्य	१२	५	नित्यात	१	७०
नाराध	१८	८७	निकार	{ २२	{ १५	नित्य	{ १	{ ६९
माराधी	२०	३२		{ २२	{ ३६		{ २१	{ ७०
नारायण	१	१८	निकारण	१८	११२	निदान	{ ४	{ १९
नारायणी	१४	१०१	निकुञ्चक	१९	८८	निदान	{ ४	{ २८
नारी	१६	२	निधुज	१३	८		{ २१	{ ८९
नाल	{ १०	४०	निकृम	१४	१४४	निदिग्ध	२१	८९
	{ १९	२२	निकृत्व	१५	४०	निदिग्धक	१४	९३
नालिकेर.	१४	१६८	निहत	{ २१	{ ४१	निरत	{ १८	{ २५
नाविक	१०	१२		{ २१	{ ४६		{ २	{ १०९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
निद्रा	७	३६	नियम.	{ ५ ५	१७ ३८	निदेश	१८	२५
निद्राण	२१	३३		{ १७ ४९		निर्भर.	{ १ ७०	
निद्रालु	२१	३३	नियामक.	१०	१२		{ २४ २	
निघन.	{ १८ ११६		नियुत	२५	२४	निर्मद	१८	३६
	{ २३ १२३		नियुद्ध	१८	१०६	निर्मुक्त	८	३
निधि ...	१	७५	नियाज्य ...	२०	१७	निमार्क	८	९
निधुवन.	{ १७ ५७		निर	२३	२५४	निर्याण ...	१८	३८
	{ २५ ४		निरन्तर	२१	६६	निर्यातिन	२३	१२०
निध्यान	२२	३१	निरय	९	१	निर्यास ...	२३	१५३
निनद	६	२२	निरगल	२१	८३	निर्वपण	१७	३०
निनाद ...	६	२२	निरर्थक	२१	८१	निर्वर्णन	२२	३१
निंदा ...	६	१३	निरवग्रह	२१	१५	निर्वहण	७	१५
निप	१९	३२	निरसन	२२	३१	निर्वाण.	{ ५ ६	
निपठ	२२	२९		{ ६ २०			{ २१ ९६	
निपाठ	२२	२९	निरस्त.	{ १८ ८८		निर्वात	२१	९६
निपातन	२२	२७		{ २१ ४०		निर्वाद.	{ ६ १३	
निपान	१०	२६	निराकरिष्णु.	२१	३०		{ २३ ९०	
निपुण	२२	४	निराकृत	२१	४०	निर्वापण	१८	११४
निवध	१६	५५	निराकृति.	{ १७ ५४		निर्वार्य ...	२१	१३
निवधन	७	७		{ २२ ३१		निर्वासन	१८	११३
निवर्हण	१८	११२	निरामय	१६	५७	निर्वृत्त	२१	१००
निभ ...	२०	३८	निरीश	१९	२३	निर्वेश.	{ २० ३९	
निभृत	२१	२५	निर्कृती	९	२		{ २२ २०	
निमय	१९	८०	निर्गुडी.	{ १४ ६८			{ २३ २१५	
निमित्त	२३	७६		{ १४ ७०		निर्व्यथन	८	२
निमेष	४	११	निर्व्यथन	१८	११३	निर्व्यूह	२३	२३७
निम्र	१०	१४	निर्घोष	६	२३	निर्हार	२२	१७
निम्रगा ...	१०	३०	निर्जर	१	७	निर्हारिन्	५	११
निव	१४	६२	निर्जितेन्द्रियग्राम	१७	४४	निर्वाद	६	२३
निवतश्च	१४	२६	निर्जर	१३	५	निलय	१२	५
निर्याति ...	४	२८	निर्णय	५	३	निवह	१५	३९
निर्धत्त ...	१८	५९	निर्णिक्त	२१	५६	निवात	२३	८४
			निर्णेजक	२०	१०	निवाप	१७	३१

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्दः	वर्ग	श्लोक
निवीत	{ १६ ११३		निष्ठोवन	२२	३८	नीडोद्गम	१५	३४
	{ १७ ५०		निष्ठुर	{ ६ १९		नीभ्र	१२	१४
निवृत्त	२१	८८		{ २१ ७६		नीप १४	४२
निवेश	१८	३३	निष्ठृत	२१	८७	नीर	१०	४
निशा	४	४	निष्ठृति	२२	३८	नील	...	५ १४
निशाख्या	१९	४१	निष्ठेव	२२	३८	नीलकठ	{ १५ ३०	
निशात	१२	५	निष्ठेवन	२२	३८		{ २३ ४०	
निशापति	३	१४	निष्णात	२१	४	नीलगु	१५	१३
निशित	२१	९१	निष्पक्त	२१	९५	नीललोहित	१	३५
निशीथ	४	६	निष्पत्तिमुत्ता	१६	११	नीला	१५	२६
निशीथिनी	४	४	निष्पन्न	२१	१००	नीलावर	१	२५
निश्चय	५	३	निष्पाव	२२	२४	नीलाबुजन्मन्	१०	३७
निश्रेणी	१४	१८	निष्पाम	२१	१००	नीलिका	१४	७०
निषग १८	८८	निष्पवाणि	१६	११२	नीलिनी	१४	९५
निषगिन्	१८	६९	निसर्ग	७	३८	नीली	१४	९४
निषद्या	१२	२	निषष्ट	२१	८८	नीवाक	२२	२३
निषद्वर	१०	९	निस्तल	११	६९	नीवार	१९	२५
निषघ	१३	३	निस्तर्हण	१८	११४	नीधी	{ १९ ८०	
निषाद	{ ७ १		निर्दिश	१८	८९		{ २३ २१२	
	{ २० २०		निस्त्राव	१९	४९	नीवृत्त	११	८
निषादिन्	१८	५९	निस्वन	६	२३	नीसार	१६	११८
निषहन्	१८	११३	निस्वान	६	२३	नीहार	३	१८
निष्क	२३	१४	निहनन	१८	११४	नु	२३	२४९
निष्कला	१६	२१	निहाका	१०	२२	नुति	६	११
निष्कासित	२१	३९	निहिंसन	१८	११३	नुत	२१	८७
निष्कुट	१४	१	निहीन	२०	१६	नुत्त २१	८७
निष्कुटि	१४	१२५	निह्व	{ ६ १७		नूतन	२१	७७
निष्कुह	१४	१३		{ २३ २०८		नूत	२१	७८
निष्क्रम	२२	२५	नीकाश	२०	३८	नूनम्	{ २३ २५१	
निष्ठा	{ ७ १५		नीच	{ २० १६			{ २४ १६	
	{ २३ ४१		नीचेस्	{ २१ ७०		नूपुर	१६	१०९
निष्ठान	{ १९ ४४		नीचेस्	२४	१७	नृ	१६	१
	{ २३ ११६		नीर	१५	३७	नृम ७	१०

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नृप	१८ १	न्यग्रोधी	१४ ८७	पकिल	११ १०
नृपलक्ष्मन्	१८	३२	न्यङ्	२१ ७०	पंकेरुह	१० ४०
नृपसभ	२५ २७	न्यङ्कु	१५ १०	पक्ति.	{	१४ ४
नृपासन	१८ ३१	न्यस्त	२१ ८८		{	१९ ८४
नृसंस	२१ ४७	न्याद	...	१९ ५६		{	२३ ७२
नृसेन	२५ ४०	न्याय	१८ २४	पंगु	१६ ४८
नेतृ	२१ ११	नाय्य.	{	१८ २५	पचंपचा	१४ १०२
नेत्र.	{	१६ ९३		{	२३ १६१	पचा	२२ ८
	{	२३ १८०	न्यास	१९ ८१	पंचजन	१६ १
नेत्रांबु	१६ ९३	न्युञ्ज	१६ ६१	पञ्चता	१८ ११६
नेदिष्ठ	२१ ६८	न्युंख	२५ १७	पञ्चदशी	४ ७
नेपथ्य.	१६ ९९	न्यून	२३ १२८	पञ्चम	७ १
नेमि.	{	१० २७	प.			पञ्चलक्षण.	६	५
	{	१८ ५६	पक्षण	१२ २०	पञ्चशर	१ २६
नेमी	१४ २६	पक्व.	{	२१ ९१	पञ्चशाख	१६ ८१
नैकभेद	२१ ८३		{	२१ ९६	पञ्चांगुल	१४ ५१
नैगम.	{	१९ ७८		{	४ १२	पञ्चास्य	१५ १
	{	२३ १४०	पक्ष.	{	१५ ३६	पञ्जिका	२५ ७
नैचिकी	१९ ६७		{	१६ ९८	पट....	{	१४ ३५
नैपाली	...	१९ १०८		{	१८ ८७		{	१६ ११६
नैमेय	१८ ८०		{	२३ २२१	पटच्चर	१६ ११५
नैयग्रोध	१४ १८	पक्षक	१२ १४	पटल.	{	१२ १४
नैर्ऋत.	{	१ ६३		{	४ १		{	२३ २०१
	{	३ २	पक्षाति.	{	१५ ३६	पटलप्रांत....	१४	१४
नैष्किक	१८ ७		{	२३ ७२	पटवासक.	१६	१३९
नैब्रिशिक.	१८	७०	पक्षद्वार	१२ १४	पटह.	{	७ ६
नौ	...	२४ ११	पक्षभाग	...	१८ ४०		{	१८ १०८
नौ	१० १०	पक्षमूल	...	१५ ३६		{	१४ १५५
नौकादंड....	१०	१३	पक्षांत	४ ७	पटु.	{	२० १९
नौतार्य	१० १०	पाक्षिन्	१५ ३२		{	२१ ३५
न्यक्ष	२३ २२५	पक्षिणी	४ ५		{	२३ ४०
न्यग्रोध.	{	१४ ३२	पक्षमन्	२३ १२१	पटुपर्णी	१४ १३८
	{	२३ ९६	पंक.	{	४ २३	पटोल	...	१४ १५५
				{	१० ९	पटोलिका.	१४	११८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
परःशत	२१	६४	परिकर्मन्....	१६	१२१	परिबर्ह	२३	२४०
परजात	२०	१८	परिक्रम	२२	१६	परिभव'	७	२२
परतंत्र	२१	१६	परिक्रिया....	२२	२०	परिभाषण....	६	१४
परपिडाद्....	२१	२०	परिक्षित	२१	८८	परिभूत	२१	१०६
परभृत्	१५	२०	परिष्ठा	१०	२९	परिमल, {	५	१०
परभृत	१५	१९	परिग्रह	२३	२३८	परिमल, {	२२	१३
परमम्	२४	१२	परिध, {	१८	९१	परिरंभ	२२	३०
परमान्न ...	१७	२४	परिध, {	२३	२७	परिवर्जन....	१८	११४
परमेष्ठिन्	१	१६	परिधातिन.	१८	९१	परिवादिनी.	७	३
परंपराक ...	१७	२६	परिचय ...	२२	२३	परिवापित.	२१	८५
परवत्	२१	१६	परिचर	१८	६२	परिवित्ति....	१७	५६
परशु	१८	९२	परिचर्या....	१७	३५	परिवृट्	२१	११
परश्वस्त्र ...	१८	९२	परिचाध्य...	१७	२०	परिवेत्तु	१७	५६
परश्वस्	२४	२२	परिचारक.	२०	१७	परिवेष	३	३२
पराक्रम. {	१८	१०२	परिणत ...	२१	९६	परिव्याध. {	१४	३०
पराक्रम. {	२३	१३८	परिणय	१७	५७	परिव्याध. {	१४	६०
पराग. {	१४	१७	परिणाम	२२	१५	परिम्राज्	१७	४२
पराग. {	२३	२१	परिणाय	२०	४६	परिषद्	१७	१५
पराङ्मुख... २१	३३		परिणाह	१६	११४	परिष्कार....	१६	१०१
पराचित	२०	१८	परितप्त	२४	१३	परिष्कृत	१६	५६
पराचीम....	२१	३३	परित्राण ...	२२	५	परिष्वंग	२२	३०
पराजय	१८	१११	परिदान	१९	८०	परिसर	११	१४
पराजित	१८	११२	परिदेवन ...	६	१६	परिसर्प	२२	२०
पराधीन ...	२१	१६	परिधाम	१६	११७	परिसर्या	२२	२१
परान्न	२१	२०	परिधि. {	३	३२	परिस्कंद ...	२०	१८
पराभूत	१८	११२	परिधि. {	२३	९७	परिस्तोम ...	१८	४२
परायण	२२	२	परिधिस्थ....	१८	६२	परिस्थंद्	१६	१३७
परारि	२४	२०	परिपण	१९	८०	परिष्ठुत	२०	४१
पराध्य	२१	५८	परिपांथिम्...	१८	११	परिष्ठुता	२०	४०
परासन	१८	११३	परिपाटी	१७	३७	परीक्षक	२१	७
परास्तु	१८	११७	परिपूर्ता....	१६	१३७	परीभाव	७	२२
परास्कादिन्.	२०	२५	परिपेलव	१४	१३१	परीवर्त	१९	८०
परिकार ...	२३	१६५	परिप्लव	२१	७५	परीवाद् ...	६	१३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
परीवाप	२३	१२९	पयु चन	१९	२	पगुप्ररण	२२	३९
परीवार	२३	१६९	पर्येषणा	१७	३०	पगुल्लुज्ज	१९	७३
परीवाह	१०	१०	पर्वत	१३	१	पधान्	२३	२४४
परीष्टि	१७	३२	पर्यन्	{ १४	१६०	पश्चात्ताप	७	२५
परिसार	२२	२१		{ ३३	१०१	पश्चिम	२१	८१
परीहास	७	३२	परिसाधि	४	७	पश्चिमा	३	१
पवत	२४	२०	पशुका	१६	६९	पश्चिमोत्तर	११	७
पवप	६	१९	पल	{ १९	८६	पश्य	१२	५
पदस्	१४	१६२		{ २३	२०२	पांसु	१८	९८
परेत	१८	११७	पलगट	२०	६	पांसुला	१६	११
परेतगज्ज	१	६१	पलकषा	१४	९८	पातु	{ १५	३८
परेयादि	२४	२१	पलञ्ज	१६	६३		{ २२	८
परेष्टुका	१९	७०	पलाङ्ग	१४	१४७	पातुल	१४	१२६
परेधित	२०	१८	पलाल	१९	२२	पात्रशासन	१	४४
परेष्णी	१५	२६		{ १४	१४	पात्रशासने	१	४९
पर्यट्टी	१४	३२	पलाश	{ १४	२९	पात्रस्थान	१९	२७
पर्यङ्गी	१४	१०२		{ १४	१५४	पापय	{ १९	४२
पर्यय	२३	१४६	पलाशिन्	१४	५		{ १९	१०९
	{ १४	१४	पारिष्ठी	१६	१२	पलट	१७	४१
पर्य	{ १४	२९	पलित	१६	४१	पात्रजय	१	२९
	{ २५	२०	पल्यक	१६	१३८	पात्रालिका	२०	४९
पर्यशाल	१०	६	पत्र	१४	१४	पाट	२४	७
पर्यास	१४	७९	पल्लव	१०	२८	पात्रार	२०	२५
पर्यक	१६	१३८	पत्र	२२	२४	पाटल	{ ५	०५
पर्यटन	१७	३६	पत्र	{ १	६६		{ १९	१५
पर्येतम्	११	१४	पत्र	{ २०	२४	पाटला	{ १४	००
	{ १७	३७	पत्राशन	८	८		{ १४	५४
पर्येष	{ २२	३३	पत्रमान	१	६६	पाटलि	{ १४	३९
पर्येषमा	२२	२१	पात्रि	१	५०		{ १४	५४
पवान	१९	५७		{ १४	१६६	पाट	{ १७	१४
पवात	२२	५	पात्रि	{ १७	४१		{ २२	२९
पवाप	{ १७	२०		{ २१	५१	पात्रा	१४	८४
	{ १३	१८७	पात्रिक	१०	१६	पात्रेन्	१४	८०
पवापिप	२०	२२	पात्रिते	१	२९	पात्रोन	१०	१८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पाणि	१६ ८१	पादू	२० ३१	पाराशरिन्	१७	४२
पाणिगृहीती.	१६	५	पादुङ्कृत	२० ७	पारिकाक्षिन्.	१७	४२
पाणिघ	२० १३	पाद्य	१७ ३३	पारिजात.	{ १ ५३	
पाणिपीडन.	१७	५७	पानगोष्ठिका.	२०	४३		{ १४ २६	
पाणिवाद....	२०	१३	पानपात्र	२० ४३	पारितथ्या.	१६	१०३
पांडुर	५ १२	पानभाजन.	१९	३२	पारिपार्थक.	३	३१
पांडु	५ १३	पानीय	१० ४	पारिप्लव	२१ ७५
पांडुकंबलिन्.	१८	५४	पानीयशालिका.	१२	७	पारिभद्र	१४ २६
पांडुर	५ १३	पांथ	१८ १७	पारिभद्रक.	१४	५३
पातक	२५ ३३	पाप.	{ ४ २३		पारिभाष्य.	१४	१२६
पाताल.	{ ८ १			{ २१ ४७		पारियात्रिक.	१३	३
	{ २३ २०२		पापचेली	१४ ८५	पारिपद	...	१ ३७
पातुक	२१ २७	पाप्मन्	४ १३	पारिहार्य	१६ १०७
	{ १० ८		पामन्	...	१६ ५३	पारी	२५ १०
पात्र.	{ १७ २४		पामन	१६ ५८	पाश	६ १४
	{ १९ ३३		पामर	२० १६	पार्थिव	१८ १
	{ २३ १७९		पामा	...	१६ ५३	पार्थिती	१ ३९
पात्री	२५ ४२	पायस.	{ १६ १२८		पार्वती	१ ४२
पात्रीव	२५ ३५		{ १७ २४		पार्वतनिदेन.	१	४२
पाथस्	१० ४	पायु	१६ ७३	पार्थ्व.	{ १६ ७९	
	{ १४ ७		पाय्य	१९ ८५		{ २२ ४२	
पाद.	{ १६ ६१		पार	१० ८	पार्थ्वभाग....	१८	४०
	{ १९ ८९		पारद	१९ ९९	पार्थ्वस्थि....	१६	६९
	{ २३ ८९		पारंपर्योपदेश.	१७	१२	पार्थिण	...	१६ ७२
पादकंटक.	१६	११०	पारशव	२३ २१०	पार्थिणग्राह.	१८	१०
पादग्रहण....	१७	४१	पारश्वधिक.	१८	७०	पालघ्न	१४ १६७
पादप	१४ ५	पारसीक	...	१८ ४५	पालकी	१४ १२१
पादबंधन....	१९	५८	पारस्त्रेण्य....	१६	२४	पालाश	...	५ १४
पादस्फोट....	१६	५२	पारायण	२२ १२	पालि.	{ १८ ९३	
पादाग्र	१६ ७१	पारावत	१५ १४		{ २३ १९७	
पादांगुद	१६ १०९	पारावर्ता त्रि.	१४	१५०	पालिंदी	१४ १०८
पाशत	१८ ६७	पारावार.	{ १० १		पालवा	...	२५ ५
पादातिक.	१८	६६		{ २५ ३५		पावक	...	१ ५७
पादुका	२० ३०				पाश	१६ ९८

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
पाशक	२०	४५	पिठा	{ १९ ३१		पिपाति	२५	८
पाशिन	१	६४		{ २३ १८८		पिप्पल	१४	२०
पाशुपत	१४	८१		{ १८ ३७		पिप्पली	१४	९७
पाशुपात्य	१९	२	पिठ	{ १९ ९८		पिप्पलीमूल	१९	११०
पाश्चात्य	२१	८१		{ १९ १०४		पिप्पु	१६	४९
पाश्या	२२	४३	पिठक	१६	१२८	पिप्प	११	६०
पाषाण	१३	४	पिठिका	१८	५६	पिशाग	५	१६
पाषाणधारण	२०	३४	पिठोत्तर	१४	५२	पिशाच	१	११
पिक	१५	९९				पिशित	१६	६३
पिंग	५	१६	पिण्याक	{ २३ ९			{ १६ १२४	
पिंगल	{ ३ ३१		पितरौ	१६	३७	पिणुन	{ २१ ४७	
	{ ५ १६						{ २३ १२७	
पिंगला	३	४	पितामह	{ १ १६		पिणुना	१४	१३३
				{ १६ ३३		पिष्टक	१९	४८
पिचड	{ १६ ७७		पिठ	१६	२८	पिष्टपचन	१९	३२
	{ २५ १८		पिठदान	१७	३१	पिष्टात	१६	१३९
पिचडिल	१६	४४	पिठपति	{ १ ६१		पीठ	१६	१३८
पिचु	१९	१०६		{ ३ २		पीडन	१८	१०९
पिचुमद	१४	६२	पितृपितृ	१६	३३	पाडा	९	३
पिचुल	१४	४०	पितृमसू	४	३	पात	५	१४
पिचुट	१९	१०५	पितृयज्ञ	१७	१४	पीतदाह	१४	५३
पिचुट	{ १५ ३१		पितृयन	१८	११८		{ १४ ६०	
	{ २५ ३०		पितृय	१६	३१	पीतदु	{ १४ १०१	
पिचुठा	{ १४ ४७		पितृयान्निभ	२१	१३		{ १४ २७	
	{ २५ ९		पितृ	१६	६२	पीतन	{ १६ १२४	
पिचुठिल	१९	४६					{ १९ १०३	
पिचुठिला	{ १४ ४६		पि य	{ १७ २४		पीतसारक	१४	८३
	{ १४ ६२			{ १७ ५१		पीता	१९	४१
पिज	१८	११५	पितृसत्	१५	३४	पीतावर	१	१९
पिजर	{ १९ १०३		पिधान	३	१३	पान	२१	६१
	{ २५ ३१		पिनद्ध	१८	६५	पानस	१६	५१
पिजल	१८	९९	पिनाक	{ १ ३७		पीताभ्रा	१९	७१
पिट	१९	२६		{ २३ १४			{ १ ५१	
पिटक	{ १६ ५३		पिनाकिन्	१	३३	पीयू	{ १० ५४	
	{ २० ००		पिपादा	१०	५५			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पीलु.	{ १४ २३	२८ १९३	पुत्रा	.. १६	३७	पुनयोतम....	१	२१
पीलुपर्णी.	{ १४ १४	८४ १३९	पुत्रन्त	... २५	२०	पुत्रह २१	६३
पीवन्	२१	६१	पुनःपुनः....	२४	१	पुत्रदत्त १	४४
पीवर.	{ २१ २१	६१ ११२	पुनर् ...	{ २३ २४	१५४ १५	पुत्रोप	... १८	७२
पीवरस्तनी.	१९	७१	पुनर्भगा	.. १४	१४९	पुत्रोगम १८	७२
पुंशली	१६	१०	पुनर्भव १६	८३	पुत्रोगामिन.	१८	७२
पुता १६	१	पुनर्भू १६	२३	पुत्रे टाश	... २५	२१
पुक्कस २०	२०	पुत्राग १४	२५	पुत्रोवस् १८	५
पुख	. २५	१७	पुमस् १६	१	पुत्रोभागिन्.	२१	४६
पुंगव	... २१	५९	पुता....	{ १४ २३	३४ १८३	पुत्रोहित १८	५
पुच्छ १८	५०	पुतासर	... १८	७२	पुत्राक २३	५
पुंज १५	४२	पुतास् २४	७	पुलिन १०	९
पुटभेद १०	७	पुतादर १२	१६	पुलिद २०	२०
पुटभेदन	... १२	१	पुतादर १	४४	पुलेमजा १	४८
पुटी	... २५	४२	पुताश्रो १६	६	पुषित २१	९७
पुंटीरीक.	{ ३ १० २३	३ ४१ ११	पुतास्	{ २३ २४	१८३ ७	पुकार	{ २ १० १० १४ २३	१ ४ ४१ १४५ १८५
पुंटीरीकाक्ष.	१	१९	पुताकृत २३	८४	पुकराह १५	२२
पुड १४	१६३	पुतातात २३	२८३	पुकरिणी....	१०	२७
पुडक १४	७२	पुता २३	२५४	पुकल २१	५८
पुण.	{ ४ २३	२४ १६०	पुताण....	{ ६ २१	५ ७७	पुट	... २१	९७
पुण्यक १७	३८	पुताणपुष्य.	१	२२	पुट	{ १४ १६ २५	१७ २१ २३
पुण्यजन १	६३	पुतातन	.. २१	७७	पुष्प.	{ १ १९ १९	७४ १०३ २१
पुण्यजनेश्वर.	१	७३	पुतावृत्त ६	४	पुष्पक.	{ १ १९ १९	७४ १०३ २१
पुण्यभूमि ११	८	पुती १२	१	पुष्पकेतु १९	१०३
पुण्यवत् २१	३	पुतीतत् १६	६६	पुष्पदत्त ३	४
पुत्तिका १५	२७	पुतीप १६	६८	पुष्पधन्वन्....	१	२७
पुत्र १६	२७	पुत्र	. २१	६३	पुष्पफल १४	२१
पुत्रिका २०	२९	पुत्र	{ ४ १४ १६ २३	२२ २५ १ २१९			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
पुष्परस	१४	१७	पूर्णकुम्भ	१८	३२	पृथ्वाका	१४	१२५
पुष्पलिङ्ग	१५	२९	पुणिमा	४	७	पृदाकु	८	६
पुष्पवती	१६	२०	पुर्त	१७	२८	पृश्नि	१६	४८
पुष्पधृता	४	१०	पुर्व	{ २१	८०	पृश्निवर्णी	१४	९२
पुष्पसमय	४	१८	पुर्वज	{ २३	१३४	पृषत्	१०	६
पुष्प	{ ३	२०	पुर्वद्व	१६	४३	पुषत	{ १०	६
	{ २३	१४७	पुर्वपित	१	१२		{ १५	१०
पुष्परथ	१८	५१	पुर्वित	१३	२	पृषत्क	१८	८६
पुस्त	२०	२८	पुर्वी	३	१	पृषदम्भ	१	५५
पूग	{ १४	१६९	पुर्वी	३	१	पृषद्वय	१७	२४
	{ ३	२०	पुर्वी	३	१	पृष्ठ	१६	७८
पूजन	२३	१५६	पुर्वी	३	१	पृष्ठमशाधर	१६	७६
पूजा	१७	३५	पुर्वी	३	१	पृष्ठारिष	१६	६९
पूजित	२१	९८	पृच्छा	६	१०	पृष्ठय	{ १८	४६
पूज्य	{ २१	५	पृथना	{ १८	७८		{ २२	४२
	{ २३	१५०	पृथक्	२४	३	पेचक	{ १५	१५
	{ १७	४५	पृथक्वर्णी	१४	९२		{ २३	६
पूत	{ २९	२३	पृथक्त्वता	{ ४	३१	पेटक	२०	३०
	{ २१	५५		{ १७	३८	पेटा	२०	३०
पूतना	१४	५९	पृथक्जन	{ २०	१६	पेटो	२५	४२
पूतिक	१४	४८		{ २३	१०५	पेटा	२१	६६
पूतिकरज	१४	४८	पृथक्विष	२१	९३	पेशल	{ २०	१९
पूतिकाष्ट	{ १४	५४	पृथिवी	११	३		{ २१	६६
	{ १४	६०		{ १८	३७		{ २३	२०५
पूतिगाधि	५	१२	पृथु	{ १८	४०	पेशी	१५	३७
पूतिपट्टी	१४	९६		{ २१	६०	पेडा	१९	४५
पूष	१९	४८		{ २१	११२	पेठप्रेषय	१६	२५
पूर	१२	१	पृथुक	{ १५	३८	पेठप्रेषीय	१६	२५
पूर	२५	२०		{ १९	४७	पत्र	४	२१
पूरगी	१४	४६		{ २३	३	पोटगल	{ १४	१६२
पूरित	२१	९८	पृथुमेन	१०	१०		{ १४	१६३
पूदय	१६	१	पृथुट	२१	६०	पोटा	१६	१५
पूरी	{ २१	६५	पृथी	{ ११	३	पोत	{ १५	३८
	{ २१	९८		{ १९	३७		{ २२	६०
				{ १८	६०			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पोतवाणिज्.	१०	१२	प्रकोष्ठ	१६ ८०	प्रज्ञान	२३ १२२
पोतवाह	१०	१२	प्रक्रम	२२ २६	प्रज्ञु	१६ ४७
पोताधान...	१०	१९	प्रक्रिया	१८ ३१	प्रहान	...	१५ ३७
पोत्र	२३	१८०	प्रक्षण	६ २४	प्रणय.	{ २२ २५	
पोत्रिन्	१५	२	प्रक्षान	६ २४		{ २३ १५१	
पोष्ट	२३ ५९	प्रश्वेडन	१८ ८७	प्रणय	६ ४
पौड्य	१५ १२७	प्रगंड	१६ ८०	प्रणाद	६ ११
पौत्री	१६ २९	प्रगतजानुक.	१६	४७	प्रणाली	१० ३५
पौर	१८ १६६	प्रगल्भ	२१ २५	प्रणिधि.	{ १८ १३	
पौरस्त्य	२१ ८०	प्रगाढ	२३ ४५		{ २३ १००	
पौरुष.	{ १६ ८०		प्रगुण	२१ ७२	प्रणिहित	...	२१ ८६
	{ २३ २२३		प्रगे	२४ १९	प्रणीत.	{ १७ २०	
पौरोगव	१९ २७		प्रग्रह.	{ १८ ११९			{ १९ ४५	
पौर्णमास....	१७ ४८			{ २३ २३८		प्रणुत	२१ १०९
पौर्णमासी.	४ ७		प्रग्राह	२३ २३८	प्रणय	२१ २५
पौलस्त्य	१ ७२		प्रग्रोव	२५ ३५	प्रतन	२१ ७७
पौलि	१९ ४७	प्रघण	१२ १२	प्रतल.	{ १६ ८४	
पौष	४ १५	प्रघाण	१२ १२		{ १६ ८५	
प्याट्	२४ ७	प्रचक्र	१८ ९६	प्रताप	१८ २०
प्रकंपन	१ ६६	प्रचलायित.	२१	३२	प्रतापस	१४ ८१
प्रकर्ष	२१ ११२	प्रचुर	२१ ६३	प्रति	२३ २४६
प्रकांड.	{ ४ २७		प्रचेतस	१ ६४	प्रतिकर्मन्.	१६	९९
	{ १४ १०		प्रचोदनी	१४ ९४	प्रतिकूल	२१ ८४
प्रकामम्	१९ ५७		प्रच्छदपट.	१६	११६	प्रतिकृति....	२० ३६	
प्रकार	२३ १६२	प्रच्छन्न	१२ १४	प्रतिकृष्ट	२१ ५४
प्रकाश.	{ ३ ३४		प्रच्छर्दिका.	१६	५५	प्रतिक्षिप्त....	२१ ४२	
	{ २३ २१८		प्रजन	...	२२ २५	प्रतिख्याति.	२२	२८
प्रकीर्णक....	१८ ३१		प्रजविन्	१८ ७३	प्रतिग्रह	...	१८ ७९
प्रकीर्य	१४ ४८	प्रजा	२३ ३२	प्रतिग्राह	..	१६ १३९
प्रकृति.	{ ४ २९		प्रजाता	१६ १६	प्रतिघा	७ २६
	{ ७ ३७		प्रजापति	१ १७	प्रतिघातन.	१८	११४
	{ १८ १८		प्रजावती....	१६	३०	प्रतिच्छाया.	२०	३६
	{ २३ ७३		प्रज्ञा.	{ ५ १		प्रतिजागर.	२२	२८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
प्रफुल्ल	...	१४ ७	प्रयत	...	१७ ४५	प्रव्यक्त	२१ ८१
प्रवृधकल्पना.	६	६	प्रयस्त	१९ ४५	प्रश्र	६ १०
प्रबोधन	१६ १२२	प्रयाम	२२ २३	प्रश्रय	२२ २५
प्रभंजन	१ ६६	प्रयोगार्थ	२२ २६	प्रश्रित	२१ २५
प्रभव	२३ २१०	प्रलंबन	१ २४	प्रष्ट	...	१८ ७२
प्रभा	३ ३४	प्रलय.	{	४ २२	प्रष्टवाह	१९ ६३
प्रभाकार	३ २८		{	७ ३३	प्रष्टही	१९ ७०
प्रभात	...	४ ३		{	१८ ११६	प्रसन्न	१० १४
प्रभाव.	{	१८ १९	प्रलाप	६ १५	प्रसन्नता	३ १६
	{	१८ २०	प्रवण	...	२३ ५६	प्रसन्ना	२० ४०
प्रभिन्न	१८ ३६	प्रवयस्	१६ ४२	प्रसभ	१८ १०८
प्रभु	२१ ११	प्रवर्ह	२१ ५७	प्रसर	२२ २३
प्रभूत	२१ ६३	प्रवह	२२ १८	प्रसरण	१८ ९६
प्रभ्रष्टक	१६ १३५	प्रवहण	१८ ५२	प्रसव,	{	२२ १०
प्रमथ	१ ३७	प्रवाहिका....	६	६		{	२३ २०८
प्रमथन	१८ ११५	प्रवारण	२२ ३	प्रसववधन.	१४	१५
प्रमथाधिप.	१	३३	प्रवाल.	{	७ ७	प्रसव्य	...	२१ ८४
प्रमद	४ २४		{	१९ ९३	प्रसह्य	...	२४ १०
प्रमदवन	१४ ३		{	२३ २०४	प्रसाद.	{	३ १६
प्रमदा	१६ ३	प्रवाह	२२ १८		{	२३ ९१
प्रमनस	२१ ७	प्रवासन	१८ ११३	प्रसाधन	१६ ९९
प्रमा	२२ १०	प्रवाहिका....	१६	५५	प्रसाधनी	१६ १३९
प्रमाण	२३ ५४	प्रविहारण.	१८	१०३	प्रसाधित	१६ १००
प्रमाद	७ ३०	प्रविलेप	२२ २०	प्रसारिणी	१४ १५२
प्रमापण	१८ ११२	प्रवीण	२१ ४	प्रसारिन्	२१ ३१
प्रमिति	२२ १०	प्रवृत्ति.	{	६ ७	प्रसित	२१ ९
प्रमीत.	{	१७ २६		{	२२ १८	प्रसिती	२२ १४
	{	१८ ११७	प्रवृद्ध....	{	२१ ७६	प्रसिद्ध	२२ १०४
प्रमीला	{	७ ३७		{	२१ ८८	प्रसू...	{	१६ २९
	{	२३ १७६	प्रवेक	२१ ५७		{	२३ २३०
प्रमुख	२१ ५७	प्रवेणी.	{	१६ ९८	प्रसूता	१६ १६
प्रमुदित	२१ १०३		{	१८ ४२	प्रसूति	२२ १०
प्रमोद	४ २४	प्रवेष्ट	१६ ८०	प्रसूतिका	१६ १६

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
प्रसूतिज	९	३	प्रामद्व	२१	५८	प्राप्तरूप	२४	१३१
प्रसून	{ १४ १७ २३ १२०		प्राप्य	२१	५८	प्राप्ति	२३	६९
प्रसूननायितारी	१६	३७	प्राधार	१६	१०	प्राप्य	२१	९२
प्रसृत	२१	८८	प्राधुगक	१७	३४	प्राभृत	१८	२७
प्रसृता	१६	७२	प्राधूर्णिक	१७	३४	प्राप	{ १७ ५३ २३ १५३	
प्रसृति	१६	८५	प्राचिका	२५	८	प्राप्यस्	२४	१७
प्रसेव	१९	२६	प्राची	३	१	प्रापित	२१	९७
प्रसेवक	७	७	प्राचान	१२	३	प्राप्ति	१६	१३६
प्रस्तर	{ १३ ४ २३ १६३		प्राचीना	१४	८५	प्राप्ति	१६	१०४
प्रस्ताव	२२	२४	प्राचीनायित	१७	५०	प्राप्ति	३	१८
प्रस्य	{ १४ ५ १९ ८९ २३ ८८		प्रच्य	११	७	प्राप्ति	१६	११८
प्रस्यपुष्प	१४	७९	प्राजन	१९	१२	प्राप्ति	१६	११७
प्रस्यमान	१९	८५	प्राजित	१८	५९	प्राप्ति	१६	११३
प्रस्यान	०८	९५	प्राज्ञ	१७	५	प्राप्ति	४	१९
प्रस्फोटन	१९	७६	प्राज्ञा	१६	१२	प्राप्ति	१४	८६
प्रस्रण	१३	५	प्राज्ञी	१६	१२	प्राप्ति	१८	९३
प्रस्राव	११	६७	प्राज्य	२१	६३	प्राप्ति	१८	५७
प्रहर	४	६	प्राज्ञिक	१८	५	प्राप्ति	१९	६४
प्रहरण	१८	८२	प्राणि	{ १ ६७ १८ १०२ १८ ११९ १९ १०४		प्राप्ति	१२	९
प्रहस्त	१६	१४	प्राणिन्	४	३०	प्राप्ति	१८	७०
प्रहि	१०	२६	प्राप्तर	२४	१९	प्राप्ति	३	३
प्रहेलिका	६	६	प्राप्यमकल्पिक	१७	११	प्राप्ति	{ १६ ३५ २१ ५३	
प्रहस्र	२१	१०३	प्रदुस्	{ २३ २५७ २४ १२		प्राप्ति	{ १४ ७९ १४ ४४ १४ ५६ १५ ९	
प्रागु	२१	७०	प्रादेश	१६	८३	प्राप्ति	{ १४ ५५ १९ २०	
प्राण	{ २४ १६ २४ २३		प्रादेशन	१७	३०	प्राप्ति	७	७७
प्राणार	१२	३	प्राधुम्	२४	४	प्राप्ति	२१	३६
प्राणत	२०	१६	प्रातर	११	१७	प्राप्ति	१४	३५
प्राणदक्षिण	११	७	प्रात	{ २१ ८६ २१ १०४		प्राप्ति	२२	४
प्राणश	१७	१६	प्रातपयत्	१८	११७			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
प्रीत २१	१०३	प्लवंगम २३	१३८	फाट	... २१	९४
प्रीति	... ४	२४	प्लक्ष १४	१८	फाल.	{ १६ १११	
पुष्ट २१	९९	प्लोहन् १६	६६		{ १९ १३	
प्रेक्षा.	{ ५ १		प्लोहशत्रु १४	४९	फाल्गुन ४	१५
	{ २३ २२५		प्लुत १८	४८	फाल्गुनिक.	४	१५
प्रस्था १८	५३	प्लुष्ट २१	९९	फाल्गुनी	... २५	६
प्रेषित २१	८७	प्लुष २२	९	पुष्ट १४	८
प्रेत.	{ १८ ११७		प्लात २१	११०	फेन.	{ १९ १०५	
	{ २३ ६०		फ.				{ २५ १९	
प्रेता ९	२	फणा ८	९	फेनिल.	{ १४ ३१	
प्रेत्य २४	८	फाणिजक १४	७९		{ १४ ३६	
प्रेमन् ७	२७	फाणिन् ८	७	फेरव १५	५
प्रेषण २२	३४		{ १८ ९०		फेव १५	५
प्रेष्ट	... २१	१११	फल.	{ १९ १३		फेला १९	५६
प्रेष २३	२२०		{ २३ २०१		व.		
प्रेष्य २०	१७		{ २५ २३		बक १५	२२
प्रोक्षण १७	२६	फलक १८	९०	बकुल १४	६४
प्रोक्षित	... १७	२६	फलकपाणि.	१८	७१	बडिश १०	१६
प्रोथ १८	४९	फलत्रिक १९	१११	वत २३	२४५
प्रोद्यत २३	८५	फलपाकाता.	१४	६	वदर १४	३७
प्रोष्ठपदा ३	२२	फठपूर १४	७८	वदरा.	{ १४ ११६	
प्रोष्ठी १०	१८	फलवत् १४	७		{ १४ १५१	
प्रोष्ठपद	४	१७	फलाध्यक्ष.	१४	४५	वदरी १४	३६
प्रौढ	... २१	७६	फालिन्	... १४	७	बद्ध...	{ २१ ४२	
प्रक्ष....	{ १४ ३२		फालिन १४	७		{ २१ ९५	
	{ १४ ४३		फालिनी.	{ १४ ५५		बधिर १६	४८
	{ १० ११			{ १४ १३६		बदिन् १८	९७
	{ १० २४		फाली	... १४	५५	बन्दी १८	११९
प्लव....	{ १४ १३२		फलेग्रही	... १४	६	बन्धकी	... १६	१०
	{ १५ ३४		फलेग्रहा १४	५४	बधन.	{ १८ २६	
	{ २० १९			{ ४ १५			{ २२ १४	
प्लवग.	{ १५ ३		फल्गु	{ १४ ६१		बधनालय.	१८	११९
	{ २३ २४			{ २१ १६		बन्धस्तम्भ १८	४१
प्लवंग १५	३	फणित	... १९	४३	बधु १६	३४

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक		
बधुजीवक	१४	७३	बले	{ १७	१४	बहुविध	२१	९३		
बधुता	१६	३५		{ १८	२७	बहुवेत्तस	११	९		
बधुर	२१	६९		{ २३	१९५	बहुसुता	१४	१००		
बधुल	१६	२६	बलिम्भसिन्	१	२१	बहुसूति	१९	७०		
बधूक	१४	७३	बालिन्	१६	४५	बाकनी	१४	९६		
बधूकपुष्प	१४	४४	बलिपुष्ट	१५	२०	बाढ	{ १	७०		
बधु	२३	१७०	बलिम्भ	१६	४५		{ २३	४४		
बर्बर	१४	१०	बलिम्भज्	१५	२०	बाण	{ १८	८६		
बर्परा	१४	१३९	बलिर	१६	४९		{ २३	४५		
बर्ह	{ १५	३१	बलिसम्भन्	८	१	बाणा	१४	७४		
	{ २३	२३७	बलीर्गर्द	१९	५९	बदर	१६	१११		
बर्हपुष्प	१४	१३२	बलिव	{ १९	२७	बाघा	९	३		
बर्हि	१	५७		{ १९	५७	बाघाकिनेय	१६	२६		
बर्हिण	१५	३०	बल्वज	१४	१६३	बाघिन	१६	३४		
बर्हिन्	१५	३०	बध्कयणी	१९	७१	बाह्य	१४	१९		
बर्हिमुख	१	९	बस्त	१९	७६	बाल	{ १४	११२		
बर्हिष्ठ	१४	१२२	बस्ति	१६	७३		{ १६	४२		
बाल	{ १	२५	बहेर्दार	१९	१६		{ २३	२०५		
		१८	७८	बाहिष्ठ	२१		११९	बालर्गभिणी	१९	७०
		१८	१०२	बाहिस	२४		१७	बालतनय	१४	४९
		२३	१९५	बहु	२१		६३	बाणतण	१४	१९७
		२५	२२	बहुकर	२१		१७	बालम्भिका	१५	१२
बलदेव	१	२४	बहुगर्गशस्त्र	२१	३६	बाला	७	१४		
बलभद्र	१	२४	बहुपाद	१४	३२	बालिश	{ २१	४८		
बलभद्रिका	१४	१५०	बहुपद	२१	६		{ २३	२१८		
बलवत्	{ १६	४४	बहुम् य	१६	११३	बालेय	१९	७७		
		२४	२	बहुरूप	१६	१२८	बालेयशाक	१४	९०	
बलवि यास	१८	७९	बहुल	{ २१	६३	बाल्य	१६	४०		
बला	१४	१०७		{ २१	११२	बाष्प	२३	१३०		
बलाका ...	१५	२५	बहुला	{ २३	१९९	बाष्पिका	१९	४०		
बलाकार	१८	१०८		{ १४	१२५	बाहु	१५	८०		
बलराति	१	४६	बहुलीकृत	{ २३	१९९	बाहज	१८	१		
बलाहक	३	६		१९	२३	बाहदा	१०	३३		
			बहुसारक ...	१४	३४	बाहुमल	१६	७९		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
बाह्यद्र...	११	१०६	बुक्ता	१६ ६४	ब्रह्मपुत्र	८ १०
बाहुल	४ १८	बुद्ध.	{	१ १३	ब्रह्मवधु	२३ १०४
बाहुलेय	१ ४२		{	२१ १०८	ब्रह्मविदु	१७ ३९
बालिहक.	{	११ ४५	बुद्धि	५ १	ब्रह्मभूय	१७ ५२
	{	२५ ३२	बहुद	२५ १९	ब्रह्मयज्ञ	१७ १४
बालर्हाक	{	१६ १२४		{	३ २६	ब्रह्मवर्चस्...	१७	३९
	{	१९ ४०	बुध	{	१७ ५	ब्रह्मसायुज्य.	१७	५२
	{	२३ ९		{	२३ १००	ब्रह्मसू	१ २८
बाह्य	२४ १७	बुधित	२१ १०८	ब्रह्मसूत्र	१७ ५०
बाह्य	१९ ४२	बुध	१४ १२	ब्रह्माजली	१७	३९
बिडाल	१५ ६	बुभुक्षा	१९ ५४	ब्रह्मासन	... १७	४०
बिडोजस्	...	१ ४४	बुभुक्षित	२१ २०	ब्राह्म.	{	४ २१
बिदु	१० ६	बुस	१९ २२		{	१७ ५१
बिदुजातक.	१८	३९	बुस्त	२५ ३४	ब्राह्मण	१७ ४
बिब	३ १५	बृहति	१८ १०७	ब्राह्मणयष्टिका.	१४	८९
बिबिका	१४ १३९	बृहत्	२१ ६०	ब्राह्मणी	१४ ८९
बिल	८ १	बृहतिका	१६ ११७	ब्राह्मण्य	२२ ४१
बिलेशय	८ ८	बृहती.	{	१४ ९३	ब्राह्मी.	{	१ ३७
बिल्व	१४ ३२		{	२३ ७५		{	६ १
बिस	१० ४२	बृहत्कुक्षि.	१६	४४		{	१४ १३७
बिसकंटिका.	११	२५	बृहद्भानु	१ ५७	भ.		
बिसप्रसन्	१०	४१	बृहत्पाति	१ २४	भ	३ २१
बिसिनी	१० ३९	बोधकर	१८ ९७	भक्त.	१९ ४८
बिस्त	१९ ८६	बोधिद्रुम	१४ २०	भक्षक	...	२१ २०
बीज.	{	४ २८	बाल	१९ १०४	भक्षित	२१ ११०
	{	१६ ६२	बध्न	३ २८	भक्ष्यकार	१९ २८
बीजकोश...	१०	४३	ब्रह्मचारिन्.	{	१७ ३	भग.	{	१६ ७६
बीजपू	१४ ७८		{	१७ ४३		{	२३ २६
बीजाकृत...	१९	८	ब्रह्मण्य	१४ ४१	भगदर	१६ ५६
बीज्य	१७ २	ब्रह्मत्व	१७ ५२	भगवत्	१ १३
बीभत्स.	{	७ १७	ब्रह्मदर्भा	...	१४ १४५	भगिनी	१६ २९
	{	७ १९	ब्रह्मदार	१४ ४१	भंग	१० ५
	{	२३ २३५	ब्रह्मन्.	{	१ १६	भंगा	१९ २९
बुक	१४ ८१		{	२३ ११४	भंगी	...	२५ ८

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
भग्य	१९	७	भर्तृदारक	७	१२	भाद्र	४	१७
भजमान	१८	२४	भर्तृदारिका	७	१३	भाद्रपद	४	१७
भट	१८	६१	भर्त्सन	६	१४	भाद्रपदा	३	२२
भटिञ्च	१९	४५	भमम्	{ १९ ९४		मान	{ ३ ३१	
भट्टारक	७	१३		{ २० ३८			{ ३ ३३	
भट्टिनी	७	१३	भल्ल	२५	२१		{ २३ १०५	
भट्टाजी	१४	११४	भल्लातकी	१४	४२	भाभिनी	१६	४
भडिल	१४	६३	भल्लुक	१५	३	भार	१९	८७
भडी	१४	९१	भल्लूक	१५	४	भारत	११	६
भर	{ ४ २५		भञ्ज	{ १ ३६		भारती	६	१
	{ १९ ४९			{ २३ २०६		भारद्वाजी	१४	११६
भद्रकुम्भ	१८	३२	भञ्जन	१२	५	भरथाष्टि	२०	३०
भद्रदाह	१४	५२	भगानी	१	३९	भारयाह	२०	१५
भद्रपर्णी	१४	३६	भगिक	४	२६	भारक	२०	१५
भद्रबला	१४	१५३	भगित्	२१	२९	भार्गव	३	२५
भद्रमुरतक	१४	१६०	भगिष्णु	२१	२९	भार्गवी	१४	१५८
भद्रयज	१४	६७	भय	४	२६	भार्गी	१४	८९
भद्रश्री	१६	१३१	भयक	२०	२२	भार्या	१६	६
भद्रासन	१८	३१	भला	२०	३३	भार्यापती	१६	३८
भय	७	२१	भस्मगधिनी	१४	१२०	भाव	{ ७ १२	
भयम्बर	७	२०	भस्मगर्भा	१४	६३		{ ७ २१	
भयद्रुत	२१	४२	भा	३	३४		{ २३ २०७	
भयानक	{ ७ १७		भाग	१९	८०	भावबोधक	७	२१
	{ ७ २०		भागधेय	{ ४ २८		भाषित	{ १६ १३४	
भर	१	६९		{ १८ २७			{ १९ ४६	
भरण	२०	३९	भागिनय	१६	३२		{ ११ १०४	
भरण्य	२०	३९	भागरायी	१०	३१	भावुक	४	२६
भरण्यभुज्ज	२१	१९	भागध	{ ४ २८		भाषा	६	१
भरत	२०	१२		{ २३ १५५		भाषित	{ ६ १	
भरद्वाज	१५	१५	भागिन	१९	७		{ २१ १०७	
भर्ग	१	३५	भजन	१९	३३	भाष्य	२५	३१
भट्ट	{ १६ ३५		भाट	{ १९ ३३		भास	३	३४
	{ २३ ५९			{ २३ ४४		भाभ	२३	५८
						भास्कर	३	२८

शब्दः	पृष्ठाः	श्लोकाः	अक्षरः	उप-श्लोकाः	उप-पृष्ठाः	पृष्ठाः	श्लोकाः
भारयत्	३	२१	भर्जयम् ...	१	६	भृष्टः ...	२१ ६३
भिक्षा. { २२ ६		भृजिगोषी... १४	१११	भृष्टः { २१ ६			
भिक्षु. { २३ २०५		भृजिगोषी १६	११	भृष्टः { २१ १८०			
भिक्षु. { १७ २		भर्जयत् ... १६	११	भृष्टः ... १८	१८३		
भिक्षु. { १७ ४२		भर्जयत् ... २०	११	भृष्टः ... १९	२		
भिक्षु ... ३ १६		भृजिगोषी { १० ३		भृष्टः ... १८	२१		
भिक्षु ... १२ ४		भृजिगोषी { ११ ६		भृष्टः ... १८	४६		
भिक्षु ... २२ ५		भृजिगोषी ... ११	२	भृष्टः ... १६	१८१		
भिक्षु ... १ ५०		भृजिगोषी { १ ११		भृष्टः ... १८	१८०		
भिक्षु... १८ ११		भृजिगोषी { २१ १८		भृष्टः ... २१	२१		
भिक्षु. { २१ ८२		भृजिगोषी { २३ १८		भृष्टः ... १४	१८१		
भिक्षु. { २१ १००		भृजिगोषी ... १९	१११	भृष्टः ... १३	२		
भिक्षु ... १६ ५७		भृजिगोषी ... १७	१८	भृष्टः { १८ १३०			
भिक्षुता ... १९ ४९		भृजिगोषी ... १८	११	भृष्टः { ११ १६	२१		
भिक्षुता ... १९ ४८		भृजिगोषी ... २२	१८	भृष्टः ... १८	१८१		
भी ... ७ २१		भृजिगोषी ... १८	५८	भृष्टः ... १८	१८१		
भीति ... ७ २१		भृजिगोषी { १ १८		भृष्टः ... १८	२२		
भीम. { १ ३६		भृजिगोषी { २० ६१		भृष्टः ... ११	२८		
भीम. { ७ २०		भृजिगोषी ... २१	८	भृष्टः ... १	४३		
भीष्ट. { १६ ३		भृजिगोषी ... १	३३	भृष्टः ... २०	११		
भीष्ट. { २१ २६		भृजिगोषी ... १५	२	भृष्टः ... २०	१८		
भीष्टक ... २१ २६		भृजिगोषी ... १७	४	भृष्टः ... २०	१५		
भीष्टक ... २१ २६		भृजिगोषी ... १८	१४३	भृष्टः ... २०	१८		
भीष्टण ... ७ २०		भृजिगोषी ... १८	१	भृष्टः ... १	७०		
भीष्म ... ७ २०		भृजिगोषी ... १४	७०	भृष्टः ... १०	२४		
भीष्मस् ... १० ३१		भृजिगोषी ... २३	६१	भृष्टः ... १०	२४		
भुक्त ... २१ १११		भृजिगोषी ... २४	१७	भृष्टः { १८ २०			
भुक्तसमुद्दिष्ट. १९ ५६		भृजिगोषी ... ११	२	भृष्टः { १८ २१			
भुम. { २१ ७१		भृजिगोषी { १४ ३८		भृष्टः ... २१	१००		
भुम. { २१ ११		भृजिगोषी { १४ ११८		भृष्टः ... ७	६		
भुज ... १६ ८०		भृजिगोषी ... २३	६१	भृष्टः ... १६	५०		
भुजग ... ८ ६		भृजिगोषी ... १९	१	भृष्टः ... १७	४७		
भुजंग ... ८ ६		भृजिगोषी ... २१	६३	भृष्टः ... ७	१९		
भुजंगभुज. १५ ३०							

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
भैरव	१६	५०	भूकृति	७	३७	माणवध	१६	८१
भोग	२३	२३	भ्रूज	{	१६ ३९	मह	{	१४ ५१
भोगवती	२३	७०			२३ ४५			१९ ४९
भोगिन्	८	८			२३ १३५			१६ १०२
भोगिनी	१५	५	भ्रूष		१८ २३	महन	{	२१ २९
भोजन	१९	५५	म		१० २०	महप		१२ ९
भोत	२४	७				महल	{	३ ६
भोम	३	२५						३ १५
भौरिक	११	७	मकर		१४ १७			३ ३२
भ्रंश	१८	२३	मकरध्वज		१९ १७	महलक		१६ ५४
भ्रकुस	७	११	मकुष्टक		१४ १४४	महलाम		१८ ८९
भ्रकृति	७	३७	मकुलक		१५ २६	महलेश्वर		१८ २
भ्रम	{	५ ४	मक्षिका		१७ १३	महहारक		२० १०
		१० ७	मल		१८ १७	महित		१६ १००
		२२ ९	मगध		१ ४४	महीती		१४ ९१
भ्रमर	१५	२९	मधु		२४ ७	मडूक		१० २४
भ्रमरक	१६	९६	मगल		४ २५	मडूकपर्ण		१४ ५६
भ्रमि	२२	९	मगत्यक		१९ १७	मडूकपर्णी		१४ ९१
भ्रष्ट	२१	१०४	ममस्या		१६ १२७	मडूर		१९ ९८
भ्रष्टपव	१९	४७	मचर्विका		४ २७	मतगज		१८ ३४
भ्राजिष्णु	१६	१०१	मजा		१४ १२	मतल्लिका		४ २७
भ्रातृ	१६	३६	मच		१६ १३८	मति		५ १
भ्रातृज	१६	३६	मजरि		१४ १३	मत	{	१८ ३६
भ्रातृजाया	१६	३०	मजिठा		१४ ९०			२१ २३
भ्रातृभगिनी	१६	३६	मजौर		१६ १०९			२१ १०३
भ्रातृव्य	२३	१४६	मजु		२१ ५२	मतकाशिनी		१६ ४
भ्रात्रीय	१६	३६	मजुल		२१ ५२	मत्तर		२३ १७२
भ्राति	५	४	मजुषा		२० ३०	मत्स्य		१० १७
भ्राष्ट्र	१९	३०	मठ		१२ ८	मत्स्यडी		१९ ४२
भ्रुकुस	७	११	महड्ड		७ ८	मत्स्यपित्ता		१४ ८६
भ्रुकृति	७	३१	मणि	{	१ ३०	मत्स्यवेधन		१० १६
भ्रू	१६	९२			१९ ९३	मत्स्याक्षी		१४ १३७
भ्रुकुप	७	११			१९ ३१	मत्स्याख्यग		२३ २२०
			मणिक		१९ ३१	मत्स्याधानी		१० १६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
मथित	...	१९ ५३	मधुरिका	१४ १०५	मनुष्यवर्धन्.	१	७२
	{	१८ ३७	मधुरिपु	१ २०	मनोगुप्त	१९ १०८
मद.	{	२२ १२	मधुलिङ्	१५ २९	मनोजवस्.	२१	१३
	{	२३ ९१	मधुवार	२० ४१	मनोज्ञ	२१ ५२
मदकल	१८ ३५	मधुव्रत	१५	२९	मनोभव	२३ १३८
	{	१ २६	मधुशिशु	१४ ३१	मनोरथ	७ २७
मदन.	{	१४ ५३	मधुश्रेणी	१४ ८४	मनोरम	२१ ५२
	{	१४ ७८	मधुष्ठील	१४ २८	मनोहत	२१ ४७
मदस्थान.	२०	४१	मधुचवा	१४ १४२	मनोह्वा	१९ १०८
मदिरा	२० ४०	मधूक	१४ २७	मतु	१८ २६
मदिरागृह...	१२	८	मधूच्छिष्ट...	१९	१०७	मंत्र	२३ १६७
मदोत्कट....	१८	३५	मधूलरु	...	१४ २८	मंत्रोपाख्याकृत.	१७	७
मधु	१५ ३४	मधूलिका.	१४	८४	मंत्रिन्	१८ ४
मधुर	१० १९		{	१६ ७९	मंथ	१९ ७४
मथ	२० ४०	मध्य.	{	२३ १६१	मथदंडक.	१९	७४
	{	४ १५	मध्यदेश	११ ७	मंथन्	१९ ७४
	{	१९ १०७		{	७ १	मथनी	१९ ७४
मधु.	{	२० ४१	मध्यम.	{	११ ७	मथर	...	१८ ७२
	{	२३ १०३		{	१६ १९	मंथान	१९ ७४
मधुक	१४ १०९	मध्यमा	{	१६ ८	मंद.	{	२० १८
मधुकर	१९ २९		{	१६ ८२		{	२३ ९५
मधुकम	२० ४१	मध्याह्न	...	४ ३	मदगामिन्.	१८	७२
मधुद्रुम	...	१४ २७	मध्यासव	२० ४१	मंदाकिना	१	५२
मधुप	१५ २९	मनःशिला	१९	१०८	मंदाक्ष	७ २३
मधुपर्णिक.	{	१४ ३५	मनस्	४ ३१		{	१ ५३
	{	१४ ९४	मनसिज	१ २७	मंदार.	{	१४ २१
मधुपर्णी	१४ ८३	मनस्कार.	५	२		{	१४ २६
मधुमाक्षिका.	१५	१६	मनाक	२४ ८	मंदिर.	{	१२ ५
मधुवाष्टिक	१४	१०९	मनित	२१ १०८		{	२३ १८४
मधुर.	{	५ ९	मनीषा	५ १	मदुरा	१२ ७
	{	२३ १९१	मनीषिन्	१७ ५	मंदोष्ण	...	३ ३५
मधुरक	१४ १४२	मनु	२५ ३८	मंद्र	...	७ २
मधुरसा....	{	१४ ८३	मनुज	१६ १	मन्मथ.	{	१ २६
	{	१४ १०७	मनुष्य	१६ १		{	१४ २१
मधुरा	१५२						

इ. द.	पग	हा. न.	अ. न.	पग	हा. न.	अ. न.	पग	हा. न.
म. ५१	१६	६५	म. ५२	७	८	म. ५३	१७	३
म. ५४	{ ७	२१	म. ५५	२५	३०	म. ५६	१९	७५
म. ५५	{ १३	१५३	म. ५६	६	३१	म. ५७	१४	११७
म. ५६	४	२२	म. ५७	२१	८३	म. ५८	१	२४
म. ५७	१९	७५	म. ५८	१८	२८	म. ५९	१६	११३
म. ५८	१	७५	म. ५९	{ ११	६५	म. ६०	११	२७
म. ५९	०१	१७	म. ६०	{ २३	११७	म. ६१	१८	५
म. ६०	{ ३	३३	म. ६१	२१	५५	म. ६२	१७	१४
म. ६१	{ ३	१८	म. ६२	१६	१३१	म. ६३	१९	९१
म. ६२	{ १४	१११	म. ६३	१८	६१	म. ६४	१९	१०६
म. ६३	{ १५	३०	म. ६४	२१	५९	म. ६५	१७	१
म. ६४	{ १४	८८	म. ६५	१६	२०	म. ६६	१	१०
म. ६५	{ १९	१०१	म. ६६	१०	२१	म. ६७	९	१
म. ६६	१९	९२	म. ६७	२१	५५	म. ६८	२१	३
म. ६७	१८	१११	म. ६८	२५	२१	म. ६९	१६	१३
म. ६८	१९	३१	म. ६९	२१	३७	म. ७०	१४	११०
म. ६९	{ ३	२७	म. ७०	१४	६९	म. ७१	{ १४	७३
म. ७०	{ ३	३३	म. ७१	१५	२४	म. ७२	{ १४	१३८
म. ७१	३	३१	म. ७२	१६	१२७	म. ७३	१	४१
म. ७२	{ ११	५	म. ७३	२५	१०	म. ७४	१६	२
म. ७३	{ २३	१६३	म. ७४	१९	१७	म. ७५	१७	५४
म. ७४	{ १	६५	म. ७५	१४	१०९	म. ७६	१५	४
म. ७५	{ ३	२	म. ७६	१९	४६	म. ७७	१६	५
म. ७६	२३	५९	म. ७७	१४	१६३	म. ७८	११	३
म. ७७	१	४४	म. ७८	१७	४	म. ७९	१८	१
म. ७८	१४	१३१	म. ७९	१६	९१	म. ८०	११	१
म. ७९	{ १४	५२	म. ८०	१५	६१	म. ८१	१४	५
म. ८०	{ ४	८९	म. ८१	१५	५४	म. ८२	१०	२१
म. ८१	१५	३	म. ८२	७	२८	म. ८३	३	२५
म. ८२	१५	१३	म. ८३	१३	७९	म. ८४	२१	३
म. ८३	{ १४	४८	म. ८४	३	६९	म. ८५	१०	२५४
म. ८४	{ १८	८७	म. ८५	१०	६	म. ८६	१	२२
म. ८५	१६	१	म. ८६	२१	२३२	म. ८७	१९	६३
म. ८६	१२	३३	म. ८७	१४	१४८	म. ८८	१०	३९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
महोत्साह ...	२१	३	मानुलपुत्रक.	१४	७८	मार ...	१	२६
महोद्यम	२१	३	मातुलानी.	{ १६ ३०		मारजित	१	१३
महौषध. {	१४ १००		मातुलाहि.	८ ६		मारण	१८	११४
	१४ १४८		मातुली	१६ ३०		मारिष	७	१४
	१९ ३८		मातुलंगक.	१४ ७८		मारुत	१	६५
मा. {	१ २९					मार्कव	१४	१५
	२४ ११		मातु.	{ १ ३७		मार्ग.	{ ४ १४	
मांस.	{ १६ ६३			{ ७ १४			{ ११ १५१	
	२५ २२			{ १६ २९				
मांसल ...	१६ ४४			{ १९ ६६		मार्गण.	{ १८ ८७	
मांसाक्षु...	२३ ४२		मातृष्वतेय.	१६ २५			{ २१ ४९	
मासिक	२० १४		मातृस्वर्णीय.	१६ २५			{ २२ ३०	
मासिक	१९ १०७		मात्र	२३ १७८		मार्गशीर्ष	४ १४	
मागध {	१८ ९७		मात्रा.	{ २१ ६२		मार्गित ...	२१ १०५	
	२० २			{ २३ १७७		मार्जन	१४ ३३	
मागधी. {	१४ ७१		माद	२२ १२		मर्जना	१६ १२१	
	१४ ९६		माघव.	{ १ १८		माजार	१५ ६	
माघ	४ १५			{ ४ १६		मार्जिता	१९ ४४	
माघ्य	१४ ७३		माघवक	२१ ४१		मार्निड ...	३ २९	
माठर	३ ३१		माघवी	१४ ७२		मार्निगिक ...	२० १३	
माढि	२५ ८		माघ्वीक	२० ४१		मार्ष्टि	१६ १२१	
माणवक. {	१६ ४२					मालक	१४ ६२	
	१६ १०६		मान.	{ ७ २२		मालती	१४ ७२	
माणव्य	२२ ४१			{ १९ ८५		माला	१६ १३५	
माणिक्य	२५ ३१		मानव	१६ १		मालाकार.	२० ५	
माणिमय	१९ ४२		मानस	४ ३१		मालाट्टणक.	१४ १६७	
मातंग. {	२० १९		मानसौकस्.	१५ २३		मालिक	२० ५	
	२३ २१		मानिनी	१६ ३		मालुघान	८ ६	
मातरपितरौ.	१६ ३७		मानुष	१६ १		मालूर ...	१४ ३२	
मातास्थिन्.	१ ६४		मानुष्यक	२२ ४३		माल्य	१६ १३५	
मातलि	१ ४८		माया	२० ११		माल्यवत्	१३ ३	
मातापितरौ.	१६ ३७		मायाार	२० ११		माषणी	१४ १३८	
मातामह ...	१६ ३३		मायादेवीसुत.	१ १५		माषीण	१९ ७	
मातुल. {	१४ ७८		मायु	१६ ६२		माष्य ...	१९ ७	
	१६ ३१		मायूर ...	१५ ४३				

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
मास	४	१२	मक्ता	१९	९३	मुसली	{	१४ ११९
मासर	१९	४९	मुक्तावली	१६	१०५			१५ १२
मासिक	१७	३१	मुक्त स्फोट	१०	२३	मुमरूप	.	२१ ४५
मास्म	२४	११	मुक्ति	५	६	मुस्तक		१४ १५९
माहिष	२०	३	मुख {	१२	१९	मुस्ता		१४ १५९
माहिषी	१९	६६		१६	८९	मुद्ग	२४	१
मितपञ्च	२१	४८		२५	२२	मुद्गमाषा	६	१६
मित्र {	३	३०	मुखार	२१	३६	मुद्गत	४	११
	१८	९	मुखवासन	५	११	मुक्क	२१	१३
	१८	१२	मुख्य {	१७	४०	मुद्ग	२१	४८
	२३	१६७		२१	५७	मुत्त	२१	९५
मिथुस्	२३	२५७	मुद्ग {	१६	४८	मत्र	१६	६७
मिथुन	१५	३८		२५	३४	मूत्रकृच्छ्र	१६	५६
मित्रा	२४	१५	मुद्गेत {	१६	४८	मूत्रित	२१	९६
मिथ्य दृष्टि	५	४		२१	८५	मूख	२१	४८
मिथ्याभियोग	६	१०	मुद्गेन्	२०	१०	मुच्छा	१८	१०९
मिथ्याभिगमन	६	१०	मद्र	४	२४	मुच्छाति	१६	६१
मिथ्यामते	५	४	मुद्रि	३	७	मूर्धित {	१६	६१
मिश्री	१४	१३४	मद्रणी	१४	११३		२३	८२
मित्रेया	१४	१०५	मद्र	१८	९१	मूर्त {	१६	६१
मि {	१४	१०५	सुधा	२४	४		२१	७६
	१४	१५२	मनि {	१	१४	मूर्ति {	१६	७१
मिहिका	३	१८		१७	४२		२३	६६
मिहिर	३	२९	मनींद्र	१	१४	मूर्तिमद ..	२१	७६
मीढ	२१	९६	मुजे	७	५	मर्दन	१६	९५
मीन	१०	१७	मुमर्दन	१	२३	मूर्धाभिषिक्त {	१८	१
मीनकेतन	१	२६	मुग	१४	१२३		२३	६१
मुकुट	१६	१०२	मुषेत	२१	८८	मूर्धा	१४	८३
मुकुद {	१	२३	मुष्क	१६	७६	मूल {	१४	१२
	१६	१२१	मुष्कक	१४	३९		२३	२०८
मुकर	१६	१४०	मुष्टनय	२२	१४	मूलक	१४	१५७
मुकुल	१४	१६	मुषल	१९	२५	मूलवर्मान्	२२	४
मुक्तकधुरी	८	६	मुषातिन्	१	२५	मूलधन	१९	८०

मूल्य.	{	१९	७९	मृत	{	१८	११७	मृदु.	{	१६	७६
		२०	३९			१९	३			१९	७६
मृगक	...	१५	१०	मृगनाट.	...	२१	१९	मृगगा	२०	४२
मृगा.	{	२०	३३	मृगलक्ष....	१८	१३१		मृगसू	१६	६४
		२५	३८	मृगका....	११	४		मृगिनी	११	३
मृगकपणी.	१४	८८		मृग	१८	११६	मृग	२१	३०
मृगपत	२१	८८	मृगयज	१	३३	मृग	५	३
	{	१५	८	मृगसा	११	४	मृग	...	१९	१५
मृग.	{	२२	३०	मृगना	{	११	४	मृग	...	२१	१५
		२३	३०			१४	१११	मृगनात्मजा.	१	४०	
मृगणा	२२	३०	मृग	७	५	मृग	१	५२
मृगतृणा	३	३५		मृग	{	२१	७८	मृगक	...	२२	२९
मृगदशक	२०	२१				२३	१४		{	३	२७
मृगधूक.	१५	५		मृगधूक.	१४	४६		मृग	{	१९	७२
मृगनामि.	१६	१०९		मृगल	२१	७८	मृगधूक.	१९	१०७	
मृगनधाजीव.	२०	२१		मृगदीका	१४	१०७	मृग	१६	५६
मृगचधनी.	२०	२६		मृग	१८	१०४	मृग	१६	५६
मृगमद	१६	१२१	मृगा	२४	११	मृगधूक.	३	२०	
मृगया	२०	२३	मृगार्थक....	६	२१		मृग	...	२५	३९
मृगयु	२०	२१	मृग	...	२१	५६	मृग	...	२५	३९
मृगगमज.	१६	१११		मृगलक यथा	१०	३२		मृग	{	१७	५७
मृगव्य	...	२०	२३	मृगलला.	{	१६	१०८			२३	१२९
मृगशिरस.	३	२३				१८	१०	मृग	...	२०	१२
मृगशीर्ष.	३	२३		मृग	३	६	मृग	{	५	७
मृगांक	३	१४	मृगज्योतिस्	३	१०		मृग	{	१४	३९
मृगदन	१५	१	मृगनादानुलासिन्	१५	३०		मृग	...	२१	८१
मृगित	२१	१०५	मृगनामन्.	१४	१५१		मृग	१४	५४
मृगेंद्र	१५	१	मृगनिर्घोष.	३	८		मृग	१४	३३
मृजा	१६	१२१	मृगपुष्प	१०	५	मृग	{	१४	४६
मृज	१	३३	मृगमाला	३	८				१४	११३
मृजानी	१	३९	मृगवाहन	१	४७		मृग	२५	३३
मृणाल	...	१०	४२	मृग	{	५	१४	मृग	१९	११०
मृणाली	...	२५	७			१५	३१	मृग	१४	८३
मृव	११	४								

पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.	पं. क्र.
माधव	२०	२४	सोतन	१७	४४	पट्टि	२५	३८	
मोह	१८	१०९	यथा	२४	९	मष्टपष्टक	१४	१०९	
मासिक	१९	९२	यथाजात	२१	४८	यष्ट	१७	८	
मोहान	१९	८	यथातयम्	२४	१५	याम	१७	१३	
मौन	१७	३६	यथ ययम्	२४	१४	यचक	२१	४९	
मरजिक	२०	१३	यथार्थम्	२४	१५	यायनक	२१	४९	
मौन	१८	८५	यथावर्ण	१८	१३	यनय	१७	३२	
मालि	२३	१९३	यथाराम	२४	१४	यानित	१९	३	
मोक्ष	२५	५	यथस्ति	१९	५७	यानितक	१९	४	
मोहूर्त	१८	११	यदि	२४	१२	यान्या	१७	३२	
मोहूर्तक	१८	१४	यद्वरुडा	२२	२	यान्या	२२	६	
म्लष्ट	६	२१	यद्व	१८	५९	यावक	१७	१७	
म्लष्ट उदेश	११	७	यद्व	२३	५९	यातना	९	३	
म्लष्ट मुख	१९	१७	यन	१	६१	यतगाम	२३	१४५	
य			यन	१७	४०	यातु	१	६३	
यष्ट	१६	६९	यन	२२	१८	यातधान	१	६३	
यष्ट	१	११	यमराज	१	६१	याव	१६	३०	
यष्ट	१	७३	यमना	१०	३२	याग	१८	९५	
यमार्थम	१९	१३३	यमुनाजल	१	६१	याग	२३	१७५	
यतः	१९	१२७	यमु	१८	४५	यदवति	१०	२	
यनज	१	७१	यमु	१९	१५	याम	१०	२०	
यमन	१६	५१	यमय	१९	७	यादोपति	१	६४	
यजमान	१७	८	यमनार	१९	१८	यान	१८	१८	
यजु	६	३	यमकल	१८	१९१	यान	१८	१८	
यज्ञ	१७	१३	यमस	१८	१९७	याममुख	१८	५५	
यज्ञपुत्र	१	२१	यमगु	१९	१०	यम	२१	५४	
यज्ञोप	१७	२८	याममज	१९	१०८	यप्ययान	१८	५३	
यज्ञोप	१८	२२	यामनिका	१४	१४५	याम	४	६	
यज्ञोप	१७	२७	यामन	१४	९१	याम	२२	१८	
यज्वन्	१७	८	यमीपस्	१६	४३	यामिनो	४	४	
यज	२४	३	यम्य	१९	७	यामुन	१९	१००	
यतस्	२४	३	यम पटह	७	६	यायजूक	१७	८	
यष्टि	१७	४४	यमस्	६	११	यात्र	१६	१२५	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः			
यावत्	१९	१८	यूपखंड	२३	१६७	रक्तांग	१४	१४६
यावत्	२३	२४७	यूपाय	१७	१९	रक्तोत्पल	१०	४२
यवन्	१६	१२८	यूष	२५	३५	रक्षःसभ	...	२५	२७
यष्टिका	...	१९	७०	योजत्र	१९	१३	रक्षस्.	{	१	११
यस	१४	९१	योग	...	२३	२२		{	१	६३
युक्त	१८	२४	योगेष्ट	१९	१०५	रक्षा	५	१
युक्तरक्षा	१४	१४०	योग्य	१४	११२	रक्षित	२१	१०६
युग....	{	१९	३८	योजन	२५	३०	रक्षिवर्ग	१८	६
	{	२३	२४	योजनवल्ली.	१४	९१		रक्षण	२२	८
युगकीलक.	१९	१४		योत्र	१९	१३	रकु	१५	१०
युगंधर.	{	१८	५७	योध	१८	६१	रंग	१९	१०६
	{	२५	३५	योध	१८	६१	रंगाजीव	२०	७
यगपत्	२४	२२	योधसंराव	१८	१०७	रचना	...	१६	१३७
युगपत्रक	...	१४	२२	योनि	१६	७६	रजक	२०	१०
युगपार्श्वग	१९	६३	योषा	१६	२	रजत.	{	१९	९६
युगुल	१५	३८	योषित	१६	२		{	२३	७९
युगायुग	१८	५७	यौतक	१८	२८	रजनी.	{	४	४
युगम	१५	३८	यौतव	१९	८५		{	१४	१५३
युगय.	{	१८	५८	यौवत	१६	२२	रजनीमुख.	४	६	
	{	१९	६४	यौवन	१६	४०		{	४	२९
युद्ध	१८	१०३					रजस्.	{	१६	२१
युष्	...	१८	१०६	रहस्	१	६७		{	१८	९८
युवति	१६	८						{	२३	२३२
युवन्	१६	४२	रक्त.	{	५	१५	रजस्वला....	१६	२०	
युवराज	...	७	१२		{	१६	६४	रज्जु	२०	२७
यूय	...	१५	४१		{	१६	१२४	रंजन	१६	१३२
यूयनाय	१८	३५		{	२३	८०	रजनी	१४	९५
यूयप	१८	३५	रक्तक	१४	७३		{	१८	१०४
यूयिका	१४	७१	रक्तचंदन.	{	१६	१३२	रण....	{	२२	८
यूय...	{	१४	४१	रक्तपा	१०	२२		{	२३	४९
	{	२५	३५	रक्तफला	...	१४	१३९	रंडा	...	१४	८८
यूयक	२५	१९	रक्तसंध्यक.	१०	३६		रत	...	१७	५७
यूयकट्टक....	१४	१८		रक्तसरोयद.	१०	४१		रतिपति	...	१	३७

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
रत्न	{ १९ ९३ २३ १२६		रवण	२१ ३८		राजन्	{ १८ १ २३ १११	
रत्नसानु	१ ५२		रवि	३ ३१		राजन्य	१८ १	
रत्नाकार	१० २		रशना	१६ १०८		राजन्यक	१८ ४	
रत्नि	१६ ८६		राश्मि	{ ३ ३३ २३ १३८		राजन्वत्	११ १३	
रथ	{ १४ ३० १८ ५१		रस	{ ५ ७ ५ ९ ७ १७ १९ ९९ २३ २०८		राजबन्ध	१४ १५३	
रथकव्वा	१८ ५५		रसगर्भ	१९ १०२		राजबीजिन्	१७ २	
रथकार	{ २० ४ २० ९		रसज्ञा	१६ ९१		राजराज	१ ७२	
रथगुप्ति	१८ ५७		रसना	१६ ९१		राजलिंग	२३ ९१	
रथदु	१४ २६		रसवती	१९ २७		राजवश	१७ २	
रथांग	{ १८ ५५ १८ ५६		रसा	{ ११ २ १४ ८४ १४ १२३		राजवत्	११ १३	
रथांगह्वयनामक	१८ २२		रसाज्जन	१९ १०१		राजवृक्ष	१४ २३	
रथिक	१८ ७६		रसातल	८ १		राजसदन	१२ १०	
रथिन्	{ १८ ६० २३ ७६		रसाल	{ १४ ३३ १४ १६३ १९ ४४		राजसभा	२५ ९	
रथिन	१८ ७६		रसित	३ ८		राजसूय	२५ ३१	
रथ्य	१८ ४६		रसोनक	१४ १४८		राजहस	१५ २४	
रथ्या	{ १२ ३ १८ ५५		रह	१८ २३		राजादन	{ १४ ३५ १४ ४५	
रथ	१६ ९१		रहस्	१८ २२		राजाई	१६ १२६	
रदन	१६ ९१		रहस्य	१८ २३		राजि	१४ ६	
रदनच्छद	१६ ९०		राका	४ ८		राजिका	१९ १९	
रध	८ २		राक्षस	१ ६२		राजिल	८ ५	
रधस	२५ २१		राक्षसी	१४ १२८		राजीव	{ १० १९ १० ४१	
रधणी	१६ ४		राक्षा	१६ १२५		राण्यांग	१८ १८	
रभा	१ २९		रांकन	१६ १११		रात्रि	४ ४	
रभा	१४ ११३		राज्	१८ १		रात्रिधर	१ ६३	
रय	१ ६७		राजक	१८ ३		रात्रिधर ..	१ ६३	
रयक	{ १६ ११६ २५ १७		राजकशेष	२३ १८८		राद्रोत	५ ४	
रय	१ ६२					राघ	१ १६	
						राघा	३ २२	
						राम	{ १ २४ १५ ११ २३ १४०	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोकः
रौमक	१९	४२	लता	{ १४	९	लस्तक	१८	८५
रौरव	९	१		{ १४	११	लाक्षा	{ १६	१२५
रौहिणेय	{ १	२५		{ १४	५५		{ २५	१०
	{ ५	२६		{ १४	७२	लाक्षामसादन	१४	४१
रौहिष	{ १४	१६६	लतार्क	{ १४	१३३	लांगल	१९	१३
	{ १५	१०		{ १४	१५०	लांगलद्व	१९	१४
ल			लपन	१६	८९	लांगलपद्धति	१९	१४
लकुच	१४	६०	लपेत	{ ६	१	लांगलिकी	१४	११८
लक्ष	१८	८६		{ २१	१०७	लांगली	{ १४	१११
लक्षण	३	१७	लघ्व	२१	१०४		{ १४	१६८
लक्ष्मण	२१	१४	लघ्वर्ण	१७	६	लांगूल	१८	५०
लक्ष्मणा	१५	२५	लघ्वानुश	१७	१०	लाजा	१९	४७
लक्ष्मन्	{ ३	१७	लभ्य	१८	२४	लाठन	३	१७
	{ २३	१२४	लबन	१६	१०४	लाम	१९	८०
लक्ष्मी	{ १	२८	लबोदर	१	४१	लामणक	१४	१६५
	{ १४	११२	लय	७	९	लालसा	{ ७	२८
	{ १८	८२	ललना	१६	३		{ २३	२३०
लक्ष्मीवत्	२१	१४	ललतिका	१६	१०४	लाला	१६	६७
लक्ष्य	{ ७	३३	ललाट	१६	९२	लालाटिक	२३	१७
	{ १८	८६	ललाटिका	१६	१०३	लाव	१५	३५
लगुड	२५	१८	ललाम	२३	१४३	लासिका	७	८
लग्न	३	२७	ललामक	१६	१३५	लास्य	७	१०
लग्नक	२०	४४	ललित	७	३१	लिकच	१४	९०
लघु	{ १	६८	लव	{ २२	२४	लिक्षा	२५	१०
	{ १४	१३३		{ २१	६२	लिखित	१८	१६
	{ २३	२८	लग्न	१६	१२५	लिग	२३	२५
लघुल्य	१४	१६५	लवण	{ ५	९	लिगमृति	१७	५४
लका	२५	७		{ १९	४१	लिपि	१८	१६
लकोपिका	१४	१३३		{ २५	२३	लिपिकर	१८	१५
लजा	७	२३	लवणोद	१०	२	लिप्त	२१	९०
लजाशील	२१	२८	लयन	२२	२४	लितक	१८	८८
लजित	२१	११	लयित्र	१९	१३	लिप्ता	७	२७
लडा	२५	१०	लशन	१४	१४८	लिबि	१८	१६
						लीड	२१	११०

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
लीला.	{ ७	३२	लोलुप	२१	२२	वचस्	६	१
	{ २३	१९९	लोलुभ	२१	२२	वचा	१४	१०२
लुठित	१८	५०	लोष्ट	१९	१२		{ १	५०
लुब्ध	२१	२२	लोष्टभेदन ...	१९	१२	वज्र.	{ १४	१०५
लुब्धक	२०	२१		{ १६	१२६		{ २३	१८४
लुलाय	१५	४	लोह.	{ १९	९८	वज्रनिर्घोष.	३	१०
लूता	१५	१३		{ १९	९९	वज्रपुष्प	१४	७६
लून	२१	१०३		{ २५	२३	वज्रिन् ...	१	४५
लूम	१८	५०	लोहकारक.	२०	७	वंचक	२१	४७
लेख	१	८	लोहपृष्ठ ...	१५	१६	वंचित	२१	४१
लेखक	१८	१५	लोहल	२१	३७	वंचुक	१५	५
लेखर्षभ	१	४५	लोहाभिसार.	१८	९४		{ १४	२७
लेखा ...	१४	४	लोहित.	{ ५	१५		{ १४	३०
लेपक	२०	६		{ १६	६४		{ १४	६४
लेश	२१	६२	लोहितक....	१९	९२	वट	१४	३२
लेष्ट	१९	१२	लोहितचंदन.	१६	१२४	वटक	२५	१७
लेह ...	१९	५६	लोहिताश्व...	१	५८	वटी	२०	२७
	{ ११	६	लोहितांग....	३	२५	वडवा	१८	४६
लोक.	{ २३	२		व.		वडवानल....	१	५९
लोकजिव.	१	१३	व	२४	९	वडू ...	२१	६१
लोकमातृ ...	१	२९		{ १४	१६०	वाणिक्	१९	७८
लोकायत	२५	३२	वंश.	{ १७	१	वाणिकपथ....	२३	५२
लोकालोक.	१३	२		{ २३	२१४	वाणिज्या....	१९	७९
लोकेश	१	१६	वंशक	१६	१२६	वंटक ...	१९	८९
लोचन	१६	९३	वंशरोचना.	१९	१०९		{ १६	७८
लोचमस्तक.	१४	१११	वक्तव्य	२३	१५९	वत्स.	{ १९	६२
लोघ्र	१४	३३	वकट ...	२१	३५		{ २३	२२७
लोषामुद्रा ...	३	२०	वक्र	१६	८९	वत्सक	१४	६६
लोप्त्र	२०	२५	वक्र ...	२१	७१	वत्सतर	१९	६२
लोमन्	१४	९९	वक्षस्	१६	७८	वत्सनाभ....	८	११
लोमशा	१४	१३४	वंक्षण	१६	७३		{ ४	१३
	{ २१	७४	वंग	१९	१०६		{ ४	२०
लोल.	{ २३	३०५	वचन	६	१	वत्सल	२१	१४
			वचनोद्दिष्ट.	२१	२४	वत्सादनी....	१४	८३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
वद	२१	३५	वषा	{	८ २	वराशि	१६	११६
वदन	..	१६ ८९	{	१६	६४	वराह	१५	२
वदान्य	{	२१ ६	वपुस्	.	१६ ७०	वरिवसित	२१	१०२
	{	२३ १६०	{	१२	३	वरिगस्या	१७	३५
वदाग्द	२१	३५	वप्र	{	१९ ११	वरिवसित	२१	१०२
वध	१८	११५	{	१९	१०५	वरिष्ट	१९	९७
वध्य	२१	४५	वमयु	{	१६ ५५	वरिष्ट ...	२१	१११
वध्य	१४	७	{	१८	३७	वरी	१४	१००
वध्या	१९	६९	वमि	१६	५५	वरीवस्	२३	२३६
वधी	...	२० ३१	वयस्	२३	२३१	{	१	६४
	{	१४ १३३	वयस्या	{	१३ ५८	वरुण	{	३ २
वधू	{	१६ २	{	१४	१३७		{	१४ २५
	{	१६ ९	वयस्य	{	१६ ४२	वरुणात्मजा	२०	३९
	{	२३ १०२	{	१८	१२	वदय	१८	५७
वन	{	१० ३	वजस्या	१६	१२	वह्निनी	१८	७८
	{	१४ १	{	१६	१२४	वरेण्य	२१	५७
	{	२३ १२६	वर	{	२३ ८	वर्कर	२०	२३
वनतित्तिका	१४	८५	{	२३	१७३	वर्गे	१५	४१
वनमिय	१५	१९	वरटा	{	१५ २५	वर्चस्	२३	२३२
वनमक्षिका	१५	२७	{	१५	२७	वर्चस्क	१६	६८
वनमालिन्	१	२१	वरण	{	१२ ३		{	१७ १
वनमुद्ग	१९	१७	{	१४	२५	वर्ण	{	१८ ४२
वनशृगाट	१४	९९	वरह	२५	१८		{	२३ ४८
वनसमूह	१४	४	वरत्रा	{	१८ ४२	वर्णक	{	१६ १३३
वनस्पाति	१४	६	{	२०	३१		{	२५ ३८
वनयुज	१८	४५	वरद	२१	७	वर्णित	२१	११०
वनिता	{	१६ २	वरवर्णिनी	{	१६ ४	वर्णित	१७	४३
	{	२१ ७४	{	१९	४१	वर्णित	{	१५ ३५
वनीयक	२१	४९	वरांग	२३	२६	वर्णित	{	२३ ११
वनौकस्	१५	३	वरांगक	१४	१३४	वर्णित	{	१९ १
वदा	१४	८२	{	१०	४३	वर्णित	{	२१ २९
वदाव	२१	२८	वराटक	{	२० २७	वर्णित	{	११ १५
वन्या	१४	४	{	२५	३८	वर्णित	१६	१३३
			वराहोहा	..	१६ ४	वर्णिका	१५	३५

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वर्तिष्णु	२१	२९	वल्क	१४	१२	वसुधरा	११	३
वर्तुल	२१	६९	वल्कल	१४	१२	वसुधती	११	३
वर्मन्. {	११	५	वलिगत ...	१८	४८	वस्तु	२५	१३
	२३	१२१	वल्गु	२३	१४४	वस्ति	१६	११४
वर्धक	१४	९०	वल्मीक	११	१४	वस्त्र ...	१६	११५
वर्धाकि	२०	९	वल्मीकी	७	३	वस्त्रयोनि.	१६	११०
वर्धन. {	२१	२८	वल्मीक ...	२१	५३	वस्त्रवेष्टमन्	१६	१२०
	२२	७	वल्मीक ...	२३	१३७	वस्त्र ...	१९	७९
वर्धमान	१४	५१	वल्मीक ...	१४	१३	वस्त्रसा	१६	६६
वर्धमानक.	१९	३२	वल्मीक ...	१४	९	वह	१९	६३
वर्धिष्णु	२१	२८	वल्मीक ...	१६	६३	वह्नि. {	१	६६
वर्मन्	१८	६४	वल्मीक ...	२२	८		३	२
वर्मित	१८	६५	वल्मीक ...	२२	४	वह्निशिख.	१६	१०६
वर्थ ...	२१	५७	वल्मीक ...	१८	३६	वह्निसङ्ग.	१४	८०
वर्था	१६	७	वल्मीक ...	१९	६९		२३	२५०
वर्धणा	१५	२६	वल्मीक ...	२३	२१७	वा. {	२४	९
वर्ध. {	३	११	वल्मीक ...	२१	५६		२४	१५
	११	६	वल्मीक ...	१४	९७	वाक्पति	२१	३५
वर्ध्वर	१८	९	वल्मीक ...	१९	४१	वाक्य	६	२
वर्था	४	१९	वल्मीक ...	२१	२५	वागीश	२१	३५
वर्थाभू	१०	२४	वल्मीक ...	२४	८	वागुरा	२०	२६
वर्थाभ्वी	१०	२४	वल्मीक ...	१७	२७	वागुरिक....	२०	१४
वर्थायस्	१६	४३	वल्मीक ...	२३	६७	वागिमन्.	२१	३५
वर्थापल	३	१२	वल्मीक ...	१६	११५	वाङ्मुख.	६	९
वर्ष्मन्. {	१६	७०	वल्मीक ...	१८	१८	वाच्	६	१
	२३	१२३	वल्मीक ...	१६	६४	वाचंयम	१७	४२
वलज ...	२३	३१	वल्मीक ...	१	१०	वाचक	६	२
वलज्जा	२३	३१	वल्मीक ...	१४	८१	वाचस्पति.	३	२४
वलभी	१२	१५	वल्मीक ...	१९	९०	वाचाट	२१	३६
वलय	१६	१०७	वल्मीक ...	२३	२२९	वाचाल	२१	३६
वलयित	२१	९०	वल्मीक ...	१४	८०	वाचिक	६	१७
वलीक	१२	१४	वल्मीक ...	१९	४२	वाचोयुक्तिपटु.	२१	३५
वलीमुख.	१५	३	वल्मीक ...	१	२३	वाज	१८	८७
			वल्मीक ...	११	३			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
वाजपेय	२५	३१	वान	१४	१५	वारि	१०	३
वाजिदत्तक	१४	१०३	वानप्रस्थ	१४	२८	वारिद	२	७
वाजिन्	१५	३३	वानर	१५	३	वारिपर्णी	१०	३८
	१८	४४		१४	६	वारिप्रवाह	१३	५
	२३	१०७	वानोर	१४	३०	वारिखाह	३	६
वाजिशाला	१२	७	वानेय	१४	१३१	वारो	१८	४३
वाजा	७	२७	वाषी	१०	१८	वाष्णी	२३	५२
वाटी	२५	४२	वाप्य	१४	१२६	वार्त	१६	५७
वाव्यालका	१४	१०७	वाम	२३	१४४		२३	७६
वाव	१	५९	वामदेव	१	३४	वार्ता	१९	१
	१७	४		३	३		२३	७५
	१८	४६	वामन	१६	४६	वार्ताकी	१४	११४
वाडवानल	१	५९		२१	७०	वार्तावह	२०	१५
वाडव्य	२२	४१	वामल	११	१४	वाधक	१६	४०
वाणि	२०	२८	वामलोचना	१६	३	वाधुषि	१९	५
वाणिज	१९	७८	वामा	१६	२	वाधाविक	१९	५
वाणिज्य	१९	२	वामी	१८	४६	वार्मण	२२	४३
	१९	७९	वायदड	२०	२८	वार्षिक	१५	१५०
वाणिनी	२३	११२	वायस	१५	२०	वाल	१६	९५
वाणी	६	१	वायसाराति	१५	१५	वालधि	१८	५०
वात	१	६६	वायसी	१४	१५१	वालपाइया	१६	१०३
वातक	१४	१४९	वायसोली	१४	१४४	वालहस्त	१८	५०
वातकिन्	१६	५९	वायु	१	६४	वालुक	१४	१२१
वातपोथ	१४	२९	वायुसख	१	५८	वालुका	२३	७३
वातप्रभी	१५	७	वार	१०	३	वाल्क	१६	१११
वातमृग	१५	७	वार	१५	३९	वावदूक	२१	३५
वातरोगिन्	२६	५९		२३	१६१	वाशिफा	१४	१०३
वातायन	१२	९	वारण	१८	३४	वाशित	६	२५
वातायु	१५	८	वारणबुपा	१४	११३	वास	१२	६
वातूल	२३	१९६	वारवाण	१८	१६	वासक	१४	१०३
वात्पा	२३	१९६	वारमुख्या	१६	१९	वासगृह	१२	८
वात्सक	१८	६०	वारघी	१६	१९	वासती	१४	७२
वादित्र	७	५	वाराही	१४	१५१			
वाध	७	५						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वालयोग....	१६	१३४	विकासिन्.	२१	३०	विच्छाय ...	२५	२६
वासर	४	२	विकिर	१५	३३	विजन. {	१८	२२
वासव	१	४५	विकीरण.	१४	८०	{	२३	८२
वासस् ...	१६	११५	विकुर्वाण.	२१	७	विजय	१८	११०
वासित. {	१६	१३४	विकृत. {	७	१९	विजिल	१९	४६
{	१९	४६	{	१६	५८	विज्ञ	२१	४
वासिता	२३	७५	विकृति	२२	१५	विज्ञात ...	२१	९
वासुकि	८	४	विक्रम. {	१८	१०२	विज्ञान	५	६
वासुदेव	१	३०	{	२३	१४१	विद्.	{	१६
वासू	७	१४	विक्रय	१९	८२	{	१९	१
वास्तु	१२	१९	विक्रयिक.	१९	७९	विट	२५	१७
वास्तुक	१४	१५८	विक्रांत	१८	७७	विटंक	१२	१५
वातोष्पति.	१	४६	विक्रिया	२२	१५	विटप. {	१४	१४
वास्त	१८	५४	विक्रेत ...	१९	७९	{	२३	१३१
वाह. {	१८	४४	विक्रेय	१९	८२	विटपिन्	१४	५
{	१९	८८	विक्रव ...	२१	४४	विट्खदिर.	१४	५०
वाहद्विषद्.	१४	४	विक्षाव	२२	३७	विट्चर	२०	२३
वाहन	१८	५८	विगत	२१	१००	विडंग	१४	१०६
वाहस	८	५	विगतार्तवा.	१६	२१	वितंडा	२५	९
वाहिष्य	१८	३९	विग्र	१६	४६	वितथ	६	२१
वाहिनी. {	१८	७८	{	१६	७०	वितरण	१७	२९
{	१८	८१	विग्रह. {	१८	१८	वितर्दि	१२	१६
{	२३	११२	{	१८	१०४	वितस्ति.	१६	८४
वाहिनीपति	१८	६२	{	२२	२२	वितान. {	१६	१२०
वि	१५	३३	विघस	१७	२८	{	२३	११३
विशति	१९	८३	विघ्न	२२	१९	वितुन्न	१८	१४९
विककत.	१४	३७	विघ्नराज	१	४१	वितुन्नक. {	१४	१२६
विकच	१४	७	विचक्षण.	१७	६	{	१९	३७
विकर्तन	३	२९	विचयन.	२२	३०	{	१९	१०१
विकर्लाग.	१६	४६	विचारिका.	१६	५३	वित्त. {	१९	९०
विकसा	१४	९०	विचारणा	५	२	{	२१	९
विकसित.	१४	८	विचारित	२१	९९	{	२१	९९
विकस्वर	२१	३०	विचिकित्सा.	५	३	विदर	२२	५
विकार ...	२२	१५	विच्छदक.	१२	११	विदल	२५	३२

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
विदारक	१०	१०	विधुत	२१	१०७	विपुल	२१	६१
विदारी	{ १४	२०	विधुतुद	३	२६	विप्र	{ १७	०
	{ १४	११०	विधुर	२२	२०		{ १७	४
विदारिगघा	१४	११५	विधुवन	२२	४	विप्रकार	२२	१५
विदित	{ २१	१०८	विघ्नन	२२	४	विप्रकृत	२१	४१
	{ २१	१०९	विधेय	२१	२४	विप्रकृतक	२१	६८
विदिशु	३	५	विनयग्राहिन्	२१	२४	विप्रतीसार	७	२५
विदु	१८	३७	विना	२४	३	विप्रयोग	२२	२८
विदुर	{ १४	३०	विनायक	{ १	१४	विप्रलब्ध	२२	४१
	{ २१	३०		{ १	४०	विपलम	{ ७	३६
विदुल	...	१४	२३	६			{ २२	२८
विद्ध	२१	९९	विनाश	२२	२२	विप्रलाप	६	१६
विद्धकर्णी	१४	८४	विनाशो-मुख	२१	९१	विप्रश्रिका	१६	२०
विद्याधर	१	११	विनीत	{ १८	४४	विमुप्	१०	६
विद्युत्	३	९		{ २१	२५	विमुत्र	२२	१४
विद्रधि	१६	५६	विदु	२१	३०	विमुष	१	७
विद्रव	१८	१११	विध्य	१३	३	विभव	१९	९०
विद्रुत	२१	१००	विघ्न	{ २१	९९	विभाकर	३	२८
विद्रुम	..	१९	२१	१०४	विभायरी	४	४	
विद्रुमलता	१४	१२९	विन्यस्त	२३	४५	विभावसु	{ १	५९
	{ १७	५	विपक्ष	१८	११		{ ३	३०
विद्रुस्	{ २३	२३५	विपर्चा	७	३		{ २३	२२७
विद्वेष	७	२५	विपण	१९	८३	विभीतक	१४	५८
विघवा	१६	११	विपणि	{ १२	२	विभूति	१	३८
विघा	{ २०	३८		{ २३	५२	विभूषण	१६	१०१
	{ २३	१०१	विपत्ति	१८	८२	विभ्रम	{ ७	३१
विघाह	१	१७	विपथ	११	१६		{ २३	१४२
	१	१७	विपद्	१८	८२	विभ्राज्	१६	१०१
विधि	{ ४	२८	विपर्यय	२२	३३	विमनस्	२१	८
	{ १७	४०	विपयसि	२२	३३	विमर्दन	२२	१३
	{ २३	१००	विपश्चित्	१७	५	विमला	१४	१४३
विधिदर्शिन	१७	१६	विपाद्	१०	३३	विमादज	१६	२५
विधु	{ १	२२	विपादिका	१६	५२	विमान	१	५१
	{ ३	१४	विपाशा	१०	३३	विषय	...	२
	{ २३	९९	विपिन	१४	१			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वियद्गंगा....	१	५२	विवाद	६	९	विश्वकटु....	२०	२२
विमय	२२	१८	विवाह	१७	५६	विश्वकर्मान	२३	१०९
विघात	२१	२५	विविक्त. {	१८	२२	विश्वकण्ठ...	२१	३९
वियाम	१२	१८		२३	८२	विश्वभयज.	१९	२८
विरजस्तमस्.	१७	४५	विविध	२१	९३	विश्वभर ...	१	२२
विरति	२२	३८	विवेक	१७	३८	विश्वभरा....	११	२
विरल	२१	६६	विज्योक....	७	३१	विश्वरूप....	१	२३
विराज्	१८	१	विशू	१७	२	विश्ववसु ...	१	१०
विराव	६	२३	विशू	२३	२१४	विश्वसृज....	१	१७
विरिच	१	१७	विशकट....	२१	६०	विश्वस्ता....	१६	११
विरिचि	१	१७	विशद	५	१२	विश्वा ...	१४	९९
विग्नि	२३	५७	विशग	१८	११५	विश्वास	१८	२३
विरूपाक्ष	१	३४	विशल्या. {	१४	८३	विष् ...	१८	६८
विरोचन. {	३	३०		१४	१३६	विष. {	८	९
	२३	१०८		२३	१५५		२३	२२३
विरोप	७	२५	विशसन	१८	११४	विषधर	८	७
विरोधन ...	२२	२१	विशाख	१	४२	विषमच्छद.	१४	२३
विरोधोक्ति.	६	१६	विशाखा ...	३	२२	विषय. {	५	७
विलक्ष	२१	२६	विशाय	२२	३२		११	८
विलक्षण....	२२	२	विशारण....	१८	११२		२२	११
विलंबित....	७	९	विशारद	२३	९५		२३	१५२
विलम्ब	२२	२८	विशाल	२१	६०	विषयि	५	८
विलाप	६	१६	विशालता.	१६	११४	विषयव्य	८	११
विलास	७	३१	विशालत्वच्.	१४	२३	विषा	१४	९९
विलीन	२१	१००	विशाला	१४	१५६	विपाक्त	१८	८८
विलेपन. {	१६	१३३	विशिख	१८	८६	विपाण	२३	५६
	२२	२७	विशिखा....	१२	३	विषाणी	१४	११९
विलेपी	१९	५०	विशेषक	१६	१२३	विपुव	४	१४
विवय	२३	९६	विश्रानन....	१७	२९	विपवत्	४	१४
विवर	८	१	विश्राव	२२	२८	विष्किर	१५	३३
विवर्ण	२०	१६	विश्रुत	२१	९	विष्कंभ....	१२	१७
विवश ...	२१	४४	विश्व. {	१	१०	विष्टप ...	११	६
विवस्वतः {	३	२९		१९	३८	विष्टर	२३	१६९
	२३	५७		२१	६५	विष्टरश्रवस्.	१	१८
						विष्टि	१	३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
विष्ठा	१६	६८	विस्वसा	१६	४१	वीरपाण	१८	१०३
विष्णु	१	१८	विहग	१५	३२	वीरभार्या	१६	१६
विष्णुक्ताता	१४	१०४	विहग	१५	३२	वीरमातृ	१६	१६
विष्णुपद	२	२	विहगम	१५	३२	वीरवृक्ष	१४	४२
विष्णुपदी	१०	३१	विहगिका	२०	३०	वीरशसन	१८	१००
विष्णुपय	१	३१	विहसित	७	३५	वीरसू	१६	१६
विष्य	२१	४५	विहस्त	२१	४३	वीरहन्	१७	५३
विष्णुकु	२४	१३	विहापित	१७	२९	वीरघृ	१४	९
विष्णुनसेन	१	१९	विहायसू	{ २ २		वीर्य	{ १० २९	
विष्णुकसेनप्रिया	१४	१५१	विहायस	{ १५ ३२			{ १६ ६२	
विष्णुपसेना	१४	५६	विहार	२ २			{ २३ १३४	
विष्णुद्वयह	२१	३४	विहार	२२ १६		वीरघ	२३ ९६	
विसमाद	७	३६	विहल	२१ ४४		वृक	१५ ७	
विसर	१५	३९	वीकाश	२३ २१५		वृकधूप	{ १६ १२८	
विसर्जन	१७	२९	वीचि	१० ५			{ १६ १२९	
विसर्पण	२२	२३	वीणा	७ ३		वृक्कण	२१ १०३	
विसार	१०	१७	वीणा, ह	७ ७		वृक्ष	१४ ५	
विसारिन्	२१	३१	वीणावाद	२० १३		वृक्षभेदिन्	२० ३४	
विद्यत	२१	८६	वीत	१८ ४३		वृक्षकहा	१४ ८२	
विद्यत्वर	२१	३१	वीतत	२० २६		वृक्षवाटिका	१४ २	
पिछमर	२१	३१	वीति	१८ ४३		वृक्षादनी	{ १४ ८२	
विस्तर	२२	२२	वीतिहोन	१ ५६			{ २० ३४	
विस्तार	{ १४ १४		वीथी	{ १४ ४		वृक्षाम्ल	१९ ३५	
	{ २२ २२			{ २३ ८७		वृजिन	{ २१ ७१	
विस्तृत	२१	८६	वीध्र	२१ ५५			{ २३ १०९	
विस्फार	१८	१०८	वीनाह	१० २७		वृत्त	२१ ९२	
विस्फोट	१६	५३		{ ७ १७		वृत्ति	{ १२ ३	
विस्मय	७	१९	वीर	{ ७ १८			{ २२ ८	
विस्मयान्वित	२१	५६		{ १८ ७७			{ २१ ६९	
विस्मृत	२१	८६	वीरण	१४ १६४		वृत्त	{ २१ ९२	
विघ्न	५	१२	वीरतर	१४ १६४			{ २३ ७८	
विघ्नम	{ १८ २३		वीरतर	१४ ४५		वृत्तांत	{ ६ ७	
	{ २३ १३५		वीरपत्नी	१६ १६			{ २३ ६३	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वृत्ति.	{ १९ १	१	वृषण	१६	७६	वेधस्.	{ १ १७	
	{ १९ २	२	वृषदशक	१५	६		{ २३ २२९	
वृत्र	२३ ७३	७३	वृषध्वज	१	३६	वेधित	२१ ९९	
वृत्रहन्	१ ४५	४५	वृषन्	१	४५	वेपथु	७ ३८	
वृथा.	{ २३ २४८	२४८	वृषभ	१९	५९	वेमन्	२० २८	
	{ २४ ४	४	वृषल	२०	१	वेला	२३ १९८	
वृद्ध.	{ १४ १२२	१२२	वृषस्यंती	१६	९	वेल्ह	१४ १०६	
	{ १६ ४२	४२	वृषा. { १ ४५			वेल्हज ...	१९ ३५	
	{ २३ १००	१००		{ १४ ८७		वेल्हित. { २१ ७१		
वृद्धस्व	१६ ४०	४०	वृषाकपायी. २३	१५६			{ २१ ८७	
वृद्धदारक. १४	१३७	१३७	वृषाकपि	२३ १३०		वेश	१२ २	
वृद्धनाभि	१६ ६१	६१	वृषी	१७ ४६		वेशंत	१० २८	
वृद्धश्रवस्	१ ४४	४४	वृष्टि	३ ११		वेशमन्	१२ ४	
वृद्धसंघ	१६ ४०	४०	वृष्टिण	१९ ७६		वेशमभू	१३ १९	
वृद्धा	१६ १२	१२	वेग	२३ २०		वेश्या	१६ १९	
वृद्धि. { १८ १९	१९		वेगिन्	१८ ७३		वेश्याजनसमाश्रय. १२।२		
	{ २२ ९	९	वेणि	१६ ९८		वेष ...	१६ ९९	
वृद्धिजीविका १९	४	४	वेणी	१४ ६९		वेपवार	१९ ३५	
वृद्धिमत्	२३ ८५	८५	वेणु	१४ १६१		वेष्टित	२१ ९०	
वृद्धोक्ष	१९ ६१	६१	वेणुक	१८ ४१		वेहत	१९ ६९	
वृद्धयाजीव. १९	५	५	वेणुधम	२० १३		वै. { २४ ५		
वृंत ...	१३ १५	१५	वेतन	२० ३८			{ २४ १५	
वृंद	१५ ४०	४०	वेतस	१४ २९		वैकाक्षिक	१६ १३६	
वृंदभेद	१५ ४१	४१	वेतस्वत्	११ ९		वैकुण्ठ	१ १८	
वृंदारक. { १ ९	९		वेताल	२५ २१		वैजनन	१६ ३९	
	{ २३ १६	१६	वेत्रवती	१० ६४		वैजयंत	१ ४९	
वृंदिष्ट ...	२२ ११२	११२	वेद	६ ३		वैजयंतिक. १८	७१	
वृश्चिक. { १५ १४	१४		वेदना	२२ ६		वैजयंतिका. १४	६५	
	{ २३ ७	७	वेदि	१७ १८		वैजयंती	१८ ९९	
वृष. { ३ २७	२७		वेदिका	१२ १६		वैज्ञानिक ...	२१ ४	
	{ ४ २४	२४	वेध	२२ ८		वैणव. { १४ १८		
	{ १४ १०३	१०३	वेधनिका	२० ३४			{ १७ ४६	
	{ १४ ११६	११६	वेपमुख्यक. १४	१३५		वैणविका	२० १३	
	{ १९ ५९	५९						
	{ २३ ३२१	३२१						

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
वैणिक .	२०	१३	व्यजक	७	१६	व्याधिघात	१४	२४
वैतसिक .	२०	१४	व्यजन	{ २३	११६	व्याधित	१६	५८
वैतनिक	२०	१५		{ २५	२३	व्यान	१	६७
वैतरणी	९	२	व्यह्वक .	१४	५१	व्यापाद	५	४
वैतालिक	१८	९७	व्यत्यय	२२	३३	व्याम	१६	८७
वैदेहक	{ २०	३	व्यत्यास	२२	३३	व्याल	{ ८	७
	{ १९	७८	व्यथा	९	३		{ २३	११६
वैदेही .	१४	९६	व्यथ	२२	८	व्यालयाहिन	८	११
वैद्य	१६	५७	व्यध्व	११	१६	व्यावृत्त	२१	९२
वैद्यमातृ	१४	१०३	व्यय	२२	१७	व्यास	२२	२२
वैधाद्य	१	५४	व्यलीक	२३	१२	व्याहार .	६	१
वैधेय	२१	४८	व्यपधा	३	१२	युत्थान	२३	११८
वैनतेय	१	३१	व्यपसाय	२३	२१३	व्युष्टि	२३	३८
वैनीतक	१८	५८	व्यपहार	६	९	व्यूढ	२३	४५
वैमात्रेय	१६	२५	व्यवाय	१७	५७	व्यूढककट	१८	६५
वैयाघ्र	२०	५३	व्यसन	२३	१२०	व्युत्ति	२०	२८
वैर	७	२५	व्यसनार्त	२१	४३		{ १५	३९
वैरनिर्यासन	१८	११०	व्यस्त	२१	७२	व्यूह	{ १८	७९
वैरशुद्धि	१८	११०	व्याकुल	२१	४२		{ २३	२३९
वैरिन्	१८	१०	व्याकोश	१४	७	व्यूहपार्श्व	१८	७९
वैरधिक .	२०	२५	व्यात्र	{ १५	१	व्योकार	२०	७
वैवस्वत	१	६२		{ २१	५९	व्योमकेश	१	३६
वैशाख	{ ४	१६	व्याघ्रनख .	१४	१२९	व्योमेन्	"	२
	{ १९	७४	व्याघ्रपाद	१४	३७	व्योमयान	१	५१
वैश्य	१९	१	व्याघ्रपुच्छ	१४	५०	व्योष	१९	१११
वैश्रवण	१	७२	व्याघ्राट	१५	१५	व्रज	{ १५	३९
वैश्वानर .	१	५६	व्याघ्री ..	१४	९३		{ २३	३०
वैसारिण	१०	१७	व्याज	{ ७	३०	व्रज्या	{ १७	३६
वौषट्	२४	८		{ ७	३३		{ १८	९५
व्यक्त	२३	६२	व्याड	२३	४२	व्रण	१६	५४
व्यक्ति	४	३१	व्याडायुध	१४	१२९	व्रणकार्य	२३	१८९
व्यग्र	२३	१९०	व्याघ	२०	२१	व्रत	१७	३८
व्यगा	"	२३	व्याधि	{ १४	१२६		{ १४	९
व्यजन	१६	१४०		{ १६	५१	व्रताति	{ २३	६७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
व्रतिन्	१७	७	शक्रधनुस्.	३	१०	शतमूली....	१४	१००
व्रश्चन	२०	३३	शक्रपादप.	१४	५३	शतयष्टिका.	१६	१०५
व्रात	१५	३९	शक्रपुष्पिका.	२४	१३६	शतवीर्या	१४	१५९
व्रात्य	१७	५४	शकु	२१	३६	शतवेधिन्.	१४	१४१
व्रीडा ...	७	२३	शंकर	१	३२	शतहृदा	३	९
व्रीहि. {	१४	१९	शंकु. {	१०	२०	शतांग	१८	५१
	१९	१५		१४	८	शतावरी....	१४	१०१
	१९	२१		१८	९३	शत्रु. {	१८	९
व्रीहिभेद.	१९	२०	शंख. {	१	७५		१८	११
व्रहेय	१९	६		१०	२३	शनैश्चर ...	३	२६
श.				१४	१३०	शनैस्	२४	१७
शंव	१	५०		२३	१८	शपथ	६	९
शकट ...	१८	५२	शंखनक.	१०	२३	शपन	६	९
शकल	३	१६	शंखिनी	१४	१२६	शफ	१८	४९
शकुलिन्	१०	१७	शची	१	४८	शफरी	१०	१८
शकुन	१५	३२	शचीपति....	१	४६	शबर ...	२०	२०
शकुनि	१५	३२	शटी	१४	१५४	शबरालय.	१२	२०
शकुंत. {	१	२७	शठ	२१	४६	शबल	५	१७
	२३	५८	शणपर्णी....	१४	१४९	शबली	१९	६७
शकुंति	१५	३२	शणपुष्पिका.	१४	१०७		५	७
शकुल	१०	१९	शणसूत्र	१०	१६	शब्द. {	६	२
शकुलाक्षका.	१४	१५९	शत	१९	८४		६	२२
शकुलादनी. {	१४	८६	शतकोटि.	१	५०	शब्दग्रह	१६	९४
	१४	१११	शतहृ	१०	३३	शब्देन	२१	३८
शकुलार्भक.	१०	१७	शतपत्र	१०	४०	शम	२२	३
शकुत् ...	१६	६७	शतपत्रक	१५	१६	शमथ ...	२२	३
शकुत्कारि.	१९	६२	शतपदी	१५	१३	शमन. {	१	६१
	१८	१९	शतपर्वन्....	१४	१६१		१७	२६
शक्ति. {	१८	१०२	शतपर्विका {	१४	१०२	शमनस्वसृ.	१०	३२
	२३	६६		१४	१५८	शमल	१६	६७
शक्तिवर....	१	४३	शतपुष्पा.	१४	१५२	शमित ...	२१	९७
शक्तिहोतिक.	१८	६९	शतप्राप्त	१४	७६	शमी. {	१४	५२
शक्र. {	१	४५	शतमन्यु	१	४५		१९	२३
	१४	६६	शतमान	२५	३४	शमीधा य.	१९	२४

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
शमीर	..	१४ ५२	शराव	..	२१ २८	शष्प	१४	१६७
शपा	.	३ ९	शराव	.	१९ ३२	शस्त	{ ४ २६	
शव	..	१ ५०	शरावती	१०	३४		{ २१ १०९	
शवर	{	१० ४	शरासन	.	१८ ८३	शस्त्र	{ १८ ८२	
		१५ १०	शरीर	.	१६ ७०		{ २३ १७९	
शवरारि	१	२७	शरीरास्थि	१६	६९	शस्त्रक	.	१९ ९८
शवरी	...	१४ ८७	शरीरिन्	४	३०	शस्त्रमार्ज	२०	७
शवल	..	२५ ३४		{ ११ ११		शस्त्रार्जीव	१८	६७
शवाकृत	..	१९ ९	शर्करा	{ १९ ४३		शस्त्री	१८	१२
शचुक्	.	१० २३		{ २३ १७५		शाक	{ १४ १३६	
शभली	.	१६ १९	शर्करावत्	११	११		{ १९ ३४	
शंसु	{	१ ३२	शर्करारिल	.	११ ११	शाकट	१९	६४
		२३ १३५	शर्मन्	४	२५	शाकुनिक	२०	१४
शम्या	.	१९ १४	शर्व	..	१ ३२	शाक्तीक	१८	६९
शम्याक	१४	२३	शर्वरी	४	३	शाक्यमुनि	१	१४
शप	१६	८१	शर्वाणी	१	३९	शाक्यसिंह	१	१५
शयन	{	७ ३६	शल	१५	७	शाखा	.	१४ ११
		१६ १३८	शलभ	...	१५ २८	शाखानगर	१२	२
शयनीय	=	१६ १३७	शलल	१५	७	शाखामृग	१५	३
शयालु	२१	३३	शलली	१५	७	शाखाशिका	१४	११
शयित	२१	३३	शल्लाडु	१४	१५	शाखिन्	१४	५
शयु	८	५	शल्लक	२३	१३	शाखिक	.	२० ८
शय्या	१६	१३७		{ १४ ५३		शाटक	२५	१३
शर	{	१४ १६२	शल्य	{ १५ ७		शाटी	.	२५ ३८
		१८ ८७		{ १८ ९३		शाठ्य	७	३०
शरजन्मन्	१	४१	शव	..	१८ ११८	शाण	२०	३२
शरण	..	२३ ५३	शश	१५	११	शाणी	२५	९
शरद्	{	४ १९	शशधर	३	१५	शाहित्य	१४	३२
		४ २०	शशलोमन्	१९	१०७	शात	{ ४ २५	
		२३ ९३	शशादन	१५	१४		{ २१ ९१	
शरभ	१५ ११	शशीर्ष	.	१९ १०७	शातकुम्भ	१९	९४
शरव्य	.	१८ ८६		{ २३ २४४		शातला	१४	१४३
शराभ्यास	१८	८६	शश्वत्	{ २४ १		शाप्रव	..	१८ ११
शराति	१५ २५		{ २४ ११				

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
शिरा	{ १४ १२७ १५ ५ २३ २१२		शुक्	{ १४ १३२ १५ २१		शुक्ल	३	५
शिरा			शुक्ल	१४ ५७		शुक्ल	३	१४
शिरा	{ ३ १९ ४ १८		शुक्ल	२३ ८३		शुक्ल	१८ २७	
शिरा	१५ ३८		शुक्ल	{ १० २३ १४ १३०		शुक्ल	{ १० १० २० २७ २५ २३	
शिरा	१० १८		शुक्ल	{ १ ५९ ३ २५		शुक्ल	१० ३५	
शिरा	१५ ४०		शुक्ल	४ १६		शुक्ल	८	
शिरा	१० २०		शुक्ल	१६ ६२		शुक्ल	१६ ६३	
शिरा	१६ ७६		शुक्ल	२३ २२१		शुक्ल	१८ १०२	
शिरा	२१ ४६		शुक्ल	१ १२		शुक्ल	१ ५७	
शिरा	१८ २६		शुक्ल	{ ४ १२ ५ १२		शुक्ल	१९ २३	
शिरा	१७ ११		शुक्ल	७ २५		शुक्ल	१ १४	
शिरा	३ ११		शुक्ल	{ १ ५९ ४ १६		शुक्ल	१९ २४	
शिरा	१ ६८		शुक्ल	७ २५		शुक्ल	१९ २४	
शिरा	{ ३ १९ १४ ३० १४ ३४ २५ २२		शुक्ल	{ १ ५९ ४ १६ ५ १२ ७ १७ २३ २८		शुक्ल	{ १७ ५ २० १ १६ ११ १६ १२	
शिरा	२० १८		शुक्ल	१९ २८		शुक्ल	१९ ५६	
शिरा	१४ ७०		शुक्ल	२० ४१		शुक्ल	१९ ७७	
शिरा	{ ३ १९ १४ १४९		शुक्ल	१० ३३		शुक्ल	१९ २६	
शिरा	{ १४ १०५ १४ १२३ १९ ४३		शुक्ल	{ १२ १२ २३ ६६ २० ३२		शुक्ल	{ २३ १९ १९ ४५ १९ १२	
शिरा	२० ३४		शुक्ल	१ ४८		शुक्ल	१९ ४५	
शिरा	१६ ९५		शुक्ल	२० ३३		शुक्ल	१९ ५	
शिरा	१८ ६३		शुक्ल	{ ४ २५ १९ ७३		शुक्ल	{ १६ १५५ १८ ४१	
शिरा	२१ ४५		शुक्ल	{ २० २३ २३ २३		शुक्ल	१९ ७	
शिरा	{ १६ ९८ १८ ६४		शुक्ल	२१ ५०		शुक्ल	{ १४ ४ १४ १२३	
शिरा	{ १७ ९० १७ ९०		शुक्ल	{ ५ १२ १७ १७		शुक्ल	{ १७ १६ १७ १६	
शिरा	७ २५		शुक्ल	{ १७ १७ १७ १७		शुक्ल	१९ ३४	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
शृंगाटक....	११	१७	शोणरत्न ...	१९	९२	श्याल ...	१६	३२
शृंगार	७	१७	शोणित	१६	६४	श्याव	५	१६
शृंगिणी	१९	६६	शोय	१६	५२	श्येत	५	१२
शृंगी. {	१	४३	शोयघ्नी	१४	१४९	श्येन ...	१५	१५
	१०	२५	शोधनी ...	१२	१८	श्येनपाता,	२५	६
	१४	१००	शोधित. {	१९	४६	श्रद्धा	२३	१०२
	१४	११६		२१	५६	श्रद्धालु, {	१६	२१
शृंगीकनक. १९	९६		शोफ ...	१६	५२	श्रयण	२२	१२
शृत	२१	९५	शोमन	२१	५३	श्रवण	१६	९४
शेखर ...	१६	१३६	शोभा	३	१७	श्रवस्	१६	९४
शेफस्	१६	७६	शोष	१६	५१	श्रविष्ठा ...	३	२२
शेफालिका. {	१४	७०	शोक	१५	४३	श्राणा	१९	५०
	२५	७	शौकिकेय....	८	१०	श्राद्ध ...	१७	३१
शैमुषी	५	१	शौक्य	१६	४१	श्राद्धदेव	१	६२
शैल	१४	३४	शौड ...	२१	२३	श्राय	२२	१२
शैवधि ...	१	७५	शौडिक	२०	१०	श्रावण	४	१६
शैष	८	४	शौडी	१४	९७	श्रावणिक.	४	१६
शैक्ष	१७	११	शौद्रोदनि.	१	१५	श्री. {	१	२८
शैलरिक	१४	८८	शौरि	१	२१		१८	८२
शैल	१३	१	शौर्य	१९	१०२	श्रीकंठ	१	३४
शैलालिन्.	२०	१२	शौतिक	२०	८	श्रीघन	१	१४
शैलूष. {	१४	३२	शौकुल ...	२१	१९	श्रीद	१	७३
	२०	१२	श्योत	२२	१०	श्रीपति ...	१	२१
शैलेय	१४	१२३	श्मशान	१८	११८	श्रीपर्ण. {	१४	६६
शैवल	५०	३८	श्मश्रु	१६	९९		२३	५२
शैवलिनी	५०	३०	श्याम. {	५	१४	श्रीपर्णिका.	१४	४०
शैवाल	५०	३८		२३	१४३	श्रीपर्णा	१४	३६
शैशव	१६	४०	श्यामल	५	१४	श्रीफल	१४	३२
शोक	७	२५	श्यामा. {	१४	५५	श्रीफली ...	१४	९५
शोचिकेश.	१	५७		१४	१०८	श्रीमत्	२१	१८
शोचिस्	३	३४		१४	११२	श्रीमान्	१४	४०
शोण. {	५	१५	श्यामाक	१४	१६५	श्रील	२१	१४
	१०	३४						
शोणिक	१४	५७						

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
श्रीवत्स	१	३०	श्वन्	२०	२०	पट्टज	७	१
श्रीवत्सलाउन	१	२२	श्वनिश	२५	४०	पट्ट	१९	६१
श्रीवास	१६	१२९	श्वपच	२०	२०	पट्ट	{ १६ ३९	
श्रीवेष्ट	१६	१२९	श्वभ्र	{ १ २	१८४	पट्टिक	{ १८ ९	
श्रीसिद्ध	१६	१२५		{ २३ २२		पट्टिम्य	१९ २४	
श्रीहास्तिनी	१४	६९	श्वययु	१६	५२	पाणमातुर	१	४३
श्रुत	२३	७७	श्ववृत्ति	१९	२	स		
श्रुति	{ ६ ३		श्वजग	१६	३१	सयन्	१८	१०६
	{ १६ १४		श्वशुरी	१६	३७	सयत	२१	४२
	{ २३ ७३		श्वशुष	२३	१४	सयम	१२	९८
श्रेणि	{ १४ ४		श्वश्व	१६	३१	सयाम	२२	१८
	{ २० ५		श्वश्वशुरी	१६	३७	सयुग	१८	१०५
श्रेयस्	{ ४ २४		श्वश्व	२४	२२	सयोजित	२१	९२
	{ ५ ६		श्वसन	{ १ ६४		सराव	६	२३
	{ २१ ५८			{ १४ ५२	सलाप	६	१६	
श्रेयसी	{ १४ ५९		श्वशिध	१५	७	सरात्	२४	१६
	{ १४ ८४		श्वित्र	१६	५४	सरात्तर	४	२०
	{ १४ ९७		श्वत	{ ५ १२		समानन	१२	४
श्रेष्ठ	२१	५८		{ १९ १६		सरात्	४	२२
श्रीण	१६	४८		{ २३ ८०		सरात्तिका	१०	४३
श्रीगि	१६	७४	श्वनगन्त	११	२३	सरासय	१२	१९
श्रीणिफलक	१६	७४	श्वतउद	२३	२२७	सराजन	२२	२२
श्रीत्र	१६	९४	श्वतमरिच	१९	११०	सराद्	{ ५ १	
श्रीश्रिव	१७	६	श्वतरक्त	५	१५		{ ५ ५	
श्रीषट्	२४	८	श्वतसुरसा	१४	७१		{ २३ ९२	
शृङ्ग	२१	६१	प			सराक्षण	१९	१०
श्रेय	२२	११	पट्टार्मन्	१७	४	सरात्	२१	१०
श्रेष्मण	१६	६०	पट्टपद	१५	२९	सराग	७	२४
श्रेष्मन्	१६	६२	पट्टमिश्र	१	१४	सराय	२२	६
श्रे मल	१६	६०	पट्टानन	१	४१	सराज्ञ	७	२६
श्रेष्मातक	१४	३४	पट्टयय	१४	४८	सदयान	१६	११८
श्लोक	२३	२	पट्टयया	१४	१०२	सराज्ञ	१८	९८
श्र २५५	४	२५	पट्टययिका	१४	१५४	सराय	५	९
श्र २६१	१४	०८						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः
सशयापन्नमानसः	२१	५	मन्त्रा	१६ १०	संशाम १८
संश्रव	५ ५	संख्य	१८ १२	संशोह.	{ १८ २२
संश्रुत	२१ १०९	संगर्भ	१६ २४	संश ११
संश्लेष	२२ ३०	संगोत्र	१६ ३४	संघात.	{ १ १५
संशक्त	२१ ६८	संशिष्ट	१९ ५५	सचिव २३
संशद	...	१८ १५	संकट	२१ ८५	सज्जाल ११
संशान.	{ ११ १८	५५	संकर	१२ १८	सज	... १८
संशिक्षि	७ ३०	संकरण	१ २५	मजन.	{ १७ १८
संस्कार	१६ १३४	संकलित	२१ १३	सजना	... १८
संस्कारहीन.	१७	५४	संकल्प	५ २	संशय १५
संस्कृत	२३ ८१	संकर्युक्त	...	१५ ४३	संशारिका.	१६
संस्तर	२३ १६१	संकाश	२० ३८	मञ्जवन	... १२
संस्तव	२२ २३	संकीर्ण.	{ २० १ २१ २३	५७	संज्वर १
संस्तान	२२ ३४	संकुल.	{ ६ १९ २१ ८५	८५	संलेपन	... १८
संस्त्याय	...	२३ १५१	संज्ञा	१६ १२४	संज्ञा २२
सं या	...	१८ २६	संज्ञोच	१६ १२४	संज्ञ १६
संस्थान	२३ १२४	संज्ञन्दन	१ ४७	संज्ञा १६
संस्थित	१८ ११७	संज्ञम	२२ २५	संज्ञा १६
संस्पर्शा	१४ १५४	संज्ञेपण	२२ २१	संज्ञा १५
संस्फोट	१८ १०५	संज्ञ	१८ १०४	संज्ञ	{ १७ २३
संहत	२१ ७५	संज्ञया	...	५ २	सततं १
संहतज नुक.	१६	४७	संज्ञात	२१ ६४	सती १६
संहतल	१६ ८५	संज्ञावत्.	१७	५	सतीनक १६
संहति	१५ ४०	संज्ञेय	१९ ८३	सतीर्थ	... १७
संघनन	१६ ७०	संज्ञ	...	२२ २९	सत्तम २१
संघृति	६ ८	संज्ञत	...	६ १८	सत्त्व.	{ ४ २३
संकल	२१ ६५	संज्ञ	{ २२ २५	३४	सत्पथ ११
संकृत	२३ २४३	संज्ञ	२३ १६६	सत्य.	{ ६ २३
संक्रामज	१५ २०	संज्ञ	२३ १०९	सत्यंकार १९
संक्रुफला	१४ ५२	संज्ञ	२१ १०९		
संक्रिय	१६ ७३	संज्ञ	२१ १३		
संक्रि	...	१८ १३	संज्ञ	२१ १३		

शब्द	पृ	श्लो	शब्द	पृ	श्लो	शब्द	पृ	श्लो
सत्यवचस्	१७	४३	सतत	२१	१०२	सर्पित	१६	३३
सत्यादृति	१९	८०	सतमस	९	४	सर्पिति	१९	५५
सत्यानृत	१९	३	सतान	{	१ ५३	ससर्पि	१६	१०८
सत्यापन	१९	८२		{	१७ १	ससततु	१७	१३
सत्र	२३	१८१	सताप	१	६०	ससगण	१४	२३
सत्रा	२४	४	सतापित	२१	१०२	ससर्प	३	२७
सन्नि	१८	१५	सदान	१९	७३	ससला	{	१४ ७२
सहार	१	६८	सदानित	२१	९५		{	१४ १४३
सदध्याज्य	१७	२४	सदाव	१८	१११	ससर्पिस्	१	५९
सदन	१२	५	सदित	{	२१ ८५	ससाथ	३	२९
सदस	१७	१५		{	२१ ९९	ससि	१८	४४
सदस्य	१७	१८	सदेशवाञ्छ	६	१७	सस्रष्टाचारिन्	१७	११
सदा	२८	२२	सदेशहर	१८	१६	सस्रष्टका	१६	१०
सदागति	१	६४	सदेश	५	३	सभा	{	१० ६
सदासन	२१	७२	सदोह	१५	३९		{	१७ १५
सदानोरा	१०	३३	सदाप	१८	१११		{	१३ १३७
सदृक्	२०	३७	सधा	२३	१००	सभाजन	२२	७
सदृश	२०	३७	सगन	२०	४०	सभासद	१७	१६
सदृश	२०	३७	सधि	{	१८ १८	सभास्तार	१७	१६
सदेश	२१	६७		{	२२ ११	सभिक	२०	४४
सधन्	१२	४	सभिनी	१९	६९	सभ्य	{	१७ ३
सधस्	२१	३४	सध्या	४	३		{	१७ १६
सधर्मिणी	३	२०	सत्रकद्रु	१६	३५	सम	{	२० ३७
सध्यश्च	२४	९	सत्रद्व	१८	६५		{	२१ ६४
सनत्कुमार	१	५४	सत्रय	२३	१५१	समग्र	२१	६५
सना	२४	१७	सन्निकर्षण	२२	२३	समगा	{	१४ ९०
सनातन	२१	७२	सन्निकृष्ट	२१	६६		{	१४ १४१
सनाभि	१६	३३	सन्निधि	२२	२३	समज	१५	४०
सनि	१७	३२	सन्निवेश	१२	१९	समन्ता	६	११
सनिष्ठो	६	२०	सपत्न	१८	१०	समज्या	१७	१५
सनीड	२१	६६	सपादि	{	२४ ०	समजस्त	१८	२४
सतत	१	५९		{	२४ ९	समधिक	२१	७५
सताति	१७	१	सपर्या	{	१७ १४	समततस्	२४	१३
				{	१७ ३५	समतदुग्धा	१४	१०६

शब्द	गो	श्रुत	शब्द	गो	श्रुत	शब्द	गो	श्रुत
साल	{ १४ ६०		सर्वममला	१	३९	सहभाजन	१९	५५
सालद्रव	१६	१२९	सर्वस	१६	१२७	सहम्	{ ४ १४	
साला	१४	१०८	सर्वला	१८	९३		{ १८ १०२	
साल्	१०	२८	सर्वलिगिन्	१७	४१		{ २३ २३३	
साली	१०	२८	सर्ववेदस्	१७	९	सहसा	२४	७
सालीबह	१०	४०	सर्वसत्रहन	१८	९४	महस्प	४	१५
साल्यव	{ १० १		सर्वानुसृति	१४	१०८	सहस्र	१९	८४
	{ २३ ५७		सर्वप्रभोजिन्	२१	२२	सहस्रदष्ट	१०	१८
साल्यती	{ ६ १		सर्वग्रीन	२१	२२	सहस्रपत्र	१०	४०
	{ १० ३४		सर्वभित्ति	१८	९४	सहस्रगीर्वा	१४	१५८
साल्य	१०	७९	सर्वसिद्ध	१	१५	सहस्रवि	१९	४०
साल्यपति	१०	१	सर्वघ	१८	९४	सहस्रवेधिन्	१४	१४१
साल्यप	८	७	सर्वप	१९	१७	सहस्रांशु	३	३१
सर्ग	२३	२२	सलिल	१०	३	सहस्राक्ष	१	४७
सर्ज	१४	४४	सल्लकी	१४	१२४	सहस्रिन्	१८	६२
सर्जक	१४	४४	सग	१७	१३	सहा	{ १४ ७३	
सर्जरस	१६	१२७	सगन	१७	४७		{ १४ ११३	
सर्जिकाक्षार	१९	१०९	सगम्	१८	१२	सहाय	१८	७१
सर्प	८	६	सगित	३	३१	सहायता	२२	४१
सर्पाज	८	४	सगिघ	२१	६७	सहिणु	२१	३१
सर्पिस्	१९	५२	सवेश	२१	६७	सायानिष	१०	१२
सर्व	२१	६४	संय	२१	८४	सायमीन	१८	७७
सर्वमहा	११	३	संवेष्ट	१८	६०	सायसर	१८	१४
सर्ग	{ १ १३		सम्प	१४	१५	सायथिक	२१	५
	{ १ ३५		सस्यमजरी	१९	२१	साकम्	२४	४
सर्वसम्	२४	१३	सस्यग्रक	१९	२१	साकन्य	२२	३
सर्वतोमद	{ १४ १०		सस्यसवर	१४	४४	साक्षात्	२३	२४४
	{ १४ ६२		स	२४	४	सागर	१०	१
सर्वतोमदा	१४	३५	सकार	१४	३३	सावि	२४	६
सर्वतोमुप	१०	४	सकरी	१४	७५	साति	{ २७ ३९	
सर्गा	२४	७७	सहज	१६	३४		{ ७३ ६७	
सर्गागत	१९	९६	सह्यार्दिणी	१६	५	साधिसार	१६	५९
सर्गप्रेष	१९	६६	सहन	२१	३१	साधय	७	१६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
सादिन्.	{ १८ ६०		सांप्रतम्	{ २४ ११		सिंहसंहनन.	२१	१२
	{ २३ १०७			{ २४ २३		सिंहाण	... १९	९८
साधन	... २३	११९	सायक २३	२	सिंहासन १८	३१
साधारण.	{ २० ३७		सायम.	{ ४ ३		सिंहास्य १४	१०३
	{ २१ ८२			{ २४ १९		सिंहो.	{ १४ १०३	११४
साधित २१	४०	सार.	{ १४ १२			{ १४ ११४	
साधिष्ठ	... २१	११२		{ २३ १७१		सिकता २३	७३
साधीयस् २३	२३६	सारग.	{ १५ १७		सिकतामय.	१०	९
	{ १० ३			{ २३ २३		सिकतावत्.	११	११
साधु.	{ २१ ५२			{ २३ २२५		सिक्यक.	{ १९ १०७	५
	{ २३ १०१		सारथि १८	५९		{ १३ ५	
साधुगहिन्	१८	४४	सारभेय २०	२१		{ ५ १३	
साध्य १	१०	सारव १०	३६	सित.	{ २१ ९५	९८
साध्वस ७	२१	सारस.	{ १० ४०			{ २१ ९८	८०
साध्वी १६	६		{ १५ २२		सितछत्रा १४	१५२
सानु १३	५	सारसन.	{ १६ १०९		सिता	{ १४ ७१	४३
सांतपन १७	५२		{ १८ ६३		सिताभ्र १६	१३०
सांत्व.	{ ६ १८		सारिका	... २५	८	सितांभोज....	१०	४१
	{ १८ २१		सार्य १५	४१	सिद्ध.	{ १ ११	१००
सांख्यिक १८	२९	सार्यवाह १९	७८	सिद्धांत ५	४
सांद्र २१	६६	सार्द्र २१	१०५	सिद्धार्थ	... १९	१८
सांद्रस्निग्ध.	२१	३०	सार्धम् २४	४	सिद्धि १४	११२
सान्द्रय्य १७	२७	सार्वभौम.	{ ३ ४		सिद्धम १६	५३
सातपदीन.	१८	१२		{ १८ २		सिद्धमल १६	६१
साम १८	२०	साल.	{ १२ ३		सिद्धमला २५	१०
				{ १४ ४४		सिध्य	... ३	२२
सामन्.	{ ६ ३		सालपर्णी.	१४	११५	सिध्रका	... २५	८
	{ १८ २१		साल्ता	... १९	६३	सिनीवाली.	४	९
सामाजिक.	१७	१६	साहस	... १८	२१	सिद्धुक्त १४	६८
सामान्य.	{ ४ ३१		साहस्र	{ १८ ६२		सिद्धवार	... १४	६८
	{ २१ ८२			{ २२ ४३				
सामि २३	२५०	सिह.	{ १५ १				
सामिधेनी.	१७	२२		{ २१ ५९				
साम्द्र १९	४१	सिहनाद १८	१०७			
सापरायिक	१८	१०४	सिहपुच्छी.	१४	९३			

शब्द	पग	श्लोक	शब्द	पग	श्लोक	शब्द	पग	श्लोक
सिद्ध	{ १९ १०५ २५ ३१		सुगधि	{ ५ ११ १४ १२१		सुमनस	१	७
सिधु	{ ९ २ १० १ २३ १०१		सुचारित्रा	१६ ६		सुमनस	१४	१७
सिधुज	१९ ४२		सुचेलक	१६ ११६		सुमना	१८	७२
सिधुसगम	१० ३५		सुत	{ १६ २७ २३ ६०		सुमनोरजस्	१४	१७
सिद्ध	१६ १२८		सुतश्रेणी	१७ ८८		सुमेध	१	५२
सीता	१९ १४		सुतात्मजा	१६ २९		सुर	१	७
सीत्य	१७ ८		सुत्रामन्	१ ४५		सुरगा	२५	८
सीधु	२० ४२		सुत्या	१७ ४७		सुराण्येष्ट	१	१६
सीमन्	१२ २०		सुत्यन्	१७ १०		सुरदीर्घिका	१	५२
सीमत्	२५ १९		सुदर्शन	१ २९		सुरद्विष	१	५२
सामन्तिनी	१६ २		सुदाय	१८ २८		सुरनिम्नगा	१०	३१
सीमा	१२ २०		सुदूर	२१ ६९		सुरपति	१	४६
सीर	१९ १४		सुधर्मा	१ ५१		सुरभि	{ ४ १८ ५ ११ २३ १३७	
सीरपाणि	१ २५		सुधा	{ १ ५१ २३ १०२		सुरभी	१४	१२३
सीवन	२२ ५		सुधाशु	३ १४		सुरभि	१	५१
सीसक	१९ १०५		सुधी	१७ ५		सुरलोक्त	१	६
सीङ्गण्ड	१४ १०५		सुनासरि	१ ४४		सुरवर्त्मन्	२	१
सु	{ २४ २ २४ ५		सुनिष्ठागक	१४ १४९		सुरसा	१४	११४
सुकदक	१४ १४७		सुदर	२१ ५२		सुरा	२०	३९
सुकरा	१९ ७०		सुदयी	१६ ४		सुराचार्य	३	२४
सुकल	२१ ८		सुधयेन्	११ १६		सुरामण्ड	२०	४३
सुकुमार	२१ ७८		सुधर्ण	१ ३१		सुरालय	१	५२
सुकृत	४ २४		सुधर्वन्	१ ७		सुराष्ट्रज	१४	१३१
सुहृदिन्	२१ ३		सुधार्श्वक	१४ ४३		सुवचन	६	१७
सुख	{ ४ २५ २५ २३		सुप्रतीक	३ ४		सुवर्ण	{ १९ ८६ १९ ९४	
सुखार्चक	१९ १०९		सुप्रयोगविशिष्ट	१८ ६८		सुवर्णक	१४	२४
सुखसदोक्षा	१९ ७१		सुपलाप	६ १७		सुगति	१४	९५
सुगत	१ १३		सुभगासुत	१६ २४		सुगति	{ १४ ७० १४ ११५ १४ ११९	
सुगधा	१४ ११४		सुभिक्षा	१४ १२४				
			सुन	१४ १७				
			सुमम	१९ १८				

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
सुवहा.	{ १४	१२३	सूत्रवेष्टन	२२	२४	सेनामुख	१८	८१
सुवासिनी.	{ १४	१४०	सूद.	{ १९	२८	सेनारक्ष	१८	६१
सुव्रता	१९	७१	सूना	२३	११३	सेवक	१८	९
सुषम	२१	५२	सूनु ...	१६	२७	सेवन	२२	५
सुषमा	३	१७	सूनुत	६	१९	सेवा ...	१९	२
सुषवी.	{ १४	१५५	सूपकार	१९	२७	से.य	१४	१६४
	{ १९	३७	सूर ...	३	२८	सैहिकेय	३	२६
सुषिर.	{ ७	४	सूराण	१४	१५७	सैकत ...	१०	९
	{ ८	१	सूरत	२१	१५	सैतवाहिनी.	१०	३३
	{ ८	२	सूसुत	३	३२	सैनिक	१८	६१
सुषिरा	१४	१२९	सूरि	१७	६	सैधव.	{ १८	४४
सुषीम ...	३	१९	सूर्मी	२०	३५		{ १९	४२
सुषेण	१४	६७	सूर्य	३	२८	सैन्य.	{ १८	६१
सुषेणिका....	१४	१०८	सूर्यतनया	१०	३२		{ १८	७८
सुष्ट.	{ २४	२	सूर्यप्रिया	२३	१५७	सैरधी	१६	१८
	{ २४	१९	सूर्यदुसंगम.	४	८	सैरिक	१९	६४
सुसंस्कृत	१९	४५	सृक्किणी	१६	९१	सैरिभ ...	१५	४
सुहृद्	१८	१२	सृग ...	१८	९१	सैरेयक	१४	७५
सुहृदप ...	२१	३	सृणि	१८	४१	सोढ	२१	९७
सूकर ...	१५	२	सृणिका	१६	६७	सोदर्य	१६	३४
सूकम.	{ २१	६१	सृति	११	१५	सोन्माद	२१	२३
	{ २३	१४४	सृपाटी	२५	३८	सोपप्लव....	४	१०
सूचक	२१	४७	सृमर	१५	११	सोपान	१२	१८
सूचन	२३	११५	सृष्ट	२३	३९	सोभांजन.	१४	३१
सूचि	२५	८	सैकपात्र	१०	१३	सोम	३	१४
	{ १८	५९	सैचन ...	१०	१३	सोमपा	१७	९
	{ १९	९९		{ ११	१४	सोमपीयिन्.	१७	९
सूत.	{ २०	३	सतु.	{ १४	२५	सोमगजी.	१४	९५
	{ २३	६२	सेना	{ १८	७८	सोमवल्क.	{ १४	५०
सूतिक'गुठ.	१२	८	सेनांग	{ १	४२		{ २३	९
सूतिमास	१६	३९	सेना नी	{ १८	६२	सोमवल्ली.	१४	१३७
सूत्यान	२०	१९				सोमवल्लिका.	१४	९५
सूत्र	२०	२८				सोमवल्ली	१४	८३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
सोमोद्भवा	१०	३२	स्तनित	३	८	स्थली	११	५
सौगधिक	{ १० ३६ १४ १६६ १९ १०२		स्तनक	१४	१६	स्थविर	१६	४२
सौखिक	२०	६	स्तनधरोमन्	१५	२	स्थविष्ठ	२१	१११
सौदामनी	३	९	स्तन	{ १४ ९ १९ २१		स्थाणु	{ १ ३६ १४ ८ २३ ४९	
सौध	१२	१०	स्तनकारि	१९	२१	स्थाण्डिल	१७	४५
सौभागिनिय	१६	२४	स्तनघन	२२	३५	स्थान	{ १८ १९ २३ ११७	
सौम्य	{ ३ २६ २३ १६१		स्तनघ्न	२२	३५	स्थानीय	१२	१
सौरमेय	१९	६०	स्तनवेरम	१८	३५	स्थाने	२४	११
सौरभेयी	१९	६६	स्तभ	२३	१३५	स्थापत्य	१८	८
सौराष्ट्रिक	८	१०	स्तव	६	११	स्थापनी	१४	८४
सौरि	३	२६	स्तिमित	२१	१०५	स्थामन्	१८	१०२
सौवर्चल	{ १९ ४३ १९ १०९		स्तुत	२१	११०	स्थापुक	१८	७
सौविद	१८	८	स्तुति	६	११	स्थाल	२५	३२
सौविदल	१८	८	स्तुतिपाठक	१८	९७	स्थाली	१९	३१
सौवीर	{ १४ ३७ १९ ३९ १९ १००		स्तृप	२५	१९	स्थावर	२१	७३
सौहित्य	१९	५६	स्तेन	२०	२४	स्थाविर	१६	४०
स्कद	१	४२	स्तेम	२२	२९	स्थासक	१६	१२२
स्कथ	{ १४ १० १६ ७८ २३ १००		स्तेय	२०	२५	स्थास्तु	२१	७३
स्कथशास्त्रा	१४	११	स्तोम	{ १५ ३९ २३ १४१		स्थिति	{ १८ २६ २२ २१	
स्कन्न	२१	१०४	स्त्री	१६	२	स्थिरतर	२१	७३
स्कन्न	३६		स्त्रीधर्मिणी	१६	२०	स्थिरा	{ ११ २ १४ ११५	
स्कन्नित	१८	१०८	स्त्रीपुत्र	१५	३८	स्थिरायु	१४	४६
स्तन	१६	७७	रूपगार	१२	११	स्थूणा	{ २० ३५ २३ ५१	
स्तनघयी	१६	४१	स्थण्डिल	१७	१८	स्थूल	{ २१ ६१ २३ २०४	
स्तनपा	१६	४१	स्थण्डिलशायिन्	१७	४४	स्थूलहय	२१	६
स्तनयिन्	३	६	स्थपाति	{ १७ ९ २३ ६१		स्थूलशाटक	१६	११६
			स्थल	११	५	स्थूलोद्यय	२३	१४८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः			
स्थेयस्	२१	७३	स्फुट.	{	१४	७	सुक्	१७	२५
स्थोणय	१४	१३२	स्फुटन	२२	५	सुत	२१	९२
स्थोरिन्	१४	४६	स्फुरण	२२	१०	सुग	१७	२५
स्थौल्य	२३	१९५	स्फुरणा	२२	१०	सुवा	१४	८३
स्त्रा	२२	९	स्फुल्लिग	१	६०	सुवावृक्ष	१४	३७
स्त्रातक	१७	४३	स्फूर्जक	१४	३८	स्रोतस्.	{	१०	११
स्त्रान	१६	१२२	स्फूर्जथु	३	१०	स्रोतस्त्रिनी.	१०	३०	२३४
स्त्रायु	१६	६६	स्फ्रेष्ठ	...	२१	११२	स्रोतोजन...	१९	१००	
स्त्रिगध.	{	१८	२२	स्म....	{	२४	५	स्व...	{	१६	३४
	{	१९	४६		{	२४	१७		{	२३	२११
	{	२१	१४								
स्तु	१३	५	स्मर	...	१	२६	स्थच्छंद.	{	२१	१५
स्तुक्	१४	१०५	स्मरहर	...	१	३५		{	२१	१६
स्तुत	२१	९३	स्मित	७	३४	स्वजन	१६	३४
स्तुग	१६	९	ग्मृति.	{	६	६	स्वतंत्र	२१	१५
स्तुही	१४	१०५		{	७	२९	स्वधा	...	२४	८
स्नेह	७	२७	रयद	१	६७	स्वधिति	१८	९२
स्पर्श.	{	५	७	स्थंदन.	{	१४	२६	स्वन	६	२२
	{	२२	१४		{	१८	५१	स्वनित	२१	९४
स्पर्शन.	{	१	६४	स्थंदनारोह.	१८	६०		स्वप्न	...	७	३६
	{	१७	२९	स्थंदिनी	१६	६७	स्वप्नज्	२१	३३
स्पश.	{	१८	१३	रयन्न	...	२१	९२	स्वभाव	...	७	३८
	{	२३	२१४	स्थूत.	{	१९	२६	स्वभू	१	११
स्पष्ट	२१	८१		{	२१	१०१	स्वयंवर	१६	७
स्पष्ट	३	१४	स्थूति	२२	५	स्थयम्	२४	१६
स्पृक्षा	...	१४	१३३	स्थोनाक	१४	५७	स्वयंभू	१	१६
स्पृशी	१४	९३	स्त्रासिन्	...	१४	२८	स्वर.	{	१	६
स्पृष्टि	२२	९	स्त्रज्	...	१६	१३५		{	२३	२५५
स्पृष्टा	७	२७	स्त्रव	२२	९	स्वर.	{	६	४
स्पृष्ट	२२	१४	स्त्रवद्गर्भा	१९	६९		{	७	१
स्फटा	८	९	स्त्रवती	...	१०	३०	स्व.	{	१	५०
स्फाति	२२	९	स्त्रपृ	१	१७	स्व.	{	२३	१३७
स्फार	२१	६३	स्त्रस्त	२१	१०४	स्वरूप.	{	७	३८
स्फिच	१६	७५	स्त्राक्ष	२४	२		{	२३	१३१

शब्द	पग	श्लोक	शब्द	पग	श्लोक	शब्द	पग	श्लोक
स्वर्ग	१	६	स्वैरिता	२२	२	हरित	{ ५	१५
स्वर्ग	१९	९४	स्वैरिन्	२१	१५		{ २५	१९
स्वर्णकार	२०	८	ह	२४	५	हरितक	१९	३४
स्वर्णक्षीरी	१४	१३८	ह	२४	५	हरितल	२५	३२
स्वर्णदी	१	५२	हस	{ ३	३१	हरितालक	१९	१०३
स्वर्भासु	३	२६		{ १५	२३	हरिदश	३	२९
स्ववश्या	१	५५		{ २३	२२७	हरिद्रा	१९	४
स्वर्षेय	१	५४	हसक	१६	११०	हरिद्राम	५	१४
म्वष्ट	१६	२९	हजिका	१४	८९	हरिटु	१४	१०१
स्वस्ति	२३	२४२	हजे	७	१५	हरि-मणि	१९	९२
स्वस्तिक	१२	१७	हट्ट	२५	१८	हरिमिय	१४	४२
स्वघोष	१६	३२	हट्टभिलासिनी	१४	१३०	हरिमिया	१	३८
स्वाति	२५	३८	हठ	१८	१०८	हरिमयक	१९	१८
स्वादु	२३	९४	हठे	७	१५	हरिगालुक	१४	१२१
स्वादुकटक	{ १४	६७	हत	२१	४१	ह्रीहय	१	४६
	{ १४	९८	हनु	{ १४	१३०	हरीतकी	१४	५९
स्वदुःसा	१४	१४४		{ १६	९०	हरेणु	{ १०	१२०
स्वादी	१४	१०७	हत	२३	२४५		{ १९	१६
स्वाध्याय	१७	४७	हत्र	२१	९६	हर्म्य	१२	९
स्वान	६	२३	ह्य	१८	४४	हर्म्यक्ष	१५	१
स्वात	४	३१	ह्यपुन्डी	१४	१३८	हर्म	४	२४
स्वाप	८	३६	ह्यमारु	१४	७६	हर्ममाण	२१	७
स्वापतेय	१९	९०	हर	१	३५	हल	१९	१३
स्वाभिन्	{ १८	१७	हरण	१८	२८	हला	७	१५
	{ २१	१०	हरि	{ १५	१	हलापुत्र	१	२४
स्वाराज्	१	४६		{ २३	१७५	हलाहल	८	१०
स्वाहा	{ १७	२१	हरिचदन	{ १	५३	हलिन्	१	२५
	{ २४	८		{ १६	१३१	हलिभिषा	२०	३९
स्वित्	२३	२४३	हरिण	{ ५	१३	हल्य	१९	८
स्वेद	७	३३		{ १५	८	हल्या	२२	४१
स्वेदज	२१	५१	हरिणी	२३	५०	हल्लक	१०	३६
स्वेदनी	१९	३०	हरित	{ ३	१	हर	{ २२	८
स्वैर	२३	११०		{ ५	१४		{ २३	२०७
स्वैरिणी	१६	११						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
हविस्.	{	१७ २७	हिंसाकर्मन्.	२२	१९	हति.	{	६ ८
	{	१९ ५२	हिंस्व	२१	२८		{	२२ ८
हव्य	१७	२४	हिक्का	२५	८	हृद्.	१ ५५
हव्यपाक....	१७	२२	हिगु	१९	४०	हृणीया ...	२२	३२
हव्यवाहन.	१	५८	हिगुनिर्यास.	१४	६२	हृद्.	{	४ ३१
हस ...	७	१८	हिगुल	२५	२०		{	१६ ६४
हसनी	१९	३०	हिगुली	१४	१४४	हृदय.	{	४ ३१
हसन्ती	१९	२९	हिजल	१४	६१		{	१६ ६४
	{	१६ ८६	हिंताल	१४	१६९	हृदयंगम	६	१८
हस्त.	{	१६ ९८		{	३ १८	हृदयालु	२१	३
	{	२३ ५९	हिम {	३ १९		हृद्य ...	२१	५३
हस्ताधारण.	२२	५		{	२५ २२	हृषीक	५	८
हस्तिन्	१८	३४	हिमवत्	१३	३	हृषीकेश	१	१८
हस्तिनख.	१२	१७	हिमवालुका.	१६	१३०	हृष्ट	२१	१०३
हस्तिपक....	१८	५९	हिमसंहति.	३	१८	हृष्टमानस....	२१	७
हस्त्यारोह.	१८	५९	हिर्माशु	३	१३	हे	२४	८
हा	२३	२५७	हिमानी	३	१८	हेति.	{	१ ६०
हाटक	१९	९४	हिमावती	१४	१३८		{	२३ ७१
हायन.	{	४ २०		{	१९ ९०	हेतु	४	२८
	{	२३ १०८	हिरण्य.	{	१९ ९१	हेमकूट	१३	३
हार	१६	१०५		{	१९ ९४	हेमदुग्ध	१४	२२
हारीत	१५	३४	हिरण्यगर्भ.	१	१६	हेमन्.	{	१९ ९४
हार्द	७	२७	हिरण्यवाह.	१०	३४		{	२५ २३
हाला	२०	३९	हिरण्येतस्.	१	५८	हेमन्त	४	१८
हालिक	१९	६४	हिरक्.	{	२४ ३	हेमपुष्पक.	१४	६३
हाव	७	३२		{	२४ ७	हेमपुष्पिका.	१४	७१
हास	७	१९	हिलमोचिका.	१४	१५७	हेमाद्रि ...	१	५२
हास्तिक	१८	३६	ही	२४	९	हेरंवा	१	४१
हास्य.	{	७ १७	हीन.	{	२१ १०७	हेला	७	३२
	{	७ १९		{	२३ १२८	हेषा	१८	४७
हाहा	१	५५	हुतभुविप्रया.	१७	२१	है	२४	७
हि.	{	२३ २५८	हुतभुज्	१	५८	हैम	१८	३२
	{	२४ ५	हुम्.	{	२३ २५३			
हिंसा	२३	२३०		{	२४ १८			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
इमवती	{	१ ३८	हृद	१०	२५	ह्लादिनी	{	१० ३०
		१४ ५९	हृसिष्ठ	२१	११२			२३ ११२
		१४ १०३				ह्री	.	७ २३
		१४ १३८	ह्रस्व	{	१६ ४६	ह्रीण	२१ ९१
हेयगवीन		१९ ५२		{	२१ ७०	ह्रीत	.	२१ ९१
होष्ट		१७ १७	ह्रस्वगवेधुका	१४	११७	ह्रिरे		१४ १२२
हौम	...	१७ १४	ह्रस्वांग	१४	१४२	ह्रिपा		१८ ४७
होरा	.	२५ १०	ह्लादिनी	{	१ ५०	ह्लादिनी		१४ १२४
हस्त	.	२४ २२		{	३ ९			

इति काळेहत्युपाह-काशीनाथात्मज-गणेशशा-
स्त्रिणा विरचिता सभाषामरकोशस्थ-
शब्दानुक्रमणिका समाप्ता ।

अथ सभाषामरकोशस्थक्षेपकश्लोकशब्दानुक्रमणिका.

शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्
अ		अवाग्भव	१६	इन्द्राणी	९
अशुपालिन्	२१	अवाचीन	१६	इला	५७
अक्षपाद	१३०	अष्टमूर्ति	८	ईशित्व	९
अहज	५	अहिदष्टिका	४६	उ	
अष्ट	२२७	अहिर्बुध्न्य	८	उत्कालिका	२२४
अणिमन्	९	आ		उदग्भव	१६
अधोगत	९६	आक्रोश	३५	उदीचीन	१६
अनेहमूक	२२४	आक्षेप	३५	उद्भय	७
अतारिक्ष	१५	आदिकवि	१३६	उदुर	९६
अभिजनीपाति	२१	आर्हक	१३०	उल्का	१२
अभ्यजन	१७१	आशिस्	४६	ए	
अभियोग	३५	इ		एकदाष्टि	९८
अवधान	२९	इन	२१	ओ	
अपलेप	४१	इन्द्रदुत्तक	११२	ओलुप्य	१३०
अवष्टभ	४१				

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
क.		गणिका २२४		झ.	
कच्छ २२७		गद ७		झंझायात.... १३	
कंचुकिन्.... ४६		गरिमन् ९		ट.	
कटक २२३		गह्वरी ... ५७		टंक २२४	
कंटक २२३		गाधेय ... १३६		त.	
कंठीरव ९४		गुच्छ २२७		तमिस्रडन् ... २१	
कमलोद्भव ५		गो ५७		तार ३८	
कर्ममोटी... १०		गोकर्ण ४६		तारपय १५	
कर्मसाक्षिन् २१		गोसर्ग ... २३		तिलैदन.... १७१	
कापिल १३०		गौरिला ६७		तेजसां राशि ... २१	
किजल्क.... २२४		ग्रंथ २३८		त्रयीतनु २१	
कुट्टिम ६२		घ.		द.	
कुतुप २४६		घूक ९७		दंतक ६६	
कुंभिनी ५७		च.		दर्प ४१	
कुंभनिस.... ४६		चंद्रशाला... ६२		दव १२	
कुलंकपा ५४		चर्चिका १०		दारक २२४	
कुसर १७१		चर्ममुंडा १०		दायक ७	
केशव ११२		चटु ३५		दाव १२	
कोमारी ९		चाटु ... ३५		दिनमणि.... २१	
कौशिक, { ९७		चामुंडा १०		दिवसपृथिव्यौ ६०	
		चार्वाक ... १३०		दिवांध १७	
क्षमा ... ५७		चित्तेद्रिक.... ४१		दिवाभीत... ३७	
क्षार १२		चित्रकाय.... ९४		दुरेणुणा ... ३५	
क्षारसागरकन्यका. ७		चिरंजीविन् ९८		देशिक २२४	
क्षार १३८		चोद्य ३५		द्विरसन ४६	
ख.		छ.		द्वैपायन १३६	
खद्योत २१		छायानाय.... २१		द्यावापृथिव्यौ ६०	
खनक ९६		ज.		द्यावाभूमी ६०	
खेटक २२४		जगच्चक्षुस् २१		घ.	
ग.		जगती ५७		घानिधि.... २१	
गजारि ८		जलशायिन् ६		घात्री ५७	
गंजा ... ६०		जालिक.... २२४			
		जैमिनीय... १३०			

शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्
न		प्राग्भञ्ज	१६	महीसूनु	१६
नाभिजन्मन्	१५	प्राचीन	१६	मोहेश्वरी	९
नायक	२२३	प्राचेतस	१३६	मीमांसक	१३०
नासामल	११५	फ		मृगद्विष	९४
निधन	५	फणघर	४६	मृगदृष्टि	९४
निबद्धान	६२	ब		मृगरिपु	९४
निर्झारणी	५४	बलाहक	७	मृगाशन	९४
निशाटन	९७	बुध	१६	मृत	२३८
नैयायिक...	१३०	बृहस्पति	१६	मुडन	१३८
प		ब्रह्मादिन्	१३०	मेघपुष्प	७
पचनख	९४	ब्राह्मी	९	मेघाध्वन्	१५
पद्माक्ष	२१	भ		मैत्रावरुणि	१३६
पथिक	२२३	भग	२१	मौकुलि	९८
पाक	२२३	भगित	२६	म्रक्षण	१७१
पादयत्मीक	११२	भद्राकरण	१३८	र	
पाराशर्य	१३६	भसित	१२	रक्षा	१२
पिङ्ग	११५	भस्मन्	१२	रजोमूर्ति	५
मुढरीक	९४	भानुज	१६	रत्नगर्भा	५७
मुध्वज	९६	भार्गवी	७	रतिकूजित	३६
पुराणपुरुष	६	भावना	२९	रावि	१६
पूर्व	१५	भूतधात्री	५७	रमा	६०
पेटक	२२४	भूति	१२	रोदसी	६०
पौष	४५	भोग	४६	रोदसी	६०
पौषी	४५	भोगघर	४६	रोधोवका	५४
प्रकपन	१३०	म		ल	
प्रकटोदित	३६	मद	४१	लघिमन्...	९
प्रणिधान	२९	मनोहारिन्	३६	लघुणाकर	६०
प्रत्यग्भञ्ज	१६	मद्र	३८	लघुयक	२२३
प्रतीचीन	१६	महानट	८	ले लहान	४६
प्राक्काम्य	९	महाबिल	१५	लोकजननी	७
प्राप्ति	९	महावात	१३	लोकवपु	२१
प्रधोतन	२१	मदिमन्	९	लोकबाधव	२१
प्रभात	२२			लोकापतिक	१३०

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर
शब्दानुक्रमिका.

पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
व.	वैष्णवी १	समाधान २९		
हुताशन ... १२	व्यास १३६	सरस्वती ... ५४		
ज ... ७	व्युष्ट ... २३	सांख्य १३०		
न ... १३८	श.	सागरांबरा ... ५७		
रण ... २३२	शाकशाकट १६३	सिंघाण ११५		
शित्व ९	शाकशाकिन १६३	सुग्रीव ... ७		
गाराही ९	शाप ३५	सोत्प्राप्त ३६		
गार्धक २२४	शिरोमृह ६२	सोहृंठन ३६		
गाल्मीक १३६	शुक्र १६	सौगत १३०		
गासना २९	शुल्क २२४	स्मय ४१		
विधु १६	शून्यवादिन् १३०	स्वर्मानु ... १३		
विपुला ५७	शैव्य ७	स्याद्वादिक १३०		
विभात ... २३	श्राव्य ... ३६			
विमर्श ... २९	श्लाघा ३५			
विश्वामित्र... १३६	श्लोपद ११२			
.... ३६	स.			
.... ९६	सत्यक ... ५	ह.		
.... २३२	सत्यवतीसुत ... १३६	हसवाहन... ५		
.... १३०	सत्यवतीसुत ... १३६	हरि ... ४६		
.... १३०	सत्यवतीसुत ... १३६ ३६		

इति समाधामरकेशीश्वरकेशीकशब्दानुक्रमिका समाप्ता ।



पुस्तक मिलनका ठिकाना—
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
“ लक्ष्मीवैकटेश्वर ” छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

